First Edition: 1000 pies

Copies of this book can be had direct from Jaina Samskriti Samrakshaka Sangha, Santosha Bhavan, Phaltan Galli, Sholapur (India)

Price Rs. [illegible]/- per copy, exclusive of postage

जीवराज जैन ग्रंथमालाका परिचय

सोलापुर निवासी ब्रह्मचारी जीवराज गौतमचदजी दोशी कई वर्षोंसे ससारसे उदासीन होकर धर्मकार्यमें अपनी वृत्ति लगा रहे थे। सन् १९४० में उनकी यह प्रबल इच्छा हो उठी कि अपनी न्यायोपार्जित सपत्तिका उपयोग विशेष रूपसे धर्म और समाजकी उन्नतिके कार्यमें करें। तदनुसार उन्होंने समस्त देशका परिभ्रमण कर जैन विद्वानोंसे साक्षात् और लिखित सम्मतिया इस बातकी सग्रह कीं कि कौनसे कार्यमें सपत्तिका उपयोग किया जाय। स्फुट मतसचय कर लेनेके पश्चात् सन् १९४१ के ग्रीष्मकालमें ब्रह्मचारीजीने तीर्थक्षेत्र गजपथा (नासिक) के शीतल वातावरणमें विद्वानोंकी समाज एकत्र की और ऊहापोहपूर्वक निर्णयके लिए उक्त विषय प्रस्तुत किया। विद्वत्सम्मेलनके फलस्वरूप ब्रह्मचारीजीने जैन सस्कृति तथा साहित्यके समस्त अगोंके सरक्षण, उद्धार और प्रचारके हेतुसे 'जैन सरक्षक सस्कृति सघ' की स्थापना की और उसके लिये ३०००० तीस हजारके दानकी घोषणा कर दी। उनकी परिग्रहनिवृत्ति बढती गई, और सन् १९४४ में उन्होंने लगभग २,००,००० दो लाखकी अपनी सपूर्ण सपत्ति सघको ट्रस्ट रूपसे अर्पण कर दी। इस तरह आपने अपने सर्वस्वका त्याग कर दि १६-१-५७ को अत्यन्त सावधानी और समाधानसे समाधिमरणकी आराधना की। इसी सघके अतर्गत 'जीवराज जैन ग्रथमाला' का सचालन हो रहा है। प्रस्तुत ग्रंथ इसी ग्रथमालाका [illegible] पुष्प है।

प्रकाशक
गुलाबचंद हिराचद दोशी,
जैन सस्कृति संरक्षक सघ,
सोलापुर

मुद्रक
फुलचद हिराचद शाह,
वर्धमान छापखाना,
१२५, शुक्रवारपेठ, सोलापुर

स्व. ब्र. जीवराज गौतमचन्द्रजी

भट्टारक सम्प्रदाय

अर्थात्

मध्ययुगीन दिगम्बर जैन साधुओंके संघ
सेनगण, बलात्कारगण और काष्ठासंघका
सम्पूर्ण वृत्तान्त

▼

सम्पादक

श्री. विद्याधर जोहरापुरकर, एम्. ए.
(संस्कृतके व्याख्याता, नागपुर महाविद्यालय, नागपुर)

वीर संवत् २४८४) मूल्य ८ रुपये (सन १९५८

सम्पादकीय

शिलालेख, ताम्रपट व ग्रंथ-प्रशस्तिया इतिहास-निर्माणके अमूल्य और सर्वोपरि प्रामाणिक साधन है, यह बात अब सर्व स्वीकृत है। जैनधर्म संबंधी ये प्रमाण अभी-तक पूर्णरूपसे सुलभ नहीं हो सके इसी कारण जैनधर्मका इतिहासभी अभी तक प्रामाणिकरूपसे प्रस्तुत नहीं किया जा सका। सौभाग्यसे इस कमीकी अब धीरे धीरे पूर्ति होनेकी आशा होने लगी है। अनेक प्रकाशन सस्थायें अब इस ओर अपना ध्यान दे रही हैं। माणिकचन्द ग्रंथमालाकी तीन जिल्दोंमें डॉ. गेरीनो द्वारा संकलित सूचीमें उल्लिखित प्रायः समस्त जैन लेखोंका संग्रह हिन्दी भावानुवाद सहित प्रकाशित हो गया है। औरभी अनेक छोटे बडे लेखसंग्रह प्रकाशित हुए हैं। हमारी यह ग्रंथमालाभी इस दिशामें प्रयत्नशील है। अभी अभी जो इस ग्रंथ मालामें Jainism in South India and Some Jaina Epigraphs शीर्षक ग्रंथ प्रकाशित हुआ है वह इस बातका प्रमाण है कि इन लेखोंसे कैसा अज्ञात इतिहास प्रकाशमें आता है।

प्रस्तुत पुस्तकमें प्रो विद्याधर जोहरापुरकरने भट्टारकसम्प्रदाय संबंधी ७६६ लेख संग्रह किये हैं। और उनका हिन्दी भावार्थभी लिखा है, तथा ऐतिहासिक टिप्पणिया भी जोडी हैं। नामादि वर्णानुक्रमणियोंसे ग्रंथका उपयोग करनाभी सुलभ बना दिया गया है। यद्यपि इनमेंके बहुतसे लेख पहलेसे हमारी दृष्टिमें चले आरहे हैं। किन्तु यहा जो उन्हें व्यवस्थासे कालक्रमानुसार रखा गया है उससे अनेक तथ्य प्रकट होते हैं। जिनका विवेचन किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। प्रस्तावनामें संकलनकर्त्ताने अनेक सूचनाए की है जिनपर ऊहापोह व मतभेद संभव है। किन्तु अपने प्राक्कथनमें उन्होंने यह प्रतिज्ञा की है कि " इस पुस्तकके अगले भाग प्रकाशित होने पर इस विषयपर विस्तारसे लिखनेका सम्पादकका विचार है। " इसपरसे हमें धैर्यपूर्वक ग्रंथके अगले भागकी प्रतीक्षा करना चाहिये। हमे इस उदीयमान साहित्यसेवीसे भविष्यके लिये बहुत बडी आशायें हैं।

हीरालाल जैन
आ ने उपाध्ये

प्राक्कथन

मध्ययुगीन जैन समाजके इतिहासमें भट्टारक सम्प्रदायका स्थान महत्त्वपूर्ण है। इस सम्प्रदायसे सम्बद्ध इतिहाससाधन पट्टावलिया, प्रतिमालेख, ग्रथप्रशस्तिया आदि विपुलमात्रामे प्रकाशित हुए हैं। किन्तु इन साधनोका व्यवस्थित उपयोग करके कोई ग्रन्थ अब तक नहीं लिखा गया था। इस कमीको अशत: दूर करनेके उद्देश्यसे ही प्रस्तुत पुस्तकका सम्पादन किया गया है।

अनेकान्त, जैन सिद्धान्त भास्कर, आदि सशोधनपत्रिकाओंमें प्रकाशित सामग्रीके अतिरिक्त, नागपुर, कारजा, अंजनगाव तथा कुछ अन्य स्थानोंके अप्रकाशित इतिहाससाधनोंका भी इस पुस्तकमें उपयोग किया गया है। इनमें नागपुरके समस्त मूर्तिलेखोंका सग्रह हमे देवलगाव निवासी श्रीमान शान्तिकुमारजी ठवली द्वारा प्राप्त हुआ। शेष साधन हमने स्वय सकलित किए है।

इस पुस्तकका स्वरूप एक तरहसे इतिहास-साधनसूची जैसा है। पहले मूल लेख दिए है, फिर उनका हिंदी साराश टिप्पणियों सहित दिया है, तथा इस परसे फलित कालानुक्रम भी साथमें दिया है। भट्टारकों द्वारा निर्मित ग्रथोंका परिचय, मूर्तिकलाका विकास तथा जातीयसघटन आदि जो विषय विस्तृत विवेचनकी अपेक्षा रखते है उनका प्रस्तावनामें निर्देश मात्र कर दिया गया है। इस पुस्तकके अगले भाग प्रकाशित होने पर इस विषय पर विस्तारसे लिखनेका सम्पादकका विचार है।

पट्टावलियों आदिमे जो बातें बहुत ही सदिग्ध है उनका हमने विवेचन नहीं किया है, सिर्फ कहीं कहीं निर्देश भर कर दिया है। जहा तक हो सका, सुस्थापित तथ्योंका ही निवेदन किया है। कुंदकुद, उमास्वाति आदि आचार्योंके गणगच्छादिका क्या सम्बन्ध रहा इस विषयमें भी हम ने चर्चा नहीं की है क्यों कि इस विषयके लिए पर्याप्त तथ्य उपलब्ध नहीं हैं।

इस पुस्तकके लिए बाबू कामताप्रसादजी, मुनि कान्तिसागरजी, पडित मुख्तारजी तथा परमानदजी आदि विद्वानों द्वारा प्रकाशित सामग्रीका उपयोग हुआ है। इसके वर्तमान स्वरूपके लिए श्रीमान् डॉ उपाध्येजीकी प्रेरणा, श्रद्धेय प प्रेमीजीके आशीर्वाद तथा श्रीमान् डॉ. हीरालालजी जैनका प्रोत्साहन ही कारणभूत हुए हैं। 'जैनमित्र' के वयोवृद्ध सपादक श्रीमान् कापडियाजी ने भ.

सुरेंद्रकीर्ति आदिके फोटो भेजने की कृपा की है। पुस्तकके मुद्रण कार्यका निरीक्षण जीवराज ग्रथमालाके सुयोग्य कार्यवाह श्री आडकोळेने सुचारुरूपसे किया है। इन सब महानुभावोंके प्रति हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

हमें खेद है कि इस ग्रथमालाके सस्थापक श्रद्धेय ब्र. जीवराज गौतमचंद दोशी का इस पुस्तकके प्रकाशित होनेसे पहले ही देहान्त हो गया। संशोधनके विषयमें उन्हें बहुत रुचि थी। हम उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

पुस्तकके परिवर्धन तथा सुधारके विषयमें जो भी सुझाव दिए जायेंगे उनका स्वागत किया जायगा।

नागपुर
ता. २-४-५८

— संपादक

अनुक्रमणिका

संकेतसूची

१ प्रकाशित साधन–

अ. – अनेकान्त मासिक, स. पं. जुगलकिशोरजी मुख्तार आदि.

च. – श्री. जिनदास ना. चवडे, वर्धा, द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ.

दा. – दानवीर माणिकचन्द्र, ले. ब्र. शीतलप्रसादजी.

भा. – जैन सिद्धान्त भास्कर त्रैमासिक, सं. डॉ. हीरालालजी जैन आदि.

भा. ग्र. – उपर्युक्त त्रैमासिकमे प्रकाशित ग्रन्थप्रशस्ति–सग्रह.

भा. प्र. – उपर्युक्त त्रैमासिकमें प्रकाशित प्रतिमालेख–सग्रह.

म. प्रा. – मध्यप्रान्त और बरार के हस्तलिखितोंकी सूची
स. रायबहादुर हीरालालजी.

हि. – जैन हितैषी मासिक, स. प. नाथूरामजी प्रेमी आदि.

जै. – जैन साहित्य और इतिहास, ले. पं. नाथूरामजी प्रेमी (प्रथम सस्करण

२ अप्रकाशित साधन (मूर्तिलेख तथा हस्तलिखित) –

का. – बलात्कारगण मदिर, कारंजा.

ना. – सेनगणमदिर, नागपुर

प. – काष्ठासघमदिर, अजनगाव

पा. – पार्श्वप्रभु (बडा) मदिर, नागपुर

ब. – बलात्कारगण मंदिर, अजनगाव

म. – श्री. मा. स. महाजन, नागपुरका संग्रह

से. – सेनगण मंदिर, कारजा

३ जिन ग्रथों की प्रतिलिपियोंकी पुष्पिकाएं मूल लेखाकोंमें दी है उन लेखाकों के शीर्षकोंमें उन ग्रथों के नाम ब्रेकेटमें रखे गए है ।

INTRODUCTION

(A digest of Hindi Prastāvanā)

1 General Nature

Bhattāraka is a term applied to a particular type of Jaina ascetics. Unlike a Muni or Yati, these ascetics assumed the position of a religious ruler They managed large estates donated to some temple and enjoyed supreme authority in religious matters. Their tradition is very much similar to that of the Śankarāchāryas.

2 Extent of the Subject

Bhattāraka tradition is found in both Digambara and Śvetāmbara sects. Twentytwo seats of Digambara Bhattārakas are known today Out of these, one seat of Senagana existed at Kāranja (Dist. Akola, Berar), ten seats of Balāthāra Gana existed at Jaipur, Nagore, Ater, Ider, Bhanpur, Surat Jerhat, Karanja, Latur and Malkhed, and four seats of Kāsthāsangha existed at Hisar, Surat, Gwalior and Karanja The complete historical account of these fifteen seats is embodied in the present work Remaining seats of Digambara Bhattārakas are situated at Kolhapur, Mudbidri, Karkal, Humbuch and Sravan Belgola We hope to edit the account of these seats in the second volume of this work

3 Age of the tradition

Traditions embodied in the Dhavalā, Harivamsapurāna etc are unanimous about the line of pontiffs that existed during the first seven centuries after Mahāvīra Bhadrabāhu II and Lohārya II were the last two pontiffs in this line Traditional Pattāvalis of various seats of Bhattārakas generally begin with either of these two

Exact historical references to these seats are, however, found from eighth century A D To fill up the gap between these six centuries all traditions claim the famous pontiffs such as Kundakunda, Samantabhadra, Devanandi Pūjyapāda etc., according to their will

Even these references found from eighth century onwards are not continuous. The later Bhattāraka traditions generally begin from the thirteenth century A. D., which continue upto the present day.

4 Literary Contribution

This volume contains references to about 400 compositions of various Bhattārakas. This literature is mainly divided into three topics · epics, stories and texts for worship Epics and stories are generally smaller reductions of stories found in the Padmapurāna of Ravisena, Harivamsapurāna of Jinasena and Mahāpurāna of Jinasena and Gunabhadra. These are found in Sanskrit, Prākrit, Apabhranśa, Hindi, Marathi, Gujarati, and Rajasthani Various Purānas by Sakalakīrti of Ider and numerous Vratakathās by Srutasāgarasūri are noteworthy References are also found to works on grammar, astrology, prosody, logic, metaphysics, medicine, mathematics and other allied subjects

5. Contribution towards Art and Architecture

Installation of various images was considered to be the main work of a Bhattāraka These ceremonies presented a good opportunity for large religious and social gatherings and to establish one's prestige in the society Various titles such as Sanghapati, Seth etc , were conferred upon chief donators of the ceremony

More than a thousand images were installed at a single ceremony by Jinachandra at Mudasa (Rajasthan) chief donator was Seth Jīvarāj Pāpadīwāl These images were later on sent to a large number of temples all over India They are found right from Amritsar to Madras and from Girnar to Calcutta This ceremony took place on the Aksaya Tritīyā of Sam 1548 (1492 A D)

Some twenty types of images were installed during this age The largest number of images were of Pārsvanātha, the twentythird Tīrthankara. Temples, pillars and other monuments formed an important part of Bhattārakas' work.

6 Instruction

Preservation of manuscripts was the most valuable work done in this age. Works on grammar, medicine, mathematics

and similar technical subjects, which were written by Jaina teachers of past, were regularly studied by the disciples of every learned Bhattāraka Several copies of these works were prepared for this purpose only The udyāpana ceremony of every Vrata usually consisted of a donation of some manuscript to some Bhattāraka

7 Social activities

By virtue of their position as a religions teacher Bhattārakas were above the level of caste distinctions But this aspect of Hindu Culture had so much influence on Jaina society that it could not be ignored Every seat of Bhattārakas was generally associated with one particular caste

Bhattārakas often arranged long pilgrimages with a large number of followers In this respect, Śrutasāgara Sūri's visit to Gajapantha and various pilgrimages of Devendrakīrti (Third) of Karanja are noteworthy. Bhattarakas sometimes looked after the management of the holy places, for instance, Shri Mahavirji was managed by Bhattarakas of Jaipur

Many times, non-Jain students came to receivein learng from Bhattārakas The names of Pt Hāji, Śaiva Mādhava, Bhūpati Prājna Misra and Dvija Viśvanātha are notable in this respect

Bhattārakas were supposed to possess miraculous powers gained through some Mantras To walk through air, to remove the effect of poison, to make stone-image speak are some of the miracles ascribed to various Bhattārakas

The Mathas of Bhattārakas were centres of various social functions This provided an occasion for preservation of various arts Many references are found to music, painting, sculpture, dancing and other arts

8. Interrelations

There was no principle for which there could be a serious dispute between different seats of Bhattārakas Their inter-relations rested entirely on personal attitude Śrībhūsana of Nanditatagachchha had worst relations with Vādichadra of Balātkāragana, but Indrabhūsana of the same line had good relations with all

9. Other religious sects

References are found to various disputes between these Bhattāraka Institution and Vedic scholars, Svetāmbara sect and the Terāpantha The last was particularly against the system of Bhattārakas Disputes with Śvetāmbaras often resulted from the question of possession of some holy places

10 Relation with Rulers

No king was following Jainism in the age of Bhattārkas Some ministers, no doubt, were from Jaina families There was no hostility with any particular ruler. Jaina society continued its work peacefully even during the reign of all Moghul emperors Akbar recieved special honour for his sympathetic attitude Relations with the Tomar dynasty of Gwalior also seem to be notably good Visits to courts of various Hindu and Muslim rulers are often referred to

11. Conclusion

Thus it would be clear that the Bhattāraka tradition played an important part in the history of Mediaeval Jaina society. This book, though containing the account of only a part of the tradition contains references to some 400 Bhattārakas, their 175 disciples, 309 literary compositions, 90 temples, 31 castes; 100 rulers and 200 places. With more sources utilised, their figures can be easily doubled

The age, as it was, was not very glorious But some personalities deserve attention Jaina history will remain incomplete without the mention of Sakalakirti, Subhachandra and Jinachandra History of rise gives inspiration. History of downfall gives lessons Both are necsssary for a growing society With this view, we hope, this topic will recieve due attention, though it was so far completely neglected

भट्टारक संप्रदाय–

शुद्धिपत्र

पृष्ठ		पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
प्रस्तावना	१४	१३	इन्द्रभूषण	ज्ञानभूषण
मूल	३०	१९	सि भा. वर्ष पृ ९ में श्री गोडे का लेख	सि. भा. वर्ष ४ पृ ९ में श्री गोड का लेख
	११२	४	पट्टाधीश हुए।	सुखेन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए।
	११२	८	सुरेन्द्रकीर्ति	सुखेन्द्रकीर्ति
	१८७	२०	उपर्युक्त पृ ७१२	उपर्युक्त पृ २७१
	२६१	१४,१५	गोपसेन | जयसेन	गोपसेन | भावसेन | जयसेन
	२६३	१३	अ २ पृ ६०६	अ २ पृ ६८६
	२६९	१०	भा ७ पृ १६	म ४९
	३०२	२७	धर्मचन्द्र (विशालकीर्ति के शिष्य) ५१२-५१३	×
	३२३	३०	जिन्तुर ६९	जिन्तुर ३९

प्रस्तावना

१. ऐतिहासिक स्थान

जैन समाज के इतिहास में सामान्य तौर पर तीन कालखण्ड दृष्टिगोचर होते है। भगवान् महावीर के निर्वाण के बाद करीब ६०० वर्ष तक जैन समाज विकासशील था। अपने मौलिक सिद्धान्तो का विकास और प्रसार करनेके लिए उस समय जैन साधु अपना पूरा समय व्यतीत करते थे। जनसाधारण से सम्पर्क कायम रहे इस उद्देश से वे परिव्रज्या-निरन्तर भ्रमण का अवलम्ब करते थे। मठ, मन्दिर या वाहन, आसनों की उन्हें आवश्यकता नहीं थी। तपश्चर्या के उनके नियम भी भगवान् महावीर के आदर्श से बहुत कुछ मिलते जुलते थे। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के रूप में साधुओं मे वस्त्रधारण की प्रथा यद्यपि उस समय भी थी तथापि भगवान के आदर्श जीवन को वे भूल नहीं सके थे।

ईस्वी सन की दूसरी शताब्दी से जैन समाज व्यवस्थाप्रिय होने लगी। व्यवस्थापन का यह युग भी करीब ६०० वर्ष चलता रहा। इस युग के आरम्भ मे कुन्दकुन्द और धरसेन आचार्य ने विशाल जैन शास्त्रो को सूत्रबद्ध करने का आरम्भ किया। पाचवी सदी में श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने भी अपने आगम शास्त्रबद्ध किये। अनुश्रुति से चली आई पुराण कथाए इसी समय विमलसूरि, सघदास, कविपरमेश्वर आदि के द्वारा ग्रन्थबद्ध हुई। तत्त्वज्ञान के क्षेत्र मे भी समन्तभद्र और सिद्धसेन के मौलिक विवेचन को अकलङ्क और हरिभद्र द्वारा इसी युग मे सुव्यवस्थित सम्प्रदाय का रूप प्राप्त हुआ। पल्लव, कदम्ब, गग और राष्ट्रकूट राजाओ के आश्रय से इसी युग में मठ और मन्दिरो का निर्माण वेग से हुआ तथा आचार्य परपराए सार्वदेशीय रूप छोड कर स्थानिक रूप ग्रहण करने लगीं।

नौवीं शताब्दी से जैन समाज का जनसाधारण से सम्पर्क बहुत कम होता गया। भारतके कई प्रदेशोंमें अब यह सिर्फ वैश्यसमाज के एक भाग के रूप मे परिणत होने लगी। राजकीय दृष्टि से भी मुस्लिम शासकों का प्रभाव धीरे धीरे बढने लगा। इन परिस्थितियों मे स्वभावतः विकास और व्यवस्था की प्रवृत्तिया पीछे रह गईं और आत्मसरक्षण की प्रवृत्ति को ही प्राधान्य मिलने लगा। किसी युगप्रवर्तक नेता के अभाव से यह संरक्षणात्मक प्रवृत्ति धीरे धीरे व्यापक होती गई और अन्त मे उस ने विकासशीलता को समाप्त कर दिया। इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप साधुसघ में भट्टारकसम्प्रदाय उत्पन्न हुए और बढ़े। भट्टारकों के

पूरे कार्य पर इसी मनोवृत्ति का प्रभाव मिलता है। एकदृष्टि से यह प्रवृत्ति समाज के अस्तित्व के लिए आवश्यक भी थी। यह प्रवृत्ति न होने के कारण ही बौद्ध धर्मावलम्बी समाज भारत से नष्ट हो गई यद्यपि उस का प्रसार जैन समाज से अपेक्षाकृत अधिक था।

२. उत्पत्ति और पार्श्वभूमि

उपर्युक्त तीन कालखंडों मे पहले विकासशील युग के इतिहास के साधन बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हैं। इस युग मे दिगम्बर और श्वेताम्बर इन दोनों संघों में एक एक ही आचार्य परम्परा का अस्तित्व सुनिश्चित हुआ है। स्थूलतः देखा जाय तो दक्षिणभारत में दिगम्बर सम्प्रदाय और उत्तर भारत में श्वेताम्बर सम्प्रदाय कार्यशील रहा था। दिगम्बर परम्परा में भगवान महावीर के बाद गौतम इन्द्रभूति, सुधर्मस्वामी लोहार्य, जम्बूस्वामी, विष्णुनन्दि, नन्दिमित्र, अपराजित, गोवर्धन, भद्रबाहु, विशाख, प्रोष्ठिल, क्षत्रिय, जय, नागसेन, सिद्धार्थ, धृतिषेण, विजय, बुद्धिल, गंगदेव, धर्मसेन, नक्षत्र, जयपाल, पाण्डु, ध्रुवसेन, कंसाचार्य, सुभद्र, यशोभद्र, भद्रबाहु और लोहाचार्य इन आचार्यों को गिनाया जाता है और इन का सम्मिलित समय ६८३ वर्ष कहा गया है।[1] श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने प्रायः इतने ही समय में आर्य जम्बूस्वामी के बाद प्रभव, शय्यंभव, यशोभद्र, संभूतिविजय, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, महागिरि, सुहस्ति, सुस्थित, सुप्रतिबुद्ध, इन्द्रदिन्न, दिन्न, सिंहगिरि और वज्रस्वामी इन आचार्यों का उल्लेख पाया जाता है।[2] इसी समय यद्यपि यापनीय संघ की तीसरी परम्परा भी हो गई है तथापि उस की ऐसी कोई व्यवस्थित परम्परा का निर्देश नहीं मिलता है।

इस पहले युग के अन्त से ही दूसरे युग की विभिन्न परम्पराओं का आरम्भ होता है जिन का आगे चल कर तीसरे युग के विभिन्न भट्टारकसम्प्रदायों में रूपान्तर हुआ। इस परम्परा-विस्तार का प्रमुख कारण स्थानभेद था और कहीं कहीं कुछ आचरण के फरक से भी उसे बल मिला है। यद्यपि इस दूसरे युग का इतिहास इस ग्रन्थ का प्रमुख विषय नहीं है, तथापि पार्श्वभूमि के तौर पर इस परम्परा-विस्तार को निम्न तालिका के रूप में अंकित किया जा सकता है। यह तालिका प्रधानरूप से पट्टावलियों के अवलोकन से बनाई गई है और इस लिए अन्तिम

---

१ धवला भाग १ पृ ६६ आदि.

२ तपागच्छ पट्टावली (जैन साहित्य संशोधक खंड १ अंक ३) आदि

रूप से निर्णीत नहीं है। फिर भी ज्ञान की वर्तमान स्थिति में यह काफी तथ्यपूर्ण कही जा सकती है।
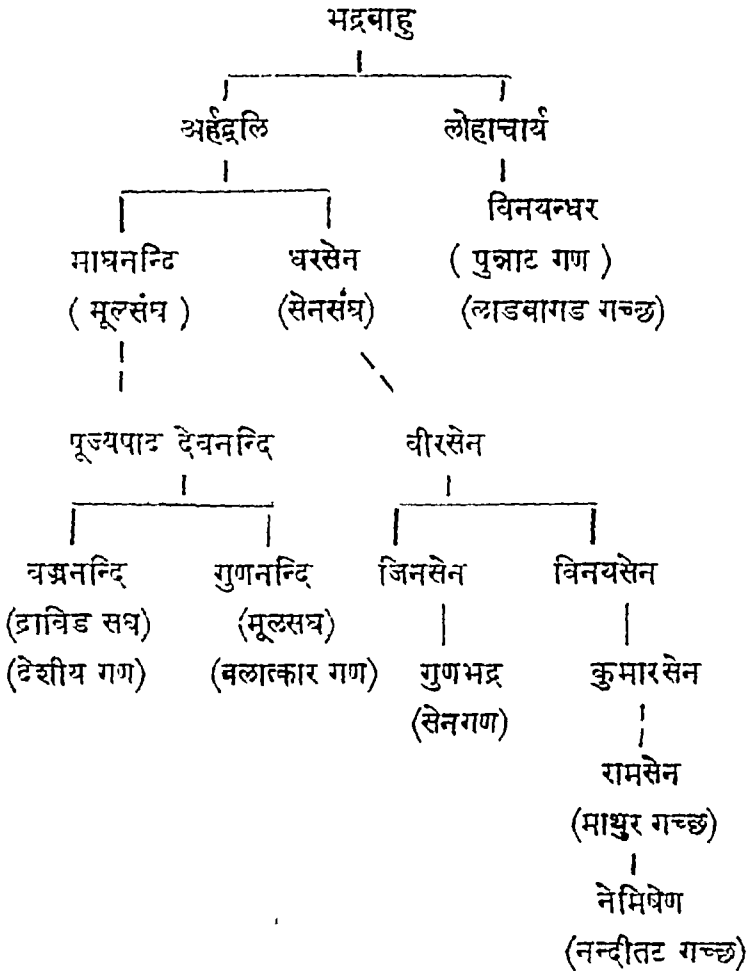
उत्तरवर्ती सम्प्रदायों की पट्टावलियों से इस द्वितीय युग की परम्परा निश्चित करना सम्भव नहीं है क्यों कि उन में अन्य सम्प्रदायों के अच्छे आचार्यों को अपनी ही परम्परा का घोषित करने की प्रवृत्ति देखी जाती है। वीरनन्दि, मेघचन्द्र आदि देशीयगण के आचार्यों के नाम बलात्कार गण की पट्टावलियों में तथा जिनसेन, वीरसेन आदि सेनगण के आचार्यों के नाम लाडबागड गच्छ की पट्टावली में पाये जाते हैं यह इसी का परिणाम है। दूसरी चीज यह है कि पट्टावली लेखकों का समय इन आचार्यों के समय से बहुत बाद का है और इस लिए कितनी ही चमत्कारिक कथाएं उन के द्वारा विभिन्न आचार्यों के लिए गढी गई हैं। पट्टावलियों में दिया हुआ उन का समय और क्रम भी इसी लिए विश्वासयोग्य नहीं है।

इस ग्रन्थ के विभिन्न प्रकरणों के प्रारंभिक परिच्छेदों से ज्ञात होगा कि अधिकांश भट्टारक परम्पराओं के ऐतिहासिक उल्लेख नौवीं शताब्दी से प्राप्त होते है। इस लिए भट्टारकप्रथा अमुक आचार्य ने अमुक समय स्थापन की यह कहना असम्भव है। श्रुतसागर सूरि ने कहा है कि वसन्तकीर्ति ने यह प्रथा आरम्भ की है[1]। किन्तु यह सिर्फ उस विशिष्ट परम्परा के लिए ही सही है। भट्टारक सम्प्रदाय की विशिष्ट आचरण पद्धतियाँ धीरे धीरे किन्तु बहुत पहले से ही अस्तित्व में आ चुकी थीं यह प्रस्तावना के अगले विभाग से स्पष्ट होगा। भट्टारक सम्प्रदाय में ये पद्धतिया तेरहवीं सदी के करीब स्थिर हुई इतना ही कहा जा सकता है।

३. परम्पराभेद और विशिष्ट आचरण

साधुसंघ के साधारण स्थिति से यह परम्परा पृथक् हुई इस का पहला कारण वस्त्रधारण था। यह पद्धति बहुत पहले ही विवाद का कारण बन चुकी थी। भगवान् पार्श्वनाथ की परंपरा के आचार्य केशी कुमारश्रमण ने गणधर इन्द्रभूति गौतम से इस पद्धति के विषय में प्रश्न किया था। इस के परिणाम स्वरूप तात्कालिक रूप से यह विवाद शान्त हुआ[2]। किन्तु वस्त्रधारी साधुओं का अस्तित्व बना रहा। आगे चल कर आर्य महागिरि और शिवभूति के समय फिर यह विवाद जागृत होता गया और अन्त में जब आचार्य कुन्दकुन्द के नेतृत्व में संघ ने दिगम्बरत्व का सम्पूर्ण समर्थन किया तब हमेशा के लिए श्वेताम्बर और दिगम्बर ये भेद दृढ हो गये। इस के बावजूद भी दिगम्बरसम्प्रदाय में फिर वस्त्रधारण की प्रथा शुरू हुई। इसे मुस्लिम राज्य काल में और अधिक बल मिला और आखिर वह भट्टारकों के लिए अपवाद मार्ग के रूप में मान्य कर ली गई। व्यवहार में यद्यपि वस्त्र का उपयोग भट्टारकों के लिए समर्थनीय ठहरा दिया गया तथापि तत्त्व की दृष्टि से नग्नता ही पूज्य मानी जाती रही। भट्टारकपद प्राप्ति के समय कुछ क्षणों के लिए क्यों न हो, नग्न अवस्था धारण करना आवश्यक रहा। कुछ भट्टारक मृत्यु समीप आने पर नग्न अवस्था ले कर सल्लेखना का स्वीकार करते रहे[3]। नग्नता के इस आदर के कारण ही भट्टारकपरम्परा श्वेताम्बर सम्प्रदाय से पृथक्ता घोषित करती रही।

भट्टारकपरम्परा का दूसरा विशिष्ट आचरण मठ और मन्दिरों का निवासस्थान के रूप में निर्माण और उपयोग था। इसी के अनुषंग से भूमिदान का

---

१ लेखांक २२५ देखिए.

२ उत्तराध्ययन सूत्र, केशीगोयमिज्ज अध्ययन.

३ देखिए लेखांक १९०

स्वीकार करने और खेती आदि की व्यवस्था भी भट्टारक देखने लगे थे। सवत् ५२६ मे वज्रनन्दि ने द्राविड संघ की स्थापना की उस के ये ही मुख्य कारण थे ऐसा देवसेन ने कहा है।[1] शक ६३४ मे रविकीर्ति ने ऐहोळे ग्राम में जो मन्दिर बनवाया वह इस पद्धति का पर्याप्त पुराना उदाहरण है यद्यपि भूमिस्वीकार के उल्लेख इस से भी पहले के मिले हैं।[2]

इन दो प्रथाओं के कारण भट्टारकों का स्वरूप साधुत्व से अधिक शासकत्व की ओर झुका और अन्त में यह प्रकट रूप से स्वीकार भी किया गया। वे अपने को राजगुरु कहलाते थे और राजा के समान ही पालकी, छत्र, चामर, गादी आदि का उपयोग करते थे।[3] वस्त्रो मे भी राजा के योग्य जरी आदि से सुशोभित वस्त्र रूढ हुए थे। कमण्डलु और पिच्छी मे सोने चादी का उपयोग होने लगा था। यात्रा के समय राजा के समान ही सेवक सेविकाओ और गाडी घोडों का इंतजाम रखा जाता था तथा अपने अपने अधिकारक्षेत्र का रक्षण भी उसी आग्रह से किया जाता था। इसी कारण भट्टारकों का पट्टाभिषेक राज्याभिषेक की तरह बडी धूमधाम से होता था।[4] इस के लिए पर्याप्त धन खर्च किया जाता था जो भक्त श्रावकोंमे से कोई एक करता था। इस राजवैभव की आकाक्षा ही भट्टारक पीठों की वृद्धि का एक प्रमुख कारण रही यद्यपि उन में तत्त्व की दृष्टि से कोई मतभेद होने का प्रसग ही नहीं आया।

विभिन्न पिच्छियों का उपयोग विभिन्न परम्पराओं का प्रतीक रहा है। सेन गण और बलात्कार गण में मयूरपिच्छ का उपयोग होता था[5], लाडबागड गच्छ मे चामर का पिच्छी जैसा उपयोग होता था, नन्दीतट गच्छ में भी वही प्रथा थी[6] और माथुर गच्छ में कोई पिच्छी नहीं होती थी।[7] इतिहास से ज्ञात होता है कि अन्यान्य आचार्यो ने बलाकपिच्छ और गृध्रपिच्छ का भी उपयोग किया है[8] और उसे निन्दनीय नहीं माना गया किन्तु भट्टारक काल मे अक्सर इस छोटी सी चीज को लेकर कटु शब्दो का प्रयोग होता रहा है।

भट्टारको के कार्य के विषय मे अगले विभागो मे चर्चा की गई है। उन के अतिरिक्त एक विशिष्ट रीति का उल्लेख कारजा के भ. शान्तिसेन के विषय में हुआ

---

१ दर्शनसार २४-२८. २ मर्करा ताम्रपत्र आदि. ३ देखिए लेखाक ७२५. ४ देखिए लेखाक ६७२ ५ देखिए लेखाक ५१. ६ देखिए लेखाक ६४३. ७ देखिए लेखाक ५४१. ८ जैनशिलालेख सग्रह भा. १ भूमिका पृ. १३१

है। इस के अनुसार आप ने बडे समारोह से समुद्रतट पर स्नान किया था।[1]

४. स्थल और काल

साधुत्व के नाते भट्टारकों का आवागमन भारत के प्राय सभी भागों मे होता था। दक्षिण में मूडबिद्री, श्रवणबेलगोल, कारकल, हुमच इन स्थानों पर देशीय गण आदि शाखाओं के पीठ स्थापित हुए थे। प्रस्तुत ग्रन्थ में वर्णित भट्टारक भी यात्रा के लिए श्रवणबेलगोलतक आते जाते थे यद्यपि इस प्रदेश से उन के कोई स्थायी सम्बन्ध नहीं थे। इस से दक्षिण मे तमिलनाड और केरल ये दो प्रदेश प्राचीन समय जैनधर्म के प्रभाव क्षेत्र में रहे थे किन्तु भट्टारकों का कोई सम्बन्ध उन से नहीं था।

पूर्व भारत में सम्मेदशिखर, चम्पापुर, पावापुर और प्रयाग की यात्रा के लिए विहार होता था।[3] वैसे इस प्रदेश में न तो कोई भट्टारकपीठ था, न उन का शिष्यवर्ग था। आरा के नजदीक मसाढ में काष्ठासघ के कुछ उल्लेख मिले है।[4] उन के अतिरिक्त पूर्व भारत से प्राय कोई स्थायी सम्बन्ध नहीं था।

महाराष्ट्र में मलखेड का पीठ बलात्कारगण का केन्द्र था। इसी की दो शाखाए कारंजा और लातूर में स्थापित हुई, जिन का वर्णन प्रकरण ३ और ४ में हुआ है। कोल्हापुर में लक्ष्मीसेन और जिनसेन इन दो भट्टारकों की परम्पराए थीं किन्तु उन का इस ग्रन्थ में सम्मिलित करने योग्य वृत्तान्त हमें प्राप्त नहीं हो सका। ये दोनो भट्टारक अपने को सेनगण के पट्टाधीश मानते है। बलात्कारगण के अतिरिक्त कारंजा में सेनगण और लाडबागड गच्छ के भी पीठ थे। इन पीठ-स्थानों के अतिरिक्त विदर्भ के रिद्धिपूर, बाळापुर, रामटेक, अमरावती, आसगाव, एलिचपुर, नागपुर आदि स्थानों में तथा मराठवाडा के जिन्तुर, नांदेड, देवगिरि, पैठन, गिरड आदि स्थानों में इन पाच पीठो के शिष्यवर्ग अच्छी सख्या में रहते थे। मूल उल्लेखों में इस भाग का उल्लेख प्राय· वराट, वैराट, वऱ्हाड आदि नामों से हुआ है। मलखेड को मलयखेड और कारंजा को कार्यरंजकपुर की सज्ञा मिली है।

गुजरात में सूरत बलात्कार गण का और सोजित्रा नन्दीतट गच्छ का केन्द्र था। समुद्रतटवर्ती इलाकों में नवसारी, भडौच, खभात, जाबूसर, घोघा आदि स्थानों मे भट्टारकों का अच्छा प्रभाव था। उत्तर गुजरात मे ईडर का पीठ महत्त्व-

---

१ देखिए लेखांक ७५ २ देखिए लेखांक ५१४ १२५ आदि. ३ देखिए लेखांक ४३९ आदि. ४ देखिए लेखांक ५८६ आदि.

पूर्ण था। सौराष्ट्र मे गिरनार और शत्रुंजय की यात्रा के लिए भट्टारको का आगमन होता था। किन्तु वहा कोई स्थायी पीठ स्थापित नही हुआ।

मालवा में धारा नगरी प्राचीन समय में जैन धर्म का केन्द्र था। उत्तरवर्ती काल मे इसी प्रदेश मे सागवाडा और अटेर के पीठ स्थापित हुए। सागवाडा की ही एक परम्परा आगे चल कर ईडर मे स्थायी हुई। महुआ, डूंगरपूर, इन्दौर आदि स्थान इन्ही पीठो के प्रभाव मे थे। इसी के उत्तर मे ग्वालियर और सोनागिरि मे माथुर गच्छ और बलात्कार गण के केन्द्र थे। देवगढ, ललितपुर आदि स्थानों में इन का प्रभाव था।

राजस्थान मे नागौर, जयपुर, अजमेर, चित्तौड, भानपुर और जेरहट मे बलात्कार गण के केन्द्र थे। हिसार में माथुर गच्छ का प्रधान पीठ था। पजाब से कुछ स्थानो मे पाई जाने वाली मूर्तियो के अतिरिक्त भट्टारकों का कोई सम्बन्ध ज्ञात नहीं होता। दिल्ली से समय समय पर प्राय. सभी पीठों के भट्टारको ने अपना सम्बन्ध जोडा है। किन्तु मेरठ और हस्तिनापुर के कुछ ग्रामो के अतिरिक्त उत्तर-प्रदेश से भी भट्टारको का कोई खास सम्बन्ध नहीं था।

प्रत्येक पीठ के प्रकरण के अन्त मे दिये गए कालपट से उन के समय का स्पष्ट निर्देश होता है। मोटे तौर पर देखा जाय तो सेनगण के उल्लेख नौवीं सदी से आरम्भ होते है तथा उस की मध्ययुगीन परम्परा १६ वी सदी से ज्ञात होती है। बलात्कार गण के उल्लेखों का प्रारम्भ १० वीं सदी से तथा मध्ययुगीन परम्परा का आरम्भ १३ वीं सदी से होता है। काष्ठासंघ के विभिन्न गच्छो के प्राचीन उल्लेख ८ वीं सदी से एव मध्ययुगीन परम्पराओं के उल्लेख १४ वी सदी से प्राप्त हो सके है। प्रत्येक पीठ का विशेष प्रभाव किस शताब्दी मे रहा यह कालपटो से अच्छी तरह देखा जा सकता है।

५. कार्य– मूर्ति प्रतिष्ठा

मूल ग्रन्थ का सरसरी तौर पर अवलोकन करने से भी स्पष्ट होता है कि भट्टारको के जीवन का सब से अधिक विस्तृत कार्य मूर्ति और मन्दिरों की प्रतिष्ठा यही था। इस पूरे युग मे मूर्तिप्रतिष्ठा का यह कार्य इतने बडे पैमाने पर हुआ कि आज के समाज को उन सब मूर्तियो का रक्षण करना भी दुष्कर हुआ है। इस का एक कारण यह है कि प्रतिष्ठा उत्सव को धार्मिक से अधिक सामाजिक रूप प्राप्त हुआ था। जिस प्रतिष्ठा का निर्देश इस ग्रन्थ के दो पंक्तियो के मूर्तिलेख मे हुआ है उस के-लिए-भी कम से कम हजार व्यक्तियो को इकट्ठे आने का मौका मिला था।

प्रतिष्ठाकर्ता को समाज का नेतृत्व अनायास ही प्राप्त होता था और उसी प्रतिष्ठा में यदि गजरथ भी हो तब तो संघपति का पद भी उसे विधिवत् दिया जाता था। सामाजिक मान्यता की इस अभिलाषा के साथ ही मुस्लिम शासकों की मूर्तिभंजकता की प्रतिक्रिया के रूप से भी जैन समाज में मूर्ति प्रतिष्ठा को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला।

इस युग में प्रतिष्ठित की गई मूर्तियां साधारणतः पाषाण और धातुओं की होती थीं। धातु मूर्तियों का प्रमाण कुछ बढ़ता गया है। तीर्थंकर, नन्दीश्वर पंचमेरु, सहस्रकूट, सरस्वती, पद्मावती आदि यक्षिणी, क्षेत्रपाल और गुरु ये मूर्तियों के प्रमुख प्रकार थे। तीर्थंकरों की मूर्तियां पद्मासन और कायोत्सर्ग इन दो मुद्राओं में होती थीं। इन में पार्श्वनाथ की मूर्तियां सर्वाधिक संख्या में और विविध रूपों में पाई जाती हैं। नागफणा के ऊपर, नीचे, आगे या बाजू में होने से पार्श्वनाथ की मूर्तियों में यह विविधता पाई जाती है। शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ इन तीन तीर्थंकरों की संयुक्त मूर्ति को रत्नत्रयमूर्ति कहा जाता है। किसी एक तीर्थंकर की मुख्य मूर्ति के ऊपर और दोनों ओर अन्य तेईस तीर्थंकरों की छोटी मूर्तियां हों तो उसे चौवीसी मूर्ति कहा जाता है। इसी प्रकार अनन्तनाथ तक के चौदह तीर्थंकरों की संयुक्त मूर्तियां भी पाई जाती हैं। और इसका खास उपयोग अनन्तचतुर्दशी पूजामें किया जाता है। सामान्य तौर पर इस युग की तीर्थंकर मूर्तियां सादी होती थीं। मूर्ति के साथ ही भामंडल, छत्र, सिंहासन आदि भी उकेरने की पहली पद्धति इस युग में प्रायः लुप्त हो गई। मूर्तियों का विस्तार दो इञ्च से बीस फुट तक विभिन्न प्रकार का रहा है फिर भी अधिकांश मूर्तियां एक फुट ऊंचाई की हैं। मूर्तियों का निर्माण मुख्य तौर पर राजस्थान में होता था।

यंत्रों की प्रतिष्ठा यह इस काल की विशेष निर्मिति है। दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय, षोडशकारण भावना, द्वादशांग आगम, नव ग्रह, ऋषिमंडल और सकलीकरण के यंत्र ये इन के विविध प्रकार थे। सभी धर्मतत्त्वों को मूर्तरूप में बांधने की प्रवृत्ति ही इस यंत्रप्रतिष्ठा का मूलभूत कारण है।

पहले तीर्थंकरों के साथ अनुचरों के रूप में यक्ष आदि देवताओं की मूर्तियों का निर्माण होता था। इस युग में उन की स्वतन्त्र मूर्तियां बनने लगीं। यक्षों में धरणेन्द्र और क्षेत्रपाल प्रमुख हैं। यक्षिणियों में चक्रेश्वरी, ज्वालामालिनी, कूष्माण्डिनी, अंबिका और पद्मावती ये प्रमुख हैं। ज्ञान का प्रमाण जैसे कम होता गया

वैसे इन सब की मूर्तियों को पद्मावती के ही विभिन्न रूप माना जाने लगा, और अन्त में काली और दुर्गा जैसी अन्य या स्थानिक सम्प्रदाय की देवताओं के साथ भी इन की एकता होने लगी थी। कुक्कुट आदि वाहन, धनुष आदि शस्त्र इत्यादि बाह्य चिन्हों से यह गलत एकता आसानी से स्थापित हो सकी जिस का अब भी जैनसमाज मे काफी प्रभाव है।

प्रतिष्ठाओं के लिए वैसे कोई महीना वर्ज्य नहीं था। फिर भी वैशाख में सब से अधिक प्रतिष्ठाएं हुईं। इस का कारण शायद यह था कि अक्षय तृतीया एक स्वयंसिद्ध मुहूर्त माना जाता था। उस दिन के लिए पंचाग देखने की जरूरत नही समझी जाती थी। यातायात आदि की दृष्टि से भी यही मौसम ऐसे उत्सवों के लिए अनुकूल भी होता है।

संख्या की दृष्टि से दिल्ली शाखा के भ. जिनचन्द्र द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तिया सब से अधिक हैं। प्रतिष्ठाकर्ता सेठ जीवराज पापडीवाल के प्रयत्नों से ये हजारों मूर्तिया भारत के कोने कोने मे पहुंची है। इन की प्रतिष्ठा संवत् १५४८ की अक्षयतृतीया को हुई थी। विशालता की दृष्टि से ग्वालियर और चदेरी की मूर्तिया उल्लेखयोग्य है। कारंजा के उपान्त्य भ. देवेन्द्रकीर्ति ने भी रामटेक, नागपुर आदि स्थानो में विशाल मूर्तिया स्थापित की है।

मूर्तियों के पादपीठ के लेख बहुधा टूटी फूटी सस्कृत मे लिखे जाते थे। क्वचित हिन्दी, मराठी आदि लोकभाषाओं का भी उपयोग उन के लिए हुआ है। उन का विस्तार मूर्ति के विस्तार के अनुरूप होता था।[1] सर्वाधिक विस्तृत लेख में समय, प्रतिष्ठाकर्ता सेठ की वशपरम्परा, प्रतिष्ठासचालक भट्टारक की गुरु-परम्परा, स्थान, स्थानीय और प्रादेशिक शासक तथा एकाध मंगल वाक्य इन का निर्देश होता था।

६. कार्य– ग्रन्थलेखन और संरक्षण

भट्टारक युग का ग्रन्थलेखन मुख्य रूप से पिछले युग के ग्रन्थो के संक्षेप या रूपान्तर के रूप में था। कोई नई मौलिक प्रवृत्ति उस में नहीं थी। पुराण, कथा और पूजापाठ इन तीन प्रकारो की रचनाए सख्या की दृष्टि से सर्वाधिक हैं। कर्मशास्त्र, अध्यात्म आदि गम्भीर विषयों के ग्रन्थो पर कुछ टीकाओ के अतिरिक्त अन्य लेखन नही हुआ।

---

१ लेखों के विस्तारभेद का नमूना देखिए-जैन सिद्धान्त भास्कर व. ७, पृ. १६

पुराण और कथाएं साधारणतः जिनसेन कृत हरिवंशपुराण, रविषेण कृत पद्मपुराण तथा जिनसेन कृत महापुराण के आधार पर लिखी गईं। संस्कृत में ईडर शाखा के भ. सकलकीर्ति और भ. शुभचन्द्र के विभिन्न पुराण ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश में माथुर गच्छ के भ. अमरकीर्ति, भ. यशःकीर्ति और पंडित रइधू की रचनाएं अच्छी हैं। हिन्दी में शालिवाहन, खुशालदास आदि कवि प्रमुख हैं। राजस्थानी में ब्रह्म जिनदास के रास ग्रन्थ बहुत सुन्दर हैं। गुजराती में सूरत शाखा के भ. वादिचन्द्र, जयसागर और नन्दीतट गच्छ के धनसागर तथा भ. चन्द्रकीर्ति की रचनाएं उल्लेखनीय हैं। मराठी में पार्श्वकीर्ति, गंगादास, जिनसागर और महतिसागर ये चार लेखक विशेष लोकप्रिय हो सके थे।

पूजापाठों में अष्टक, स्तोत्र, जयमाला, आरती, उद्यापन ये मुख्य प्रकार थे। जिन मूर्तियों और यन्त्रों की प्रतिष्ठा भट्टारकों द्वारा हुई उन सब के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए ये पूजापाठ नितान्त आवश्यक थे। पूजनीय व्यक्ति या तत्त्व की अपेक्षा पूजा के द्रव्य का अधिक वर्णन करना इस युग के पूजापाठों की विशेषता कही जा सकती है। इन की दूसरी विशेषता इन की गेयता है। छोटे बडे विविध मात्राओं के छंदों में रची होने से बहुधा सामान्य आशय की पूजा भी बहुत आकर्षक मालूम पडती थी। गुजराती और राजस्थानी के पुराण ग्रन्थों में और खास कर रास ग्रन्थों में भी यह गेयता मौजूद है जिस से उन की लोकप्रियता बढी है।

इन प्रमुख विभागों के बाद न्यायशास्त्र में भ. धर्मभूषण कृत न्यायदीपिका और भ. शुभचन्द्र कृत संशयिवदनविदारण उल्लेखनीय है। आचारधर्म पर षट्कर्मोपदेश, धर्मसंग्रह और त्रैवर्णिकाचार ये ग्रन्थ इस युग के प्रातिनिधिक कहे जा सकते हैं। सकलकीर्ति के मूलाचारप्रदीप में मुनिधर्म का वर्णन हुआ है। कर्मशास्त्र पर ज्ञानभूषण और सुमतिकीर्ति की कर्मकाण्ड टीका एकमात्र उल्लेखयोग्य ग्रन्थ है। प्राकृत का एक व्याकरण भ. शुभचन्द्र ने और दूसरा एक श्रुतसागरसूरि ने लिखा है। अकारान्त क्रम से लिखा हुआ संस्कृत शब्दों का कोष विश्वलोचन श्रीधरसेन की एकमात्र रचना है। हिन्दी में भगवतीदास ने अनेकार्थनाममाला कोष लिखा है। ज्योतिष और वैद्यक पर भी उन के ही ग्रन्थ हैं। गणितज्योतिष में भ. ज्ञानभूषण के कार्य का उल्लेख मिलता है किन्तु उन के कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते। इन के अतिरिक्त कैलास, समवसरण आदि अनेक स्फुट विषयों पर छोटी छोटी कविताओं की रचना की गई है।

प्राचीन ग्रन्थों के हस्तलिखितों की रक्षा यह भट्टारकों के कार्य का सब से

श्रेष्ठ अग हैं। व्रतो के उद्यापन आदि के अवसर पर नियमित रूप से एकाध प्राचीन ग्रन्थ की नई प्रति लिखा कर किसी मुनि या आर्यिका को दान दी जाती थी। गणितसारसग्रह जैसे पाठ्य पुस्तकों की कई प्रतिया शिष्यों के लिए तैयार की जाती थीं। पुराने हस्तलिखित खरीद कर उन का सग्रह किया जाता था। पुराने सग्रहो को समय समय पर ठीक किया जाता था। ग्रन्थो की भाषा कठिन हो तो उन के समासों मे टिप्पण लगा कर पढने के लिए साहाय्य किया जाता था। हस्तलिखितो की अन्तिम प्रशस्तियों का ऐतिहासिक महत्त्व सर्वमान्य है। इस ग्रन्थ में सम्मिलित समयसार और पचास्तिकाय की प्रतियों की प्रशस्तिया नमूने के तौर पर देखी जा सकती हैं। गणितसारसग्रह की प्रतिया भी प्रातिनिधिक हैं।

७. कार्य– शिष्यपरम्परा

जैन समाज मे विद्याध्ययन की व्यवस्था कुलपरम्परा पर आधारित नहीं थी। शायद इसी लिए वह ब्राह्मणपरम्परा जितनी सुदृढ नहीं रह सकी। यह कमी दूर करने के लिए हमेशा शिष्य परम्पराओं के विस्तार का प्रयत्न जैन साधुओं द्वारा किया गया। भट्टारक सम्प्रदाय भी इस प्रवृत्ति को निभाता रहा। ग्रन्थ के मूल पाठ से स्पष्ट होगा कि इस कार्य मे भट्टारकों ने काफी सफलता प्राप्त की। ब्रह्म जिनदास, श्रुतसागरसूरि, पण्डित राजमल्ल आदि भट्टारकशिष्यों के नाम उन के गुरुओं से भी अधिक स्मरणीय हुए हैं।

व्यक्तिगत महत्त्वाकाक्षा के फलस्वरूप जिस प्रकार भट्टारक पीठों की वृद्धि हुई उसी प्रकार शिष्य परम्पराओ का भी पृथक् अस्तित्व रह सका। अनेक बार देखा गया है कि भट्टारकों के जो शिष्य पट्टाभिषिक्त नहीं हुए थे उन की स्वतन्त्र शिष्य परम्पराए छह सात पीढियों तक चलतीं रहीं। गणितसारसग्रह और शब्दार्णवचन्द्रिका की प्रशस्तियों में इस के अच्छे उदाहरण मिलते है।

विभिन्न भट्टारक पीठो मे सौहार्द की रक्षा करने मे भी शिष्यपरम्परा का महत्त्वपूर्ण उपयोग हुआ। दक्षिण के पण्डितदेव और नागचन्द्र जैसे विद्वानो का उत्तर के जिनचन्द्र और ज्ञानभूषण जैसे भट्टारको से सहकार्य हुआ यह इसी का उदाहरण है। ब्रह्म शान्तिदास के सूरत और ईडर इन दोनो पीठो से अच्छे सम्बन्ध थे। इसी प्रकार पण्डित राजमल्ल भी माथुर गच्छ की दो भिन्न शाखाओं से एक ही समय सलग्न रह सके थे। कारजा के लाडबागड गच्छ के कवि पामो जैसे शिष्यो ने नन्दीतट गच्छ के भट्टारकों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किए थे। इस दृष्टि से परस्पर

सम्बन्ध और अन्य सम्प्रदायों से सम्बन्ध इन दो विभागों में आगे और विचार किया गया है।

जैनेतर सम्प्रदायों के विद्वान भी कई बार भट्टारकों के शिष्य वर्ग में सम्मिलित हुए थे। द्विज विश्वनाथ भ. इन्द्रभूषण के शिष्य थे। भ. राजकीर्ति के शिष्यों में पण्डित हाजी का उल्लेख हुआ है। गोमटस्वामीस्तोत्र के कर्ता भूपति प्राज्ञमिश्र भी जैन विद्वान प्रतीत नहीं होते। इस दृष्टि का भी विशेष विवरण अगले विभागों में होगा।

जैनेन्द्र व्याकरण, गणितसारसग्रह, कल्याणकारक जैसे शास्त्रीय ग्रन्थों को जैनेतर समाजों में उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था जिस से उन का पठन पाठन कई बार लुप्तप्राय हो गया। इस सकट में से ये ग्रन्थ जीवित रह सके इस का अधिकाश श्रेय भट्टारको के शिष्यवर्ग को ही है। इन्हीं ने इन ग्रन्थों की प्रतिलिपिया करा कर उन का अभ्यास किया और उन की आयु की वृद्धि की।

८. कार्य– जातिसंघटना

जैन समाज में इस वक्त जो जातियाँ है इन की स्थापना दसवीं सदी के करीब हुई ऐसा विद्वानों का अनुमान है। इन जातियों मे अधिकाश के नाम स्थान या प्रदेश पर आधारित हैं। बघेरा गाव से बघेरवाल, खडेला से खडेलवाल, पद्मावती से पद्मावती पल्लीवाल इत्यादि नाम रूढ हुए हैं। इस युग के हिन्दू समाज के प्रभाव से जैन समाज मे भी यह जातिसस्था अति नियमित और कठोर हुई। खानपान विवाहसबन्ध, व्यवसाय और ऊँच नीच की कल्पना इन चारों बातों मे जाति का ही निर्णायक महत्त्व होता था और बहिष्कार के शस्त्र से वह बराबर कायम रखा गया। अब इन चारो मे सिर्फ विवाहसबन्ध पर ही जाति का प्रभाव है और वह भी कई जगह ढीला पड चुका है।

साधुपद पर प्रतिष्ठित होने के नाते भट्टारक जातिभेद से ऊपर होते थे। फिर भी बिरुदावलियों मे उन की जाति का अनेक बार उल्लेख हुआ है। जाति सस्था के व्यापक प्रभाव का ही यह परिणाम है। इसी प्रकार यद्यपि भट्टारकों के शिष्यवर्ग में सम्मिलित होने के लिए किसी विशिष्ट जाति का होना आवश्यक नही था तथापि बहुतायत से एक भट्टारक पीठ के साथ किसी एक ही विशिष्ट जाति का सबन्ध रहता था। बलात्कार गण की सूरत शाखा से हुमड जाति, अटेर शाखा से लमेचू जाति, जेरहट शाखा से परवार जाति तथा दिल्ली जयपुर शाखा से

खंडेलवाल जाति का विशेष सम्बन्ध पाया जाता है । इसी प्रकार काष्ठासंघ के माथुर गच्छ के अधिकाश अनुयायी अगरवाल जाति के, नन्दीतट गच्छ के अनुयायी हूमड जाति के और लाडबागड गच्छ के अनुयायी बघेरवाल जाति के थे ।

अनेक जातियों में भाटों द्वारा जाति के सब घरानों का वृत्तान्त संग्रहित करने की प्रथा थी । ऐसे वृत्तान्तो मे अक्सर किसी प्राचीन आचार्य के द्वारा उस जाति की स्थापना होने की कहानी मिलती है । नन्दीतट गच्छ के प्रकरण से ज्ञात होगा कि नरसिंहपुरा जाति की स्थापना का श्रेय रामसेन को दिया जाता था तथा भट्टपुरा जाति उन के शिष्य नेमिसेन द्वारा स्थापित मानी जाती थी । ऐतिहासिक काल में भी सूरत के भ. देवेन्द्रकीर्ति (प्रथम) को रत्नाकर जाति का संस्थापक कहा गया है । बघेरवाल जाति में मूलसंघ के आचार्य रामसेन द्वारा और काष्ठासंघ के आचार्य लोहद्वारा धर्म की स्थापना हुई थी ऐसी कथा मिलती है । कई स्थानों पर जैनेतर समाजों में धर्मोपदेश दे कर नई जातियों की स्थापना की गई इसी का यह उदाहरण कहा जाता है । इतिहाससिद्ध न होने पर भी इन कथाओं को भावना की दृष्टि से कुछ महत्त्व अवश्य है ।

प्रत्येक जाति मे नियत सख्या के कुछ गोत्र थे । मूर्तिलेख आदि मे बहुधा इन का उल्लेख हुआ है । बघेरवाल जाति के पच्चीस गोत्र काष्ठासंघ के और सत्ताईस गोत्र मूलसघ के अनुयायी थे । नागौर शाखा के भट्टारक बहुधा खडेलवाल जाति के विभिन्न गोत्रों से लिए गए थे । लमेचू, परवार, हूमड आदि जातियों में भी गोत्रो के उल्लेख मिलते हैं । हूमड जाति में लघुशाखा और वृद्धशाखा ऐसे दो उपभेद थे । इन्हे ही दस्सा और बीसा हूमड कहते है । इसी प्रकार परवार जाति में अठसखे, चौसखे आदि भेद थे । ये भेद विवाह के समय कितने गोत्रो का विचार किया जाय इस पर आधारित थे । श्रीमाल, ओसवाल आदि कुछ जातिया श्वताम्बर सम्प्रदाय मे ही हैं । किन्तु इन के भी कुछ उल्लेख दिगम्बर भट्टारकों द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियों के लेखों में मिलते हैं ।

९. कार्य–तीर्थयात्रा और व्यवस्था

तीर्थक्षेत्रो की यात्रा और व्यवस्था ये मध्ययुगीन जैन समाज के धार्मिक जीवन के प्रमुख अंग थे । तीर्थक्षेत्रों के दो प्रकार किये जाते है । जहा किसी तीर्थंकर या मुनि को निर्वाण प्राप्त हुआ हो उसे सिद्धक्षेत्र कहते है । जहा किसी व्यक्ति, मूर्ति, या चमत्कार के कारण क्षेत्र स्थापित हुआ हो उसे अतिशयक्षेत्र

कहते हैं। सिद्धक्षेत्रों में पश्चिम में गिरनार और शत्रुंजय विशेष प्रसिद्ध थे। दक्षिण में गजपथ और मांगीतुंगी प्रसिद्ध थे। पूर्व में सम्मेदशिखर, चम्पापुरी और पावापुरी ये सर्वमान्य सिद्धक्षेत्र थे। मध्य भारत में सोनागिरि और चूलगिरि (बडवानी) को कुछ महत्त्व था। अतिशयक्षेत्रों में सुदूर दक्षिण में श्रवणबेलगोल की गोमटेश्वर की महामूर्ति सब से अधिक प्रसिद्ध थी। राजस्थान में धूलिया के केशरियानाथजी की कीर्ति सर्वाधिक थी। हैद्राबाद राज्य के माणिक्यस्वामी भी काफी लोकप्रिय थे।

कारंजा के सेनगण के पट्टाधीशों में भ. जिनसेन और नरेन्द्रसेन ने लम्बी यात्राएं कीं। वहीं के बलात्कार गण के पट्टाधीश देवेन्द्रकीर्ति (तृतीय) ने पश्चिमी क्षेत्रों की छह यात्राएं कीं। ईडर शाखा के भ. सकलकीर्ति (प्रथम) और भ. पद्मनन्दि की शत्रुंजय यात्राएं स्मरणीय रहीं। भानपुर शाखा के भ. रत्नकीर्ति के शिष्यों ने दक्षिण की यात्रा की। सूरत शाखा के भ. विद्यानन्दि, उन के शिष्य श्रुतसागरसूरि और भ. इन्द्रभूषण ने विस्तृत यात्राओं का नेतृत्व किया। नन्दीतट गच्छ के भ. चन्द्रकीर्ति और भ. इन्द्रभूषण ने दक्षिण की विस्तृत यात्राएं कीं। इन के अतिरिक्त छोटी मोटी अनेक यात्राओं के उल्लेख मिलते हैं जो भौगोलिक नाम सूची में पूरी तरह संकलित किये गए हैं। परस्परसम्बंध के निरूपण में कुछ तीर्थयात्राओं पर प्रस्तावना के अगले विभागों में और विचार हुआ है।

नन्दीतट गच्छ के ब्रह्म ज्ञानसागर ने अपने समय के तीर्थक्षेत्रों का वर्णन स्फुट कवित्तों में किया है। इस में सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्र मिला कर ७८ क्षेत्रों का उल्लेख हुआ है। इस का सारांश अन्यत्र प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार जयसागर की तीर्थजयमाला, श्रुतसागर की रविव्रत कथा तथा षट्प्राभृतटीका और छत्रसेन की पार्श्वनाथपूजा में भी अनेक तीर्थक्षेत्रों के उल्लेख हैं। विस्तार भय से ये सब मूल ग्रन्थ में समाविष्ट नहीं किए जा सके। तीर्थक्षेत्रों के इतिहास की दृष्टि से इन का अपना महत्त्व है।

महावीरजी क्षेत्र की व्यवस्था जयपुर शाखा के भट्टारकों द्वारा, सोनागिरि की वहीं के भट्टारकों द्वारा तथा केशरियाजी क्षेत्रकी व्यवस्था काष्ठासंघ के भट्टारकों द्वारा होती थी। इस दृष्टिसे विशेष उल्लेख प्राप्त नहीं हुए हैं किन्तु होने की संभावना अवश्य है।

१०. कार्य– चमत्कार

मन्त्र तन्त्रों की साधना द्वारा किसी देवी या देव को प्रसन्न कर लेना भट्टारकों का विशेष कार्य माना जाता था। ऐहिक दृष्टि से मुक्त होने के कारण और श्रावकों से कम सम्बन्ध होने के कारण मुनियों को मन्त्रसाधना करने का निषेध था। भट्टारकों का स्थान समाज के शासक के रूप मे होने से उन के लिए मन्त्रसाधना इष्ट ही समझी जाती थी। सूरत शाखा के भ मल्लिभूषण ने पद्मावती देवी की आराधना की थी, तथा लाडबागड गच्छ के भ महेन्द्रसेन ने क्षेत्रपाल को सम्बोधित किया था, ऐसे उल्लेख प्राप्त हुए हैं।

मन्त्रसाधना द्वारा भट्टारकों ने जो चमत्कार किये उन के कुछ उल्लेख प्राप्त हुए हैं। इन में पालकी का आकाश गमन मुख्य है। भ. सोमकीर्ति ने पावागढ मे और भ. मलयकीर्ति ने आनरी मे यह चमत्कार किया था। सूरत के अन्तिम भट्टारकों के विषय में भी ऐसी ही अनुश्रुति प्राप्त हुई है। सरस्वती की पाषाण मूर्ति के द्वारा दिगम्बर सम्प्रदाय का प्राचीनत्व सिद्ध किया गया यह भी चमत्कारों का अच्छा उदाहरण है। सामान्यतः यह चमत्कार आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा किया गया ऐसा मानते हैं, किन्तु कुछ विद्वानों के मत से यह चमत्कार उत्तर शाखा के भ. पद्मनंदि द्वारा किया गया था। कारंजा शाखा के भ. पद्मनदि की मृत्यु मुक्तागिरि क्षेत्र पर किसी चमत्कार के कारण हुई ऐसी लोकोक्ति है। कारंजा के भ. देवेन्द्रकीर्ति (उपान्त्य) ने भातकुली के प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर लगी हुई आग मन्त्रित जल द्वारा शान्त की ऐसी भी अनुश्रुति है।

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध मे चमत्कारो का कोई महत्त्व नहीं रहा है। किन्तु मध्ययुग की सामान्य लोगों की भावनाओं को देखते हुए उसे धर्म के क्षेत्र में जो स्थान मिला वह स्वाभाविक ही प्रतीत होता है।

११. कार्य– कलाकौशल्य का संरक्षण

मध्ययुगीन समाज के जीवन मे धर्म को जो महत्त्वपूर्ण स्थान था उस के कारण अन्यान्य अनेक क्षेत्रों का धर्म से सम्बन्ध स्थापित हो गया था। धर्म के नेता के नाते भट्टारकों ने विविध कलाओं को समय समय पर प्रोत्साहन दिया यह इसी का उदाहरण है। सगीत, शिल्प, चित्र, नृत्य आदि कलाओं के विषय मे इस ग्रन्थ में अनेक उल्लेख प्राप्त हुए हैं।

पूजाप्रतिष्ठा भट्टारकों का प्रमुख कार्य था और इस में सगीत का महत्त्वपूर्ण स्थान था। इस युग के पूजापाठों मे गेयता विशेष रूप से है इस का निर्देश पहले

किया जा चुका है। प्रतिष्ठा उत्सव के समय अक्सर दूर दूर से भजन या कीर्तन के लिए गायक बुलाए जाते थे। इस के अलावा अन्य समय भी हफ्ते में एकबार मन्दिरों में सामुदायिक भजन करने की प्रथा थी। भजनों के लिए भट्टारकों द्वारा रचे गए कई पद उपलब्ध होते हैं।

मूर्ति, यन्त्र और मन्दिरों की निर्मिति में भट्टारकों द्वारा शिल्पकला के संरक्षण मे महत्त्वपूर्ण योगदान मिला है। कई स्थानों पर मन्दिरों में पाषाण या लकडी के स्तम्भों या छतों पर जिनेन्द्र जन्माभिषेक, सम्मेदशिखर आदि तीर्थक्षेत्र और अन्यान्य कथाओं की प्रतिकृतिया प्राप्त होती हैं। सूरत के गोपीपुरा मन्दिर की एक मेरुमूर्ति पर चार भट्टारकों की मूर्तियां निर्मित हैं। जिन्तूर के निकट नेमगिरी पर नेमिनाथ की विशाल मूर्ति के पादपीठ पर उस क्षेत्र के संस्थापक वीर संघपति और उनके कुटुंबियों की सुंदर मूर्तिया उत्कीर्ण हैं। इसी प्रकार अनेक स्थानों पर मन्दिरों के सामने विशाल मानस्तम्भों का निर्माण हुआ है जिन पर समवसरणादि विविध दृश्य अंकित मिलते हैं। भट्टारकों के समाधिस्थानों पर निर्माण किये गए स्मारक भी कई स्थानों पर दर्शनीय बने हैं।

हस्तलिखितों की प्रतिया कराते वक्त कई भट्टारकों ने अपने चित्रकलाप्रेम का परिचय दिया है। जिनसागर विरचित सुगन्धदशमी-कथा की एक प्रति ७३ चित्रों से विभूषित है जो नागपुर के सेनगणमन्दिर में उपलब्ध हुई है। अंजनगाव के बलात्कारगण मन्दिर में चौवीस तीर्थंकरों के शास्त्रोक्त आसन, यक्ष, यक्षिणियाँ, वर्ण आदि से युक्त सुन्दर चित्र प्राप्त हुए हैं। नागपुर के त्रैलोक्यदीपक नामक हस्तलिखित में बडे प्रमाण पर मानचित्रों का अंकन हुआ है। काष्ठासंघ माथुरगच्छ के भ. क्षेमकीर्ति के उपदेश से वैराट नगर के जिनमन्दिर को विविध चित्रों से अलंकृत किया गया था। कई सुन्दर प्रतियों का लेखन सुवर्णाक्षरों द्वारा हुआ है। पूजा के लिए जो मण्डल बनाये जाते थे उन में भी कई बार चित्रकला के अच्छे नमूने प्राप्त होते हैं।

मध्ययुग में अन्य कलाओं की अपेक्षा नृत्य कला कुछ हीन लोगों की कला मानी जाती थी। फिर भी विविध धार्मिक उत्सवों के अवसर पर टिपरियों के खेल को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। खास कर विजयादशमी और पद्मावती की रथयात्रा के अवसर पर नियमपूर्वक इस का प्रयोग होता था।

इन सब कलाओं के केन्द्रित होने के कारण ही मध्ययुग में मन्दिरों को समाज जीवन के केन्द्रों का स्थान मिल सका। इस से इन कलाओं का अस्तित्व

बना रहा और साथ ही उन में गम्भीरता और पावित्र्य की भावना भी दृढ हो सकी। इसी लिए बाल और वृद्ध, स्त्री और पुरुष सभी प्रकार के व्यक्ति मन्दिरों की ओर आकर्षित हो सके। जैन समाज का अन्य समाजों से सौहार्द स्थापित करने मे भी इन कलाओं का विशेष महत्त्व रहा।

१२. अन्य सम्प्रदायों से सम्बन्ध

सेन संघ, काष्ठासघ और बलात्कारगण की परम्पराओं के आरंभ काल मे जैन धर्म के प्रतिस्पर्धी वैदिक और बौद्ध ये दो धर्म प्रचलित थे। इस लिए बौद्ध दर्शन की अनेक मान्यताओं के खडन का प्रयास जिनसेन, गुणभद्र आदि आचार्यों के ग्रन्थों में दिखाई देता है। किन्तु भट्टारक परम्पराएं दृढमूल हुई उस समय तक बौद्ध धर्म भारतवर्ष से प्रायः पूरी तरह निर्वासित हो चुका था। इस लिए भट्टारक पीठों से बौद्ध सम्प्रदाय के सम्बन्धों का प्रश्न ही नहीं उठता। अपवाद रूप से नन्दीतटगच्छ के भ. विजयकीर्ति द्वारा वसुधारा नामक बौद्ध तन्त्र विषयक रचना की एक प्रतिलिपि की गई थी जो हाल मे ही उपलब्ध हुई है। पट्टावली आदि में कहीं कहीं बौद्धों के पराजय के जो उल्लेख हैं उन्हें प्रत्यक्ष आधार न होने से पुरानी परंपरा का अनुकरण मात्र समझना चाहिये। बौद्ध ग्रन्थों के अध्ययन या अध्यापन की प्रथा भी भट्टारक सम्प्रदाय में बिलकुल नहीं थी जो श्वेताम्बरों में कुछ हद तक कायम रह सकी।

इन परंपराओ के आरभ काल में वैदिक सम्प्रदायो का अद्भुत प्रभाव जैन समाज पर पडा। इस से जैन समाज का ढाचा बिल्कुल ही बदल गया। एक सवर्ण हिन्दू की तरह जैन भी जातिसिद्ध उच्चता पर विश्वास करने लगे। सामाजिक और वैधानिक मामलों मे भी जैनो ने प्रायः पूरी तरह वैदिकों का अनुकरण किया। आरंभसे मठसस्था कैसे उत्पन्न हुई इसका अभी पूरा सशोधन नहीं हुआ है, तो भी भट्टारक सम्प्रदाय के विकास पर शकराचार्य द्वारा स्थापित मठों का परिणाम स्पष्ट दिखाई देता है। शायद उस समयकी माग ऐसी ही कुछ होगी। भट्टारक पीठों मे भी कई दृष्टियों से वैदिक पद्धतियों का प्रवेश हुआ। पद्मावती आदि देवियों को काली, दुर्गा या लक्ष्मी का ही रूपान्तर माना जाने लगा। अध्यात्म-शास्त्रों के व्याख्यान में आत्मा के समान ही ब्रह्म का निरूपण होने लगा। कथा पुराणों में भी कई वैदिक कथाओं का समावेश किया गया। भट्टारकों के लिए शिक्षक या शिष्यों के रूप में कई बार वैदिक पण्डितों की योजना होती थी। इस से यह प्रभाव व्यापक हो सका। द्विज विश्वनाथ, भूपति प्राज्ञ मिश्र, शैव माधव

ये भट्टारकों के प्रभाव क्षेत्र के घटक बन सके ।

अप्रत्यक्ष रूप से यद्यपि इस प्रकार वैदिक सम्प्रदाय से समझौता किया गया तथापि प्रत्यक्ष रूप से अनेक बार उस से संघर्ष भी हुआ। विभिन्न वादविवादों में श्रुतसागरसूरि ने नीलकण्ठ भट्ट का, प्रतापकीर्ति ने केदारभट्ट का, विजयसेन ने चन्द्रतपस्वी का, चन्द्रकीर्ति ने कृष्णभट्ट का और धारसेन ने धनेश्वरभट्ट का पराजय किया था। ग्रन्थों में भी न्याय, वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त आदि वैदिक दर्शनों पर खंडनात्मक लेखन किया गया ।

बारहवीं सदी से मुस्लिम राजसत्ता भारत में दृढमूल हुई। नग्न मुनियों के स्थान पर भट्टारकों की स्थापना होने में इस परिस्थिति का बडा हाथ था। आगे चल कर भट्टारकों ने अनेक मुस्लिम शासकों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लिए। मुस्लिमों द्वारा इस युग में जैनों पर कोई विशेष अन्याय हुआ हो ऐसा ज्ञात नहीं होता। किन्तु मुस्लिम समाज या इस्लाम धर्म से जैनों का विशेष सम्बन्ध नहीं आता था। अपवाद रूप से भ राजकीर्ति के शिष्य प हाजी अवश्य मुस्लिम प्रतीत होते हैं।

भट्टारकों से श्वेताम्बर सम्प्रदाय के सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं थे। शायद इस लिए कि इन दोनों के बाह्य रूप में कोई अन्तर नहीं रहा था, वे अपना विरोध अन्य मार्गों से प्रकट करते रहते थे। भ. श्रीभूषण ने एक विवाद में श्वेताम्बरों का एक मन्दिर गिरा कर उन्हें निर्वासित कराया था। स्थानकवासी सम्प्रदाय के मूर्तिपूजा विरोध के लिए श्रुतसागर सूरि ने जगह जगह उन की निन्दा की है। स्थानकवासी साधु उच्च नीच का विचार न करते हुए सब लोगों से आहार ग्रहण करते थे इस पर भी उन्हें काफी गुस्सा आता था। केवलियों का आहार, स्त्री मुक्ति और भ महावीर का गर्भान्तरण इन श्वेताम्बर मान्यताओं के खण्डन के लिए भ शुभचन्द्र ने संशयिवदनविदारण नामक ग्रन्थ लिखा। अपवाद रूप से कारंजा के भट्टारकों के विषय में श्वेताम्बर साधु शीलविजय ने प्रशंसात्मक उद्गार व्यक्त किए थे। किन्तु ऐसे प्रसंग बहुत ही कम बार आते थे। श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदाय के इस विरोध का एक प्रमुख कारण तीर्थक्षेत्रों का अधिकार था। माणिक्यस्वामी, केशरियाजी, चंदवाड, जीरापल्ली, आदि अतिशय क्षेत्र और प्राय

---

* यह मतप्रणाली प्राप्त ऐतिहासिक आधारोंकी सीमाओंमें समझ लेनी चाहिए। यह अभी विचाराधीन है, और इस विषयमें मतभेद भी है।

—ग्रंथमाला संपादक

सभी सिद्धक्षेत्र दोनों सम्प्रदायों द्वारा पूज्य थे इस लिए उन पर अधिकार पाने के लिए प्रायः झगडे होते रहते थे।

सत्रहवीं शताब्दी मे राजस्थानके आसपास जैन सम्प्रदाय में शुद्धीकरण-वादी तेरापंथ की स्थापना हुई। नाटक समयसार आदि के कर्ता पण्डित बनारसी-दास इस सम्प्रदाय के नेता थे। पूजा पद्धति को सादी करना, मूल अध्यात्मशास्त्रो का अध्ययन और अध्यापन बढाना तथा शास्त्रोक्त आचरण न करनेवाले भट्टा-रकों को पूज्य नही मानना ये इस सम्प्रदाय के प्रमुख लक्षण थे। भट्टारक सम्प्र-दाय में शासनदेवताओं की पूजा को एक प्रमुख स्थान मिला था उसे भी तेरापथ ने नष्ट करना चाहा। स्वभावतः भट्टारकों द्वारा इस पथ का विरोध किया गया। अपवाद रूप से कारजा के भ. देवेन्द्रकीर्ति (तृतीय) के सम्पर्क में आ कर आगरा निवासी जीवनदास ने तेरापथ का अपना अभिमान छोड दिया ऐसा उल्लेख मिलता है।

दक्षिण में श्रवणबेलगोल, कारकल, हुबच और मुडबिद्री इन स्थानो पर देशीय गण आदि परम्पराओं के भट्टारक पीठ थे। ये दिगम्बर सम्प्रदाय के ही होने से इन के सम्बन्ध उत्तरीय भट्टारकों से प्रायः अच्छे रहते थे। पण्डितदेव, नागचन्द्रसूरि, श्रुतमुनि आदि दाक्षिणात्य विद्वान् भ. जिनचन्द्र, ज्ञानभूषण, श्रुत-सागरसूरि आदि से सम्बन्ध स्थापित करते थे। कारजा के भ. धर्मचन्द्र श्रवण-बेलगोल पहुचे तब भ. चारुकीर्ति से उन की मुलाकात हुई थी। नन्दीतटगच्छ के भ. चन्द्रकीर्ति ने नरसिंहपुर मे एक विवाद में विजय पाई उस समय भ. चारु-कीर्ति उन्हें मिलने आए थे।

१३. परस्पर सम्बन्ध

भट्टारक सम्प्रदायों के परस्पर सम्बन्ध प्रायः व्यक्तिगत मनोवृत्ति पर निर्भर रहते थे। इसी लिए न तो उन में कोई स्थायी वैर दिखाई देता है, न स्थायी प्रेम। सहकार्य या झगडे के लिए कोई तत्त्व आधारभूत नहीं था। इसी लिए समय समय पर विभिन्न प्रकार के सम्बन्ध स्थापित हो सके।

सेन गण के प्राचीन आचार्य वीरसेन और जिनसेन अपनी प्रतिभा और विद्वत्ता के कारण पुन्नाट सघ के आचार्य जिनसेन द्वारा सन्मानित हुए थे। उन ने जिन आचार्यों का पूज्य बुद्धि से स्मरण किया है उन में भी सम्प्रदायभेद की कोई झलक नहीं आती। आचार्य कुन्दकुन्द का अनुल्लेख अवश्य कुछ खटकता है।

इसी परपरा के पल्लपण्डित ने आचार्य शाकटायन पाल्यकीर्ति की व्याकरण-कुशलता का उल्लेख किया है। शाकटायन यापनीय सघ के थे यह सुप्रसिद्ध है।

सेनगण की उत्तरकालीन परम्परा में भ. वीरसेन (प्रथम) ने नन्दीतटगच्छ के भ सोमकीर्ति के साथ एक प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लिया था। इन के बाद भ. सोमसेन (चतुर्थ) ने धर्मरसिक की प्रशस्ति में महेन्द्रकीर्ति का गुरु रूप में उल्लेख किया है। इन के शिष्य भ. जिनसेन पूर्वाश्रम में ईडर शाखा के भ. पद्मनन्दि के शिष्य रह चुके थे। इस परम्परा के अन्तिम भ. वीरसेनस्वामी का पट्टाभिषेक कारंजा के ही बलात्कारगण के पट्टाधीश भ. देवेन्द्रकीर्ति के हाथों हुआ था। इन के बाद भ. रत्नकीर्ति और भ देवेन्द्रकीर्ति ये दो और भट्टारक बलात्कारगण की कारंजा शाखा में हुए। वीरसेन स्वामी के इन के व्यक्तिगत सम्बन्ध खास विरोध के नहीं थे। किन्तु इन के शिष्य वर्ग में परस्पर वैर की भावना बहुत तीव्र हो चुकी थी। अब नए युग के प्रभावसे यह विरोध लुप्तप्राय हो चुका है।

लातूर और कारंजा ये बलात्कारगण की एक ही परपरा की दो शाखाए होने से आरभ में इन के सम्बन्ध काफी अच्छे थे। किन्तु बाद में लातूर के भ. नागेन्द्रकीर्ति का कारंजा के भ देवेन्द्रकीर्ति (उपान्त्य) से एकबार अपने अधिकार क्षेत्र को ले कर कुछ विरोध भी हुआ था।

दिल्ली शाखा के भ जिनचन्द्र का प्रभाव व्यापक था। सूरत के भ. विद्यानन्दि, ईडर के भ ज्ञानभूषण तथा अटेर के भ. सिंहकीर्ति और नागौर के भ रत्नकीर्ति इन के प्रभावक्षेत्र में सम्मिलित होते थे। इसी शाखा के भ चन्द्रकीर्ति का उल्लेख नागौर के भ नेमिचन्द्र द्वारा लिखाई गई एक ग्रन्थप्रशस्ति में मिलता है।

ईडर के भ. सकलकीर्ति ने ज्ञानकीर्ति, धर्मकीर्ति और भुवनकीर्ति इन को भट्टारक पद पर प्रतिष्ठित किया था। इन के शिष्य ब्रह्म जिनदास के अनेक शिष्य थे। इन में ब्रह्म शान्तिदास ने सकलकीर्ति की परम्परा के समान ही सूरत की भ. लक्ष्मीचन्द्र की परम्परा से भी सम्बन्ध स्थापित किए थे। अपने ग्रन्थों के कारण अन्य अनेक सम्प्रदायों द्वारा सकलकीर्ति सन्मानित हुए थे। ईडर शाखा के ही भ शुभचन्द्र ने सूरत के लक्ष्मीचन्द्र और वीरचन्द्र का स्मरण किया है।

भानपुर शाखा के भ गुणचन्द्र के गुरु भ सिंहनन्दी का। सूरत शाखा के श्रुतसागरसूरि तथा ब्रह्म नेमिदत्त ने आदरपूर्वक स्मरण किया है। इसी शाखा के भ रत्नचन्द्र (प्रथम) का पट्टाभिषेक हेमकीर्ति द्वारा हुआ था किन्तु उस समय

जडी शाखा के (सम्भवतः ईडर) कुछ श्रावकों ने विघ्न उपस्थित करने की कोशिश की थी।

सूरत शाखा के भ. विद्यानन्दी ने काष्ठासंघीय श्रावकों के लिए भी मूर्ति-प्रतिष्ठाएं कीं। इन के शिष्य श्रुतसागर सूरि के विविध सम्बन्धों का उल्लेख पहले हो चुका है। इन की परम्परा के भ. लक्ष्मीचन्द्र के शिष्यों मे कारंजा के वीरसेन और विशालकीर्ति भट्टारक प्रमुख थे। इन के प्रशिष्य भ. ज्ञानभूषण के शिष्यों में भी काष्ठासंघ के भ. रत्नभूषण का समावेश होता था। सूरत के ही भ. वादिचन्द्र का नन्दीतटगच्छ के भ. श्रीभूषण के साथ एक बार वादविवाद हुआ था।

जेरहट शाखा के श्रुतकीर्ति ने दिल्ली के भ. जिनचन्द्र के शिष्य विद्यानन्दि का स्मरण किया है।

माथुर गच्छ की दो विभिन्न परम्पराओं से लाटीसंहिता और जम्बूस्वामीचरित के कर्ता पण्डित राजमल्ल एक ही समय सम्बद्ध थे। एक ही गच्छ की होने पर भी इन परम्पराओं मे अन्य विशेष सम्बन्ध नहीं पाए जाते।

लाडबागड गच्छ के भ. पद्मसेन के शिष्य नरेन्द्रसेन ने आशाधर को सघबाह्य कर दिया था तब उन ने श्रेणिगच्छ का आश्रय लिया था। इन की परम्परा के मलयकीर्ति ने तरसुम्बा मे मयूरपिच्छ धारण करनेवालों का पराजय किया था। त्रिभुवनकीर्ति के बाद इस शाखा में कोई भट्टारक नहीं हुए इस लिए इस के अनुयायी नन्दीतट गच्छ के भट्टारकों द्वारा ही समस्त धार्मिक कार्य कराते थे।

नन्दीतट गच्छ के भ. श्रीभूषण और चन्द्रकीर्ति का मूलसंघ के प्रति बहुत ही विकृत दृष्टिकोण था। मयूरपिच्छ की उन ने खूब निन्दा की है। किन्तु इन्ही के परम्परा के इन्द्रभूषण के समय फिर से सेनगण और बलात्कारगण के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित हो गए थे।

१४. शासकों से सम्बन्ध

इस युग मे किसी राजाने प्रत्यक्ष रूप से जैन धर्म धारण किया हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। अपवाद सिर्फ राष्ट्रकूट सम्राट अमोघवर्ष का हो सकता है। आदिपुराण आदि के कर्ता जिनसेन, गणितसारसंग्रह के कर्ता महावीर एवं शाकटायन व्याकरण के कर्ता पाल्यकीर्ति ने आप की बहुत प्रशंसा की है।

ईडर के राव भाणजी के मन्त्री भोजराज जैनधर्मीय थे। इन के कुटुम्बीयों ने श्रुतसागर सूरि के साथ गजपन्थ और मागीतुंगी तीर्थक्षेत्रों की यात्रा की थी।

इसी प्रकार विजयनगर के मन्त्री इरुग दण्डनायक जैन थे। आप ने भ. धर्मभूषण के उपदेश से विजयनगर में कुन्थुनाथ का भव्य मन्दिर बनवाया था। जयपुर आदि राजस्थान के राज्यों में भी समय समय पर जैनधर्मीय मन्त्री हुए हैं।

जो राजा स्वय जैन नहीं थे उन ने भी समय समय पर भट्टारकों की विद्वत्ता या मन्त्रप्रभाव से प्रभावित हो कर उन का सत्कार किया था। राजा भोज की सभा में लाडबागड गच्छ के भ शान्तिषेण सत्कृत हुए थे। इसी गच्छ के भ. विजयसेन कनौज के राजा हरिश्चन्द्र द्वारा सन्मानित हुए थे। ईडर के राव रणमल ने भ. मलयकीर्ति का तथा कलबुर्गा के सुलतान फिरोजशाह ने भ. नरेन्द्र-कीर्ति का सन्मान किया था। मालवा के सुल्तान ग्यासुद्दीन द्वारा सूरत शाखा के भ. मल्लिभूषण का आदर किया गया। इसी शाखा के भ. लक्ष्मीचद्र और ईडर के भ. ज्ञानभूषण ने कर्णाटक के देवराय, मल्लिराय, भैरवराय आदि कई स्थानीय शासकों से सन्मान पाया था। कारजा शाखा के पूर्व रूप के भ. विशालकीर्ति दिल्ली के सुलतान सिकन्दर, विजयनगर के सम्राट विरूपाक्ष एव आरग के दंडनायक देवप्प द्वारा सत्कृत हुए थे। इन्हीं के शिष्य विद्यानद ने भी मल्लिराय आदि शासकों से सन्मान पाया था।

सेन गण, बलात्कार गण एव पुन्नाट गण के प्राचीन समय के उल्लेख बहुधा दानपत्रों के रूप में प्राप्त हुए हैं। उत्तरकालीन चालुक्यों में राजा त्रिभुवनमल्ल, रानी केतलदेवी, राजा त्रैलोक्यमल्ल आदि के दानपत्र उल्लेखनीय हैं। कच्छपघात वश के राजा विक्रमसिंह ने भ. विजयकीर्ति को नवनिर्मित जिनमन्दिर के लिए भूमिदान दिया था। उत्तरकालीन भट्टारकों के विषय में भी ऐसे अनेक उल्लेख प्राप्त हो सकेंगे यद्यपि ऐसे प्रत्यक्ष उल्लेख अभी उपलब्ध नहीं हो सके हैं।

इन प्रत्यक्ष सम्बन्धों के अतिरिक्त ग्रन्थप्रशस्ति आदि में तत्कालीन राजाओं के अनेक उल्लेख मिलते हैं। ग्वालियर के तोमर वशीय राजा वीरमदेव, डूगरसिंह, कीर्तिसिंह एव मानसिंह का कालनिर्णय माथुरगच्छ के भट्टारकों ने उन के जो उल्लेख किए हैं उन्हीं से हो सकता है। मुगल वश के बाबर से लेकर महम्मदशाह तक प्राय सभी सम्राटों के उल्लेख अन्यान्य ग्रन्थप्रशस्तियों में मिले हैं। हिन्दुओं को भयभीत कर देने वाले औरगजेब के समय भी जैन ग्रथकर्ता अपना कार्य शान्ति-पूर्वक जारी रख सके थे। इन उल्लेखों में सम्राट अकबर के विषय में लाटीसंहिता के कर्ता पण्डित राजमल्ल ने लिखे हुए ७० श्लोक विशेष महत्त्व के हैं। इन में एक महाकाव्य के समान ही अकबर और उस की राजधानी आगरा का वर्णन किया है।

१५. उपसंहार

भट्टारक सम्प्रदाय का इतिहास अब तक कुछ उपेक्षित सा रहा है। इस ग्रन्थ में उस के एक भाग का उपलब्ध वृत्तान्त संगृहीत हुआ है। इस से यह स्पष्ट होता है कि इतिहास का यह भाग भी काफी महत्त्वपूर्ण है। इसी पद्धति से दिगम्बर सम्प्रदाय के मुडबिद्री, श्रवणबेलगुल, कारकल, हुमच और कोल्हापुर के भट्टारक पीठों का वृत्तान्त तथा श्वेताम्बर सम्प्रदाय के बीकानेर, दिल्ली, लखनऊ आदि अनेक भट्टारक पीठों का वृत्तान्त संगृहीत किया जाए तो जैन सम्प्रदाय का एक हजार वर्षों का इतिहास बहुत कुछ स्पष्ट और प्रामाणिक रूप ले सकेगा।

इस ग्रंथ में एक सीमित संख्या में ही साधनों का उपयोग हो सका है। अभी अनेक भट्टारक पीठों के शास्त्रभाडार, अनेक मूर्तिलेख एव शिलालेखों का अवलोकन कर के नई सामग्री प्रकाश में लाई जा सकती है। इसी प्रकार ऐसे कई मूर्तिलेख आदि साधन सन्दिग्धता के कारण इस ग्रन्थ में समाविष्ट नहीं किए हैं। अधिक साधन उपलब्ध होने पर इन की सन्दिग्धता भी दूर हो सकती है। इस तरह साधनों की मर्यादाओं के बावजूद इस ग्रन्थ में कोई ४०० भट्टारकों का, उन के १७५ शिष्यों का, ३०० ग्रन्थों का, ९० मन्दिरों का, ३१ जातियों का, १०० शासकों का तथा २०० स्थानों का उल्लेख हुआ है एवं उन का ऐतिहासिक मूल्य निर्धारित हुआ है। यदि सब साधनों का पूरा उपयोग किया जाए तो यह संख्या आसानी से दुगुनी हो सकती है।

भट्टारक सम्प्रदाय के इतिहास में जैनसमाज की अवनति का ही इतिहास छिपा है। किन्तु उस में कई उज्ज्वल व्यक्तिमत्त्व हमारा ध्यान आकर्षित करने के लिए समर्थ हैं। भ. शुभचन्द्र और भ. सकलकीर्ति जैसे ग्रन्थकर्ता और भ. जिनचन्द्र जैसे मूर्तिप्रतिष्ठापक आचार्यों की सर्वथा उपेक्षा की जाए तो जैन समाज का इतिहास अधूरा ही रहेगा। उन्नति का इतिहास प्रेरक शक्ति के रूप में उपयुक्त होता है। उसी प्रकार अवनति का इतिहास भी अनेक शिक्षाएं दे सकता है। भट्टारक सम्प्रदाय के इतिहास में जो सरक्षणशीलता दृष्टिगोचर होती है उस के परिणामों से सावधान हो कर यदि हम फिर एक बार विकासशील प्रवृत्ति को अपना सके तो जैन समाज फिर एक बार अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर सकती है।

---

१. सेनगण

लेखांक १ – षट्खंडागमटीका धवला वीरसेन

अज्जज्जणंदिसिस्सेणुज्जुवकम्मस्स चंदसेणस्स ।
तह णत्तुवेण पंचत्थूहण्णयभाणुणा मुणिणा ॥
सिद्धंतछंदजोइसवायरणपमाणसत्थणिवुणेण ।
भट्टारएण टीका लिहिएसा वीरसेणेण ॥
अट्ठतीसम्हि सासिय विक्कमरायम्हि एसु संगरमो ।
पासे सुतेरसीए भावविलग्गे धवलपक्खे ॥
जगतुंगदेवरज्जे रियम्हि कुंभम्हि राहुणा कोणे ।
सूरे तुलाए संते गुरुम्हि कुलविल्लए होंते ॥
चावम्हि वरणिवुत्ते सिंघे सुक्कम्हि णेमिचंदम्हि ।
कत्तियमासे एसा टीका हु समाणिआ धवला ॥
वोद्दणरायणरिंदे णरिंदचूडामणिम्हि भुंजंते ।
सिद्धंतगंथमत्थिय गुरुप्पसाएण विगता सा ॥

(भाग १ प्रस्तावना पृ. ३६)

लेखांक २ – कसायपाहुडटीका जयधवला जिनसेन

श्रीवीरसेन इत्यात्तभट्टारकपृथुप्रथः ।
पारदृश्वाधिविश्वानां साक्षादिव स केवली ॥
यस्तप्तोद्दीप्तकिरणैर्भव्यांभोजानि बोधयन् ।
व्यद्योतिष्ट मुनीनेनः पंचस्तूपान्वयांबरे ॥
प्रशिष्यश्चंद्रसेनस्य यः शिष्योऽप्यार्यनंदिनाम् ।
कुलं गणं च संतानं स्वगुणैरुदजिज्वलत् ॥
तस्य शिष्योऽभवच्छ्रीमान् जिनसेनः समिद्धधीः ।
–इति श्रीवीरसेनीया टीका सूत्रार्थदर्शिनी ।
वाटग्रामपुरे श्रीमद्गूर्जरार्यानुपालिते ॥
फाल्गुने मासि पूर्वाह्ने दशम्यां शुक्लपक्षके ।
प्रवर्धमानपूजोरुनंदीश्वरमहोत्सवे ॥
अमोघवर्षराजेंद्रप्राज्यराज्यगुणोदया ।

निष्ठिता प्रचय यायादाकल्पातमनल्पिका ॥
एकोनषष्टिसमधिकसप्तशताब्देषु शकनरेन्द्रस्य ।
समतीतेषु समाप्ता जयधवला प्राभृतव्याख्या ॥

(भाग १ प्रस्तावना पृ. ६९)

लेखांक ३ – आदिपुराण

अहं सुधर्मो जम्ब्वाख्यो निखिलश्रुतधारिण ।
क्रमात्कैवल्यमुत्पाद्य निर्वास्यामस्ततो वयम ॥ १३९
त्रयाणामस्मदादीना काल केवलिनामिह ।
द्वाषष्टिवर्षपिंड स्याद् भगवन्निर्वृते परम ॥ १४०
ततो यथाक्रम विष्णुर्नंदिमित्रोऽपराजित ।
गोवर्धनो भद्रबाहुरित्याचार्या महाधिय ॥ १४१
चतुर्दशमहाविद्यास्थानाना पारगा इमे ।
पुराण द्योतयिष्यति कार्त्स्न्येन शरद शतम ॥ १४२
विशाखप्रोष्ठिलाचार्यौ क्षत्रियो जयसाह्वय ।
नागसेनश्च सिद्धार्थो धृतिषेणस्तथैव च ॥ १४३
विजयो बुद्धिमान् गगदेवो धर्मादिशब्दत ।
सेनश्च दशपूर्वाणा धारका स्युर्यथाक्रमम् ॥ १४४
त्र्यशीत शतमब्दानामेतेषा कालसग्रह ।
तदा च कृत्स्नमेवेद पुराण विस्तरिष्यते ॥ १४५
ज्ञानविज्ञानसपन्न गुरुपर्वान्वयादिद ।
प्रमाण यच्च यावच्च यदा यच्च प्रकाशते ॥ १५२
तदापीदमनुस्मर्तु प्रभविष्यति धीधना ।
जिनसेनाग्रगा' पूज्या कवीना परमेश्वरा ॥ १५३

पर्व ३, (स्याद्वाद ग्रथमाला, इन्दौर १९१६)

लेखांक ४ – पार्श्वाभ्युदय

इति विरचितमेतत्काव्यमावेष्ट्य मेघ ।
बहुगुणमपदोप कालिदासस्य काव्य ॥

मलिनितपरकाव्यं तिष्ठतादाशशांक ।
भुवनमवतु देव' सर्वदामोघवर्षः ॥
श्रीवीरसेनमुनिपादपयोजभृग श्रीमानभूद्विनयसेनमुनिर्गरीयान् ।
तच्चोदितेन जिनसेनमुनीश्वरेण काव्यं व्यधायि परिवेष्टितमेघदूतम् ॥

(प्रकाशक– नाथा रगजी १९१०)

लेखांक ५ – दर्शनसार　　गुणभद्र

सिरिवीरसेणसीसो जिणसेणो सयलसत्थविण्णाणी ।
सिरिपउमनंदिपच्छा चउसंघसमुद्धरणधीरो ॥ ३०
तस्स य सीसो गुणवं गुणभद्दो दिव्वणाणपरिपुण्णो ।
पक्खुववासुट्ठमदी महातवो भावलिंगो य ॥ ३१
तेण पुणो विय मिच्चुं णाऊण मुणिस्स विणयसेणस्स ।
सिद्धंतं घोसित्ता सयं गय सग्गलोयस्स ॥ ३२

(हि. १३ पृ २५७)

लेखांक ६ – आत्मानुशासन

जिनसेनाचार्यपादस्मरणाधीनचेतसा ।
गुणभद्रभदंतानां कृतिरात्मानुशासन ॥ २६९

(प्रकाशक– ज्ञानचद जैन, लाहौर १८९८)

लेखांक ७ – आदिपुराण उत्तरखंड

निर्मितोऽस्य पुराणस्य सर्वसारो महात्मभि ।
तच्छेषे यतमानाना प्रासादस्येव न श्रमः ॥ ११
अर्धं गुरुभिरेवास्य पूर्वं निष्पादितं परै ।
पर निष्पाद्यमानं सच्छदोवन्नातिसुंदर ॥ १२
पुराणं मार्गमासाद्य जिनसेनानुगा ध्रुवम ।
भवाब्धेः पारमिच्छंति पुराणस्य किमुच्यते ॥ ४०

(पर्व ४३, स्याद्वाद ग्रथमाला, इदौर, १९१६)

लेखांक ८ – उत्तरपुराण प्रशस्ति लोकसेन

श्रीमूलसंघवारांशौ मणीनामिव सार्चिषाम् ।
महापुरुपरत्नानां स्थान सेनान्वयोऽजनि ॥ २
तत्र वित्रासिताशेपप्रवादिमदवारण. ।
वीरसेनाग्रणीर्वीरसेनभट्टारको वभौ ॥ ३
सिद्धिभूपद्धतिर्यस्य टीका सवीक्ष्य भिक्षुभि ।
टीक्यते हेलयान्येपा विपमापि पदे पदे ॥ ६
अभवदिव हिमाद्रेर्देवसिंधुप्रवाहो
ध्वनिरिव सकलज्ञात्सर्वशास्त्रैकमूर्ति ॥
उदयगिरितटाद्वा भास्करो भासमानो
मुनिरनु जिनसेनो वीरसेनादमुष्मात् ॥ ८
यस्य प्रांशुनखांशुजालविसरद्धारांतराविर्भवत्–
पादांभोजरज पिशगमुकुटप्रत्यग्ररत्नद्युति ॥
सस्मर्ता स्वममोघवर्पनृपति पूतोहमद्येत्यल
स श्रीमान् जिनसेनपूज्यभगवत्पादो जगन्मगल ॥ ९
दशरथगुरुरासीत्तस्य धीमान् सधर्मा
शशिन इव दिनेशो विश्वलोकैकचक्षुः ॥
निखिलमिदमदीपि व्यापि तद्वाङ्मयूखै.
प्रकटितनिजभाव निर्मलैर्धर्मसारै ॥ १२
प्रत्यक्षीकृतलक्ष्यलक्षणविधिर्विश्वोपविद्यातिग
सिद्धांताब्ध्यवसानयानजनितप्रागल्भ्यवृद्धेद्धधी. ॥
नानानूननयप्रमाणनिपुणो गण्यैर्गुणैर्भूषित.
शिष्य श्रीगुणभद्रसूरिरनयोरासीज्जगद्विश्रुत ॥ १४
कविपरमेश्वरनिगदितगद्यकथामातृक पुरोश्चरित ।
सकलच्छदोलकृतिलक्ष्य सूक्ष्मार्थगूढपदरचनं ॥ १५
जिनसेनभगवतोक्त मिथ्याकविदर्पदलनमतिललितं ।
सिद्धांतोपनिबधनकर्त्रा भर्त्रा चिराद्विनायासात ॥ १९
अतिविस्तरभीरुत्वादवशिष्ट सगृहीतममलधिया ।
गुणभद्रसूरिणेद प्रहीणकालानुरोधेन ॥ २०

विदितसकलशास्त्रो लोकसेनो मुनीश
कविरविकलवृत्तस्तस्य शिष्येषु मुख्य. ।
सततमिह पुराणे प्राप्य साहाय्यमुच्चै
गुरुविनयमनैपीन्मान्यता स्वस्य सद्भिः ॥ २८

अकालवर्षभूपाले पालयत्यखिलामिलां ।
तस्मिन्विध्वस्तनि.शेषद्विपि वीध्रयशोजुषि ॥ ३१
पद्मालयमुकुलकुलप्रविकासकसत्प्रतापततमहसि ।
श्रीमति लोकादित्ये प्रध्वस्तप्रथितशत्रुसतमसे ॥ ३२
चेल्लपताके चेल्लध्वजानुजे चेल्लकेतनतनूजे ।
जैनेंद्रधर्मवृद्धिविधायिनि विधुवीध्रयशसि ॥ ३३
वनवासदेशमखिलं भुंजति निष्कंटकं सुखं सुचिरं ।
तत्पितृनिजनामकृते वकापुरे पुरेष्वधिके ॥ ३४
शकनृपकालाभ्यतरविंशत्यधिकाष्टशतमिताब्दांते ।
मंगलमहार्थकारिणि पिंगलनामनि समस्तजनसुखदे ॥ ३५
श्रीपंचम्यां बुधार्द्रायुजि दिवसवरे मंत्रिवारे बुधांशे ।
पूर्वायां सिंहलग्ने धनुपि धरणिजे वृश्चिकार्कौ तुलायां ॥
सूर्ये शुक्रे कुलीरे गवि च सुरगुरौ निष्ठिते भव्यवर्यैः ।
प्राप्तेज्यं सर्वसारं जगति विजयते पुण्यमेतत्पुराणम् ॥ ३६

(स्याद्वाद ग्रंथमाला, इंदौर १९१८)

लेखांक ९ -- मुळगुंद शिलालेख कनकसेन

श्रीमते महते शान्त्ये श्रेयसे विश्ववेदिने ।
नमश्चंद्रप्रभाख्याय जैनशासनवृद्धये ॥ १
शकनृपकालेऽष्टशते चतुरुत्तरविंशदुत्तरे संप्रगते ।
दुंदुभिनामनि वर्षे प्रवर्तमाने जनानुरागोत्कर्षे ॥ २
श्रीकृष्णवल्लभनृपे पाति मही विततयशसि सकलां तस्मात् ।
पालयति महाश्रीमति विनयांबुधिनाम्नि धवळविषयं सर्वं ॥ ३
तस्मिन् मुळगुंदाख्ये नगरे वरवैश्यजातिजातः ख्यातः ।
चंद्रार्यसत्पुत्रश्चिकार्योऽचीकरं जिनोन्नतभवनं ॥ ४

तत्तनयो नागार्यो नाम्ना तस्यानुजो नयागमकुशल ।
अरसार्यो दानादिप्रोद्युक्तसम्यक्त्वसक्तचित्तश्चक्त ॥ ५
तेन दर्शनाभरणभूपितेन पितृकारितजिनालयाय
चदिकवाटे शे (से) नान्वयानुगाय नरनरपतिर्यतिपतिपूज्यपाद–
कुमारशे (से) नाचार्य मी (मे) ख वीरसेनमुनिपतिशिष्य कनकशे (से) न
सूरिमुख्याय कदवर्ममाळक्षेत्रे ए · यम्माना हस्तात् महस्रवल्लीमात्रक्षेत्र
द्रव्यसिंदुना गृहीत्वा नगरमहाजनविदेशे दत्त ॥ -

(जैन शिलालेख सग्रह, भाग २ पृ. १५८)

लेखांक १० – अंगडि शिलालेख वज्रपाणि

स्वस्ति सकवर्ष ९२४ नेय जयसवत्सरद चैत्रमासद सुद्ध दशमी ··
वार पुष्यनक्षत्रदद्दु विनयादित्यपोय्सळन राज्य प्रवर्तिसे सूरस्तगणद
श्रीवज्रपाणिपंडितदेवर · · गंतियरप्प जाकियब्बे गंतियर् सोसवूरोळे नाडे
पोपणद दिसेयनरसर्गे बोक्कला पोन्नरे कोट्टु मण्णेरेकोडु सोसवूर वसदिगे
बिट्टर् निसिदिगे यडे वक्कळेय एरडु हक्कळद मेगण गण्ण वाल्क
मकरजिनालयक्के बिट्टर् ॥

(उपर्युक्त, पृ २२७)

लेखांक ११ – होनवाड शिलालेख महासेन

श्रीमूलसघे जिनधर्ममूले गणाभिधाने वरसेननाम्नि ।
गच्छेषु तुच्छेऽपि पोगर्यभिख्ये सस्तूयमानो मुनिरार्यसेन ॥
अनेकभूपालकमौलिरत्न–शोणांशुवालातपजालकेन ।
प्रोज्जृंभितश्रीचरणारविंद–श्रीब्रह्मसेनप्र(व्र)तिनाथशिष्य ॥
तस्यार्यसेनस्य मुनीश्वरस्य शिष्यो महासेनमहामुनींद्र ।
सम्यक्त्वरत्नोज्ज्वलितांतरग ससारनीराकरसेतुभूत ॥
तज्जैनयोगींद्रपदाब्जभृग श्रीवानसाम्नायवियत्पतग. ।
श्रीकोम्मराजात्मभवस्तुतेज सम्यक्त्वरत्नाकरचाकिराज. ॥
तन्निर्मित भुवनवुभुकमत्युदात्त लोकप्रसिद्धविभवोन्नतपोन्नवाडे ।
ररम्यते परमशांतिजिनेंद्रगेहं पार्श्वद्वयानुगतपार्श्वसुपार्श्ववासं ॥

ॐ शकवर्ष ९७६ नेय जय संवत्सरद वैशाखद मासास्ये सोमवारदंदिन सूर्यग्रहणनिमित्तदिं भीमनदिय तडिय मणियूर अप्पयण वीडिनोळ् पोन्नवाडदोळ् चांकिमय्यन माडिसिद श्रीशांतिनाथदेवर त्रिभुवनतिलकचैत्यालयदलिर्प ऋषियर-ज्जियराहारदानके सर्वनमस्यवागि श्रीमत्त्रैलोक्यमल्लदेवर श्रीकेतलदेवियर चिन्नपदिं मूवत्तुगेण गळेयोळ् विट्टनेलमत्त (र्) ३५ तोण्ट ॥

(उपर्युक्त, पृ. २२८)

लेखांक १२ – वळगांवे शिलालेख   रामसेन

श्रीमत् त्रिभुवनमल्लदेवर श्रीमच्चालुक्यविक्रमवर्षं २ नेय पिंगळ-संवत्सरद पुष्य सुद्द ७ आदित्यवारदंदिनुत्तरायण- संक्रांतिय पर्वनिमित्तं राजधानि वळ्ळिगावेयोळ् तम्मकुमार- गालदंडु माडिसिद श्रीमच्चालुक्य-गंगपेर्मानडिजिनालयद देवर्गर्चनपूजनाभिषेककं भोगकं ऋषियराहारदानकं मेले वसदिय खंडस्फुटितनवकर्मद वेसककमागि ·· ॥
अंतु समस्तशास्त्रपारावारपारग परमतपश्चरणनिरतरप्प श्रीमूलसंघद सेनगणद पोगरिगच्छद श्रीमत् रामसेनपडितर्गे धारापूर्वकं सर्वनमस्यं माडि कोट्ट वनवसे पनिर्छासिरद कंपणं जिड्डुळिगे ७० र वळियवाडं मनेवने १···श्रीमद् गुणभद्रदेवर गुड्डं चावुण्डमय्यं वरेदं मंगळमहाश्री ॥

(उपर्युक्त, पृ. ३१५)

लेखांक १३ – सोमवार शिलालेख   रामचंद्र

स्वस्ति भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥ स्वस्ति शकवर्ष १०१७ नेय युवसंवत्सरद भाद्रपद मासद सुद्धसप्तमी गुरुवारदद्दु मकरलग्नं गुरूदयदल् श्रीमत्सुराष्ट्रगणद कल्नेलेय रामचंद्रदेवर शिष्यनियरप्प अरसब्बे गंतियर् ॥

(उपर्युक्त, पृ. ३५१)

लेखांक १४ – हिरेआवलि शिलालेख   माधवसेन

स्वस्ति श्रीमतु विक्रमवर्षद ४ [९] नेय साधा [रण] संवत्सरद

माघशुद्ध ५ बृहस्पतिवारदंदु श्रीमन्मूलसघद सेनगणद पोगरिगच्छद चंद्रप्रभसिद्धांतदेवशिष्यरप्प माधवसेनभट्टारक- देवरु

मनदिं जिनन पदंगळोळ् अनुनयदिं निरिसि पंचपदमं नेनेयुत्तु ।
अनुपमसमाधिविधियं मुनिमाध पडेद ॥

(उपर्युक्त, पृ. ४३६)

लेखांक १५ – कंबदहळ्ळि शिलालेख पल्लपंडित

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥
श्रीसूरस्थगणे जातश्चारुचारित्रभूवर ।
भूपालानतपादाब्जो राद्धातार्णवपारग ॥ १
आदावनतवीर्यस्तच्छिष्यो वाळचद्रमुनिमुख्य- ।
स्तत्सूनुर्जितमदन. सिद्धाताभोनिधि. प्रभाचंद्र ॥ २
शिष्य कल्नेलेदेवरतस्याभूत्तन्मनीषिण सूनु. ।
विध्वस्तमदनदर्पो गुणमणिरष्टोपवासिमुनिमुख्य ॥ ३
तन्मौखो विबुधाधीशो हेमनदिमुनीश्वर ।
राद्धातपारगो जात. सूरस्थगणभास्कर. ॥ ४
तदतेवासिनामाद्यो माद्यतामिंद्रियद्विषाम् ।
यतिर्विनयनदीति विनेताभूत्तपोनिधि ॥ ५
व्रतसमितिगुप्तिगुप्तो जितमोहपरीपहो बुधस्तुत्यो ।
हतमदमायाद्वेषो यतिपतितत्सूनुरेकवीरोऽभूत् ॥ ८
तस्यानुज सकलशास्त्रमहार्णवोऽभूद् ।
भव्याब्जपडदिनकृन्मुनिपुंडरीको ॥ ९
विध्वस्तमन्मथमदोऽमब्जीतकीर्ति ।
श्रीपल्लपंडितयतिर्जितपापशत्रु ॥ १०
पल्लकीर्तिर्यथा रूढ पुरा व्याकरणे कृती ।
तथाभिमानदानेपु प्रसिद्धः पल्लपंढित ॥ ११
शक वरिस १०४६ विलवि संवत्सरद

(उपर्युक्त, पृ. ३९९)

लेखांक १६ – विश्वलोचन कोश　　श्रीधरसेन

सेनान्वये सकलतत्त्वसमर्पितश्रीः श्रीमानजायत कविर्मुनिसेननामा ।
आन्वीक्षिकी सकलशास्त्रमयी च विद्या यस्यास वादपदवी न दवीयसी स्यात् ॥ १
तस्मादभूदखिलवाङ्मयपारदृश्वा विश्वासपात्रमवनीतलनायकानाम् ।
श्रीश्रीधरः सकलसत्कविगुंफितत्वपीयूषपानकृतनिर्जरभारतीक. ॥ २
तस्यातिशायिनि कवेः पथि जागरूकधीलोचनस्य गुरुशासनलोचनस्य ।
नानाकवींद्ररचितानभिधानकोशानाकृष्य लोचनमिवायमदीपि कोश' ॥ ३

(प्रकाशक– नाथारगजी, बम्बई १९१२)

लेखांक १७ – पट्टावली　　सोमसेन

नवलक्षधनुराधीश-सप्तलक्षकर्णाटकराजेद्रचूडामौक्तिकमालाप्रभाधुनी-जलप्रवाहप्रक्षालितचरणनखबिंब-श्रीसोमसेनभट्टारकाणाम् ॥ ३३

(म १३१)

लेखांक १८ – पट्टावली　　श्रुतवीर

अलकेश्वरपुराद् भरवच्छनगरे राजाधिराज-परमेश्वर-यवनरायशिरोमणि-महम्मदपातशाहसुरत्राण-समस्यापूरणादखिलदृष्टिनिपातेनाष्टादशवर्षप्राय-प्राप्तदेवलोकश्रीश्रुतवीरस्वामीनाम् ॥ ३४

(उपर्युक्त)

लेखांक १९ – पट्टावली　　धारसेन

भंभेरीपुर-धनेश्वरभट्टभ्रष्टीकृतानलनिहित-यज्ञोपवीतादिविजितसिंहब्रह्मदेवसधर्मशर्मकर्म-निर्मलांत.करणश्रीमच्छ्रीधारसेनाचार्याणाम् ॥ ३५

(उपर्युक्त)

लेखांक २० – (समयसार)　　देवसेन

श्रीखाणदेशे धरणग्रामचैत्याले श्रीआचार्यजी देवसेनजी ओसवाल

ज्ञाते सा कल्याणचंदसा भार्या दगडुबाई तत्पुत्र आढुमाजी भार्या मेनाबाई तत्पुत्र मदासाजी पुस्तकपठनार्थं ॥

(स २४)

लेखांक २१ – शिलालेख　　सोमसेन

स्वस्तिश्री संवत [१५४१ वर्षे शाके १४९१ (१४०६९)] प्रवर्तमाने कोधीता संवत्सरे उत्तरगणे मासे शुक्लपक्षे ६ दिने शुक्रवासरे स्वातिनक्षत्रे योगे २ करणे मिथुनलग्ने श्रीवराटदेशे कारंजानगरे श्रीसुपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे श्रीमन् वृद्ध(वृषभ)सेनगणधराचार्य पारंपर्यागत श्रीदेववीरमहावादवादीश्वर रायवादिपितामह सकलविद्वज्जनसार्वभौमसाभिमानवादीभसिंहाभिनवत्रैविद्य सोमसेनभट्टारकाणामुपदेशात श्रीबघेरवालज्ञाति खमडवाड(खटवड)गोत्रे अष्टोत्तरशतमहोत्तुंगशिखरप्रासादसमुद्धरणे धीर त्रिलोकश्रीजिनमहाबिंबोद्धारक अष्टोत्तरशतश्रीजिनमहाप्रतिष्ठाकारक अष्टादशस्थाने अष्टादशकोटिश्रुतभंडारसंस्थापक सवालक्षबंदीमोक्षकारक मेदपाटदेशे चित्रकूटनगरे श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्रचैत्यालयस्याग्रे निजभुजोपार्जितवित्तबलेन श्रीकीर्तिस्तंभ आरोपक साहजिजा सुत साहपूनसिंहस्य।

(अ ८ पृ १४२)

लेखांक २२ – पट्टावली

तत्पट्टोदयाचलप्रभाकरवादीभसिंहाभिनवत्रैविद्यश्रीमच्छ्रीसोमसेनभट्टारकाणाम् ॥ ३७

(म १३१)

लेखांक २३ – पट्टावली　　गुणभद्र

तत्पट्टवार्धिवर्धनैकपूर्णचंद्रायमान श्रीमद्गुणभद्रभट्टारकाणाम् ॥ ३८

(उपर्युक्त)

लेखांक २४ – जलयंत्र

सं १५७९ मगसरमासे शुद्धे पक्षे १० शुक्रवारे श्रीमूलसंघे सहरिषभ-

सेनगणधरान्वये पुष्करगच्छे सेनगणे भ श्रीगुणभद्रोपदेशात् हुंवडज्ञातीये साह वदा भार्यारींगादे ॥

(फतेहपुर, अ. ११ पृ. ४०८)

लेखांक २५ – पट्टावली　　वीरसेन

तत्पट्टोदयाद्रिदिवाकरायमाणश्रीमत्कर्णाटकदेशस्थापितधर्मामृतवर्पण-जलदायमानधीरतपश्चरणाचरणप्रवीणश्रीवीरसेनभट्टारकाणाम् ॥ ३९

(म. १३१)

लेखांक २६ – पट्टावली　　श्री युक्तवीर

विगताभिमानतपगतकषायांगादिविविधग्रंथकरणैककुशलताभिमान-श्रीयुक्तवीरभट्टारकाणाम् ॥ ४०

(उपर्युक्त)

लेखांक २७ – पट्टावली　　माणिकसेन

तत्पट्टे सर्वज्ञवचनामृतस्वादकृतात्मकाय श्रीमाणिकसेनभट्टारकाणाम् ॥४१

(उपर्युक्त)

लेखांक २८ – अरहंत मूर्ति

सके १४२४ मूलसंघे सेनगणे भ माणिकसेन उपदेशात् गुजर पल्लीवाल ज्ञाति . सघवी नेमा ॥

(ना १८)

लेखांक २९ – पट्टावली　　गुणसेन

तत्पट्टोदयाचलदिवाकरायमाणश्रीगुणसेनभट्टारकाणाम ॥ ४२

(म. १३१)

लेखांक ३० – पट्टावली

लक्ष्मीसेन

तदनु सकलविद्वज्जनपूजितचरणकमलभव्यजनचित्तसरोजनिवास-लक्ष्मीसदृशलक्ष्मीसेनभट्टारकाणाम ॥

[उपर्युक्त]

लेखांक ३१ –

मूलसघ साखा प्रवर सेनगण संघाभरण ।
सोमविजय एम वदति लक्ष्मीसेन तारणतरण ॥
गुणभद्र गुण गच्छादिभरण उदधिचद्र जगि जानिये ।
सोमविजय एवं वदति लक्ष्मीसेन वखानिये ॥

(ना. १४)

लेखांक ३२ – नंदीश्वरमूर्ति

[शके १५००] सर्वजीतसंवत्सरे माघमासे शुक्लपक्षे १३ दिने श्रीमूलसघे सेनगणे पुष्करगच्छे वृषभसेनगणधरान्वये भ. श्रमण(श्रीगुण)भद्र तत्पट्टे श्रीलक्ष्मीसेनोपदेशात् वघेरवालज्ञातीय ॥

[कारजा, भा. १३ पृ १२८]

लेखांक ३३ – अनंत यंत्र

स १५— श्रीमूलसघे सेनगणे भ श्रीगुणभद्रस्तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीसेन उपदेशात कसिमवास्तव्य घरकौ ज्ञातीये सघई हेमासा भार्या अंबा .. ॥

[मैनपुरी, भा प्र. पृ. १७]

लेखांक ३४ – पट्टावली

सोमसेन

विवुधविविधजनमनइन्दीवरविकाशनपूर्णशशिसमानाना श्रीसोमसेन-भट्टारकाणाम ॥ ४४

[म १३१]

लेखांक ३५ – कृष्णपुरपार्श्वनाथस्तोत्र

अविरलकविलक्ष्मीसेनशिष्येण लक्ष्मी-
विभरणगुणपूतं सोमसेनेन गीतं ।
पठति विगतकामः पार्श्वनाथस्तवं य
सुकृतपदनिधानं स प्रयाति प्रधानम् ॥ ९

[अ. १२ पृ. ३२९]

लेखांक ३६ – १ मूर्ति

संवत १५९७ श्रीमूलसंघे सेनगणे भ. सोमसेन उपदेशात् कालवाडे संघवी... ॥

[आर्वी, अ. ४ पृ. ५०३]

लेखांक ३७ – पट्टावली माणिक्यसेन

मिथ्यामततमोनिवारणमाणिक्यरत्नसमदिव्यरूपश्रीमाणिक्यसेनभट्टारकाणाम् ॥ ४५

[म. १३१]

लेखांक ३८ – पट्टावली गुणभद्र

आशीविषदुष्टकर्कशमहारोगमदगजकेसरिसिहसमानाना अनेकनरपति-सेवितपादपद्मश्रीगुणभद्रभट्टारकाणाम् ॥

[उपर्युक्त]

लेखांक ३९ – रामपुराण सोमसेन

वराटविषये रम्ये जित्वरे (जिन्तुरे) नगरे वरे ।
मन्दिरे पार्श्वनाथस्य सिद्धो ग्रन्थो शुभे दिने ॥ २६
श्रीमूलसंघे वरपुष्कराख्ये गच्छे सुजातो गुणभद्रसूरिः ।
पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारकोभूद् विदुषां शिरोमणि. ॥ २३३
विक्रमस्य गते शाके षोडशशतवर्षके ।
षट्पंचाशत्समायुक्ते मासे श्रावणिके तथा ॥ २१७

शुक्लपक्षत्रयोदश्या बुधवारे शुभे दिने ।
निष्पन्नं चरितं रम्यं रामचन्द्रस्य पावनं ॥ २१८

[कारंजा]

लेखांक ४० – (शब्दरत्नप्रदीप)

शुभमस्तु कल्याणं ॥ संवत् १६६६ शाके १५३१ वर्षे श्रावणकृष्णपक्षे तिथि प्रतिपदा ॥ १ ॥ शुक्रवारे ग्रंथ लिखितं ठा. गोपिचंद उदयपुरस्थाने तिष्ठत्ये ॥ कल्याणं भवेत् ॥ अभिनव भ. श्रीसोमसेनस्येदं पुस्तकं ॥

[म. ५३]

लेखांक ४१ – धर्मरसिक त्रैवर्णिकाचार

अब्दे तत्त्वरसर्तुचंद्रकलिते श्रीविक्रमादित्यजे
मासे कार्तिकनामनीह धवले पक्षे शरत्संभवे ।
वारे भास्वति सिद्धनामनि तथा योगे सुपूर्णातिथौ
नक्षत्रेश्विनिनाम्नि धर्मरसिको ग्रंथश्च पूर्णीकृतः ॥ २१६
श्रीमूलसंघे वरपुष्कराख्ये गच्छे सुजातो गुणभद्रसूरिः ।
तस्यात्र पट्टे मुनिसोमसेनो भट्टारकोभूद्विदुषां वरेण्यः ॥ २१२
धर्मार्थकामाय कृतं सुशास्त्रं श्रीसोमसेनेन शिवार्थिनापि ।
गृहस्थधर्मेषु सदा रता ये कुर्वंतु तेभ्यासमहो सुभव्याः ॥ २१३

[जैनेन्द्र प्रेस, कोल्हापुर १९१०]

लेखांक ४२ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शके १५६१ वर्षे प्रमाथीनामसंवत्सरे फाल्गुण सुदी द्वितीया मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ. श्रीसोमसेन उपदेशात् प्रतिष्ठितं ॥

[सेतवाल मन्दिर, नागपुर]

लेखांक ४३ – संभवनाथ मूर्ति

शक १५६१ प्रमाथीसंवत्सरे फाल्गुन शुद्ध ५ भ. श्रीसोमसेनेन प्रतिष्ठापितं ॥

(कारंजा, भा. १२ पृ. १२८)

लेखांक ४४ – रविव्रत कथा

पुष्करगछे अभिनव रंग ॥ ७२
गुणभद्र पटे पामे जय संघ सोमसेन गुरु दान दाता।
तत्शिष्य अभयपंडित चंग करी कथा मनतनी रंग ॥ ७३

[ना. ५५]

लेखांक ४५ – पार्श्वनाथ मूर्ति जिनसेन

शके १५७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे मूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे भ सोमसेनदेवा. तत्पट्टे भ श्रीजिनसेनगुरूपदेशात बघेरवाळ ज्ञात मात्रला गोत्रे वीरासाह भार्या हिराई ॥

[पा १]

लेखांक ४६ – पद्मावती मूर्ति

शके १५८० मूलसंघे सेनगणे भ. जिनसेनोपदेशात् कारंजाग्रामे सा रतन... ॥

(पा. ने. जोहरापुरकर, नागपुर)

लेखांक ४७ – (समवशरणपीठिका–रत्नाकर)

शके १५८१ विकारीनामसवत्सरे फाल्गुण शुदि १३ दिने श्रीमूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे वृषभसेनान्वये भ श्रीसोमसेन तत्पट्टे भ. श्रीजिनसेनोपदेशात् कारंजाग्रामे सुपार्श्वनाथचैत्यालये चवर्या गोत्रे सं श्रीमाणिकभार्ये पदमाई अंबाई पुत्र सं श्रीमोयरा भा. रूपाई एतैर्ज्ञानावर्णिकर्मक्षयार्थं लिखाप्य दत्तं पुस्तक ॥

(ना ८०)

लेखांक ४८ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सके १५८२ फालगुण शुद्ध ७ तिलक सेन भ श्रीजिनसेन बघेरवालज्ञातौ चवरिया गोत्रे सा.. ॥

(मा म महाजन, नागपुर)

लेखांक ४९ - ? मूर्ति

शके १६०७ क्रोधनामसंवत्सरे सुदि १० बुधे पुष्करगच्छे सेनगणे वृषभसेनान्वये भ सोमसेनदेवा तत्पट्टे भ. जिनसेनगुरूपदेशात जालीग्रामे धाकडज्ञातीय कन्हा नित्य प्रणमति ॥ (कोटाळी. अ. ४ पृ. ५०५)

लेखांक ५० -

नगर अचलपुरमांहि जैन सासन गछनायक ।
कीयो चउमास आइ कहत सिद्धांत सुलायक ॥
रुसी सरप पग डस्यो खस्यो विप सर्व सरीरह ।
ध्यान धरी मुनिराइ पढ्यो पुनि विपापहारह ॥
निर्विप तन छिनमे भयो सकल विघ्न दूरे कन्यो ।
भट्टारक जिनसेनको प्रताप भारी धन्यो ॥ १ ॥
श्रावकके घर जाइ भावरी भोजन कीन्हो ।
शाक परोस वचनाग नाग धोके बहु लीनो ॥
ध्याग्यो जव सर्वांग सावधानी मन आनी ।
विपापहार सुचिंति चित्त नहि चिंता मानी ॥
वमन करी विप टालियो सहियो परिसह जोर ।
भट्टारक जिनसेनकी कीरति भइ बहु ठौर ॥ २ ॥
रायमलसा पुत्र वंस हुंबड वडमडन ।
राना देस विख्यात नगर सावलि सुभ स्तंभन ॥
पद्मनदि गुरु राय पाय सेवे बालापन ।
चौदह विद्यानिधान वहोतरी कलाभूपण ॥
कारंजे नगरे सुभग सोमसेन पट उद्धन्यो ।
जिनसेन नाम परगट भयो भट्टारक जग उद्धन्यो ॥ ३ ॥
सघप्रतिष्ठा पाच धर्म उपदेस सु कारी ।
श्रीगिरनारि समेदशिखर तीरथ कियो भारी ॥
सघपति सोयरासाह निवासा माधवसगवी ।
गनवा सगवी रामटेकसा कान्हा सगवी ॥
जिनसेन नाम गुरुरायणे सघतिलक एते दिय ।
माणिक्यस्वामी यात्रा सफल धर्म काम बहु बहु किय ॥ ४ ॥
(ना ६३)

लेखांक ५१ –

मूलसघ कुलतिलक गछ पुष्करमे सोहे ।
चारिय गणमे मुख्य सेनगण महिमा मोहे ॥
भट्टारक जिनसेन गुरु मोरपींछ हस्ते धरे ।
पूरनमल यों कहे भव्यलोक तारण तरण ॥

(ना. ६३)

लेखांक ५२ – पार्श्वनाथ मूर्ति　　छत्रसेन

संवत १७५४ मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ. छत्रसेनोपदेशान् प्रतिष्ठितं ॥

(केळीवाग मन्दिर, नागपुर)

लेखांक ५३ – द्रौपदीहरण

उत्तम देश वराड मझारमे कारज रजक हे पुर नीको ।
सत्य सुपारसदेव महा मूलनायक मूलसुसंघ सजीको ॥
सेनगणाश्रीत पुष्करगच्छ प्रधान सदा अति ग्राह गुणीको ।
श्रीछत्रसेन रचै कवि चौपद द्रौपदीहरण चरित्र सुलीको ॥ ७६

(ना ६१)

लेखांक ५४ – समवशरणषट्पदी

कारंजा शुभ नगरमे श्रीपार्श्वनाथ चैत्यालये ।
छत्रसेन गछपति कहे खैरासा वचने किये ॥ ५१

(ना ८९)

लेखांक ५५ – मेरुपूजा

इति त्रिभुवनसस्थ श्रीजिनबिंब योर्चति पुष्पभृताजलिकैं ।
सो ना जगतीष्टं लभति विशिष्ट छत्रसेनमुनिना कथितं ॥

(ना. ९०)

लेखांक ५६ - पार्श्वनाथ पूजा

इन्द्याद्यगणिन अतिशय क्षेत्र पार्श्वजिन वंदे सुपवित्रं ।
पूज्यं सेनगणे वरचित्रं छत्रसेनसंततवरामित्रं ॥

(ना. ७८)

लेखांक ५७ - झूलना

महबूब शरीर सहरमे जी पातिसाहि वडा परब्रह्म है रे ।
पातिसा अंदर वैठि रहा अपने रस रंगमे खेलत रे ॥
मनराय वुलाय दीवान किया अखत्यार दिया सब तिसके रे ।
छत्रसेन जती वारवार कहे वडा सोर हुवा सब नगरमे रे ॥ १ ॥

(म. ७९)

लेखांक ५८ - अनंतनाथ स्तोत्र

भुवनविदितभाव देवदेवेंद्रवंद्य परमजिनमनंत स्तौति यो शुद्धभावै ।
भवति सुभगसर्गी मुक्तिनाथश्च नित्य स्तवनमिदमनिंद्य भाषितं छत्रसेनैः ॥११

(कारंजा)

लेखांक ५९ - पद्मावती स्तोत्र

पुत्रोहं तव मात मामक परि कृत्वा कृपामंविके
देयं वाछितवस्तु चिंतितफल यत्प्रार्थनेयं मम ।
विघ्नानिष्टकरान् स्वपापजनितान् दुःखप्रदान् संतत
शीघ्र महर सहर प्रियतमे श्रीछत्रसेनस्य वै ॥ १४

(उपर्युक्त)

लेखांक ६० - अनिरुद्ध छप्पय

कारंज रजक नगरमे मूल जिनेश्वर देव ।
छत्रसेन गछपति कहे हीर करे तस सेव ॥ १
चतुर पच सप्तैक वामगति गणिजो दक्षं ।

संवत एतु जाणि माघ असिताष्टमी वर्ष ॥
वृषणपुर सुभ नगर चोक माणिक तहा सोभे ।
मणिमाणिकमुक्तादि देखता जनमन थोभे ॥
कडतसाह वचणे कर्‍यो अनिरुद्ध हरण उदार ।
श्रीछत्रसेन पंडित कहे हीरा जगि जयकार ॥ ९९

(ना. १४)

लेखांक ६१ – छत्रसेन गुरु आरती

मूलसंघाचे शृंगार पुष्कर गछ मनोहार ।
सुरस्थ गण विस्तार ऋषभसेनान्वय सार ॥ २
सेनसंघाचे आभूषण समंतभद्र जाण ।
तयाच्या पटी छत्रसेन वादीमदभंजन ॥ ३

(ना. ८७)

लेखांक ६२ –

श्रीमूलसंघमे गछ मनोहर सोभत है जु अतिही रसाला ।
पुष्करगछ सुसेनगणाश्रित पूज रचे जिनकी गुणमाला ॥
समंतजुभद्रके पट प्रगट भयो छत्रसेन सुवादि विसाला ।
अर्जुनसुत कहे भवि सु परवादीको मान मिटे ततकाला ॥

(ना. ८७)

लेखांक ६३ –

सेनगणेश गणेश महामुनि उज्ज्वल कीरति है अतिभारी ।
सुंदर रूप सुजान मनोहर संजम भार धुरंधरकारी ॥
काव्य पुराण महाशुभ भाखित आगम ग्रंथ कथे सुविचारी ।
छत्रपति छत्रसेन विराजित दास विहारी कहे गुणधारी ॥१८

(ना. ११९)

लेखांक ६४ – ज्ञानयंत्र

शके १६५२ साधारण संवत्सरे भ. श्रीनरिंद्रसेनाज्ञया गोपालजी गंगरडा सेनगणे पुष्करगच्छे आश्विनमासे ॥

(कळमेश्वर, जिला नागपुर)

लेखांक ६५ – (यशोधरचरित–पुष्पदंत)

शके १६५६ मिति आसोज वदि मंगलात्रयोदश्या बुधवासरे श्रीमूलसंघे सूरस्थगणे पुष्करगच्छे ऋषभसेनगणधरान्वये पारंपर्यागते भ. श्री १०८ सोमसेन तत्पट्टे भ जिनसेन तत्पट्टे भ समंतभद्र तत्पट्टे भ श्री १०८ छत्रसेन तत्पट्टोदयाद्रिवर्तमान भ. नरेंद्रसेनैर्लिखितोयं जसोधरचरित्रं श्रीसूरतबंदरे आदिनाथचैत्यालये । संवत १७९० ॥

(म. प्रा. पृ. ७४७)

लेखांक ६६ – नरेंद्रसेन गुरु पूजा

श्रीमज्जैनमते पुरंदरनुते श्रीमूलसंघे वरे ।
श्रीशूरस्थगणे प्रतापसहिते सद्भूपवृंदस्तुते ॥
गच्छे पुष्करनामके समभवत् श्रीसोमसेनो गुरुः ।
तत्पट्टे जिनसेनसन्मतिरभूत् धर्मामृतादेशकः ॥ १
तज्जोभूद्धि समंतभद्रगुणवत् शास्त्रार्थपारंगतः ।
तत्पट्टोदयतर्कशास्त्रकुशलो ध्यानप्रमोदान्वित ॥
सद्विद्यामृतवर्षणैकजलद श्रीछत्रसेनो गुरुः ।
तत्पट्टे हि नरेंद्रसेनचरणौ सपूजयेहं मुदा ॥ २

(ना. ८७)

लेखांक ६७ – पार्श्वनाथ पूजा

नगर कारंजा सेनगणेसी श्रीमूलसंघ जयो गुणदेसी ।
मंगलपूरण ज्ञान सुभारी भविजनको बहु संपतिकारी ॥

अमरावलि पूजे सदा जिनवरके पद जाम ।
नरेंद्रसेन इम स्तुति करे हम हिरदे तुम नाम ॥

(ना. ७८)

लेखांक ६८ – वृषभनाथ पाळणा

गछपति मुनियों कहे मनुजेद्रसुसेन ।
आवागमन निवारियो कर्मक्षय करि दीन ॥ १९

(म. १२१)

लेखांक ६९ – कैलास छप्पय–सोयरा

तस पट्ट सुखकार नाम भट्टारक जानो ।
नरेंद्रसेन पट्टधार तेजे मार्तंड बखानो ॥
जीती वाद पवित्र नगर चंपापुरमाहे ।
करियो जिनप्रासाद ध्वजा गगने जइ सोहै ॥ २६
देवलगाव पवित्र तिहा जिनमंदिर सोहे ।
चंद्रनाथनी मूर्ति देखि सुर नर मन मोहे ॥
सोलहसेतित्तेर अष्टापद वर्णन कियो ।
अर्जुनसुत इम उच्चरे सुगंधदशमी पुरो थयो ॥ २७

(ना. १४)

लेखांक ७० – चंद्रप्रभ मूर्ति   शांतिसेन

शके १६७३ फाल्गुण वदी १२ रविवारे सेनगणे वृषभसेनगणधरान्वये भ. शांतिसेनोपदेशात् कारंजा महानगरे प्रतिष्ठापितं ॥

(कारंजा, भा १३ पृ. १२८)

लेखांक ७१ – षोडशकारण यंत्र

शके १६७५ वर्षे भाद्रपद मासे मीन १२ मूलसंघे पुष्करगच्छे सेन-

गणे भ. श्रीशातिसेनोपदेशत. का व. चिंतामण ॥

(ना. ६१)

लेखांक ७२ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शक १६७८ माघ सुद १४ मूलसंघे भ. शांतिसेनोपदेशात् प्रतिष्ठितं कारजा ग्रामवास्तव्येन नेवाज्ञाति फु गोत्र पु चिंतामणसा नित्यं प्रणमंति ॥

(पा. ५०)

लेखांक ७३ – [हरिवंश रास]

सवत १८१६ परमाथी नाम संवत्सरे श्रीदेवलग्राम श्रीचंद्रप्रभ-चैत्यालये श्री भ. श्रीनरेंद्रसेन तत्पट्टे श्रीशातिसेनजी भ. सार्थकनामधेय तस्य शिष्य श्री अर्जका श्री शिखरश्रीजी तस्य शिष्य पंडित वानार्शिदासजी स्वहस्ते लिख्यत पठनार्थं श्रीरस्तु ॥

(ना. २०)

लेखांक ७४ – शांतिनाथ विनंति

झारखड एसो हर देस तस मध्य ए नगरी विसेस ।
अमरपुरी सम सोभे ठाम रामटेक दिसे अभिराम ॥ २
हसा सुत सितलसा नाम खटवड गोत धरमको धाम ।
मकल स्वन्यात कुटुंब सहित यात्रा करि मनमा धरि प्रीत ॥ १४
मूलसघ पुष्करगछ धनी शातिसेन विद्यागुणमनी ।
तत सेवक नित चरने रहे गोमासा सुत रतन कहे ॥ १६
सके सोलसेने उसार चइत्र कृष्ण नवमी रविवार ।
ए विनती जे भणे नरनार तेह घर मगल जयजयकार ॥ १७

(ना. ६३)

लेखांक ७५ –

तासु कहे शातिसेन गछपति संघ चतुर्विध सोभत पासे ॥ २
पाट नरेंद्रसुसेनके राजत दर्शनथी सुखसपति पावे ॥ ३

मूलकि वेदरीके जिनमंदिर वदतही मन हर्ख न माये ।
सागरस्नान करायो महामुनि पुण्यप्रताप भले जु तहाये ॥ ५
...फूटान सेठिको नंदन धन्य सु सांत चंढावाई कूख विराजे ॥ ६

(म. १२३)

लेखांक ७६ – बिरुदावली

अनेकदेशाधिपतिपारसकेश्वरसभारंजितविद्वज्जनसेवितचरणारविंद-श्रीगुणभद्र-वीरसेन-श्रुतवीर-माणिकसेन-गुणसेन-लक्ष्मीसेनभट्टारकाणाम् ॥ निखिलतार्किकशिरोमणि -श्रीसोमसेन-माणिक्यसेन-गुणभद्र-अभिनवसोम-सेनभट्टारकाणाम् ॥ तत्पट्टे निखिलजनरंजनगुणात्मविद्यानिधिश्रीजिनसेन-भट्टारकाणाम् ॥ तदन्वये श्रीसमतभद्रभट्टारकाणाम् ॥ तद्वंशे श्रीछत्रसेनभट्टारकाणाम् ॥ तत्पट्टे श्रीमन्नरेंद्रसेनभट्टारकाणाम् ॥ स्वस्तिश्रीमद्रायराजगुरु-श्रीमदभिनवशांतिसेनतपोराज्याभ्युदयसमृद्ध्यर्थं ॥

(प. ८)

लेखांक ७७ – १ मूर्ति सिद्धसेन

संवत १८२६ (शाके १६१८) वैसाख वदि ११ सेनगणे श्रीसिद्ध-सेनगुरूपदेशात् ॥

(आर्वी, अ ४ पृ. ५०५)

लेखांक ७८ – सिद्धसेन गुरु आरती

श्रीमूळसंघाचे मंडन सकळकळापरिपूर्ण ।
पुष्करगच्छाचे निधान गुरुगौतमसम जाण ॥ २
शांतिसेनजीचे कर सिरी करवीर कोलापुरी ।
तेथुन चालले निरधारी कार्यरंजकपुरी ॥ ३
सेनगणाचे पटधारी सर्वस्वामी अधिकारी ।
श्रीसिद्धसेन गुरु सुखकारी तत्त्वातत्त्व विचारी ॥ ४
संमत अठरासे सवीस वैशाख कृष्ण पक्ष ।
द्वादशि तिथीस चरणासी रतनचा लय लक्ष ॥१०

(ना. १२८)

लेखांक ७९ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शाके १६९२ श्रीसिद्धसेनगुरूपदेशात् वैशाख वदि १२ सेनगण ॥

(कारंजा, मा १४ पृ. २८)

लेखांक ८० – मुनिसुव्रत मूर्ति

संवत १८४६ कार्तिक सुद १४ मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ. शांतिसेनजी तत्पट्टे भ सिद्धसेनजी प्रतिष्ठित मा भिकासा जोहरापुरकर प्रणमित ॥

(ना. ६२)

लेखांक ८१ – उपदेशरत्नमाळा

शुभचंद्र भट्टारक थोरी ॥ ४४

तत्पट्टधारी दिव्यमूर्ति । नामे असे सुमतिकीर्ति ॥ ४५

तद्गुरुभ्रात सकलभूषण । उपदेशरत्नमालाभिधान ॥

संस्कृत केले असे पुराण । ते ज्ञानिया कारण सुगम असे ॥ ४६

या पंचमकालामाजि मती । उत्तरोत्तरहीन होती ॥ ४८

या संस्कृताचे नवि जाति वाटे । म्हणोनिया श्लोक करी मऱ्हाटे ॥ ४९

अमरावती पुण्यनगरी । श्रीआदिनाथ जिनमंदिरीं ॥

ग्रंथ आरंभिला थोरी । साह्यकारी असे शारदा ॥ ६३

संमत अठरासे एकोन्याहत्तर । श्रीमुखनामे संवत्सर ॥

चैत्र शुद्ध नवमी शुक्रवार । पावला ग्रंथ सार पूर्णता ॥ ६४

इति श्रीभट्टारक श्रीसिद्धसेन प्रियसिष्याचार्यरत्नकीर्तिरचित उपदेशरत्नमाळा ग्रंथे षट्कर्मधर्मनिरूपण नाम प्रसंग चाळिसावा ॥ ४० ॥

(ना. ९१)

लेखांक ८२ – सिद्धसेनगुरु पूजा–माधव

विद्वज्जनाभीष्टतमप्रमेय गुणाकरं सर्वजनैकवद्यं ।
श्रीशांतिसेनस्य पदाधिसेव्य श्रीसिद्धसेनाख्यगुरुं यजेह ॥

(ना ६१)

लेखांक ८३ – सिद्धसेन स्तुति

महानगर कारंजकपूर मनोहर विश्रांती ।
भट्टारक श्रीसिद्धयती महंत अधिपती ।।
सेनगणाम्नाये पट्टधारि जो परम गुरू निपुन ।
पुष्करगच्छ निवासे नामे पार्श्वनाथ जिन ।।
शांतिसेन पट्टाबुज महिवरि जाला उद्योत ।
षट्शास्त्रादिक पूर्ण मनोहर गुणस्थानी श्रुत ।।
मिळोनिया श्रीसंघ सदोदित जिनभुवना जाती ।
त्रिकाळ पूजा विधिविधान न्हवनासी करिती ।।
सहस्रकूट चैत्यालय मांडन काढोनि रंगविती ।
ॐ ऱ्हीं बीजाक्षर हे दोन्ही अक्षर मध्ये वरती ।।
या दो वचने जे प्रियकर ते वदा कृपामूर्ती ।
कर जोडोनि म्हणे राघव करुणा असु द्यावी चित्ती ।।

(म. १८)

लेखांक ८४ –

कामधेनुको ध्यान कामना पूर्णज कहि है ।
ऐसे श्रीसिद्धसेन सेनगण गच्छपति है ।।
पुष्कर सागर नगर कारंजा खासा ।
अर्जुनसा हीरेका पारखी साच कहे येमासा ।।

(ना. ६३)

## लेखांक ८५ – चरणपादुका	लक्ष्मीसेन

सं. १८९९ का वर्षे मित्ति चैत्र सुदि १० सौम्यवासरे गौतमस्वामी गणधरजीकी चरणपादुका स्थापिता नागपुरमध्ये कारंजा पट्टाधीश भ. श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्ठापिता सेनगणे ।।

(ना. ६३)

सेनगण

सेनगण भट्टारक–परपरा के दो प्राचीनतम गणोंमे मे एक है[1]। इस का सर्व प्रथम स्पष्ट उल्लेख उत्तरपुराण की प्रशस्ति मे पाया जाता है [लेखाक ८]। इस प्रशस्ति के साथ पूर्ववर्ती साधनो की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि सेन गण का पूर्वरूप पचस्तूपान्वय था [ले. १]। कुछ उत्तर कालीन लेखो मे सूरस्थ या शूरस्थ गण ऐसा इस का नामान्तर मिलता है [ले ६१, ६५]। यदि शूरस्थ का अर्थ शूरसेन देश अर्थात् मथुरा के पास से निकला हुआ लिया जाय तो मथुरा के पाच स्तूपो के आधार पर पचस्तूपान्वय नाम से इस का सामजस्य हो सकता है। किन्तु सूरस्थ गण के प्राचीन उल्लेखो से वह एक पृथक् ही गण मालूम होता है [ले. १०, १५] जिस का सबध सभवत. सौराष्ट्र से है [ले १३]।

प्राचीन लेखो मे सेन गण के साथ पोगरि गच्छ का उल्लेख आता है [ले. ११, १२]। उत्तर कालीन लेखों मे इस का स्थान पुष्कर गच्छ ने लिया है [ले. २१, २४, ३२ आदि]। ये दोनों नाम एक ही नाम के दो रूप हैं। पुष्कर शुद्ध सस्कृत रूप है, और पोगरि कनडी रूप है। आध्र प्रदेश मे पोगिरि नामक स्थान है किन्तु उस के पुरातत्त्व का सशोधन नहीं हुआ है। राजस्थान के पुष्कर सरोवर का लोकभाषा मे पोखर ऐसा रूपातर हुआ है। इन दोनों में मूल रूप कौन सा है यह अनुसधान की अपेक्षा रखता है।

सेनगण के साथ जुडा हुआ एक विशेषण ऋषभसेनान्वय है [ले. २१, २४, ३२ आदि] जो स्पष्टत कुदकुदाचार्यान्वय का अनुकरण मात्र है। इतिहास से ज्ञातकालमे ऋषभसेन नाम के कोई प्रसिद्ध आचार्य सेनगण में नहीं हुए है।

इस परपरा का पहला उल्लेख आचार्य वीरसेन विरचित धवला टीका

---

१ दूसरा प्राचीन रूप पुन्नाट सघ है।

की प्रशस्ति मे आता है [ले. १]। आचार्य धरसेन से उपदेश पाकर आचार्य पुष्पदन्त और भूतबलिने दूसरी सदीमे महाकर्मप्रकृतिप्राभृत अथवा षट्खंडागम की रचना की थी। इस पर कुंदकुंद, समतभद्र, तुम्बुलूर, शामकुण्ड, बप्पभट्टि आदि आचार्योने व्याख्याए लिखी थी। चित्रकूट पुर के आचार्य एलाचार्यसे इस सिद्धान्तशास्त्र का अध्ययन कर के तथा अनेक सूत्र पुस्तको का अवलोकन कर के उस के पहले पाच खडो पर आचार्य वीरसेन ने सस्कृत तथा प्राकृत की मिश्र शैली मे विशाल टोका लिखी तथा उपरितम निबधन आदि प्रकरणो का एक छठा खण्ड उसे जोड दिया। इस पूरे ग्रथ का विस्तार ७२ सहस्र श्लोको जितना हुआ। आचार्य वीरसेन के प्रगुरु आचार्य चंद्रसेन थे और गुरु आर्य आर्यनन्दि थे। उन के इस ग्रथ की समाप्ति शक ७३८ की कार्तिक शुक्ल १३ को हुई जब महाराज बोद्दणराय सम्राट थे[2]।

आचार्य वीरसेन के बाद संभवत· आचार्य पद्मनदि पट्टाधीश हुए थे [ले. ५]। इन का कोई दूसरा उल्लेख नही मिलता।

वीरसेन के ज्येष्ठ शिष्य विनयसेन थे [ले. ४]। किन्तु उन के प्रमुख शिष्य जिनसेन थे। आप की तीन कृतिया उपलब्ध है। आचार्य गुणधर ने दूसरी सदी मे लिखे हुए कसायपाहुड ग्रथ पर आचार्य वीरसेन ने टीका लिखना आरभ किया था जिसे वे पूरी नही कर सके। जिनसेन ने शक ७५९ की फाल्गुन शुक्ल १० को नदीश्वर महोत्सव मे वाटग्राम मे रहते हुए सम्राट अमोघवर्ष के राजत्व काल मे उसे समाप्त किया और आचार्य श्रीपाल द्वारा उस का सपादन कराया [ले. २]। इस की सज्ञा जयधवला है।

---

२ प्रशस्ति का पाठ अशुद्ध है जिस का संपादक डॉ जैन द्वारा किया गया रूपान्तर यहा दिया है। आप के अनुसार उस समय राष्ट्रकूट सम्राट जगत्तुग का साम्राज्य काल पूरा हो कर सम्राट अमोघवर्ष ने हाल ही राज्य भार ग्रहण किया था तथा बोद्दणराय अमोघवर्ष का ही नामान्तर था। बाबू ज्योतिप्रसाद जैन ने प्रशस्ति का दूसरा अर्थ प्रस्तुत करते हुए उस का समाप्ति काल संवत ८३८ माना है तथा उस समय जगत्तुग गोविन्द सम्राट थे ऐसा सूचित किया है (अनेकान्त ८ पृ. ९७)।

आ. जिनसेन की दूसरी महत्त्वपूर्ण कृति आदिपुराण है जो महापुराण का पूर्वार्ध है। भगवान् ऋषभदेव और चक्रवर्ती भरत के इस पुराण के ४३ पर्व लिखने के बाद आप का स्वर्गवास हुआ था। इस पुराण के तीसरे पर्व में आप ने उस के उपदेश की परपरा का विस्तार से वर्णन किया है जिस से प्रतीत होता है कि आप की रचना का मुख्य आधार कवि परमेश्वर रचित वागर्थसग्रह पुराण रहा था [ले. ३]। आदिपुराण बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रथ है। पुराण, काव्य, धर्मशास्त्र, योगशास्त्र आदि का इस मे सुदर समन्वय मिलता है। समकालीन समाजजीवनका नेतृत्व करने की क्षमता उस मे पद पद पर व्यक्त हुई है।[3]

कालिदास विरचित मेघदूत के चरणो की समस्यापूर्ति कर के भगवान् पार्श्वनाथ की केवलज्ञान प्राप्ति का वर्णन करनेवाला पार्श्वाभ्युदय काव्य आ जिनसेनने गुरुबधु विनयसेन की प्रेरणा से लिखा। तब अमोघवर्ष सम्राट थे [ले ४]।

आ जिनसेन की अधूरी कृति महापुराण उन के शिष्य गुणभद्र ने पूरी की [ले. ७]। आदिपुराण के ५ और उत्तरपुराण के ३० पर्व इतना उन की रचना का विस्तार है। आत्मानुशासन यह आप की दूसरी रचना है जो वैराग्यपर सुभाषितो का अच्छा सग्रह है [ले ६]।[4] देवसेन कृत दर्शनसार के अनुसार आप महातपस्वी, पक्षोपवासी और भावलिगी मुनि थे [ले ५]। उत्तर पुराण की प्रशस्ति मे आप के गुरु के रूप में जिनसेन और दशरथगुरु का स्मरण किया गया है [ले. ८]।

आचार्य गुणभद्र के शिष्य लोकसेन थे। उत्तर पुराण की प्रशस्ति सभवत आप की ही रची हुई है। यह प्रशस्ति शक ८२० के आश्विन

---

३ आ वीरसेन, जिनसेन और गुणभद्र का विस्तृत परिचय पं नाथूरामजी प्रेमी द्वारा दिया गया है (जैन साहित्य और इतिहास)।

४ गुणभद्र की एक और रचना जिनदत्तचरित्र, जो ९ सर्गो का सस्कृत काव्य है, प्रकाशित हो चुकी है (मा दि जै ग्रंथमाला ७, बम्बई १९१६)।

शुक्ल ५ को अकालवर्ष के सामन्त लोकादित्य की राजधानी बंकापुर मे लिखी गई थी [ले. ८]। इस के अनुसार उत्तर पुराण की रचना में लोकसेन का भी साहाय्य मिला था।

लोकसेन के बाद सेनसघ का उल्लेख शक ८२४ के एक दान शासन मे हुआ है [ले. ९]। यह दान श्रीकृष्ण वल्लभ के सामन्त विनयाबुधि के प्रदेश धवल में मुळगुद नगर के जिनमदिर के लिए अरसार्य ने दिया था। यह मदिर उस के पिता चिकार्य ने बनाया था। दान कुमारसेन के प्रशिष्य तथा वीरसेन के शिष्य कनकसेन को दिया गया था।

सूरस्थ गण के वज्रपाणि पडितदेव को पोयसळ वशीय विनयादित्य के राजत्व काल मे शक ९२४ की चैत्र शुक्ल १० को कुछ दान दिया गया था वह इस परपरा का अगला उल्लेख है [ले. १०]।

इस के अनतर ब्रह्मसेन के प्रशिष्य तथा आर्यसेन के शिष्य महासेन का उल्लेख मिलता है। इन्हे कोम्मराज के पुत्र चाकिराज ने पोन्नवाड नगर मे स्वनिर्मित शातिनाथमदिर के लिए चालुक्य वशीय त्रैलोक्यमल्ल महाराज की सम्राज्ञी केतलदेवी से विज्ञप्ति कर के शक ९७६ की वैशाख अमावास्या को सूर्यग्रहण के निमित्त कुछ दान दिया [ले. ११]।

इन के अनंतर चालुक्य वंशीय राजा त्रिभुवनमल्ल के समय संवत् ११३४ की पौष शुक्ल ७ को उत्तरायण सक्राति के दिन चालुक्य-गग-पेर्मानडि जिनालय के लिए राजधानी बळ्ळिगावे मे सेनगण के रामसेन पंडितदेव को कुछ दान दिया गया [ले. १२]। इसी लेख में किन्ही गुणभद्रदेव की मूर्ति का उल्लेख है।

सुराष्ट्र गण के रामचद्रदेव की शिष्या अरसब्बे का उल्लेख शक १०१७ की भाद्रपद शुक्ल ७ के एक लेख मे किया है [ले. १३]।

सेन गण के चद्रप्रभ सिद्धान्तदेव के शिष्य माधवसेन भट्टारक को संवत् ११८१ की माघ शुद्ध ५ को कुछ दान दिया गया था [ले. १४]।

सूरस्थ गण के पल्लपंडित का उल्लेख शक १०४६ के एक लेख मे हुआ है जिस में उन्हे पाल्यकीर्ति[5] के समान प्रसिद्ध कहा है [ले. १५]। इन की गुरुपरंपरा अनन्तवीर्य–बाळचंद्र–प्रभाचंद्र–कल्नेलेदेव–अष्टोपवासी–हेमनंदि–विनयनंदि–एकवीर ऐसी है। पल्लपंडित एकवीर के गुरुबंधु थे।

मुनिसेन के शिष्य श्रीधरसेन ने संस्कृत शब्दों का एक कोष लिखा है जिस का नाम मुक्तावली या विश्वलोचन कोष है [ले १६]। इस कोश की विशेषता यह है कि इस मे अकारान्त क्रम से शब्दों की रचना की गई है। श्रीधरसेन का समय संभवत १४ वीं सदी है।

सेन गण की पट्टावली[7] मे उल्लिखित आचार्यो मे सोमसेन से कुछ ऐतिहासिक स्वरूप दिखाई देता है[8]। सोमसेन का वर्णन कर्णाटकराज द्वारा पूजित ऐसा किया गया है [ले. १७]।

इन के बाद श्रुतवीर का उल्लेख है [ले. १८]। आप अलकेश्वरपुर मे पहुँच गये थे जहा आप ने महमदशाह की सभा मे समस्यापूर्ति की थी। इस के कारण सारे लोगों की नजर लग जाने से सिर्फ अठारह साल की आयु में ही आप स्वर्गस्थ हो गये।[9]

---

५ शाकटायन व्याकरण, स्त्रीमुक्तिकेवलिभुक्ति प्रकरण आदि के कर्ता जो ९ वीं सदी में हुए थे।

६ इन के समय तथा मेदिनी और हेमचंद्र के प्रभाव के लिए देखिए जैन सि. भा. [illegible] में श्री गोडे का लेख।

७ इस की प्रकाशित प्रति के लिए देखिए जैन सि. भा. वर्ष १ पृ. ३८। हमें उपलब्ध प्रति कुछ भिन्न और अधिक अच्छी मालूम होने से उसी का उपयोग किया गया है।

८ [illegible] था चुका है इन के अतिरिक्त पट्टावली में इस के [illegible], [illegible]सेन, कनकसेन, मधुषेण, विष्णुसेन, मल्लिषेण, [illegible], [illegible], [illegible], अजितसेन, गुणसेन, सिद्धसेन, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], नरसेन, [illegible], देवेन्द्रसेन, [illegible] का वर्णन किया गया है।

९ [illegible] है जो [illegible] है। उल्लिखित

इन के अनंतर धारसेन का उल्लेख है [ले. १९]। इन का भभेरी के धनेश्वर भट्ट के साथ कुछ विवाद हुआ था।[१०]

इन के बाद देवसेन का उल्लेख है। इन के एक शिष्य ने समयसार की एक प्रति लिखि थी[११]। इस का लेखन स्थान खानदेश जिले का धरणगाव था [ले. २०]।

इन के पट्ट पर सोमसेन अधिष्ठित हुए [ले. २१; २२]। विदर्भ स्थित कारंजा शहर मे इन के शिष्य बघेरवाल ज्ञातीय साह पूनाजी खटोड रहते थे। आप ने १०८ मदिर बनवाये थे और १८ स्थानो पर शास्त्र भाडार स्थापित किये थे। चित्तौड किले पर चद्रप्रभमदिर के सामने आप ने एक कीर्तिस्तम्भ स्थापित किया था।[१२] आप का यह वृत्तान्त जिस लेख से मिलता है उस में सवत् १५४१ और शक १४९१ के अक हैं जो गलत हैं क्यो कि इन दोनो मे उक्त क्रोधित सवत्सर नही आता है। यह विषय अनुसधान की अपेक्षा रखता है।

इन के पट्ट पर गुणभद्र विराजमान हुए [ले. २३, २४]। आप ने संवत् १५७९ मे एक जलयत्र प्रतिष्ठापित किया था।

आप के बाद क्रमशः वीरसेन और युक्तवीर पट्ट पर आए। वीरसेन ने कर्णाटक मे उपदेश दिया था[१३] [ले. २५, २६]।

शासक संभवतः सुलतान महमदशाह वेगडा है जिसका राज्य काल सन १४५८–१५११ ईसवी है।

१० यह गाव विदर्भ के अकोला जिले मे है।

११ यह प्रति सवत १५१० की लिखी है। उस के ८० वे पृष्ठ पर यह लेख है। इस की पूरी प्रशस्ति के लिए (ले. ५६५) देखिए।

१२ इस के विपय मे मतान्तरो की चर्चा के लिए अनेकान्त वर्ष ८ पृ. १४२ में मुनि कान्तिसागर का लेख देखिए।

१३ संभवत. इन्ही का उल्लेख भ. सोमकीर्ति के एक लेख में हुआ है (ले. ६५१)। इनके एक और सम्भव उल्लेख के लिए देखिए नोट ८४।

युक्तवीर के पट्ट पर माणिकसेन प्रतिष्ठित हुए। इन ने शक १४२४ मे एक अरहत मूर्ति स्थापित की [ले २७, २८]।

इन के बाद क्रमशः गुणसेन और लक्ष्मीसेन पट्टाधीश हुए। गुणसेन का नामान्तर गुणभद्र था। लक्ष्मीसेन ने एक नदीश्वर मूर्ति और एक अनत यंत्र प्रतिष्ठापित किया किन्तु इन दोनों पर सवत् का निर्देश ठीक नहीं है [ले. २९–३३]। सोमविजय ने आप की स्तुति की है।

आप के बाद सोमसेन पट्टाधीश हुए। कृष्णपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र इन्हीं की रचना है[१४]। इन ने सवत १५९७ मे कोई मूर्ति प्रतिष्ठापित की (ले. ३४–३६)।

इन के बाद क्रमश माणिक्यसेन और गुणभद्र भट्टारक हुए (ले ३७–३८)।

गुणभद्र के शिष्य सोमसेन दीर्घकाल तक पट्टाधीश रहे। इन ने सवत १६५६ के श्रावणमें रविषेण कृत पद्मचरित के आधार पर सस्कृत मे रामपुराण की रचना की (ले ३९)। शब्दरत्नप्रदीप नामक सस्कृत कोश की सवत् १६६६ मे उदयपुर मे लिखी गई एक प्रति पर आप का नाम अकित है (ले. ४०)। धर्मरसिक त्रैवर्णिकाचार नामक सस्कृत ग्रथ आप ने सवत १६६७ की कार्तिक पौर्णिमा को पूरा किया (ले. ४१)। शक १५६१ की फाल्गुन शुक्ल ५ को आप ने पार्श्वनाथ और सभवनाथ की मूर्तिया प्रतिष्ठापित की (ले ४२, ४३)। आप के शिष्य अभय पडित ने रविव्रत कथा लिखी है (ले. ४४)।

सोमसेन के पट्ट पर जिनसेन आसीन हुए। आप ने शक १५७७ की मार्गशीर्ष शुक्ल १० को पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की (ले ४५)। शक १५८० में आप ने पद्मावती की मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले ४६)। यह

---

१४ अगले लेख को देखते हुए कृष्णपुर काल्वाडा का सस्कृत रूप प्रतीत होता है। यह सूरत जिले मे है।

प्रतिष्ठा कारजा मे हुई थी। शक १५८१ की फाल्गुन शुक्ल १२ को चवर्या माणिक ने रत्नाकर विरचित समवशरण पाठ की एक प्रति आप को अर्पण की (ले. ४७)। शक १५८२ की फाल्गुन शुक्ल ७ को आपने एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ४८)। इसी प्रकार शक १६०७ मे जाली ग्राम मे आप ने एक मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले. ४९)। अचलपुर मे आप को एक वार सर्पदंश हुआ और दूसरी बार धोखे से भोजन मे बचनाग की बाधा हुई किन्तु दोनो बार विषापहार स्तोत्र के पठन से ही आप नीरोग हो गये। आप हूबड जाति के रायमल साह के पुत्र थे। आप की जन्मभूमि खभात थी। आप का विद्याभ्यास पद्मनंदिजी[15] के पास और पट्टाभिषेक कारजा मे हुआ था। आप ने गिरनार, सम्मेद शिखर, माणिक्यस्वामी आदि यात्राए कीं। आप के द्वारा सोयरासाह, निंबासाह, माधवसाह, गनबासाह और कान्हासाह इन पाच व्यक्तियो को सघपति पद प्राप्त हुआ। अतिम समारोह रामटेक मे हुआ था (ले ५०)। पूरनमल ने आप की स्तुति की है (ले. ५१) और आप की मयूरपिच्छी का उल्लेख किया है।

जिनसेन के उत्तराधिकारी समन्तभद्र हुए। इन का कोई उल्लेख नही मिला है। इन के बाद छत्रसेन भट्टारक हुए। आप ने सवत १७५४ मे एक पार्श्वनाथमूर्ति स्थापित की (ले. ५२)। आप का निवास कारजा मे था (ले. ५३)। द्रौपदीहरण, समवशरण षट्पदी, मेरुपूजा, पार्श्वनाथपूजा, झूलना, अनंतनाथ स्तोत्र और पद्मावती स्तोत्र ये कृतिया आप ने लिखीं (ले ५३-५९)। आप के शिष्य हीरा ने सवत् १७५४ मे कडतसाह से प्रेरणा पाकर वृषणपुर[16] मे अनिरुद्धहरण की रचना की (ले. ६०)। छत्रसेन की एक आरती भी उपलब्ध है (ले ६१)। अर्जुनसुत और विहारीदास ने आप की प्रशसा की है (ले. ६२, ६३)।

---

१५ सभवत: बलात्कार गण–ईडर शाखा के रामकीर्ति के पट्टशिष्य पद्मनदि ही यहा उल्लिखित है।

१६ यह सभवत बुऱ्हाणपुर का सस्कृत रूपातर है।

इन के अनतर नरेंद्रसेन पट्टाधीश हुए। आप ने शक १६५२ मे एक ज्ञानयत्र प्रतिष्ठित किया [ले. ६४]। सूरत मे रहते हुए आप ने सवत् १७९० मे आश्विन कृष्ण १३ को यशोधरचरित की प्रति लिखी [ले. ६५]। आप की पूजा से आप की गुरुपरम्परा की नामावली मिलती है [ले ६६]। आप ने पार्श्वनाथ पूजा और वृषभनाथ पाळणा ये रचनाए लिखीं [ले ६७, ६८]। आप के शिष्य अर्जुनसुत सोयरा ने कैलास छप्पय लिखे[१७] जिन मे आप की चपापुर यात्रा का भी उल्लेख है। कैलास छप्पय की रचना देवलगाव मे हुई थी [ले ६९]।

नरेन्द्रसेन के पट्ट पर शान्तिसेन प्रतिष्ठित हुए। आप ने कारजा मे शक १६७३ की फाल्गुन कृष्ण १२ को एक चद्रप्रभ मूर्ति स्थापित की (ले ७०)। शक १६७५ की भाद्रपद शुक्ल १२ को आप ने एक षोडश कारण यत्र प्रतिष्ठित किया (ले. ७१)। शक १६७८ की माघ शुक्ल १४ को पार्श्वनाथ की एक मूर्ति आप के द्वारा प्रतिष्ठित हुई (ले ७२)। आप की शिष्या शिखरश्री के शिष्य बानार्शिदास ने सवत् १८१६ मे देवलगाव मे हरिवश रास की एक प्रति लिखी (ले ७३)। आप के शिष्य रतन ने रामटेक यात्रा के समय[१८] शान्तिनाथ की एक विनती बनाई थी (ले. ७४)। आप के एक शिष्य तानू के कवित्तो से पता चलता है कि आप फुटानसेठ और चदाबाई के पुत्र थे तथा आप ने सागरस्नान किया और बिदर के जिन मदिर के दर्शन किये थे (ले ७५)।

शान्तिसेन के बाद सिद्धसेन पट्टाधीश हुए। आप ने सवत् १८२६ की वैशाख कृष्ण ११ को कोई मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले ७७)।[१९] इस के दूसरे ही दिन साह रतन ने आप की एक आरती बनाई जिस मे कहा

---

१७ इन की रचना का शक प्रशस्ति मे दिया है। किन्तु उस का अर्थ स्पष्ट नही है।

१८ इस का शक निर्देश भी स्पष्ट नही है।

१९ इस का शक निर्देश गलत है।

गया है कि शान्तिसेन से आप की मुलाकात कोल्हापुर मे हुई और वहा से आप कारंजा पधारे थे (ले. ७८)। इसी समय आप के द्वारा एक पार्श्वनाथ मूर्ति भी स्थापित हुई थी (ले. ७९)। सवत् १८४६ की कार्तिक शुक्ल १४ को आप ने एक मुनिसुव्रत मूर्ति स्थापित की (ले. ८०)। आप के प्रिय शिष्य रत्नकीर्ति ने सवत् १८६९ की चैत्र शुक्ल ९ को सकलभूषण कृत षट्कर्मोपदेश रत्नमाला ग्रन्थ का मराठी श्लोकबद्ध अनुवाद अमरावती मे पूरा किया (ले. ८१)। आप की एक पूजा माधव द्वारा और एक स्तुति राघव द्वारा बनाई गई है (ले. ८२–८३)। येमासाह ने आप की प्रशंसा की है (ले. ८४)।

सिद्धसेन के पट्ट पर लक्ष्मीसेन अभिषिक्त हुए। आप ने सवत् १८९९ की चैत्र शुक्ल १० को नागपुर मे गौतम गणधर पादुकाओ की स्थापना की।[२०]

---

२० स्थानिक अनुश्रुति से पता चलता है कि लक्ष्मीसेन का स्वर्गवास संवत् १९२२ मे हुआ। उन के कोई तेरह वर्ष बाद मुडबिद्री से आए हुए कुमार चद्रय्या पट्टाभिषिक्त किये गये तथा आप का नूतन नाम वीरसेन रखा गया। आप की आयु उस समय २८ वर्ष थी। कोई ६० वर्ष तक पट्टाधीश रह कर आप ने कई मूर्ति प्रतिष्ठाए कीं। इन मे नागपुर, कलमेश्वर, कारजा, पिंपरी, भातकुली आदि स्थानों की प्रतिष्ठाए विशेष महत्त्वपूर्ण रहीं। आचार्य कुदकुद कृत समयसार पर आप की बहुत श्रद्धा थी तथा उस विषय पर आप के प्रवचन बहुत अच्छे हुआ करते थे। आप का स्वर्गवास ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया सवत् १९९५ मे हुआ। आप की समाधि कारजा मे है।

(सेनगण—कालानुक्रम)

१ चन्द्रसेन

२ आर्यनन्दि

३ वीरसेन (सवत् ८७३)

४ विनयसेन ५ जिनसेन (संवत् ८९४)

६ गुणभद्र

७ लोकसेन (सवत ९५४)

८ कुमारसेन

९ वीरसेन

१० कनकसेन (सवत् ९५८)

११ वज्रपाणि (सवत् १०५८)

१२ ब्रह्मसेन

१३ आर्यसेन

१४ महासेन (सवत् १११०)

१५ रामसेन (सवत् ११३४)

१६ रामचन्द्र (सवत् ११५१)

१७ चन्द्रप्रभ

१८ माधवसेन (सवत् ११८१)

१९ अनन्तवीर्य

२० बालचन्द्र
।
२१ प्रभाचन्द्र
।
२२ कल्नेले देव
।
२३ अष्टोपवासि देव
।
२४ हेमनन्दि
।
२५ विनयनन्दि
।
२६ एकवीर
२७ पल्ल पण्डित (संवत् ११८०)

---

२८ मुनिसेन
।
२९ श्रीधरसेन

---

३० सोमसेन
।
३१ श्रुतवीर
।
३२ धारसेन
।
३३ देवसेन (संवत् १५१०)
।
३४ सोमसेन (सवत् १५४१)
।
३५ गुणभद्र (सवत् १५७९)
।
३६ वीरसेन
।
३७ युक्तवीर
।

३८ माणिकसेन (सवत् १५५८ ,
|
३९ गुणसेन (गुणभद्र)
|
४० लक्ष्मीसेन
|
४१ सोमसेन (सवत् १५९७)
|
४२ माणिक्यसेन
|
४३ गुणभद्र
|
४४ सोमसेन (स. १६५६–१६९६)
|
४५ जिनसेन (स.१७१२–१७४२)
|
४६ समन्तभद्र
|
४७ छत्रसेन (संवत् १७५४)
|
४८ नरेन्द्रसेन (स १७८७ -१७९०)
|
४९ शान्तिसेन (स १८०८-१८१६)
|
५० सिद्धसेन (स १८२६--१८६९)
|
५१ लक्ष्मीसेन (स १८९९--१९२२)
|
५२ वीरसेन (स १९३६–१९९५)

लेखांक ८६ – पुराणसार श्रीचंद्र

धारायां पुरि भोजदेवनृपते राज्ये जयत्युच्चकैः
श्रीमत्सागरसेनतो यतिपतेर्ज्ञात्वा पुराण महत् ।
मुक्त्यर्थं भवभीतिभीतजगतां श्रीनंदिशिष्यो बुधो
कुर्वे चारु पुराणसारममलं श्रीचंद्रनामा मुनिः ॥
श्रीविक्रमादित्यसंवत्सरे सप्तत्यधिकवर्षसहस्रे
पुराणसाराभिधान समाप्तम् ॥

[अ. २ पृ ५८]

लेखांक ८७ – उत्तरपुराण टिप्पण

श्रीविक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिकसहस्रे महापुराणविषमपद-विवरणं सागरसेन परिज्ञाय मूलटिप्पणं चालोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं आज्ञापातभीतेन श्रीमद् बलात्कारगणश्रीनंद्याचार्यसत्कविशिष्येण श्रीचंद्र-मुनिना निजदोर्दण्डाभिभूतरिपुराज्यविजयिन. श्रीभोजदेवस्य राज्ये ॥

[उपर्युक्त]

लेखांक ८८ – पद्मचरित टिप्पण

बलात्कारगणश्रीश्रीनंद्याचार्यसत्कविशिष्येण श्रीचंद्रमुनिना श्रीमद्वि-क्रमादित्यसंवत्सरे सप्ताशीत्यधिकवर्षसहस्रे श्रीमद्धारायां श्रीमतो भोजदेवस्य राज्ये पद्मचरिते. . ॥

[उपर्युक्त]

लेखांक ८९ – बेळगामि शिलालेख केशवनंदि

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वर-भट्टा-रक-सत्याश्रयकुळतिळकं-चालुक्याभरणं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजयराज्य प्रवर्तिसे तत्पादपद्मोपजीवितोत्तमाग स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द-महा-मंडळेश्वरं बनवासिपुरवरेश्वर महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादं श्रीमन्महामंडलेश्वरं चा-ण्डरायरसर् बनवासिपन्निर् छासिरमनाळुत्तमिरल राजधानिबळ्ळिगावेय

नेले वीडिनोळ् शक वर्ष ९७० नेय सर्वधारीसंवत्सरद ज्येष्टशुद्धत्रयोदशी आदित्यवारदन्दु जजाहुति-श्रीशांतिनाथसंबधियप्प बळगारगणद मेघनदि-भट्टारक शिष्यरप्प केशवनदि अष्टोपवासिभट्टारर वसदिगे पूजानिमित्तदिं धारापूर्वक जिड्डुळिगे ७० र वळिय राजधानिवळ्ळिगावेय पुळ्ळेय बयलोळ् भेरुण्डगळेयोळ् कोट्ट गळदे मत्तरय्दु अदर सीमे ॥

[जैन शिलालेख संग्रह भा २ पृ २२०]

लेखांक ९० – बलगाम्वे शिलालेख केशवदेव

स्वस्ति श्रीचित्रकूटाम्नायदावलि मालवद शांतिनाथदेवसबंध श्रीबलात्कारगण मुनिचंद्रसिद्धांतदेवर शिसिनु अनतकीर्तिदेवरु हेग्गडे केसवदेवंगे धारापूर्वकं माडिकोटेवु प्रथिष्टे पुण्य साति ॥

[उपर्युक्त पृ. २६५]

लेखांक ९१ – कोणूर शिलालेख पद्मप्रभ

श्रीरमणीभासि बळत्कारगणांभोधि कोण्डनूरोळ् निधिगं ।
भूरमणीमकुटाळकारदिं नेसेदोप्पि तोर्प जिनमदिरम ॥ १२
उदयगिरींद्रदोळ्सेवरुतुदितोदयवागिवळेप चद्रन तेरद-
न्तुदियिसिदं कुवळयकभ्युदयकरं तद्गणादियोळ् गणचद्र ॥ १७
पक्षोपवासिदेवनघक्षय तन्मुनिपदाब्जमधुकरशीळ ।
रक्षितगुणगणनिळयमुमुक्षुजनानदियप्प नयनदिबुध ॥ १८
आ नयनदिय शिष्य नानाविद्याविलासनूर्जिततेज ।
श्रीनारीनाथनवोल् भूनुतना श्रीधरार्ययतिपतितिळक ॥ १९
तन्मुनिपदाब्जमधुकरनुन्मदमिथ्याकथाविमथन मुनिपं ।
सन्मार्गिचद्रकीर्ति वियन्मार्गद चद्रनंते कुवळयपूज्यं ॥ २०
अतिचतुरकविचकोर प्रततिदरस्मेरनयननमीटिदपुदुद-
न्वितकर्णचचुपुटदिं श्रुतिकीर्तिमुनींद्रचंद्रवाक्चद्रिकेय ॥ २१
श्रीधरनेसेद सुयश श्रीधरनधिगतसमस्तजिनपतितत्त्व-
श्रीधरनेसेद भट्टारक् श्रीधरना चंद्रकीर्तिदेवन तनय ॥ २२
आ मुनिमुख्यन शिष्य श्रीमच्चारित्रचक्रिसुजनविळास

भूमिपकिरीटताडितकोमळनखरश्मिनेमिचद्रमुनींद्रं ॥ २३
श्रीधरवनजदसिरिय साधिपेनेवंतिरेसेय मधुपन तेरन
श्रीधरपदसरसिजदोळ् साधिपवोलेसेदु वासुपूज्यं पोल्त ॥२४
बृंहितपरमतमदकरिसिंहं त्रैविद्यवासुपूज्यानुजनुद्
घांसस्संहरनेसेद संह्तकामं यशस्विमलयावुधं ॥ २७
अतिचतुरकविकदवकनुतपद्मप्रभमुनीगराद्धांतेशं ।
श्रुतकीर्तिप्रियनेसेसं यतिपत्रैविद्यवासुपूज्यतनुजं ॥ २८

स्वस्ति श्रीमच्चाळुक्यविक्रमकालद १२ नेय प्रभवसवत्सरद पौषकृष्ण-चतुर्दशी वड्ड वारदुत्तरायण सक्रांतियंदु ॥

(उपर्युक्त पृ. ३३६)

लेखांक ९२ – नेसर्गी शिलालेख

कुमुदचंद्र

श्रीमूलसंघद वलात्कारगणद श्रीपार्श्वनाथदेवर श्रीकुमुदचंद्रभट्टारक-देवर गुड्ड वाडिगसात्ति सेट्टियरु मुख्यवागिनखरंगळु माडिसिद नखर जिनालय ॥

(उपर्युक्त पृ. ३६४)

लेखांक ९३ – संभवनाथ मूर्ति

देशनंदी

सवत १२५८ श्रीवलात्कारगणे पंडित श्रीदेशनदी गुरुवर्यवरान्वये साधु सीलेण तस्य भार्या हर्पिणी तयोः सुत साधु गासूल सांतेण प्रणमति नित्यं ॥

(पावागिरि, अ. १२ पृ. १९२)

लेखांक ९४ – सोनागिरि शिलालेख

कनकसेन

मंदिर सह राजत भये चंद्रनाथ जिन ईस ।
पोश सुदी पूनम दिना तीन सतक पैतीस ॥
मूलसघ अर गण करो वलात्कार समुझाय ।
श्रवणसेन अरु दूसरे कनकसेन दुइ भाय ॥
वीजक अक्षर वाचके कियो सुनिश्चय राय ।
और लिख्यो तो वहुतसो नहि पर्‍यो लखाय ॥

(भा. ५ पृ. १९५)

लेखांक ९५ – विंध्यगिरि शिलालेख वर्धमान

श्रीमूलसघपय·पयोधिवर्धनसुधाकराः श्रीवलात्कारगणकमलकलिका-कलापविकचनदिवाकराः वनवा त कीर्तिदेवा तच्छिष्याः रायभुजसुदाम · 'आचार्यमहावादिवादीश्वर-रायवादिपितामह-सकलविद्वज्जनचक्रवर्ति-देवेंद्र-विशालकीर्तिदेवा' तच्छिष्या. भट्टारकश्रीशुभकीर्तिदेवास्तच्छिष्याः कलिकाल-सर्वज्ञभट्टारक-धर्मभूषणदेवा तच्छिष्या श्रीअमरकीर्त्याचार्याः तच्छिष्या मालिवा तिनृपाणा प्रथमानल रसित नुतपा' यमुल्लासक' ··देमक 'चार्यपट्टविपुलाचला करणमार्तण्डमण्डलाना भट्टारकधर्मभूषणदेवाना ' तत्त्वार्थवार्धिवर्धमानहिमांशुना वर्धमान-स्वामिना कारितोऽ आचार्याणा · स्वस्ति शकवर्ष १२८५ परिधावि सवत्सरे वैशाख शुद्ध ३ वुधवारे ॥

(जैन शिलालेख सग्रह १ पृ. २२३)

लेखांक ९६ – विजयनगर शिलालेख धर्मभूषण

श्रीमूलसंघेजनि नदिसघस्तस्मिन् वलात्कारगणोतिरम्य ।
तत्रापि सारस्वतनाम्नि गच्छे स्वच्छाशयोभूदिह पद्मनदी ॥ ३
केचित्तदन्वये चारुमुनयः खनयो गिराम ।
जलधाविव रत्नानि वभूवुर्दिव्यतेजस ॥ ५
तत्रासीच्चारुचारित्ररत्नरत्नाकरो गुरु ।
धर्मभूषणयोगीन्द्रो भट्टारकपदाचित ॥ ६
शिष्यस्तस्य मुनेरासीदनर्गलतपोनिधि ।
श्रीमानमरकीर्त्यार्यो देशिकाग्रेसर शमी ॥ ८
श्रीधर्मभूपोजनि तस्य पट्टे श्रीसिंहनद्यार्यगुरो सधर्मा ।
भट्टारक श्रीजिनधर्महर्म्यस्तम्भायमान. कुमुदेदुकीर्ति ॥ ११
पट्टे तस्य मुनेरासीद् वर्धमानमुनीश्वर ।
श्रीसिंहनंदियोगींद्रचरणाभोजषट्पद ॥ १२
शिष्यस्तस्य गुरोरासीद् धर्मभूपणदेशिक ।
भट्टारकमुनि श्रीमान् शल्यत्रयविवर्जित ॥ १३
आसीदसीममहिमा वशे यादवभूभृताम् ।
[illegible] तगुणोदार श्रीमान वुक्कमहीपति ॥ १५

उदभूद् भूभृतस्तस्माद् राजा हरिहरेश्वरः ।
कलाकलापनिलयो विधुः क्षीरनिधेरिव ॥ १६
आसीत्तस्य महीजानेः शक्तित्रयसमन्वितः ।
कुलक्रमागतो मंत्री चैचदण्डाधिनायकः ॥ १९
तस्य श्रीचैचदण्डाधिनायकस्योर्जितश्रियः ।
आसीदिरुगदण्डेशो नंदनो लोकनंदनः ॥ २०
स्वस्ति शकवर्षे १३०७ प्रवर्तमाने क्रोधनवत्सरे फाल्गुनमासे
कृष्णपक्षे द्वितीयायां तिथौ शुक्रवासरे।
अस्ति विस्तीर्णकर्णाटधरामंडलमध्यगः ।
विषयः कुंतलो नाम्ना भूकांताकुंतलोपमः ॥ २५
विचित्ररत्नरुचिरं तत्रास्ति विजयाभिधं ।
नगरं सौधसंदोहदर्शिताकांडचंद्रिकम् ॥ २६
तस्मिन्निरुगदंडेशः पुरे चारु शिलामयम् ।
श्रीकुन्थुजिननाथस्य चैत्यालयमचीकरत् ॥ २८
भद्रमस्तु जिनशासनाय ।

(भा. १ कि. ४ पृ ९०)

लेखांक ९७ – न्यायदीपिका

मद्गुरोर्वर्धमानेशो वर्धमानदयानिधेः ।
श्रीपादस्नेहसंबधात् सिद्धेयं न्यायदीपिका ॥ १

इति श्रीमद्वर्धमानभट्टारकाचार्यगुरुकारुण्यसिद्ध-सारस्वतोदयश्रीमदभिनवधर्मभूषणाचार्यविरचितायां न्यायदीपिकायामागमप्रकाशः समाप्त. ।

(अ. १ पृ. २७२)

बलात्कार गण-प्राचीन

इस गण का नामकरण सबसे प्राचीन लेखोमे [ले. ८७,८८] बलात्कार गण यही पाया जाता है। किन्तु इस का मूल रूप बळगार गण यही मालूम पडता है [ले ८९]। इसके दूसरे रूप बळात्कार और बळत्कार भी है [ले. ९१] इस गण के प्राचीन उल्लेख ज्यादातर कर्णाटक के मिले हैं किन्तु इन्ही मे एकसे इस का सम्बन्ध चित्रकूट और मालवसे जोडा गया है [ले ९०]। चौदहवी सदी से इस के साथ सरस्वती गच्छ और उस के पर्यायवाची भारती, वागेश्वरी, शारदा आदि नाम जुडे है [ले ९६,१६७,१८१, आदि]। इस नाम का सम्बन्ध उस वादसे जोडा जाता है जिसमे दिगम्बर सघ के आचार्य पद्मनन्दिने श्वेताम्बरोसे विवाद कर पाषाणकी सरस्वती मूर्तिसे मन्त्रशक्ति द्वारा निर्णय कराया था। यह वाद गिरनार पर्वत पर हुआ कहा जाता है। ये पद्मनन्दि सम्भवत आचार्य कुदकुद ही है। इन्ही से इस गण का तीसरा विशेषण कुदकुदान्वय प्रचलित हुआ है [ले १०८ आदि]। कहीं कहीं इसे नन्दिसघ या नद्याम्नाय भी कहा है (ले २६७ आदि)।

बलात्कार गण का सब से प्राचीन उल्लेख आचार्य श्रीचन्द्र ने किया है। आप के दीक्षागुरु आ श्रीनन्दि और विद्यागुरु आ. सागरसेन थे। आप का निवास धारा नगरी में था जहा उस समय महाराज भोज राज्य कर रहे थे। आपने सवत् १०७० मे पुराणसार, सवत् १०८० मे उत्तरपुराण टिप्पण और सवत् १०८७ मे पद्मचरित टिप्पण की रचना की [ले ८६-८८]।

इस गण के दूसरे आचार्य केशवनन्दि थे। चालुक्य वशीय त्रैलोक्यमल्ल देव के राज्यकाल मे शक ९७० की ज्येष्ठ शुक्ल १३ को जजाहुति के शान्तिनाथ मन्दिर के लिए मडलेश्वर चावुण्डराय ने राजधानी बल्लिगावे से आप को कुछ दान दिया। आप अष्टोपवासी थे तथा मेघनन्दि भट्टारक के शिष्य थे (ले ८०)।

इन के अनतर चित्रकूटाम्नाय के मुनिचंद्र के प्रशिष्य तथा अनन्तकीर्ति के शिष्य केशवदेव को दिये गये दान का उल्लेख मिलता है। इस लेखका समय १२ वीं शताब्दी माना गया है [ले. ९०]।

इन के बाद पद्मप्रभ आचार्य का उल्लेख आता है। आप की गुरु-परम्परा पक्षोपवासिमुनि-नयनन्दि-श्रीधर-चन्द्रकीर्ति-श्रीधर-नेमिचन्द्र-सहपाठी वासुपूज्य-पद्मप्रभ इस प्रकार कही गई है। सवत् ११४४ की पौष कृष्ण १४ को उत्तरायण सक्रान्ति के अवसर पर आप को कुछ दान दिया गया था [ले. ९१]।[21]

अगला उल्लेख भट्टारक कुमुदचंद्र की एक मूर्ति का है। जो पार्श्व-नाथ के नगरजिनालय मे स्थापित की गई थी। इस का समय भी बारहवीं सदी माना गया है [ले. ९२]।

इन के बाद पंडित देशनदि का उल्लेख मिलता है। आप ने सवत् १२५८ मे एक संभवनाथ मूर्ति प्रतिष्ठापित की [ले. ९३]।

श्रवणसेन और कनकसेन इन दो बन्धुओ के द्वारा संवत् ३३५ की पौष शुक्ल १५ को प्रतिष्ठापित किये गये चन्द्रप्रभ मन्दिर का उल्लेख एक उत्तरकालीन लेख मे मिलता है [ले. ९४] पं. प्रेमीजी का अनुमान है कि ये अक १३३५ होगे।[22]

इन के अनन्तर स्वामी वर्धमान का शक १२८५ का उल्लेख प्राप्त होता है [ले. ९५] आप की गुरुपरम्परा बनवा (सिवस) तकीर्ति-देवेंद्र-विशालकीर्ति-शुभकीर्ति-धर्मभूषण-अमरकीर्ति-धर्मभूषण-वर्धमान इस प्रकार है।[23]

---

२१ कुंदकुंदाचार्य विरचित नियमसार की सस्कृत टीका सम्भवत इन्ही पद्म-प्रभदेव की बनाई है।

२२ बलात्कार गण मे सेनान्त नाम नहीं पाये जाते। सम्भवत ये गृहस्थो के नाम है।

२३ वर्धमान विरचित वरागचरित के परिचय के लिये जटासिंहनंदि कृत वराग-चरित की डॉ. उपाध्ये लिखित प्रस्तावना देखिए।

वर्धमान के शिष्य धर्मभूषण हुए। इन के समय शक १३०७ की फाल्गुन कृष्ण द्वितीया को राजा हरिहर के मत्री चैच दडनायक के पुत्र इरुगप्प ने विजयनगर में कुन्थुनाथ का एक मन्दिर बनवाया [ले. ९६]। धर्मभूषण ने न्यायशास्त्रमें प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए न्याय-दीपिका नामक ग्रथ की रचना की। इस के प्रथम प्रकाश मे प्रमाणलक्षण का, दूसरे प्रकाश में प्रत्यक्ष प्रमाणो का तथा तीसरे प्रकाशमें परोक्ष प्रमाणो का अच्छा विवेचन किया गया है [ले. ९७]।

बलात्कार गण-प्राचीन-कालपट

१ श्रीनन्दि
|
२ श्रीचन्द्र [सवत् १०७०-१०८७]
___
३ मेघनन्दि
|
४ केशवनन्दि (सवत् ११०४)
___
५ मुनिचन्द्र
|
६ अनन्तकीर्ति
|
७ केशवदेव
___
८ पक्षोपवासी
|

९ नयनन्दि
|
१० श्रीधर
|
११ चन्द्रकीर्ति
|
१२ श्रीधर
|
१३ वासुपूज्य १४ नेमिचन्द्र
|
१५ पद्मप्रभ [संवत् ११४४]

१६ कुमुदचन्द्र

१७ देशनन्दी [संवत् १२५८]

१८ श्रवणसेन-कनकसेन [सं. १३३५]

१९ वनवासि वसन्तकीर्ति
|
२० देवेंद्र विशालकीर्ति
|
२१ शुभकीर्ति
|
२२ धर्मभूषण
|
२३ अमरकीर्ति
|
२४ सिंहनन्दि २५ धर्मभूषण
|
२६ वर्धमान [संवत् १४१०]
|
२७ धर्मभूषण [संवत् १४४२]

३. बलात्कार गण – कारंजा शाखा

लेखांक ९८ – पट्टावली अमरकीर्ति

श्रीनंदिसंघ-सरस्वतीगच्छ-बलात्कारगणाग्रगण्याना आचार्यवरेण्याना परंपराप्रवर्तितमहासिंहासनयोग्यानां श्रीमदमरकीर्तिराउलप्रियाग्रमुख्यानां ।

[ना. ८८]

लेखांक ९९ – दशभक्त्यादि महाशास्त्र विशालकीर्ति

भट्टारको बलात्कारगणाधीशो महात्मा ।
विशालकीर्तिवादींद्र परमागमकोविद ॥
सिकदरसुरित्राणप्राप्तसत्कारवैभव. ।
महावादिजयोद्भूतयशोभूपितविष्टप. ॥
श्रीविरूपाक्षरायस्य श्रीविद्यानगरेशिन. ।
सभायां वादिसदोह निर्जित्य जयपत्रकम् ॥
स्वीकृत्य च महाप्रज्ञावलेग बुधभूभुजे ।
मतं सरस्वतीमूलशासनं चा सदोज्वलम् ॥
देवप्पदडनाथस्य नगरे श्रीमदारगे ।
प्रकाशितमहाजैनधर्मोभाद्भूसुरार्चित ॥

(भा. ग्र. पृ. १२५)

लेखांक १०० – पट्टावली विद्यानंद

प्रचडाशेषतुरखराजाधिराजअल्लावदीनसुलतानमान्यश्रीमदभिनववादि-विद्यानदस्वामिना ।

(म ५७)

लेखांक १०१ – दसभक्त्यादि महाशास्त्र

विशालकीर्ते श्रीविद्यानदस्वामीति शब्दित ।
अभवत्तनय साधुर्मल्लिरायनृपार्चित. ॥
कावेरीसरिदबुवेष्टनलसच्छ्रीरगसत्पत्तने

लक्ष्मीवल्लभरंगनाथमहिते श्रीवीरपृथ्वीपतेः ।
आस्थाने विबुधव्रजं विजयवाग्वृत्तेर्विजित्यावनौ
विद्यानंदमुनीश्वरो विजयते साहित्यचूडामणिः ॥
वीरश्रीवरदेवरायनृपतेः सद्भागिनेयेन वै
पद्मांबाकलगर्भवार्धिविधुना राजेद्रवंद्यांघ्रिणा ।
श्रीमत्सालुवकृष्णदेवधरणीकांतेन भक्त्यार्चितो
विद्यानंदमुनीश्वरो विजयते स्याद्वादविद्यापति. ॥
यो विद्यानगरीधुरीणविजयश्रीकृष्णरायप्रभो-
रास्थाने विदुषां गणं समजयत्पंचाननो वा गजम् ।
सद्वाग्भिर्नखरैरुदात्तविमलज्ञानाय तस्मै नमो
विद्यानंदसुधीश्वराय जगति प्रख्यातसत्कीर्तये ॥
शाके वह्निखराब्धिचंद्रकलिते संवत्सरे शार्वरे
शुद्धश्रावणभाकृतान्तधरणीतुग्मैत्रमेषे रवौ ।
कर्किस्थे सुगुरौ जिनस्मरणतो वादींद्रवृन्दार्चितः
विद्यानंदमुनीश्वरः स गतवान् स्वर्गं चिदानंदकः ॥

(भा ग्र. पृ. १२६)

लेखांक १०२ - दशभक्त्यादि महाशास्त्र देवेंद्रकीर्ति

स्वामिविद्यादिनंदस्य भारतीभाललोचनं ।
सूनुर्देवंद्रकीर्त्यार्यो जातो भट्टारकाग्रणीः ॥
बलात्कारगणांभोजभास्करस्य महाद्युतेः ।
श्रीमद्देवेद्रकीर्त्याख्यभट्टारकशिरोमणेः ॥
शिष्येण ज्ञातशास्त्रार्थस्वरूपेण सुधीमता ।
जिनेंद्रचरणाद्वैतस्मरणाधीनचेतसा ॥
वर्धमानमुनींद्रेण विद्यानंदार्यबधुना ।
कथितं दशभक्त्यादिशासन भव्यसौख्यद ॥
शाके वेदखराब्धिचद्रकलिते संवत्सरे श्रीप्लवे
सिंहश्रावणिके प्रभाकरशिवे कृष्णाष्टमीवासरे ।
रोहिण्यां दशभक्तिपूर्वकमहाशास्त्रं पदार्थोज्ज्वल
विद्यानदमुनिस्तुतं व्यरचयत् सद्वर्धमानो मुनि ॥

(भा. ग्र पृ १२२)

लेखांक १०३ – पट्टावली

तत्पट्टोदयाद्रिदिवाकरायमान-नित्याद्येकांतवादि-प्रथमवचनखंडन-प्रवचनरचनाडंबर-षड्दर्शनस्थापनाचार्यपट्तर्कचक्रेश्वरश्रीमद्देवेंद्रकीर्तिदेवानां ॥

(म. ५७)

लेखांक १०४ – पट्टावली　　धर्मचंद्र

तत्पट्टोदयदेवगिरिपरसताभिव्यंजनतिमिरनिर्नाशनदिनकरसमानानां सार्थकनामभट्टारकश्रीमद्धर्मचद्रदेवाना ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक १०५ – पद्मावती मूर्ति

सक १४८७ प्रजापत संवत्सरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ. धर्मचंद्राणाम उपदेशात् ज्ञाति बघेरवाल भुरा गोत्रे सा रतन भार्या पुतली · ॥

(र सु खेडकर, नागपुर)

लेखांक १०६ – पट्टावली　　धर्मभूषण

तत्पट्टोदयाचलदिवाकरायमान ·भट्टारकश्रीधर्मभूषणदेवानां ॥

[म. ५७]

लेखांक १०७ – चंद्रप्रभ मूर्ति

सके १५०३ वृषनाम संवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे भ धर्मभूषणोपदेशात् बघेरवालज्ञाति ठवला गोत्रे सं पासुसा ॥

[अ गु मिश्रीकोटकर, नागपुर]

लेखांक १०८ – नेमिनाथ मूर्ति　　देवेंद्रकीर्ति

शके १५०३ वृषनाम्नि संवत्सरे फाल्गुणमासे शुक्लपक्षे ६ बुधवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ श्रीधर्म-

चंद्रस्तत्पट्टे भ. श्रीधर्मभूषणस्तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्त्युपदेशात् श्रीव्याघ्रेरवाल-ज्ञातीय खडोरियागोत्रे · ॥

(च. १)

लेखांक १०९ – अंबिका रास

संवत १६४१ वर्षे कार्तग वदि ५ दिने श्रीएरंडवेलसुभस्थाने श्रीधर्म-नाथचैत्यालये मुनिश्रीदेवेंद्रकीर्ति लक्षितं बाई हरपमती पठनार्थं ॥

[ना. ३५]

लेखांक ११० – द्वादशानुप्रेक्षा

शके १५१४ नदननाम संवत्सरे पौषमासे शुक्लपक्षे त्रयोदसितिथौ गुरुवारे वराडदेशे श्रीमूलसंघे ··भ. धर्मचंद्र तत्पट्टे भ धर्मभूषण तत्पट्टे भ. देवेंद्रकीर्ति ·· · गंगराडाज्ञाति लघु नंदिग्रामे आदगेटी ·· ताभ्यां स्वहस्ते लिखितं ॥

[ना. १५]

लेखांक १११ – नेमिनाथ पूजा

जलाद्यैर्यजेहं मुदार्घेण देवं
सुधर्मादिभूष गुरुं भूपसेवं ।
परं प्राप्तकैवल्यराज्यं विशाल
सुदेवेंद्रकीर्तिस्तुतं शर्मशालं ॥

(म. १०)

लेखांक ११२ – नंदीश्वर पूजा

सुभक्तिभाव पूजये परापरं जिणालये ।
सुधर्मभूषसायरं सुरेंद्रकीर्तिचर्चित ॥

(म ८)

लेखांक ११३ – १ मूर्ति   कुमुदचंद्र

शक १५२२ सर्वरि नाम संवत्सरे मूलसंघे वैसाख सुदि १३ दिने श्रीमूलसंघे··भ. धर्मचंद्र तत्पट्टे भ श्रीधर्मभूषण तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति

तत्पट्टे भ. श्रीकुमुदचंद्र । भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति उपदेशात् स वसराज नित्यं प्रणमति ॥

(आर्वी, अ ४ पृ. ५०२)

लेखांक ११४ – १ मूर्ति

शक १५३५ प्रमादि संवत्सरे फाल्गुण सुदि ५ श्रीमूलसंघे‥‥भ. श्रीधर्मचद्र धर्मभूषणः देवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे कुमुदचंद्रोपदेशात् सैतवालज्ञातीय रत्नसाह समरासाह नित्य प्रणमति ॥

(बाळापुर, अ. ४ पृ. ५०२)

लेखांक ११५ – पार्श्वनाथ पूजा

मलयादिमृगपतिपीठमंडितधर्मभूपणवंदित
देवेंद्रकीर्तिमुनींद्रसभवकुमुदचद्रसुवंदित ।
श्रीसंघसारविशेपवरकृतभावभूतिविभूवरं
भजतु भावजनाशकारणपार्श्वनाथजिनेश्वरं ॥

[ना. ७८]

लेखांक ११६ – (पंचस्तवनावचूरि)

भ. श्रीकुमुदचंद्रैः ब्रह्मश्रीवीरदासाय दत्तमिदं पुस्तकं ॥

[ना. ४८]

लेखांक ११७ – सुदर्शन चरित्र

धर्मचंद्र

श्रीमूलसंघ वलात्कारगण । सरस्वतिगछ प्रमाण ॥
विश्वास वश कुल मडन । वृषभ चिन्ह गोत्रासी ॥ ५३
सोहितवाल प्रथम याती । ते वंसी जया जन्म स्थिती ॥
धर्मचद्र गुरु दीक्षापती । नाम स्थिती वीरदास ॥ ५४
पुढती दीक्षा महाव्रती । गुरु धर्मचद्र समर्थ ॥
मस्तकीं ठेऊनी हस्त । पासकीर्ति नामना ॥ ५५
शके पधरासे एकुनवचास । प्रभव सवत्सर नाम वर्ष ॥
फाल्गुण वद्य दशमी दिवस । गुरु वासर ते दिनी ॥ ५६

श्रवण नक्षत्र ते प्रमाण । सिद्धयोग तो शुद्ध जाण ॥
भद्रा सप्त नाम करण । ग्रथ जाण समाप्त ॥ ५७

प्रसग २५ [ना. ४]

लेखांक ११८ – बहुतरी

नमिला स्या गुरु । सत्य धर्मचंद्रु ॥
त्रीसुद्धी हा वरु । मज त्याचा ॥ ४०
येने पंथे पासकीर्ति म्हने जना ॥
सिद्ध सोहं गुना । सुअष्टभावे ॥ ४५

[ना. ५३]

लेखांक ११९ – कलिकुंड यंत्र

संवत १६८६ श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीधर्मचंद्र तदाम्नीय आ. पासकीर्ति तदुपदेशात् संघवी वरहरसाह गोलसिंघारा रामटेक सांतिनाथ प्रसादेनू ज्येष्ठ वद्य ५··· ॥

(पा. २७)

लेखांक १२० – पद्मावती मूर्ति

संमत १६९२ मिती वैशाख वदी ११ सोमवासरे भ. धर्मचंद्रजी · ॥

(सैतवाल मन्दिर, नागपुर)

लेखांक १२१ – चरणपादुका

सं. १६९३ वर्षे शके १५५९ मनु नाम सवत्सरे मागसिर शुक्ला २ शनै शुभमुहूर्ते श्रीमूलसंघे ··भ. कुमुदचंद्रास्तत्पट्टे भ. श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् जयपुर-शुभस्थाने वघेरवालज्ञाति सं. श्रीपासा···॥

[चम्पापुर, भा. १९ पृ. ५९]

लेखांक १२२ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शके १५६१ प्रमाथीनाम सवत्सरे फाल्गुण शुद्धि २ बृहस्पतिवार

श्रीमूलसघे भ. श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् वघेरवालज्ञातीय ॥

(का ४)

लेखांक १२३ – चौवीसी मूर्ति

शके १५६७ पार्थिव नाम सवत्सरे श्रीमूलसघे भ धर्मचंद्रोपदेशात् वघेरवालज्ञातीय खडारिया गोत्रे श्रावण ॥

(दे. मा दर्यापुरकर, नागपुर)

लेखांक १२४ – ? मूर्ति

शके १५६९ सर्व जेष्ठ श्रीमूलसघे भ श्रीधर्मभूषण तत्पट्टे भ. देवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ कुमुदचद्र तत्पट्टे भ श्रीधर्मचद्र तदाम्नाये धर्माचार्य पासकीर्ति तदुपदेशात् साहितवालज्ञातीय ॥

(बाळापुर, अ ४ पृ. ५०४)

लेखांक १२५ – चौवीसी मूर्ति

वो नम सिद्धेभ्य गोमटस्वामी आदीश्वरमूलनाईक चोवीस तीर्थंकरकि परतीमा चारुकीरति पडित धरमचद्र बलातकार उपदसा शके १५७० सर्वधारी नाम सवत्सरे वैशाख वदी २ सुकुरवार देहराकी पती स्थहै ··गेरवाल चवरे गोत्र जीनासा · ॥

श्रवणबेल्गुल, [जैनशिलालेख सग्रह १ पृ. २२९]

लेखांक १२६ – धर्मचंद्र गुरु पूजा

(पूजा–) कुमुदचंद्रपदे प्रयजे वरं ।
सुगुणधर्मसुचद्रमुनीश्वर ॥ १ ॥
(स्तुति–) स भवतु वरभूत्यै धर्मचद्रो मुनींद्रो
द्विजकुलमहितोमौ वासुदेवेन वद्य ॥ १० ॥

[म ६३]

लेखांक १२७ – पार्श्वनाथ मूर्ति धर्मभूषण

शाके १५७२ विकृती सवत्सरे फाल्गुण शुद्ध ११ शुक्रे भ श्रीधर्मभूषणै. प्रतिष्टित ॥

[का. ५]

लेखांक १२८ – पोडशकारण यंत्र

शक १५७६ वर्षे जयनाम संवत्सरे मार्गशिर्ष सुद १० श्रीमूलसंघे ·· श्रीधर्मचद्र भ. श्रीधर्मभूपणोपदेशात् नेवाज्ञातीय नहिया गोत्रे सा गणसा सुत ढडुसा एते पोडशकारण यत्र नित्यं प्रणमंति ॥

[अ. ४ पृ ५०३]

लेखांक १२९ – ? मूर्ति

शके १५७७ वैसाख सुदि ९ शुक्रे मूलसघे भ कुमुदचंद्र तत्पट्टे भ. धर्मचंद्र तत्पट्टे भ. धर्मभूपणोपदेशात् मीन सेठ भार्या चाणइ ·· ॥

[कोंढाळी, अ. ४ पृ ५०५]

लेखांक १३० – पार्श्वनाथ मूर्ति

सक १५७८ मूलसघे भ धर्मभूपण ।

[सु. हि जोहरापुरकर, नागपुर]

लेखांक १३१ – चौवीसी मूर्ति

शके १५७९ वर्षे मार्गसिर सुदि १४ बुधे श्रीमूलसंघे · भ देवेद्रकीर्तिदेवा: तत्पट्टे भ. कुमुदचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ. धर्मचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ धर्मभूपणगुरूपदेशात् बघेरवालज्ञातीय हरसौरा गोत्रे सा गंगासा भार्या चागाबाई · ॥

[नादगाव, अ. ४ पृ ५०५]

लेखांक १३२ – नेमिनाथ मूर्ति

सके १५८० वर्षे विरोधिनाम संवत्सरे मार्गशिर शुदि ५ शुक्रे श्रीमूलसघे ···भ. श्रीदेवेद्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ. कुमुदचंद्रदेवा तत्पट्टे भ धर्मचद्रदेवा

तत्पट्टे भ. श्रीधर्मभूषणोपदेशात् बघेरवालज्ञातीय हरसौरा गोत्रे स. मेघ तस्य भार्या ..॥

[का २]

लेखांक १३३ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शके १५८६ वर्षे क्रोधनाम संवत्सरे तिथी फागुण सुद ५ श्रीमूलसंघे .. भ धर्मचंद्र तत्पट्टे भ. धर्मभूषण महाराज प. नेमाजी भार्या राजाई पुत्र सोकराजी ता प्रतिष्ठितं ॥

[पा. ४३]

लेखांक १३४ – श्रेयांस मूर्ति

शके १५९७ मूलसंघे बलात्कारगणे भ धर्मभूषण . ॐ हरीसाव पुत्र फकीचंद प्रणमति ॥

[पा. १०६]

लेखांक १३५ – रत्नत्रयउद्यापन

दृग्बोधादिकशुद्धवृत्तजनित रत्नत्रय सद्व्रत
तत्पूजा रचिता मुनेंद्रगणिना पुण्यात्मना सूरिणा ।
सद्भट्टारकधर्मचंद्रपदभृद्धर्मादिभूपात्मना
भव्योपासकशीतलेशविहितप्रश्नात् निजार्थात् वर ॥

[ना. ९]

लेखांक १३६ – चौवीसी मूर्ति धर्मचंद्र

शके १६०७ प्रभाव नाम संवत्सरे फाल्गुण वदि १० भ. धर्मचंद्र उपदेशात् नगरे ज्ञाते उज्रेली पल्लीवार गोदसा भार्या सेमाई . प्रणमंति ॥

(पा. १७)

लेखांक १३७ – [श्रुतस्कंध कथा]

स १७४३ वर्षे श्रावण शुदि ७ शुक्रे भ श्री ६ धर्मचद्र तस्य पंडित गंगादास लिखित। श्रीकार्यरजकनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये ॥

(प. १)

लेखांक १३८ – पद्मावती मूर्ति

शके १६१२ ज्येष्ठ वदि ७ श्रीमूलसंघे · भ. धर्मभूषण तत्पट्टे भ. विशालकीर्ति तत्पट्टे भ. धर्मचंद्रोपदेशात् बघेरवालज्ञाति खडासो गोत्रे सा राघुसा सुत लपुसा अंबिकां नित्यं प्रणमति ॥

(मा. बा. आगरकर, नागपुर)

लेखांक १३९ – पार्श्वनाथ भवांतर

सके सोलाशे वर बारा सुध पुस मास ।
प्रमोद संवत्सरे सुक्रवार त्रयोदस ॥
कीर्तन पूर्ण जाले धर्मचंद्रचा आदेस ।
त्याहांचा पंडित मेती गंगादास ॥
जिनगुणाचे कीर्तन । भवांतर केले डफगाण ॥
कवित्व केले गंगादासान । तुम्ही आयिका चित्त देऊन ॥ ४७

(ना. ६)

लेखांक १४० – आदितवार कथा

विशालकीर्ति विमलगुण जाण जिनशासनकज प्रगट्यो भाण ।
तत्पदकमलदलमित्र धर्मचंद्र धृतधर्म पवित्र ॥ ११२
तेहनो पंडित गंगादास कथा करी भवियण उल्लास ।
शक सोला शत पन्नर सार शुदि आषाढ बीज रविवार ॥ ११३

[ना. ५४]

लेखांक १४१ – मेरुपूजा

जलचंदनशालिजपुष्पचरुप्रमुखेन सदर्घभरेण वरं ।
वृषचंद्रपदांबुजभृंगसुगंगबुधेन सदा नमितं सुकरं ॥

(म. १२)

लेखांक १४२ – क्षेत्रपाल पूजा

सूरिश्रीधर्मचंद्रप्रवरपदपयोजाग्रभृंगोपमानः
श्रीमान् सोभाभिधानो जिनभजनरत. पद्मसंघेशपुत्र. ।

तद्वाक्याद्गंगदासै प्रविरचितमिदं क्षेत्रपालार्चनं तत
भक्त्या कुर्वंतु तेपा वरतरकुशल क्षेत्रपाला दिशतु ॥

(ना. ८५)

लेखांक १४३ – संमेदाचलपूजा

ततोभवत सूरिर्विशालकीर्ति.
पट्टे तदीये गुरुधर्मचद्र ॥
तत्पादाब्जयरागलोलुपलसद्भृगोतिभक्तेर्भरान
चक्रे स्वापरचिंतितार्थफलदा गगादिदासो बुध ॥

(म. ३०)

लेखांक १४४ – त्रेपन क्रिया विनती

कारजे सुख करण चद्र जिन गेह विभूषण ।
मूलसघ मुनिराय धर्मभूषण गतदूषण ॥
विशालकीर्ति तस पाट निखिलवंदितनररत्नायक ।
तस पट्टांबुजसूर धर्मचद्रह सुखदायक ॥
तस पत्कज षट्पद मुदा गगदास वाणी वदे ।
त्रिपंचास क्रिया सदा भवियन जन राखो ह्रदे ॥ ११

(ना. ४२)

लेखांक १४५ – जटामुकुट

धर्मचंद्र गुरु पद नमी गंगादास वानी वदे ।
सघपति मेघा वचनथी जिन चिंतन चित्यो ह्रदे ॥ ६

(म. ९१)

लेखांक १४६ – कैलास छप्पय

कीर्ति विशाल विशाल पदपकज दल भासन ।
धर्मचंद्र भवतार सार शोभित जिनशासन ॥

कारंजे करुणानिधान चंद्रनाथ चित्ते धरी।
हीरासाह आग्रह थकी अष्टापदनी स्तुति करी ॥ २१

(ना. ६७)

लेखांक १४७ – विरुदावली

…भट्टारकश्रीविशालकीर्तिदेवानां। तत्पट्टे …श्रीमलयखेडसिंहासनाधीश्वरभट्टारकश्रीधर्मचंद्रदेवाना तपोराज्याभ्युदयसिद्धिरस्तु श्रीखोलापूरग्रामे श्रीसुपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीसंघपुण्यार्थं ॥

(व. १३)

लेखांक १४८ – चौवीसी मूर्ति   देवेंद्रकीर्ति

संमत १७५६ मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे देवेद्रकीर्ति प्रतिष्ठा मिती माघ सुद ५ ॥

(पा. ३७)

लेखांक १४९ – यात्रापूर्ति लेख

सके १६४३ पौस वदि १२ शुक्रवारे भ देवेद्रकीर्ति सहित बघेरवाल जाती हिरासाह सुत हाससा सुत चागेवा सोनाबाई राजाई गोमाई राधाई मन्नाई सहित जात्रा सफल करी कारज कर ॥

श्रवणबेल्गुल (जैन शिलालेख संग्रह १ पृ. ३४५)

लेखांक १५० – कल्याणमंदिर पूजा

गुणवेदांगचंद्राब्दे शाके १६४३ फाल्गुनमास्यदं।
कारंजाख्यपुरे दृष्टं चद्रनाथदेवार्चनं ॥
इति श्रीवलात्कारगळेयं भ देवेद्रकीर्ति विरचित।
कल्याणमंदिरपूजा सपूर्ण ॥

(ना. ७४)

लेखांक १५१ – विषापहारपूजा

साहारे निर्मितचारुशुभ्रा सद्विठलाख्याग्रहतो विचित्रा।

श्रीशांतिनाथस्य गृहे गुणाढ्य जीयात्सुपूज्या गुणधामसुद्धा ॥
इति भ देवेंद्रकीर्तिकृत विषापहारस्तोत्रपूजा संपूर्णा ॥

(ना. ७४)

लेखांक १५२ -

नासिक त्रिंबक गाम समीप महागजपथ धराधर सारं ।
ध्यान बले वसु कोडि मुनीस गया जिह कर्मजिती भवपारं ॥
षोडश पन्नास पोस समुज्वल बीज तिथी दिननायकवारं ।
देवेंद्रकीर्ति नमे जिनरत्नचंद्रांबुधिरूपविद्यार्थी सवार ॥

(म. ७८)

लेखांक १५३ -

भागलदेस महेंद्रपुरी तस सनिधि मांगि गिरी तुगि तुग ।
हलधर माधव कोडि तपोधन मुक्ति वरी करी कल्मषभंग ॥
शून्यशरान्वितषड्विधु पौष त्रयोदश शुक्ल गुरुदिन चंगं ।
देवेंद्रकीर्ति नमे जिनरत्नचंद्रांबुधिरूपवीरादिकसगं ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक १५४ - णायकुमार चरिउ

संवत १७८५ वर्षे शाके १६५० कीलक नाम संवत्सरे माघमासि प्रतिपत्तिथौ सोमधूसे नवमससंपदे सूरति बंदिरे वासुपूज्यचैत्यालये गिरनार-यात्रागमनसमये भ श्रीधरमचंद्रपट्टधारिदेवेंद्रकीर्तिभ्यः रामजी संघाधिप पुत्र आणंदनाम्ना हूंवड श्रावकेण दत्तमिदं पुस्तकम् ॥

(प्रस्तावना पृ. १३, कारंजा जैन सीरीज)

लेखांक १५५ -

देश खडक्कमे धूलिय गाम युगादि जिनाधिप पुण्यपवित्रा ।
जाकी दिगंतर विश्रुतउज्वलकीर्ति जपे नर देव कलत्रं ॥
रूप शरान्वित षोडश वैशाख कृष्ण त्रयोदशि चंद्रसपुत्रं ।
देवेंद्रकीर्ति नमे जिनरत्नचंद्रांबुधि रूपजी वीरजी छात्रं ॥

(म. ७८)

लेखांक १५६ -

गुज्जर देश सु तारंग पर्वत कोडिशिलोपरि कोडि मुनीसा ।
कोडि अउट्ठ वली वरदत्त पुरःसर भेदि जवंजव खासा ॥
चंद्र शराधिक षोडश उज्ज्वल पंचमि भार्गव मार्गक वासा ।
देवेंद्रकीर्ति भट्टारक संग समेत नमे करि भूतल सीसा ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक १५७ -

सोरट देश सुरेवतकाचल नेमि मुनीश बहत्तर कोडी ।
काम पुरोग ऋषीशत योगी शिवंगय संसृति वल्लरि तोडी ॥
पुष्प रवी वद बारसि इंदुशरर्तुकलेश समा अतिरूडी ।
देवेंद्रकीर्ति भट्टारक संग समेत नमे करपंकज जोडी ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक १५८ -

सोरट देश अरिंजय भूधर भूरिजिनेश्वर बिंब अनूपा ।
पांडु सुत त्रय मोक्ष गया वसु कोडि तथा वर लाड सुभूपा ॥
एकशरान्वित षोडश वत्सर कालिम माघ चतुर्थि उद्रूपा ।
देवेद्रकीर्ति भट्टारक भाव समेत नमे शांतिसागररूपा ॥

[उपर्युक्त]

श्रीचंद्र

लेखांक १५९ - कथाकोष

संवत १७८७ वर्षे भादवा शुदि ५ शुक्रे ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रीसुरति बंदरे वासुपूज्यचैत्यालये लिखापितमिदं पुस्तकं श्रीमूलसंघे · मलयखेडसिंहासनाधीश्वर-कार्यरंजक-पुरवासि भ श्रीधर्मचंद्रदेवास्तत्पट्टे भ देवेंद्रकीर्तयस्तैर्लिखापितं आर्यिका श्रीपासमतिपरोक्षदत्तवित्तेन ॥

[म. प्रा. पृ. ७२७]

लेखांक १६० – नंदीश्वर आरती

नर्तत पूजन सहित इद्रादिक यात्रा प्रति वर्षे ।
श्रीवृषचंद्र पदेश्वर देवेंद्रकीर्ति नमे हर्षे ॥ ३

(आरती सग्रह २, च. १९२५)

लेखांक १६१ – देवेंद्रकीर्ति गुरु पूजा

सत्शब्दागमशास्त्रपाटनपटुश्रीकुदकुंदो यती
तत्पट्टान्वयके वृषेदुरभवद्धर्मादिभूषस्तत ।
विख्यात सुविशालकीर्तिरतुल श्रीधर्मचंद्रस्तत·
तत्पट्टे जयति प्रसन्नहृदयो देवेंद्रकीर्तिर्मुनिः ॥
धर्मचंद्र पटि रयन गणित सुभ शास्त्र वखाणो ।
देवेंद्रकीर्ति गछराज आंगि तृणावर धरण ॥
वाग्वादिनी कंठी वसी गोतम सम गुरु अवतऱ्यो ।
बुद्धिसागर एवं वदति विकट भवार्णवते तऱ्यो ॥
देवेंद्रकीर्ति मुनिपति परिग्रह तसु वहु अगे ।
कह गुणवर्णन करू नही आवे मन सगे ॥
आत्मध्यान मोहित सदा सिव साधन आशा करी ।
सुरत शहर चवसाममे रूपचदने स्तुति करी ॥
ज्याको पिता वनारसी आगराको वासी
सुरत शहरमे उदीमके लीयते ।
वराडके मुनिद आये रहे वरखाकालमाहे
वदना नही कीनेही देखी परीग्रहते ॥
सुद्धज्ञानसो निहार तुर्य काल मन विचार
काय मन वचनसो चिदानद लहेते ।
ऐसे देवेद्रकीर्ति जिवनदास करत विनती
सभाल लेवो परभवमे मोह निकट आयते ॥

(म १२७)

लेखांक १६२ – अनंत आरती

रस सिधु पद् चद्र शकेसी ।

शीतचतुर्दशीसी भाद्रपद मासी ।
शशिप्रभु भुवनी । रतली जिनचरणी ॥ ४ ॥
पंचमकाली सम यती । गुरु देवेंद्रकीर्ति ।
लघुशिष्य श्रीमानिकनंदि । मंडलाचार्यपदी ॥ ५

(आरतीसग्रह २, च. १९२५)

लेखांक १६३ - आदित्यव्रत कथा

श्रीमत् सुकारंजकपूरवासी देवेंद्रकीर्ति प्रिय सज्जनासी ।
त्याचा लघू पंडित जैनदास त्याने कथेचा रचिला विलास ॥ ४३
रसाब्धिषट्‌चंद्र जदा सकासी तई मधू मास सुकृष्णपक्षी ।
सुपंचमी तो गुरुवार जेव्हा कथा असी हे परिपूर्ण तेव्हा ॥ ४४

(ना. १६)

लेखांक १६४ - जिनकथा

श्रीमत्कारंजपुरवासी । देवेंद्रकीर्ति गुरूसी ॥
अंतरी स्मरोनी आदरेसी । रचिली कथा ॥ २०७
नृप सालिवाहन सके गनित । सोळासे एकोन पंचाशत ॥
प्लवंग नाम संवत्सरांत । पूर्ण कथा ॥ २०८
वराड देस कारंजनगर । श्रीमच्चंद्रनाथ मंदिर ॥
तेथ कथा हे सुंदर । संपूर्ण केली ॥ २१०

(ना. १२)

लेखांक १६५ - पद्मावती कथा

...श्रीकुंदकुंदान्वय वंशि जाला ।
देवेंद्रकीर्ति जिनसागराला ॥ ६४
नेत्र बाण रस इंदु सकेसी आश्विनात सित द्वादशि दीसी ।
पूर्ण हे कथन माझे मतिने अधिक ते करि या जनि शाहने ॥ ६५

(च. ५२)

लेखांक १६६ - पुष्पांजलि कथा

श्रीकुंदकुंदान्वय त्याच वंसी देवेंद्रकीर्ति प्रिय सज्जनासी ।

ऐसी कथा हे वरवी विधीने सांगीतली हो जिनसागराने ॥ १०२
इति श्रीदेवेंद्रकीर्तिप्रिय सिष्य जिनसागर कृत
पुस्पांजलि व्रतकथा संपुर्ण ॥ शके सोलाशे साठ १६६० ॥

(म. ९१)

लेखांक १६७ – लवणांकुश कथा

स्वस्तिश्री वर मूलसंघ गन हा श्रीकुंदकुंदाम्रनी
श्रीमच्छारद गच्छ मंगल बलात्कारादि नामाम्रनी ।
त्या वंसी सुभ सक्रकीर्ति मुनि हा जाला जसा हो रवी
त्याचे सेवक जैनसागर कथा सांगे बुधाला नवी ॥ ७८
आहे वरा सीरड ग्राम जेथे राहे बहू श्रावक लोक तेथे ।
त्रिपुत्रषट्चंद्र शकासि जेव्हा कथा असी हे परिपूर्ण तेव्हा ॥ ७९

(म. ९०)

लेखांक १६८ – अनंत कथा

उपर्युक्त प्रशस्ति के समान ।

(ना. ८)

लेखांक १६९ – सुगंधदशमी कथा

देवेंद्रकीर्ति गुरु पुण्यराशी जैनादि हो सागर शिष्य त्यासी ।
ऐसी कथा परिपूर्ण सांगे श्रोत्यासि द्या चित्त म्हणौनि मागे ॥ १३६

(ना. ८)

लेखांक १७० – जीवंधर पुराण

श्रीमत् देवेंद्रकीर्ति मुनि । भावे वंदिला कर जोडूनि ॥
जिनसागराच्या ध्यानी मनी । जिवाहून आवडे ॥ १९०
कांही गुजराती रास । पाहून केलें कथेस ॥
काही उत्तरपुराणास । पाहोनि ग्रथांस रचिले ॥ १९२
शके सोळाशे सहासष्ट जाण । आनद नाम सवत्सर महान ॥
वैशाखमास द्वादशी दिन । कथा पूर्ण ही झाली ॥ १९३
जेथे शिरड नाम नगर । शांतिनाथाचे मंदिर ॥

श्रावक लोक वसती अपार । सांगे जिनसागर श्रोतियांसी ॥ १९४
[अध्याय १०, च. १९०४]

लेखांक १७१ – नंदीश्वर उद्यापन

इति जैनेश्वरीं पूजा द्वीपे नंदीश्वराभिधे ।
देवेन्द्रकीर्तिप्राप्त्यर्थं करोति जिनसागरः ॥
(म. ५४)

लेखांक १७२ – आदिनाथ स्तोत्र

या परी जिनराज चितुनि शक्रकीर्तिहि वदिला ।
जाह्ला जिनसागराप्रति तोप अंतरि दाटला ॥ १०
(अष्टकपूजासंग्रह, प्र. गो. ग. राऊळ, कारंजा)

लेखांक १७३ – शांतिनाथ स्तोत्र

या स्तोत्रपाठासि विसेस घोका । तुटेल हो संसृति पाप धोका ॥
पावाल त्यानंतर सक्रकीर्ति । जैनाब्धि पापासि करा निवृत्ती ॥१०
(ना. ६४)

लेखांक १७४ – पार्श्वनाथ स्तोत्र

श्रीशक्रकीर्ति गुरु पत्कजपट्पदाने ।
केली स्तुती न कळता मतिमंदनेने ॥···॥१७
अत्यंत तोष हृदयी जिनपंडितासी ॥
श्रीपार्श्वनाथ विभु दे वर सज्जनासी ॥ १८
(म. १२६)

लेखांक १७५ – पद्मावती स्तोत्र

आतामौन्य वरे विचार विसरे मी तो नसे शाहना ।
ऐसे हे जिनसागरे विनविले माझी असो वंदना ॥ १४
(उपर्युक्त)

लेखांक १७६ – क्षेत्रपाळ स्तोत्र

हे जो स्तोत्र पढे अहो प्रतिदिनी काळत्रये जागृती
याचे दुर्घट रोग शोक पळती हे सी वदू पा किती ।
ऐसे सांगतसे जिनाब्धि सुजना सद्भाव जे आदरी
शास्त्री देव गुरुसि भाव धरितो तोही फळे त्यापरी ॥ ९

(ना. ६४)

लेखांक १७७ – ज्येष्ठजिनवर पूजा

द्रव्य पूजा सुपरि स्तुति छंद रचू मनसा ।
देवेंद्रकीर्ति म्हणे जिनसिंधु धीहीन पिसा ॥

(च १९०५)

लेखांक १७८ – शांतिनाथ आरती

सुंदर शिरडपूर जिनभुवनी शांतीश्वर मूर्ती ।
सद्गुणकीर्ति दिगंतरि व्यापक मुनि वासवकीर्ति ॥
देव गुरु वंदुनि जिनसागर मन भावे गाती ।
दारिद्रभंजन कमलारंजन ऐसी आरती ॥ ३

(आरतीसंग्रह २, च १९२५)

लेखांक १७९ – पद्मावती मूर्ति धर्मचंद्र

संमत १७९३ प्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ श्रीधर्मचंद्रना उपदेशात् ज्ञातबघेरवाल भोजसा भार्या नावाई ॥

(हि प खोंगणे, नागपुर)

लेखांक १८० – पार्श्वनाथ मूर्ति

सके १६९२ मिती वैसाख वद ११ श्रीमूलसंघे · भ धर्मचंद्र प्रतिष्ठित ॥

(केळीबाग मन्दिर, नागपुर)

लेखांक १८१ – रविव्रत कथा

मूलसंघ भारति गळराज कुन्दकुन्दान्वय क्षितितल गाज ।

शक्रकीर्ति गनधर सम मुनी तत्पट धर्मचंद्र गुनमनी ॥ २३
शांतमतींदुमती अर्जिका इन आग्रह वृषभे करी कथा ।
संवत अठरासे त्रिस आठ केतुत्साह तिथी दिन पाट ॥ २४

(म. ९३)

लेखांक १८२ – निर्दोष सप्तमी कथा

···नानाशास्त्रविशारद परप्रवादीभेंद्रपचानन.
श्रीभट्टारककुंजरो गुणनिधि· सद्धर्मचंद्रोजनि ॥
वर्षे शून्यकृशानुनागविधुसख्ये नीलपक्षे तिथौ
पंचम्या शुचि मासि चंद्रजदिने श्रुत्पक्षसस्थे विधौ ॥
सद्भव्याश्रितकार्यरंजकपुरेनल्पोपमालकृते
श्रीचंद्रप्रभदेवचैत्यनिलये पापौघविध्वंसिनि ॥
तच्छिष्यर्षभदासनामविदुषातीवाल्पबुद्धया शुभं
यन्निर्दूपणसप्तमीव्रतवरिष्ठोद्यापनं निर्मितं ॥

(प. २)

लेखांक १८३ – ऋषिमंडल यंत्र

संवत् १८३१ शके १६९६ श्रावण सुदि १३ शुक्र वासरे श्रीमूलसंघे भ. श्रीधर्मचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ देवेंद्रकीर्तिदेवा. तत्पट्टधुरंधरश्रीमद्भट्टारकधर्मचंद्रजि उपदेशात् · ॥

(ब. ३)

लेखांक १८४ – नवग्राडी

कुंदकुंदमुनिवंश वास कारंज इक पुरी ।
धर्मचंद्रपदमित्र शक्रकीरति अनगारी ॥
तस पट्टे गुणसद्म धर्मचंद्राभिध स्वामी ।
तेह शिष्य मतिमंद विशद बुध वृषभ सुनामी ॥
तिणे शील छप्पय मुदा रच्या भाद्र सुदि पंचमी ।
नग नव रस चंद्रम शके पढत भव्य सुखसंगमी ॥ २५

(म. ७२)

लेखांक १८५ – रविवारव्रतकथा

विषय वराड मझारि सुनग्र कर्णखेट धनधान्य समग्र ।
सुपार्श्वदेव चैत्यालय तुंग दर्शन पेखत पातकभंग ॥ १२०
तपपट्टोदयशिखरि सूर्य शक्रकीर्ति भूमंडल वर्य ।
तत्पट्टभूषण श्रीगुरुराज धर्मचंद्र गछपति क्षिति गाज ॥ १२२
तस सेवक बुध ऋषभ धुरीन रची कथा व्यंजन स्वर हीन ।
संवत अष्टादश तेतीस श्रावण सुदि बारमि रवि दीस ॥ १२३
गंगेरवाल सु आंवड्या हीरवा खुजी भ्रात ।
ते वचने कीधी कथा सुणता मंगल ख्यात ॥ १२५

[प्र. ५२]

लेखांक १८६ – अकृत्रिम चैत्यालय जयमाला देवेंद्रकीर्ति

श्रीमद्धर्मसुचंद्रपट्टविलसद्देवेंद्रकीर्तिस्तुतान्
ये ध्यायंति सदार्चयंति च बुधास्ते स्यु शिवश्रीप्रियाः ॥ ६४
वर्षे नभोजलधिनागहिमांशुमाने
सार्धे सिते प्रवरपंचमिकां तिथौ वै ।
कर्ताद्यसाख्यसदुपासकपुत्रवाक्यात्
संनिर्मितावतु जनान् जयमालिकेयम ॥ ६५

(ना. १२०)

लेखांक १८७ – नंदीश्वरपूजा

संमत १८४१ शके १७०६ मिति कार्तिक कृष्ण एकादशी तिथौ सोमवारे भ देवेंद्रकीर्तिना लिखितेय पूजा स्वहस्तेन ॥

[ना ४३]

लेखांक १८८ – अकृत्रिम चैत्यपूजा

शाके रसाभ्रनगचंद्रमिते सहूर्जे
मासे सिताष्टमितिथौ गुरुवासराख्ये ।
श्रीधर्मचंद्रमुनिशक्रसुकीर्तिनामा

सनिर्ममेस्तु सुखदा जयमालिकेयम् ॥ ४८

(म. १०३)

लेखांक १८९ – चरणपादुका

संवत १८५० शके १७१५ कार्तिकमासे कृष्णपक्षे १० बुद्ध माध्याह्ने उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रे प्रीतियोगे अस्या शुभवेलाया श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये मलखेडसिंहासनाधीश्वरकार्यरंजकपुरवासी भ. श्रीधर्मचंद्रस्तत्पट्टे भ. श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिनां देवलोकप्राप्ति जाता तत्पादुकेदं प्रतिष्ठापिता ॥

(का. ८)

लेखांक १९० – लावणी

मलयखेड सिंहासनपति जनतारक सन्मूर्ति ।
पंचमकाळी अवतरला श्रीमुनि शक्रकीर्ति ॥ धृ. ॥
तौलव देशामध्ये शोभे लवनपुरी टीका ।
श्रेष्ठि असे पायापा त्याची वनिता नेमाका ॥
तिचे उदरीं उद्भवला जो ताराया लोका ।
बाळदशा मग गेली असता पाहे विवेका ॥
धर्मचंद्र भट्टारक पदि तो करि सेवा भक्ति ॥ पंचम. ॥ १
ब्रह्मचारी तो कुशल कवि गुणसागर जाणून ।
मुहूर्त पाहुनि चतुर्विध श्रीसघ मिळवून ॥
उत्सव करुनी कळश ढाळुनी निज पदि सद्गुरुन ।
स्थापुनिया भट्टारक केला जनानंदपूर्ण ॥
बळात्कारगणनायक नामे देवेंद्रकीर्ति ॥ पंचम ॥ ३
कवित्व करुनी कथिला ज्याने पूजादिक धर्म ।
बोधुनिया जन मार्गि लाविला दिधले व्रत नेम ॥
हारुनि पंडित वादी ज्यासी भजती सप्रेम ।
देश विदेश विजयी होउनि सज्जन विश्राम ॥
करोनिया जिनयात्रा जाला उदास तो चित्ती ॥ पचम. ॥ ५
सिरड ग्रामोद्यानी बैसुनि करि संयमवृत्ति ॥ पंचम ॥ ६
वस्त्ररहित नग्न मुद्रा पद्मासन युक्त ।

धूळि करोनि धूसर दीसे दिगंबर शांत ॥
आत्मस्वरूपी मन लावुनी वचन करी गुप्त ॥
निश्चळ काया केली ते सत्तपा करुनी तप्त ॥
मृगादि वनचर विस्मय करुनी पाहाया येती ॥ पंचम ॥ ७
समाधि साधुनि धर्मध्यानी देह विसर्जीला ।
देवगतीशी जाउनि उत्तम देव तो जाला ॥
भक्तजनाचे वांछित सर्वहि पुरवू लागला ।
जन दूर दूरचे येति पादुका वंदावयाला ॥
महतिसागर म्हणितो धन्य गुरुपद संप्राप्ति ॥ पंचम ॥ १०

(महतिकाव्यकुंज पृ. ९२)

लेखांक १९१ – रविवारव्रतकथा

शक्रकीर्ति गुरु मज भेटला तो कृपा करुनी वदवी मला ॥ २७
हे कथा महती जलधी वदे ऐकिता सुजना सुख ठाव दे ॥
आग्रहा करि पूतळसघरी त्यास्तवे कथिली अतिलाघवी ॥ २८
रिद्धिपूर शिवारजधामनी शाक वन्हियमाद्रिनिशामणी ।
मास भाद्रव शुक्ल सुपंचमी अर्कवारि कथा करि पूर्ण मी ॥ २९

(उपर्युक्त पृ ११८)

लेखांक १९२ – पंचकल्याणक कथा

मलयखेड सुकेशरिविष्टरी अधिप भारति गच्छपति सुरी ।
सुगुरु तो मज वासवकीर्तिही वदवि भारति देउन उक्ति ही ॥ १४३
महतिजलनिधीने पंचकल्याणिकाची ।
शुभ कथिलि कथा हे पूर्ण त्या उत्सवाची ॥　　॥ १४६
वाळापुरी नाभिजमंदिराते यमाग्निसप्तेंदु शकाब्द पाते ।
माघाध चातुर्दशि जीववारीं केली कथा हे परिपूर्ण सारी ॥ १४७

(उपर्युक्त पृ. ६१)

बलात्कार गण–कारंजा शाखा

कारजा शाखा की उपलब्ध पट्टावलीमे पहले उल्लेख योग्य आचार्य अमरकीर्ति है[24] [ले. ९८]

इन के शिष्य वादीन्द्र विशालकीर्ति हुए। आपने सुलतान सिकन्दर[25], विजयनगर के महाराज विरूपाक्ष और आरगनगर के दण्डनायक देवप्प की सभाओ मे सत्कार पाया था [ले. ९९]

विशालकीर्ति के शिष्य विद्यानन्द हुए। आपने श्रीरगपट्टण के वीर पृथ्वीपति, साल्वुव कृष्णदेव, विजयनगर के सम्राट् श्रीकृष्णराय आदि शासको से सम्मान पाया था। आप का सम्मान सुलतान अल्लाउद्दीन ने भी किया था[25]। आप का स्वर्गवास शक १४६३ मे हुआ। [ले. १००,१०१]

विद्यानद के शिष्य देवेद्रकीर्ति हुए। आप के शिष्य वर्धमान ने शक १४६४ मे दशभक्त्यादि महाशास्त्र की रचना की।[26] [ले. १०२-३]

देवेद्रकीर्ति के पट्टशिष्य धर्मचन्द्र हुए। आप ने शक १४८७ मे एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की [ले. १०४–५]।

इन के अनन्तर धर्मभूषण भट्टारक हुए। आप ने शक १५०३ की फाल्गुन शुक्ल ७ को एक चन्द्रप्रभ मूर्ति स्थापित की [ले. १०६-७]।

इन के पट्टशिष्य देवेद्रकीर्ति हुए। उपर्युक्त प्रतिष्ठा मे आप ने भी नेमिनाथ की एक मूर्ति स्थापित की [ले. १०८]। एरडवेल में रहते हुए सवत् १६४१ मे आपने हर्षमती के लिए आम्बिका रास की एक प्रति

---

२४ इन के पूर्व गुप्तिगुप्त, कुंदकुंद, मयूरपिच्छ, गृध्रपिच्छ, जटासिंहनदि, लोहाचार्य, उमास्वाति, माघनदि, मेघनदि, जिनचद्र, प्रभाचन्द्र, विद्यानद, अकलंक, अनतकीर्ति, माणिक्यनदि, नेमिचन्द्र और चारुकीर्ति का उल्लेख है।

२५ ये दोनों लोदी वश के दिल्ली के सुलतान थे। विद्यानंद के विषय मे एक अन्य शिलालेख के विवेचन के लिए देखिए Jain Antiquary IV P 1ff.

२६ वर्धमान ने इस ग्रन्थ मे कोणूर गण, देशीय गण आदि अन्य परम्पराओ के विषय मे भी पर्याप्त लिखा है।

लिखी [ले. १०९] । इन के शिष्य आदशेटी ने नदिग्राम में शक १५१४ की पौष शुक्ल १३ को मराठी द्वादशानुप्रेक्षा की एक प्रति लिखी (ले ११०) । इन के लिखे हुए नेमिनाथ पूजा और नन्दीश्वरपूजा ये दो पाठ उपलब्ध हैं (ले. १११–१२) ।

इन के पट्टशिष्य कुमुदचन्द्र हुए । आप ने शक १५२२ की वैशाख सुदी १२ को तथा शक १५३५ की फाल्गुन शुक्ल ५ को कोई मूर्तिया स्थापित कीं (ले ११३–१४) ।[२७] आप की पार्श्वनाथ पूजा मे मलयखेड के भट्टारकपीठ का उल्लेख है (ले ११५) । आप ने ब्रह्म वीरदास को पचस्तवनावचूरि की एक प्रति दी थी (ले. ११६) ।

इन के वाद धर्मचन्द्र भट्टारक हुए । इन के शिष्य पार्श्वकीर्ति ने शक १५४९ की फाल्गुन वद्य १० को मराठी ग्रन्थ सुदर्शनचरित पूरा किया (ले. ११७) । पार्श्वकीर्ति का पहला नाम वीरदास था । उन की दूसरी रचना वहुतरी नामक मराठी कविता है (ले ११८) । उन ने सवत् १६८६ मे एक कलिकुड यत्र स्थापित किया था (ले. ११९) इन ने एक और प्रतिष्ठा शक १५६९ में कराई थी (ले १२४) । भ. धर्मचन्द्र ने सवत् १६९२ की वैशाख कृष्ण १२ को एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की, सवत् १६९३ की मार्गशीर्ष शुक्ल २ को जयपुर में किन्ही चरणपादुकाओ की स्थापना की, शक १५६१ की फाल्गुन शुक्ल २ को एक पार्श्वनाथमूर्ति स्थापित की, शक १५६७ मे एक चौवीसी मूर्ति प्रतिष्ठित की, तथा शक १५७० में श्रवणबेलगोल मे एक चौवीसी मूर्ति प्रतिष्ठित की । अन्तिम प्रतिष्ठा के समय पडिताचार्य चारुकीर्ति भी उपस्थित थे [ले १२०-१२५] । द्विज वासुदेव ने आप की एक पूजा लिखी है [ले. १२६] ।

---

२७ मुनि कान्तिसागरजी ने इन दोनों में गल्ती से सवत् शब्द लिखा है । सवत्सरों के नामों से ये दोनो शक ही सिद्ध होते है ।

धर्मचन्द्र के बाद धर्मभूषण पट्टाधीश हुए। आप ने शक १५७२ की फाल्गुन शुक्ल ११ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति प्रतिष्ठित की, शक १५७६ की मार्गशीर्ष शुक्ल १० को एक षोडशकारण यन्त्र स्थापित किया, शक १५७७ की वैशाख शुक्ल ९ को कोई मूर्ति स्थापित की, शक १५७८ मे एक पार्श्वनाथमूर्ति स्थापित की, शक १५७९ मे मार्गशीर्ष शुक्ल १४ को एक चौवीसी मूर्ति स्थापित की, शक १५८० की मार्गशीर्ष शुक्ल ५ को एक नेमिनाथमूर्ति स्थापित की, शक १५८६ की फाल्गुन शुक्ल ५ को एक पार्श्वनाथमूर्ति स्थापित की तथा शक १५९७ में एक श्रेयासमूर्ति स्थापित की। (ले. १२७–१३४)। शीतलेश की प्रार्थना पर आप ने रत्नत्रय व्रत के उद्यापन की रचना की [ले. १३५।

भट्टारक धर्मभूषण के पट्ट पर विशालकीर्ति अभिषिक्त हुए। इन का कोई स्वतन्त्र उल्लेख नहीं मिला है। इन के गुरुबन्धु अजितकीर्ति तथा शिष्य पद्मकीर्ति और इन दोनो की शिष्यपरम्परा का वृत्तान्त लातूर शाखा के प्रकरणमे सगृहीत किया है।

विशालकीर्ति के पट्टशिष्य धर्मचन्द्र हुए। आप ने शक १६०७ की फाल्गुन कृष्ण १० को एक चौवीसी मूर्ति स्थापित की, शक १६१२ की ज्येष्ठ कृष्ण ७ को एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की [ले १३६,१३८]। आप के शिष्य गगादास ने सवत् १७४३ की श्रावण शुक्ल ७ को श्रुत-स्कन्ध कथा की एक प्रति लिखी [ले. १३७]। उन ने शक १६१२ की पौष शुक्ल १३ को पार्श्वनाथ भवान्तर की तथा शक १६१५ की आषाढ शुक्ल २ को आदितवार कथा की रचना की [ले. १३९–४०]। सम्मेदाचलपूजा, त्रेपनक्रियाविनती, जटामुकुट और क्षेत्रपालपूजा ये गगादास की अन्य रचनाए हैं। इन मे अन्तिम दो सघपति मेघा और शोभा की प्रार्थना पर लिखी गई थीं [ले. १४२–४५]। धर्मचन्द्र ने हीरासाह के आग्रह से कैलास पर्वत की स्तुति रची [ले. १४६]। उन के खोलापुर निवासी शिष्यो के लिए लिखी गई विरुदावली मे उन्हे मलय-खेड सिंहासन के आचार्य कहा है [ले. १४७] किन्तु यह पुराने विरुद

का अनुकरण मात्र है। वास्तव मे इन के प्रगुरु धर्मभूषण के समय से ही भट्टारक पीठ कारजा मे स्थापित हो चुका था।

धर्मचन्द्र के बाद देवेन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए। आप ने सवत् १७५६ मे एक चौबीसी मूर्ति स्थापित की [ले १४८]। कारंजा-निवासी बघेरवाल शिष्यो के साथ आप ने शक १६४३ की पौष कृष्ण १२ को श्रवणबेलगोल की यात्रा की [ले १४९]। इसी वर्ष आप ने कल्याणमन्दिर पूजा लिखी तथा विट्ठल के आग्रह से विषापहार पूजा भी लिखी। ये रचनाए क्रमश कारजा और साहार मे हुई [ले १५०–५१]। शक १६५० की पौष शुक्ल २ को आप ने नासिक के पास त्रिबक ग्राम के पास के गजपथ पर्वत की वदना की [ले १५२] व ग्यारह दिन के बाद मागीतुगी पर्वत की यात्रा की [ले. १५३]। इस समय जिनसागर, रत्नसागर, चद्रसागर, रूपजी, वीरजी आदि छात्र आप के साथ थे। इस के बाद गिरनार की यात्राके लिए जाते हुए आप सूरत ठहरे जहा माघ शुक्ल १ को आणद नामक श्रावकने णायकुमार चरिउ की एक प्रति आपको अर्पित की [ले १५४]। शक १६५१ की वैशाख कृष्ण १३ को आपने केशरियांजी की वदना की [ले १५५] तथा उसी वर्ष मार्गशीर्ष शुक्ल ५ को तारगा पर्वत और कोटिशिला की वदना की (ले. १५६)। इसी वर्ष पौष कृष्ण १२ को गिरनारकी और माघ कृष्ण ४ को शत्रुजय पर्वतकी यात्रा आपने पूरी की [ले १५७-५८]। सूरत में आप ठहरे थे उस समय सवत् १७८७ की भाद्रपद शुक्ल ५ को आर्यिका पासमती के लिए आपने श्रीचन्द्र विरचित कथाकोष की एक प्रति लिखवाई [ले १५९]। आपकी लिखी एक नन्दीश्वर आरती उपलब्ध है [ले १६०]। आगरा निवासी बनारसीदास के पुत्र जीवन-दास को पहले आपके विषय मे अनादर था, किन्तु सूरत के चातुर्मास में आप की विद्वत्ता देख कर वे आप के शिष्य बन गये। बुद्धिसागर और रूपचद ने भी आपकी स्तुति की [ले १६१]। आप के शिष्य

माणिकनन्दि ने शक १६४६ की भाद्रपद शुक्ल १४ को अनन्तनाथ आरती की रचना की [ले. १६२]।

भ. देवेन्द्रकीर्ति के शिष्यो मे जिनसागर प्रमुख थे। इनने शक १६४६ की चैत्र कृष्ण ५ को आदित्यव्रत कथा लिखी, शक १६४९ में कारंजामें जिनकथा की रचना की, शक १६५२ की आश्विन शुक्ल १२ को पद्मावती कथा तथा शक १६६० मे पुष्पांजलि कथा पूरी की [ले. १६३–६६]। लवणांकुश कथा, अनन्त कथा और सुगन्धदशमी कथा ये इनकी अन्य कथाए शिरड ग्राम मे लिखी गई थीं [ले. १६०–६९][२८]। वहीं शक १६६६ की वैशाख शुद्ध द्वादशी को आप ने जीवंधरपुराण लिखा [ले. १७०]। नन्दीश्वर उद्यापन, आदिनाथ स्तोत्र, शान्तिनाथ-स्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, क्षेत्रपालस्तोत्र, ज्येष्ठ जिनवर पूजा, और शान्तिनाथ आरती ये आप की अन्य रचनाए हैं [ले. १७१-१७८]।

देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट पर धर्मचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने सवत् १७९३ मे एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की तथा शक १६९२ की वैशाख कृष्ण १२ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. १७९–८०)। सवत् १८३१ की श्रावण शुक्ल १३ को एक ऋषिमडल यत्र भी आप ने स्थापित किया [ले. १८३]। आप के शिष्य वृषभ ने शातमती और इदुमती के आग्रह पर सवत् १८२८ में रविव्रत कथा लिखी तथा सवत् १८३० की ज्येष्ठ कृष्ण ५ को निर्दोषसप्तमीव्रत का उद्यापन लिखा (ले. १८१–८२)। इन ने शक १६९६ की भाद्रपद शुक्ल ५ को नववाडी नामक स्फुट कविता रची तथा सवत् १८३३ मे कर्णखेट मे पुन. रविवार व्रत कथा की रचना की [ले १८४–८५]।

---

२८ पहली दो कथाओंमें रचनाशक दिया है किन्तु पुत्र शब्द से कौनसा अक लिया जाय यह स्पष्ट नहीं है।

धर्मचन्द्र के पट्ट शिष्य देवेंद्रकीर्ति हुए। आप ने कडतासाह के पुत्र की प्रार्थना पर अकृत्रिम चैत्यालय जयमाला की रचना सवत् १८४० में की [ले १८६]। आप ने शक १७०६ मे नन्दीश्वर पूजा और अकृत्रिम चैत्यपूजा की रचना की [ले १८७-८८]। आप के पिता पायापा और माता नेमाका तौलव देश के लवनपुर में रहते थे। अन्त समय शिरड ग्राम में रहते हुए आपने दिगम्बर मुद्रा धारण की थी [ले. १९०]। आप का स्वर्गवास सवत् १८५० की कार्तिक कृष्ण १० को हुआ (ले १८९)। आप के प्रमुख शिष्य महतिसागर थे। आपकी मराठी रचनाओका एक सग्रह 'महति काव्यकुज' नाम से प्रकाशित हो चुका है। आप ने रिद्धिपुर में शक १७२३ की भाद्रपद शुक्ल ५ को पुतळसघवी के आग्रह पर रविवार व्रत कथा लिखी तथा शक १७३२ की माघ कृष्ण १४ को आदिनाथ पचकल्याणिक कथाकी रचना पूर्ण की (ले १९१-९२)[२९]।

---

२९ स्थानिक अनुश्रुति से पता चलता है कि देवेंद्रकीर्ति के बाद भ. पद्मनन्दि पट्टाधीश हुए। सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि की वन्दना करते हुए अपघात से इन की मृत्यु हुई। इन की समाधि मुक्तागिरि के पास ही खरपी नामक गाव में है। इन ने सवत् १८७९ में ही कालुराम नामक शिष्यका पट्टाभिषेक कर उन का नाम देवेन्द्रकीर्ति रखा था। देवेन्द्रकीर्ति कोई साठ वर्ष पट्टाधीश रहे। नागपुर, विदर्भ और मराठवाडाकी बघेरवाल, खडेलवाल, परवार, नेवी, सैतवाल आदि सभी जैन जातियों के प्रमुख व्यक्तियोंसे आपका सम्पर्क रहा। नागपुर, रामटेक, कारंजा आदि स्थानोंमें आप के द्वारा विशाल मूर्तियों की स्थापना हुई थी। तेरापथी सम्प्रदाय के क्षुल्लक धर्मदासजी अमरावती में आप से मिलकर बडे प्रभावित हुए। बाद में उनने सम्यग्ज्ञानदीपिका आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों का निर्माण किया। देवेन्द्रकीर्ति ने सवत् १९३६ में रुखबदास नामक शिष्यका पट्टाभिषेक कर उन का नाम रत्नकीर्ति रखा था। इस के कोई ५ वर्ष बाद सवत् १९४१ मे उन का स्वर्गवास हुआ। भ. रत्नकीर्ति ने गुरु की समाधि अच्छी तरह निर्माण कर उसके चारों ओर बगीचा लगाने की व्यवस्था की थी। रत्नकीर्तिका स्वर्गवास अनन्पुर में सवत् १९५३ में हुआ। उन के कोई चार वर्ष बाद देवेन्द्रकीर्ति

बलात्कार गण–कारंजा–कालपट

१ अमरकीर्ति
|
२ विशालकीर्ति
|
३ विद्यानंद [सवत् १५९८]
|
४ देवेंद्रकीर्ति (सवत् १५९९)
|
५ धर्मचन्द्र [सवत् १६२२]
|
६ धर्मभूषण [सवत् १६३८]
|
७ देवेंद्रकीर्ति [स. १६३८–१६४९]
|
८ कुमुदचन्द्र [स. १६५६–१६७०]
|
९ धर्मचन्द्र [स. १६८४–१७०४]
|
१० धर्मभूषण [स. १७०७–१७३२]

११ विशालकीर्ति, अजितकीर्ति, [लातूर शाखा]

१२ धर्मचन्द्र [सं. १७४२–१७४९], पद्मकीर्ति [लातूर शाखा]
|
१३ देवेंद्रकीर्ति [स. १७५६–१७८६]
|

इस पट्टपर संवत् १९५७ में अभिषिक्त हुए। इन का स्वर्गवास सवत् १९७३ में हुआ। इन के बाद कारजाकी भट्टारक पीठ पर कोई भट्टारक नहीं हुए। कारंजाका बलात्कार गण मन्दिर का शास्त्र भाण्डार बडा ममृद्ध है।

१४ धर्मचन्द्र [स १७९३-१८३३]

|

१५ देवेन्द्रकीर्ति [स १८४०-१८५०)

|

१६ पद्मनन्दि [स. १८५०-१८७०]

|

१७ देवेन्द्रकीर्ति [स. १८७०-१९४१]

|

१८ रत्नकीर्ति (स. १९३६-१९५३)

|

१९ देवेन्द्रकीर्ति (स १९५७-१९७३)

४. बलात्कार गण – लातूर शाखा

लेखांक १९३ – १ मूर्ति अजितकीर्ति

शके १५७३ खर नाम संवत्सरे फाल्गुणमासे शुक्लपक्षे पचम्यां तिलकदान श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीधर्मचंद्र तत्पट्टे भ धर्मभूषण तदाम्नाये भ अजितकीर्तिउपदेशात् जैन ज्ञाति कनयातुक सेटी च ताहु मेटी कुटुंबसहितेन नित्यं प्रणमति ॥

(बाळापुर,अ ४ पृ. ५०५)

लेखांक १९४ – नंदीश्वर मूर्ति विशालकीर्ति

शके १५९२ वैसाख मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ कुमुदचद्र तत्पट्टे भ. अजितकीर्ति तत्पट्टे भ. विशालकीर्ति उपदेशात् सोनो पंडित रोडे ॥

(पा. ४)

लेखांक – १९५ आदिपुराण महीचंद्र

शके सोळाशे अष्टादश । धाता नाम संवत्सर सुरस ॥
माघ वद्य पंचमी तिथीस । वार रवि पै ॥
भरतक्षेत्रामध्ये जाण । आशापुर पुण्यपावन ॥
मूळनायक शांतिजिन । चैत्याला पै ॥
विशाळकीर्तिचे कृपेण । महीचंद्रे अज्ञानपण ॥
ग्रथ केला सपूर्ण । स्वहस्ते पै ॥

[विविध ज्ञान विस्तार, मे १९२४]

लेखांक १९६ – गरुडपंचमीकथा

कुदकुदाचार्यान्वय सूरि । धर्मचंद्र पटाचारि ॥
तदा आम्नाय धर्माचारी । अजितकीर्ति पै ॥ ८६
तत्पट्टोधर विशालकीर्ति । विशाळ आहे तयाची मति ॥
तत्पदपंकजसेवक यति । महिचंद्र ॥ ८७

कथा केली अज्ञानपने । मज नाही वाचा ज्ञान ॥
श्रोते असती जे सज्ञान । तेहि सोधिजे ॥ ८९

[ना. ८]

लेखांक १९७ – अठाईव्रतकथा

तदाम्नाय गुरु अजितकीर्ति । तत्पटी सूरि विशालकीर्ति ॥
महाविशाल तयाची मति । धर्म स्थापिला ॥ १४६
महीचंद्र म्हणे मी रंक ।

(ना. ८)

लेखांक १९८ – नेमिनाथ भवांतर

सूरि विशालकीर्ति । धर्मस्थापक मूर्ति ॥
तस्य सिष्य महीचंद्र । म्हने हो तया प्रति ॥
नेमिनाथभवांतर । याची आयका फलश्रुती ॥
निश्चय श्रवण केलिया । अपुत्रिका पुत्रप्राप्ति ॥ ७१

[ना. १७]

लेखांक १९९ – काली गोरी संवाद

आदि अत नमू जिन चतुर्विंशति जान
चौदासे बावन गण वंदे भाव धरिके ।
सारदा स्वामिनी मोरी अज्ञान तिमिर हरि
पूजे मन भाव धरि भ्रांति दूर करिके ॥
गुरुचरण सिर धरि ध्याय चित सुद्ध करि
विशालकीर्ति सूरि महामुनिरायके ॥
कालि गोरी सावलीको वाद सुनो ताको
महीचंद्र सूरि नीको कहे भव्यलोकके ॥ १

[म ७३]

लेखांक २०० – [कौतुक सार]

सके १६३३ खर नाम ममसरे भाद्रपदमासे वद पक्षे पचमी वार गुरु आसापुरनगर श्रीशांतिनाथचैत्यालये भ श्रीमहिचंद्र तस्य सीसे ब्रह्म गोमट-

सागर लीखीतं स्वयं पठनार्थं सुभं भवतु ॥

[पा. १]

लेखांक २०१ – शीलपताका

कुंदकुंदाचार्यान्वये बोलती । अजितकीर्ति महायती ॥
तत्पटी विसालकीर्ती । धर्मस्थिति चालवी सदा ॥ ५४६
तत्पटी महीचंद्र महामुनी । सदा समताभाव त्याहाचे मनीं ॥
अबोध जिवासी धर्म ठेवनी । दाविती सदा ॥ ५४७
महीचंद्र माझी माउली । थोर कृपेची साउली ॥
महाकीर्तिस ठेवणी दाविली । शीलपताकेची ॥ ५५१

(म. ८९)

लेखांक २०२ – [पद्मावती सहस्रनाम]   महीभूषण

सके १६४० विलंबि नाम संवत्सरे वैसाक वद पंचमि ५ गुरुवारे संपूर्ण लिखितं । कारंजा माहानगरे श्रीचद्रप्रभचैत्यालय लिखितं । श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्री५महीभूसनगुरुः ॥

[पा. २]

लेखांक २०३ – (माला पूजा)

सक १६४३ पह्लव नाम सवत्सरे माघ वदि चउति बुधवार तद्दिने भ श्रीमहिभूषण तस्य सिस्य गौतमसागर स्वहस्तेन लिखित स्वयं पठनार्थं ॥ सुभमस्तु ॥

[पा. ३]

लेखांक २०४ – श्रेणिक चरित्र   चंद्रकीर्ति

श्रीशीलाचार्यांचे अंशी । विशाळकीर्ति ज्ञानराशी ॥ २६७
त्याचे अंशी महिचंद्र । इंदु दुजा करविंद्र ॥
महीभूषण शांतींद्र । शिष्य होती जयाचे ॥ २६८
शातिकीर्तीचे अंशी । कल्याणकीर्ति महाऋषी ॥

त्याचे अंशी ज्ञानराशी । गुणकीर्ति सागर ॥ २६९
त्याचा शिष्य क्षमाशील । जो चंद्रकीर्ति विशाळ ॥
त्याचे मम माथा करकमळ । गुरु दयाळ तो माझा ॥ २७०
त्याचे अंशी महारत्न । मानिकनंदी निग्रंथ पूर्ण ॥
त्याचा सजन जनार्दन । श्रावक जैन गृहाश्रमी ॥ २७१
शके सोळाशे सत्याण्णव । वद्य पक्ष माघ अपूर्व ॥
सप्तमी वार शनि राव । तिसरा याम जाण पां ॥ २७८

[अध्याय ४०, न १९०४]

लेखांक २०५ – हरिवंशपुराण अजितकीर्ति

गुरु अन्वय झाले भट्टारक । मुनि देवेंद्रकीर्ति सुरेख ॥
त्याचे पट्टी जाले भट्टारक । कुमुदचंद्र ॥ ५५
कुमुदचंद्राचे पटधारी । धर्मचंद्र झाले वागेस्वरी ॥
तयाचे पट्टी उद्योतकारी । जाहाले गुरु ॥ ५६
गुरु जाले हो धर्मभूषण । तयाची आम्नाय विचक्षण ॥
भट्टारक विशाळकीर्ति जाण । गुरु आमुचे ॥ ५७
तयाचे पटी हो ज्ञानजोती । भट्टारक श्रीअजितकीर्ती ॥
माउली आमुची पुण्यमूर्ती । ते व्हावी आम्हा ॥ ५८
तयाचा शिष्य जो ब्रह्मचारी । पुण्यसागर कवित्व करी ॥
मान्हाष्ट भाषा टीका उच्चारी । हरिवंश कथा ॥ ५९

(ना १)

लेखांक २०६ – आदितवार कथा

श्रीमूलसंघ वागेश्वरी गछ । बलात्कार गण जाणिजे प्रत्यक्ष ॥
गुरु अजितकीर्तिने केली साक्ष । श्रवणमात्रे ॥ १७९
सिक्ष विनति करितो तुम्हा । कवि बोले पुण्य ब्रह्मा ॥
कृपा करावी आम्हा । जन्मोजन्मी ॥ १८०

[ना १६]

लेखांक २०७ – सम्यग्दर्शन यंत्र   पद्मकीर्ति

सके १६०१ फाल्गुन सुदि ११ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे भ. श्रीपद्म-कीर्ति सदुपदेशात् श्रीपद्मावतीपल्लीवालज्ञातो अडनाव कुस्तानी पानसी भार्या मगनाई·····॥

(पा. १२५)

लेखांक २०८ – ? मूर्ति

शके १६०७ वर्षे मार्गसिर सुद १० मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार-गणे भ. विशालकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. पद्मकीर्तिगुरूपदेशात् पाससा सेठ भार्या पसाई·· ··॥

(नादगाव, अ. ४ पृ. ५०५)

लेखांक २०९ – ? यंत्र

शक १६०७ मार्गशिर शुक्ल १० बुधे श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीविशाल-कीर्तितत्पट्टे भ. श्रीपद्मकीर्ति तयोः उपदेशात् जाती सोहितवाल·····॥

(अहार, अ. १० पृ. १५६)

लेखांक २१० – चारित्र यंत्र   विद्याभूषण

सके १६०८ फागण वदी १० श्रीमूलसंघे ·····भ. श्रीविशालकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीपद्मकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीविद्याभूषण·····॥

(पा. १२०)

लेखांक २११ – आदिनाथ मूर्ति   हेमकीर्ति

सं. १७५२ माघ वदी ८ श्रीमूलसंघे भ. श्रीहेमकीर्ति ··॥

(ति. ये. खेडकर, नागपुर)

लेखांक २१२ – चौवीसी मूर्ति

शक १६२६ तारण संवत्सरे माह सुद १३ मूलसंघ बलात्कारगण भ. हेमकीर्ति उपदेशात् सितळसंगई प्रतिष्ठितं ॥

[पा. १६]

लेखांक २१३ – चौवीसी मूर्ति

शक १६२६ तारण नाम संवत्सरे माहो सुद १३ शुक्रे मूलसंघे भ. पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ. विद्याभूषण तत्पट्टे भ. हेमकीर्तिउपदेशात् उज्जैनी पल्लीवाल ज्ञातीय सिंगवी लखमप्रसादजी भार्या गोमाई·· प्रतिष्ठितं भीसीनगरे चंद्रनाथचैत्यालये ·· ॥

[पा. ४८]

लेखांक २१४ – जिनपूजा छप्पय

सोलसके अडतालिसमे सुध आषाढमे छठिके दिन रंग ।
हेमसुकीरति की कृति येह जिनेश्वर अष्ट प्रकारिय चंगं ॥ ९

[ना. १२४]

लेखांक २१५ – दशलक्षण यंत्र

सक १६५३ वैसाख सुद १४ श्रीमूलसघे वलात्कारगणे भ. हेमकीर्ति-उपदेशात् श्रीश्रीमालज्ञातौ महासा नित्यं प्रणमंति ॥

(गो. स नाकाडे, नागपुर)

लेखांक २१६– षोडशकारण यंत्र

शक १६५३ वर्षे वैसाख सुदि १ मूलसघे वलात्कारगणे भ. पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ. विद्याभूषण तत्पट्टे भ हेमकीर्ति उपदेशात् · ॥

[सिंदी, अ. ४ पृ. ५०४]

लेखांक २१७ – रामटेक छंद

देवगडचा देहे परगणा । विद्याभूसनाचि आमना ॥
गछ वाळात्कार जाना । समस्त लोक ॥ १४
पाछाव झाडीचा म्हनती । धन्य धन्य हेमकीर्ति ॥
मकरंद पाड्या त्याहचे चित्ती । नाव धारक ॥ १५

(म १२५)

लेखांक २१८ – शांतिनाथ मूर्ति　　अजितकीर्ति

संमत १८३२ मन्मथ नाम संवत्सरे मूलसंघे बलात्कारगणे···· भ. पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ. विद्याभूषण तत्पट्टे भ. हेमकीर्ति तत्पट्टे भ. अजितकीर्ति फाल्गुण मासे शुद २ ॥

[पा. १०२]

लेखांक २१९ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शक १६९७··· नाम संवत्सरे भ. अजितकीर्ति उपदेशात् फाल्गुण सुद २ ॥

(पा. ३९)

लेखांक २२० – पार्श्वनाथ मूर्ति

संमत १८५७ शके १७२२ भादवा सुदी १० सोमवासरे कुंदकुंदाचार्यान्वये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ. श्रीअजितकीर्ति तस्य उपदेशात् ···परवारज्ञाते ···· ॥

(परवार मन्दिर, नागपुर)

लेखांक २२१ –　　नागेन्द्रकीर्ति

नाम घेतले गुरु दाखले चद्रकीर्ति पदी लीन झाला ।
नागेद्रकीर्ति पद करोनी सभेमाजी बोलिला ॥ ४

(जिन पद्यरत्नावली, पृ. २०)

लेखांक २२२ –

चद्रकीर्ति निर्वाण स्वामी जग वंदनीय झाला ।
नागेद्रकीर्ति दीक्षित होउनि नमोकार त्या दिधला ॥ ४

(उपर्युक्त, पृ. २१)

बलात्कार गण – लातूर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. अजितकीर्ति से हुआ। इन के दीक्षागुरु कारजा शाखा के भ कुमुदचन्द्र थे (ले १९४)। किन्तु कुमुदचन्द्र की मुख्य पट्टपरम्परा मे धर्मचन्द्र और धर्मभूषण ये भट्टारक हुए इस लिए अजितकीर्ति ने धर्मभूषण का भी आचार्यरूप में उल्लेख किया है (ले.१९३)। अजितकीर्ति ने शक १५७३ की फाल्गुन शु. ५ को कोई मूर्ति स्थापित की (ले. १९३)।

इनके बाद विशालकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने शक १५९२ के वैशाख में एक नन्दीश्वर मूर्ति स्थापित की (ले १९४)।

विशालकीर्ति के पट्टशिष्य महीचन्द्र हुए। आप ने शक १६१८ की माघ वद्य ५ को आशापुर मे मराठी ग्रन्थ आदिपुराण पूर्ण किया (ले. १९५)। गरुडपचमी कथा, अठाई व्रत कथा, नेमिनाथ भवांतर और काली गोरी सवाद ये इन की अन्य रचनाए हैं (ले १९६–९९)। इन के शिष्य गोमटसागर ने शक १६३३ की भाद्रपद कृ ५ को कौतुकसार नामक ग्रन्थ की एक प्रति लिखी (ले. २००)। इन के दूसरे शिष्य महाकीर्ति ने शीलपताका नामक कथाग्रन्थकी रचना की थी (ले. २०१)।

महीचन्द्र के पट्टशिष्य महीभूषण हुए। इन ने शक १६४० की वैशाख कृ ५ को पद्मावती सहस्रनाम की एक प्रति कारजा मे लिखी (ले २०२)। इन के शिष्य गौतमसागर ने शक १६४२ की माघ कृ. ४ को वाला पूजा की प्रति लिखी (ले. २०३)।

महीभूषण के बाद इस परम्परा में क्रमश शान्तिकीर्ति, कल्याणकीर्ति, गुणकीर्ति, चद्रकीर्ति और माणिकनन्दि ये भट्टारक हुए। चद्रकीर्ति के शिष्य जनार्दन ने शक १६९७ की माघ कृ ७ को मराठी श्रेणिक चरित्र पूरा किया (ले २०४)।

लातूर शाखा की दूसरी परम्परा कारजा शाखा के भ. विशालकीर्ति (द्वितीय) से आरभ होती है। इन के शिष्य अजितकीर्ति के शिष्य पुण्य-

सागर ने मराठी हरिवंशपुराण पूर्ण किया[२०] (ले २०५)। पुण्यसागर की दूसरी रचना आदितवार कथा है (ले २०६)।

विशालकीर्ति के दूसरे शिष्य पद्मकीर्ति हुए। आप ने शक १६०१ की फाल्गुन शु. ११ को एक सम्यग्दर्शन यन्त्र स्थापित किया (ले २०७), शक १६०७ मे एक मूर्ति तथा एक यन्त्र स्थापित किया (ले. २०८–९)।

पद्मकीर्ति के बाद विद्याभूषण पट्टाधीश हुए। इन ने शक १६०८ की फाल्गुन व. १० को एक सम्यक्चारित्र यत्र स्थापित किया (ले. २१०)।

विद्याभूषण के पट्टशिष्य हेमकीर्ति हुए। आपने सवत् १७५२ की माघ व. ८ को एक आदिनाथ मूर्ति तथा शक १६२६ की माघ शु. १३ को दो चौवीसी मूर्ति स्थापित की (ले. २११–१३)। शक १६४८ की आषाढ शु. ६ को आप ने जिनपूजा की रचना की (ले. २१४)। शक १६५३ के वैशाख में आपने एक षोडशकारण यत्र और एक दशलक्षण यंत्र भी स्थापित किया (ले २१५–१६)। मकरन्द की एक कविता से ज्ञात होता है कि रामटेक क्षेत्र के विभाग मे हेमकीर्ति का शिष्यवर्ग रहता था (ले. २१७) तथा यह क्षेत्र उस समय देवगढ राज्य के अन्तर्गत था।

हेमकीर्ति के बाद अजितकीर्ति पट्टाधीश हुए। आप ने शक १६९७ की फाल्गुन शु. २ को एक शान्तिनाथ मूर्ति तथा एक पार्श्वनाथ मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले. २१८-१९)। आप ने शक १७२२ की भाद्रपद शु. १० को एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले २२०)।

अजितकीर्ति के बाद चन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए। इन के पट्टशिष्य नागेन्द्रकीर्ति ने मराठीमे कई पदोकी रचना की है (ले. २२१–२२)।[२१]

---

२० यह पुराण उन्नतकीर्ति के शिष्य जिनदास ने देवगिरिपर आरभ किया था लेकिन उनका बीच में ही स्वर्गवास हो जानेसे पुण्यसागरने उसे पूरा किया।

२१ नागेन्द्रकीर्ति के बाद विशालकीर्ति भट्टारक हुए। तक्त लातूर, गादी नागपुर, मठ पूना ऐसी इन की व्यवस्था थी। इन का स्वर्गवास सवत् १९४८ की

बलात्कार गण–लातूर शाखा–काल पट

धर्मभूपण

	विशालकीर्ति
१ अजितकीर्ति [सवत् १७०८]	
२ विशालकीर्ति [सवत् १७२६]	पद्मकीर्ति [स. १७३६-४३] अजितकीर्ति
३ महीचन्द्र [सवत् १७५३]	विद्याभूपण [सवत् १७४४]
४ महीभूषण [सवत् १७७४]	हेमकीर्ति [स १७५२–१७८७]
५ शान्तिकीर्ति	अजितकीर्ति [सवत् १८३२-१८५७]
६ कल्याणकीर्ति	चन्द्रकीर्ति
७ गुणकीर्ति	नागेन्द्रकीर्ति
८ चन्द्रकीर्ति	विशालकीर्ति
९ माणिकनन्दि [सवत् १८३२]	विशालकीर्ति [वर्तमान]

दीपावली को हुआ। इस के २२ वर्ष बाद सवत् १९७१ की कार्तिक शु. १ को वर्तमान भ. विशाल्कीर्तिजी का पट्टाभिषेक हुआ। आप ने 'भावाकुर' नामक सस्कृत और मराठी कविताओं का एक सग्रह लिखा है। इस समय लातूर पीठ सेतवाल जैन समाज का गुरुपीठ माना जाता है।

स्व भ विशालकीर्तिजी (लातूर)
(स्वर्गवास स १९४८)

सदर्भ-पृष्ठ ८८

बलात्कार गण–लातूर शाखा के वर्तमान भट्टारक
श्रीविशालकीर्ति (पट्टाभिषेक संवत १९७१)

सदभ–पृष्ठ ८८

५. बलात्कार गण – उत्तर शाखा

लेखांक २२३ – पट्टावली वसंतकीर्ति

संवत १२६४ माह सुदि ५ वसंतकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १२ दीक्षा वर्ष २० पट्ट वर्ष १ मास ४ दिवस २२ अंतर दिवस ८ सर्व वर्ष ३३ मास ५ बघेरवाल जाति पट्ट अजमेर ॥

(ब. १०)

लेखांक २२४ – गुर्वावली

सैद्धान्तिकोभयकीर्तिर्वनवासी महातपाः ।
वसंतकीर्तिर्व्याघ्रांह्रिसेवितः शीलसागरः ॥ २१

(भा १ कि. ४ पृ. ५२)

लेखांक २२५ –

कलौ किल म्लेच्छादयो नग्नं दृष्ट्वोपद्रवं यतीनां कुर्वन्ति तेन मण्डपदुर्गे श्रीवसन्तकीर्तिना स्वामिना चर्यादिवेलायां तट्टीसादरादिकेन शरीरमाच्छाद्य चर्यादिकं कृत्वा पुनस्तन्मुञ्चन्तीत्युपदेशः कृतः संयमिनां इत्यपवादवेषः ।

[षट्प्राभृतटीका पृ. २१]

लेखांक २२६ – गुर्वावली विशालकीर्ति

तस्य श्रीवनवासिनस्त्रिभुवनप्रख्यातकीर्तेरभूत्
शिष्योनेकगुणालयः शमयमध्यानापसागरः ।
वादीन्द्रः परवादिवारणगणप्रागल्भ्यविद्रावणः
सिंहः श्रीमति मण्डपेतिविदितस्त्रैविद्यविद्यास्पदम् ॥ २२
विशालकीर्तिर्वरवृत्तमूर्तिः ।

(भा. १ कि. ४ पृ. ५२)

लेखांक २२७ – गुर्वावली शुभकीर्ति

ततो महात्मा शुभकीर्तिदेवः ।

एकान्तराद्युग्रतपोविधाता धातेव सन्मार्गविधेर्विधाने ॥ २३

(उपर्युक्त)

लेखांक २२८ – १ मूर्ति

संवत् १३८० वर्षे माघ सुदि ७ सनौ श्रीनंदिसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे मूलसघे कुदकुदाचार्यान्वये भ. शुभकीर्तिदेव तत्शिष्य सर्वीति ॥

(चूलगिरि, अ. १२ पृ. १९२)

लेखांक २२९ – गुर्वावली　　　　धर्मचंद्र

श्रीधर्मचन्द्रोजनि तस्य पट्टे हमीरभूपालसमर्चनीयः ।
सैद्धान्तिक. सयमसिन्धुचन्द्र. प्रख्यातमाहात्म्यकृतावतारः ॥ २४

[भा. १ कि. ४ पृ. ५३]

लेखांक २३० – पट्टावली

सवत १२७१ श्रावण सुदि १५ धर्मचद्रजी गृहस्थ वर्ष १८ दीक्षा वर्ष २४ पट्ट वर्ष २५ दिवस ५ अतर दिवस ८ सर्व वर्ष ६५ दिवस १२ जाति हूंबड पट्ट अजमेर ॥

(च. १९)

लेखांक २३१ – गुर्वावली　　　　रत्नकीर्ति

तत्पट्टेजनि रत्नकीर्तिरनघ स्याद्वादविद्यांबुधि ।
नानादेशविवृत्तशिष्यनिवह प्राच्यांघ्रियुग्मो गुरु ॥

(भा १ कि ४ पृ. ५३)

लेखांक २३२ – पट्टावली

सवत १२९६ भादवा वदि १३ रत्नकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १९ दीक्षा वर्ष २५ पट्ट वर्ष १४ दिवस ११ अतर दिवस ६ सर्व वर्ष ५५ दिवस १९ हूंबड जाति पट्ट अजमेर ॥

(च. १०)

लेखांक २३३ – पट्टावली　　प्रभाचंद्र

संवत १३१० पौष सुदि १५ प्रभाचंद्रजी गृहस्थ वर्ष १२ दीक्षा वर्ष १२ पट्ट वर्ष ७४ मास ११ दिवस १५ अंतर दिवस ८ सर्व वर्ष ९८ मास ११ दिवस २३ प्रभाचंद्रजीकै आचार्य गुजरातमै छो सो वठै एकै श्रावक प्रतिष्ठानै प्रभाचंद्रजीनै बुलाया सो वै नाया तदि आचार्यनै सूरिमंत्र दे भट्टारककरि प्रतिष्ठा कराई तदि भ. पद्मनंदिजी हुवा पाषाणकी सरस्वती मुढै बुलाई। जाति ब्राह्मण पट्ट अजमेर ॥

(ब. १०)

लेखांक २३४ – गुर्वावली

पट्टे श्रीरत्नकीर्तेरनुपमतपसः पूज्यपादीयशास्त्र–
व्याख्याविख्यातकीर्तिर्गुणगणनिधिपः सत्क्रियाचारुचंचुः।
श्रीमानानन्दधाम प्रतिबुधनुतमामानसंदायिवादो
जीयादाचन्द्रतारं नरपतिविदितः श्रीप्रभाचंद्रदेवः ॥ २७

[भा १ कि. ४ पृ. ५३]

लेखांक २३५ – (आराधना पंजिका)

संवत १४१६ वर्षे चैत्र सुदि पंचम्यां सोमवासरे सकलराजशिरोमुकुट-माणिक्यमरीचिपिंजरीकृतचरणकमलपादपीठस्य श्रीपेरोजसाहेः सकल-साम्राज्यधुरीविभ्राणस्य समये श्रीदिल्ल्यां श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये सरस्वती-गच्छे बलात्कारगणे भ. श्रीरत्नकीर्तिदेवपट्टोदयाद्रितरुणतरणित्वमुर्वीकुर्वाण भ. श्रीप्रभाचंद्रदेव तत्सिष्याणा ब्रह्म नाथूराम इत्याराधनापंजिकाया ग्रन्थ आत्मपठनार्थं लिखापितं ॥

[पूना, अ. १ पृ. २१३]

लेखांक २३६ –

सिरि पहचंदु महागणि पावणु वहुसीसेहि सहिउ य विरावणु।
···पट्टणे खंभायच्चे धारणयरि देवगिरि।
मिच्छामय विहुणंतु गणि पत्तउ जोइणिपुरि ॥
तहि भव्वहि सुमहोच्छउ विहियउ सिरिरयणकित्तिपट्टे णिहियउ।

महमदसाहिमणु रंजियउ विज्जहि वाइयमणु भंजियउ ॥

(बाहुबलिचरित of धनपाल, अ ७ पृ. ८३)

लेखांक २३७ – पट्टावली

पद्मनंदी

संवत १३८५ पोस सुदि ७ पद्मनंदीजी गृहस्थ वर्ष १५ मास ७ दीक्षा वर्ष १३ मास ५ पट्ट वर्ष ६५ दिवस १८ अंतर दिवस १० सर्व वर्ष ९९ दिवस २८ जाति ब्राह्मण पट्ट दिल्ली ॥

[व. १०]

लेखांक २३८ – गुर्वावली

श्रीमत्प्रभाचंद्रमुनींद्रपट्टे शश्वत्प्रतिष्ठ प्रतिभागरिष्ठ ।
विशुद्धसिद्धान्तरहस्यरत्न-रत्नाकरो नंदतु पद्मनंदी ॥ २८

(भा १ कि ४ पृ. ५३)

लेखांक २३९ – आदिनाथ मूर्ति

ॐ संवत १४५० वर्षे वैशाख सुदी १२ गुरौ श्रीचाहुवानवंशकुशेशय-मार्तण्डसारवै विक्रमन्य श्रीमत् सरूप भूपग्वान्वय झुंढदेवात्मजस्य भूवज-शक्रन्य श्रीसुवरनृपते राज्ये वर्तमान श्रीमूलसंघे भ श्रीप्रभाचंद्रदेव तत्पदे श्रीपद्मनंदिदेव तदुपदेशे गोलाराडान्वये ॥

(भा प्र. पृ. ८)

लेखांक २४० – भावनापद्धति

श्रीमत्प्रभेन्दुप्रभुवाक्यरश्मिविकाशिचेत कुमुदप्रमोदात् ।
श्रीभावनापद्धतिमात्मशुद्धयै श्रीपद्मनंदी रचयांचकार ॥ ३४

[अ ११ पृ. २५९]

लेखांक २४१ – जीरापल्ली-पार्श्वनाथ स्तोत्र

श्रीमत्प्रभेन्दुचरणाम्बुजयुग्मभृंगश्चारित्रनिर्मलमतिर्मुनिपद्मनंदी ।
पार्श्वप्रभोर्निनयनिर्भरचित्तवृत्तिर्भक्त्या स्तवं रचितवान् मुनिपद्मनंदी ॥१०

[अ. ९ पृ. २५०]

बलात्कार गण – उत्तर शाखा

बलात्कार गण की उत्तर भारत की पीठो की पट्टावलियोंमें वसन्तकीर्ति पहले ऐतिहासिक भट्टारक प्रतीत होते हैं।[३२] पट्टावलियो के अनुसार ये संवत् १२६४ की माघ शु. ५ को पट्टारूढ हुए [ले. २२३] तथा १ वर्ष ४ मास पट्ट पर रहे। इन्हें वनवासी और शेर द्वारा नमस्कृत कहा गया है [ले. २२४]। श्रुतसागर सूरि के कथनानुसार ये ही मुनियोके वस्त्रधारणके प्रवर्तक थे। यह प्रथा इन ने मण्डपदुर्ग[३३]मे आरम्भ की (ले. २२५)। इनकी जाति बघेरवाल और निवासस्थान अजमेर कहा गया है (ले. २२३)। इनका बिजौलियाके शिलालेखमे भी उल्लेख हुआ है (ले. २४४)।

वसन्तकीर्ति के बाद विशालकीर्ति[३४] और उन के बाद शुभकीर्ति पट्टाधीश हुए [ले. २२६–२७] शुभकीर्ति एकान्तर उपवास आदि कठोर

---

३२ इनके पहले क्रमशः गुप्तिगुप्त, माघनन्दि, जिनचन्द्र, पद्मनन्दि कुन्दकुन्द, उमास्वाति, लोहाचार्य, यशःकीर्ति, यशोनन्दि, देवनन्दि. गुणनन्दि, वज्रनन्दि, कुमारनन्दि, लोकचन्द्र, प्रभाचन्द्र, नेमिचन्द्र, भानुनन्दि, जटासिंहनन्दि, वसुनन्दि, वीरनन्दि, रत्ननन्दि, माणिक्यनन्दि, मेघचन्द्र, शान्तिकीर्ति, मेरुकीर्ति, महाकीर्ति, विश्वनन्दि, श्रीभूषण, शीलचन्द्र, श्रीनन्दि, देशभूषण, अनन्तकीर्ति, धर्मनन्दि, विद्यानन्दि,रामचन्द्र, रामकीर्ति. अभयचन्द्र, नरचन्द्र, नागचन्द्र, नयनन्दि, हरिश्चन्द्र, महीचन्द्र, माधवचन्द्र, लक्ष्मीचन्द्र, गुणकीर्ति, गुणचन्द्र, वासवचन्द्र, लोकचन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुचन्द्र, महाचन्द्र, माघचन्द्र, ब्रह्मनन्दि, शिवनन्दि, विश्वचन्द्र, हरिनन्दि, भावनन्दि, सुरकीर्ति, विद्याचन्द्र, सुरचन्द्र, माघनन्दि, ज्ञाननन्दि, गंगनन्दि, सिंहकीर्ति, हेमकीर्ति, चारुनन्दी, नेमिनन्दी, नाभिकीर्ति, नरेन्द्रकीर्ति, श्रीचन्द्र, पद्मकीर्ति, वर्धमान, अकलंक, ललितकीर्ति, केशवचन्द्र, चारुकीर्ति और अभयकीर्ति का उल्लेख हुआ है।

३३ राजस्थानके अन्तर्गत माण्डलगढ।

३४ पट्टावलियोंमें वसन्तकीर्तिके बाद प्रख्यातकीर्तिका उल्लेख है किन्तु (ले. २४४) में इनका नाम नहीं है। शायद गुर्वावलीके श्लोकके विशेषणको विशेष नाम मान लेनेसे पट्टावलीमें यह गलती हुई है।

तपश्चर्या करते थे। इनने सवत् १३८० मे कोई मूर्ति स्थापित की थी (ले. २२८)।[३५]

शुभकीर्ति के बाद धर्मचन्द्र पट्टाधीश हुए। ये सवत् १२७१ की श्रावण शुक्ल ७ को पट्टारूढ हुए तथा २५ वर्ष पट्ट पर रहे। इनकी जाति हूवड और निवास स्थान अजमेर था। हमीर राजाने इन्हें प्रणाम किया था (ले २२९–३०)।[३६]

इनके बाद रत्नकीर्ति सवत् १२९६ की भाद्रपद कृ. १३ को पट्टारूढ हुए। ये १४ वर्ष पट्ट पर रहे। ये भी हूवड जाति के और अजमेर निवासी थे (ले २३१–३२)।

रत्नकीर्तिके पट्ट पर दिल्लीमे सवत् १३१० की पौष शु. १५ को भट्टारक प्रभाचन्द्रका अभिषेक किया गया। ये ब्राह्मण जातिके थे। खभात, धारा, देवगिरि आदि स्थानोमें आपने विहार किया तथा दिल्लीमें महमदशाहँको[३७] प्रसन्न किया (ले २३३, २३६)। गुर्वावलीके अनुसार आपहीने पूज्यपादकृत समाधितन्त्रपर टीका लिखी थी किन्तु यह प्रश्न विवादास्पद है (ले २३४)।[३८] प्रभाचन्द्र ७४ वर्ष तक पट्टाधीश रहे। आप के शिष्य ब्रह्म नाथूरामने दिल्लीमें सवत् १४१६ की माघ शु. ५ को फिरोजसाँहके[३९] राज्यकालमें आराधनापजिकाकी एक प्रति लिखी (ले.२३५)।

---

३५ सम्भवत. सवत्का अक यहा गलत है।

३६ सस्कृत साहित्यमे हमीर शब्दका प्रयोग मुसलमान राजा इस सामान्य अर्थमे हुआ है उसीका यह उदाहरण है। चित्तौडके राणा हमीर सन् १३०१ मे अधिकारारूढ हुए इस लिए यह उनका उल्लेख नही हो सकता।

३७ नासिरुद्दीन महम्मदशाह (सन् १२४६–६६)

३८ इस प्रश्नकी चर्चाके लिए न्यायकुमुदचन्द्रकी प्रस्तावना देखिए। एक मतके अनुसार प्रमेयकमलमार्तण्ड, न्यायकुमुदचन्द्र तथा समाधितन्त्रटीका, रत्नकरण्डटीका और प्राभृतत्रयटीकाके कर्ता एक ही प्रभाचन्द्र हैं जो ११ वीं सदीमें हुए। दूसरे मतके अनुसार इन टीकाग्रन्थोंके कर्ता ही प्रस्तुत प्रभाचन्द्र हैं।

३९ फिरोजशाह तुघलक [सन् १३५१–८८]

एक वार एक प्रतिष्ठा महोत्सवके समय व्यवस्थापक गृहस्थ उपस्थित नहीं रहे तब प्रभाचन्द्रने उसी उत्सवको पट्टाभिषेकका रूप देकर भ. पद्मनन्दिको अपने पद पर स्थापित किया (ले. २३३)। पद्मनन्दि संवत् १३८५ की पौष शु. ७ से ६५ वर्ष तक पट्टाधीश रहे। ये ब्राह्मण जातिके थे (ले. २३७)। भावनापद्धति और जीरापल्ली-पार्श्वनाथ-स्तोत्र ये आपकी कृतियां है (ले. २४०–४१)।[40] आपने सवत् १४५० की वैशाख शु. १२ को एक आदिनाथ मूर्ति प्रतिष्ठित की [ले. २३९]।[41]

भ. पद्मनन्दिके तीन प्रमुख शिष्योद्वारा तीन भट्टारकपरम्पराएं आरभ हुई जिनका आगे अनेक प्रशाखाओमे विस्तार हुआ। इनमे शुभचन्द्रका वृत्तान्त दिल्ली–जयपुर शाखामे, सकलकीर्तिका वृत्तान्त ईडर शाखामे तथा देवेन्द्रकीर्तिका वृत्तान्त सूरत शाखामें देखना चाहिए। इनके अतिरिक्त मदनदेव (ले २४५), नयनन्दि (ले. २५१), तथा मदनकीर्ति (ले. २५५) ये पद्मनन्दिके अन्य शिष्योके उल्लेख मिले हैं। इनमे मदनदेव और मदनकीर्ति सम्भवतः एक ही हैं।

---

४० पद्मनन्दीकी एक और कृति वर्धमानचरित है। आपके शिष्य हरिचन्द्रने मल्लिनाथ काव्य लिखा है। [अनेकान्त वर्ष १२, पृष्ठ २९५]

४१ इस प्रतिष्ठाके समयके शासकका नाम मूलमें बहुत ही अशुद्ध छपा है इस लिए उसका इतिहासमें निर्देश नहीं पाया गया।

बलात्कार गण – उत्तर शाखा – काल पट

१ वसन्तकीर्ति [संवत् १२६४]
|
२ विशालकीर्ति [संवत् १२६६]
|
३ शुभकीर्ति
|
४ धर्मचन्द्र [स १२७१–१२९६]
|
५ रत्नकीर्ति [स. १२९६–१३१०]
|
६ प्रभाचन्द्र [स. १३१०–१३८४]
|
७ पद्मनन्दी [स १३८५–१४५०]

८ शुभचन्द्र [दिल्ली-जयपुर शाखा]
९ सकलकीर्ति [ईडर शाखा]
१० देवेंद्रकीर्ति [सूरत शाखा]

६. बलात्कार गण – दिल्ली-जयपुर शाखा

लेखांक २४२ – शारदास्तवन — शुभचंद्र

श्रीपद्मनंदींद्रमुनींद्रपट्टे शुभोपदेशी शुभचंद्रदेवः ।
विदां विनोदाय विशारदायाः श्रीशारदायाः स्तवनं चकार ॥ ९

[अ. १२ पृ. ३०३]

लेखांक २४३ – शिलालेख

···श्रीमत्प्रभेन्दुपट्टेस्मिन् पद्मनंदी यतीश्वर. ।
तत्पट्टांबुधिसेवीव शुभचंद्रो विराजते ॥
···शिष्योयं शुभचंद्रस्य हेमकीर्तिर्महान् सुधी. ।
येन वाक्यामृतेनापि पोषिता भव्यपादपाः ॥
···विशुद्धा श्रीहेमकीर्तियतिनः सुसिद्धः ।
आस्तां च तावज्जगतीतलेस्मिन् यावत्स्थिरौ चंद्रदिवाकरौ च ॥
संवत् १४६५ वर्षे फाल्गुण सुदि २ बुधौ ॥

बिजौलिया [अ. ११, पृ. ३६६]

लेखांक २४४ – निषीदिका लेख

श्रीवलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीमहि(नंदि) संघे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीवसंतकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीविशालकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीदमन(?) कीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीधर्मचद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीरत्नकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीप्रभाचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवाः ॥

···पद्मनंदिमुनेः पट्टे शुभचन्द्रो यतीश्वर· ।
तर्कादिकविद्यासु (पद)धारोस्ति सांप्रतम् ॥

·· आर्या वाई लोकसिरि विनयसिरि तस्याः शिक्षणी वाई चारित्रसिरि वाई चारित्रकी शिक्षणी वाई आगमसिरि ··तस्या इयं निषेधिका आचंद्रतारकाक्षयं संवत् १४८३ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ गुरौ ॥

[उपर्युक्त पृ ३६५]

लेखांक २४५ – (प्रवचनसार)

अथ संवत्सरे श्रीविक्रमादित्यगताब्दा. संवत् १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनिवासरे श्रीटोडा महादुर्गे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे भ. पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ श्रीशुभचंद्रदेवा गुरुभ्राता श्रीमदनदेवास्तत्सिष्य ब्रह्म नरसिंह तत् पुस्तकात् मया सुंदरलालेन लिपिकृता इंदोरमध्ये स्वपठनार्थ संवत् १९३० ॥

(रायचन्द्र शास्त्रमाला, बम्बई, १९३५, प्रशस्ति)

लेखांक २४६ – पट्टावली

संवत् १४५० माह सुदि ५ भ शुभचंद्रजी गृहस्थ वर्ष १६ दिक्षा वर्ष २४ पट्ट वर्ष ५६ मास ३ दिवस ४ अतर दिवस ११ सर्व वर्ष ९६ मास ३ दिवस २५ ब्राह्मण जाति पट्ट दिल्ली ॥

(ब १०)

लेखांक २४७ – सिद्धांतसार जिनचंद्र

पवयणपमाणलक्खणछंदालंकाररहियहियएण ।
जिणइदेण पउत्तं इणमागमभत्तिजुत्तेण ॥ ७८

(माणिकचद्र ग्रथमाला, बम्बई)

लेखांक २४८ – पट्टावली

संवत् १५०७ जेष्ट वदि ५ भ जिनचद्रजी गृहस्थ वर्ष १२ दिक्षा वर्ष १५ पट्ट वर्ष ६४ मास ८ दिवस १७ अंतर दिवस १० सर्व वर्ष ९१ मास ८ दिवस २७ वघेरवाल जाति पट्ट दिल्ली ॥

[ब १०]

लेखांक २४९ – पार्श्वनाथ मूर्ति

स. १५०२ वर्षे वैसाख सुदी ३ श्रीमूलसंघे भ श्रीजिनचद्र वाकुलिया गोत्रे साहु प्रमसी तत्पुत्र राजदेव नित्य प्रणमति ॥

(भा प्र. पृ. १३)

लेखांक २५० – शांतिनाथ मूर्ति

सं. १५०९ वर्षे चैत्र सुदी १३ रविवासरे श्रीमूलसंघे भ. पद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे श्रीजिनचंद्रदेवाः श्रीधौपे ग्राम स्थाने महाराजाधिराज श्रीप्रतापचन्द्रदेव राज्ये प्रवर्तमाने यदुवंशे लंबकंचुकान्वये साधु श्रीउद्धर्ण तत्पुत्र असौ ·····॥

(उपर्युक्त)

लेखांक २५१ – [नेमिनाथचरित]

संवत् १५१२ आषाढ वदि ११ वर्षे शाका १३७७ प्रवर्तमाने फा वसंतऋतौ पारवानुमासं शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ सोमदिने श्रीघोघा वेलाकूले श्रीनेमिसुर चरिमइ लिखितं। श्रीमूलसंघे · भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. शुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. जिनचंद्रदेवा. तत्र भ. पद्मनंदिदेवाः तत्शिष्य नयणंदिदेव तस्मै श्रीहूंबडवंश ज्ञातीय गोत्र खरीयान श्रेष्ठि गजभाई ····· श्रीजिनदास धनदत्तेन श्रीनेमिनाथचरितं लिखापितं श्रीनयनंदिमुनये दत्तं ॥

[अ. ११ पृ. ४१४]

लेखांक २५२ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १५१५ वर्षे माघ सुदी ५ भौमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे भ. जिनचंद्रदेव गोलाराडान्वये सा. अभू भार्या हडो·····॥

(भा. प्र. पृ. ८)

लेखांक २५३ – [मूलाचार]

वर्षे षडेकपंचैकपूरणे विक्रमे नतः।
शुक्ले भाद्रपदे मासे नवम्यां गुरुवासरे ॥
श्रीमद्वट्टेरकाचार्यकृतसूत्रस्य सद्विधेः।
मूलाचारस्य सद्वृत्तेर्दातुर्नामावलीं ब्रुवे ॥
···विद्यते तत्समीपस्था श्रीमती योगिनीपुरी।
यां पाति पातिसाहिश्रीर्वहलोलाभिधो नृपः ॥
तस्याः प्रत्यग्दिशि ख्यातं श्रीहिसारपिरोजकं।

नगर नगरभादिवल्लीराजिविराजितं ॥
तत्र राज्यं करोत्येष श्रीमान् कुतवखानकः ।
तथा हैवतिखानश्च दाता भोक्ता प्रतापवान् ॥
अथ श्रीमूलसंघेस्मिन् नंदिसघेनघेजनि ।
वलात्कारगणस्तत्र गच्छ सारस्वतस्त्वभूत् ॥
तत्राजनि प्रभाचंद्र. सूरिचंद्रो जितांगज ।
दर्शनज्ञानचारित्रतपोवीर्यसमन्वित. ॥
श्रीमान् वभूव मार्तंडस्तत्पट्टोदयभूधरे ।
पद्मनंदी वुधानदी तमश्छेदी मुनिप्रभु ॥
तत्पट्टांवुधिसच्चंद्र. शुभचंद्र. सतां वर· ।
पंचाक्षवनदावाग्नि कषायक्ष्माधराशनि. ॥
तदीयपट्टावरभानुमाली क्षमादिनानागुणरत्नशाली ।
भट्टारकश्रीजिनचद्रनामा सैद्धांतिकानां भुवि योस्ति सीमा॥
···तच्छिष्या वहुशास्त्रज्ञा हेयादेयविचारका ।
शयसयमसंपूर्णा मूलोत्तरगुणान्विता. ॥
जयकीर्तिश्चारुकीर्तिर्जयनदी मुनीश्वर ।
भीमसेनादयोन्ये च दशधर्मधरा वरा. ॥
···श्रीमान् पंडितदेवोस्ति दाक्षिणात्यो द्विजोत्तम ।
यो योग्य सूरिमत्राय वैयाकरणतार्किक· ॥
अग्रोतवशज साधुर्लवदेवाभिधानक ।
तत्सुतो धरण सज्ञा तद्भार्या भीषुही मता ॥ २५
तत्पुत्रो जिनचंद्रस्य पादपकजषट्पद ।
मीहाख्य पंडितस्त्वस्ति श्रावकव्रतभावक· ॥ २६
तदन्वयेथ खडेलवशे श्रेष्ठीयगोत्रके ।
पद्मावत्या समाम्नाये यक्ष्या पार्श्वजिनेशिन· ॥ २७
साधु श्रीमोहणाख्योभूत्सघभारधुरधर ।
· एतै. श्रीसाधुपार्श्वस्य चोपाख्यस्य च कायजै ।
वसद्भिर्झुंझणूस्थाने रम्ये चैत्यालयैर्वरै ॥ ५०
चाहमानकुलोत्पन्ने राज्यं कुर्वति भूपतौ ।
श्रीमत्समसखानाख्ये न्यायान्यायविचारके ॥ ५१

·· कारितं श्रुतपचम्या महदुद्यापनं च तैः ।
श्रीमद्देशव्रताधारिनरसिंहोपदेशतः ॥
··एतच्छास्त्रं लेखयित्वा हिसारा–
दानाय्य स्वोपार्जितेन स्वराया ।
संघेशश्रीपद्मसिंहेन भक्त्या
सिद्दान्ताय श्रीनराय प्रदत्तं ॥ ६०
·· सूरिश्रीजिनचंद्रांह्रिस्मरणाधीनचेतसा ।
प्रशस्तिर्विहिता चासौ मीहाख्येन सुधीमता ॥ ६९

[माणिकचद्र ग्रंथमाला, २३, बम्बई १९२२]

लेखांक २५४ – (तिलोयपण्णत्ती)

स्वस्तिश्रीसंवत् १५१७ वर्षे मार्ग सुदि ५ भौमवारे श्रीमूलसंघे···भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीशुभचद्रदेवाः मुनिश्रीमदनकीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म नरसिंहकस्य । ··श्रीझूंझुणपुरे लिखितमेतत्पुस्तकम् ॥

(जीवराज ग्रंथमाला, गोलापुर १९५१)

लेखांक २५५ – [पउमचरिय]

संवत १५२१ वर्षे ज्येष्ठमासे सुदि १० बुधवारे श्रीगोपाचलदुर्गे श्रीमूलसंघे ···· भ श्रीप्रभाचद्रदेवाः तत्पट्टे भ. पद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. जिनचद्रदेवाः । तत्र श्रीपद्मनंदिशिष्यश्रीमदनकीर्तिदेवा. तत्शिष्य श्रीनेत्रनंदिदेवा. तन्निमित्ते खडेलवाल लुहाडिया गोत्रे संगही धामा भार्या धनश्री·· · ॥

(अ. ४ पृ. ५४०)

लेखांक २५६ – (अध्यात्मतरंगिणी टीका)

त्रयस्त्रिंशाधिके वर्षे शतपचदशप्रमे ।
शुक्लपक्षेश्विने मासे द्वितीयायां सुवासरे ।
श्रीहिसाराभिधे रम्ये नगरे ऊनसंकुले ।
राज्ये कुतुबखानस्य वर्तमानेथ पावने ॥

अथ श्रीमूलसघेस्मिन्ननघे मुनिकुजर ।
सूरि. श्रीशुभचद्राख्य पद्मनदिपदस्थित ॥
तत्पट्टे जिनचंद्रोभूत् स्याद्वादांबुधिचद्रमाः ।
तदतेवासिमेहाख्य पडितो गुणमडित ॥
तदाम्नाये सदाचारक्षेत्रपालीयगोत्रके ।
सुनामपुरवास्तव्ये खडेलान्वयकेजनि ॥
एतन्मध्ये धनश्रीर्या श्राविका परमा तया ।
लिखापितमिदं शास्त्रं निजाज्ञानतमोहतौ ॥
पूजयित्वा पुनर्भक्त्या पठनाय समर्पित ।
मेहाख्याय सुशास्त्रज्ञपंडिताय सुमेधसे ॥

(झालरापाटन, अ १२ पृ. ३१)

लेखांक २५७ – महावीर मूर्ति

सं. १५३७ वर्षे वैसाख सुदि १० गुरौ श्रीमूलसघे भ जिनचंद्राम्नाये मंडलाचार्यविद्यानदी तदुपदेश गोलारारान्वये पियू पुत्र ॥

(भा. प्र पृ ५)

लेखांक २५८ – [नीतिवाक्यामृत]

अथ संवत्सरेस्मिन् विक्रमादित्यराज्यात् सवत् १५४१ वर्षे कार्तिक सुदि ५ शुभदिने श्रीचद्रप्रभचैत्यालयविराजमाने श्रीहिसारपेरोजाभिधानपत्तने सुलतानवहलोलसाहिराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसघे भ जिनचंद्रदेवा. । तच्छिष्योष्टाविंशतिमूलगुणरत्नरत्नाकरमडलाचार्यमुनिश्रीरत्नकीर्ति । तस्य शिष्यो निष्प्रावरणमूर्तिर्मुनिश्रीविमलकीर्ति । भ श्रीजिनचंद्रातेवासि पं. श्रीमेहाख्यः । एतदाम्नाये क्षेत्रपालीयगोत्रे खडेलवालान्वये सुनामपुरवास्तव्ये एतेषा मध्ये या साध्वी कमलश्रीस्तया निजपुत्रस भीवावच्छूकयोर्न्यायोपार्जितवित्तेनेदं सोमनीतिटीकापुस्तक लिखापित । पुन पडितमेहाख्याय पठनार्थं भावनया प्रदत्त निजज्ञानावरणकर्मक्षयाय ॥

(माणिकचद ग्रथमाला, बम्बई १९२२)

लेखांक २५९ – धर्मसंग्रह

सूरिश्रीजिनचंद्रकस्य समभूद्रत्नादिकीर्तिर्मुनिः
शिष्यस्तत्त्वविचारसारमतिमान् सद्ब्रह्मचर्यान्वितः।
· तच्छिष्यो विमलादिकीर्तिरभवन्निर्ग्रंथचूडामणिः
यो नानातपसा जितेंद्रियगण. क्रोधेभकुंभे शृणिः।
·· दीक्षा श्रौतमुनीं बभार नितरां सत्क्षुल्लकः साधकः
आर्यो दीपद आख्ययात्र भुवनेसौ दीप्यतां दीपवत्॥ १६
छात्रोभूज्जैनचंद्रो विमलतरमति॰ श्रावकाचारभव्यः
स्वग्रोतानूकजातोद्धरणतनुरुहो भीपुहीमातृसूतः।
मीहाख्यः पंडितो वै जिनमतनयनः श्रीहिसारे पुरेस्मिन्
ग्रंथ. प्रारंभि तेन श्रीमहति वसता नूनमेष प्रसिद्धे॥ १७
सपादलक्षे विषयेतिसुंदरे श्रिया पुरं नागपुरं समस्ति तत्।
पेरोजखानो नृपतिः प्रपाति यन्न्यायेन शौर्येण रिपून्निहन्ति च॥१८
·· मेधाविनामा निवसन्नहं बुधः
पूर्वां व्यधां ग्रंथमिमं तु कार्तिके।
चंद्राब्धिवाणैकमितेत्र वत्सरे
कृष्णे त्रयोदश्यहनि स्वभक्तितः॥ २१

(प्रकाशक– उदयलाल काशलीवाल, बनारस १९१०)

लेखांक २६० – १ मूर्ति

संवत १५४२ वर्षे ज्येष्ट सुदि ८ शनौ भ. श्रीजिनचंद्र रा. भ श्रीज्ञान-भूषण सा. ऊहड ··· ॥

(भा ७ पृ. १६)

लेखांक २६१ – दर्शन यंत्र

सं १५४३ मगसर वदि १३ गुरुवार श्रीमूलसघे श्रीकुंदकुंदान्वये भ श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीशुभचद्रदेवा. तत्पट्टे भ श्रीजिनचंद्रदेवाः तद आम्नाये सेतवालान्वये नवग्रामपुरवास्तव्य ·· एतेषा मध्ये चौधरी सुरजवने श्रीसम्यग्दर्शन यंत्र करापितं प्रतिष्ठापितं॥

(फतेहपुर, अ. ११ पृ. ४०८)

लेखांक २६२ – ऋषभ मूर्ति

सवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदि १० चन्द्रदिने श्रीमूलसघे · भ. श्रीजिनचन्द्रदेवा वरहिया कुलोद्भव साहु लखे भार्या कसुमा तेन अर्जुनेनेद आदीश्वरबिंब स्वपूजनार्थं करापितं ॥

(भा. प्र पृ १)

लेखांक २६३ – पार्श्वमूर्ति

स १५४८ वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसघे भ जिनचद्रदेव साहु जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमति सौख्य शहर मुडासा श्रीराजा स्योसिंघ रावल ॥

(फतेहपुर, अ ११ पृ ४०६)

लेखांक २६४ – [नागकुमारचरित]

सवत १५५८ वर्षे श्रावण सुदि १२ भौमे श्रीगोपाचलगढदुर्गे तोमरवशे श्रीमानसिंघदेवा. तद्राज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसघे भ श्रीशुभचद्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीजिनचद्रदेवा तदाम्नाये जैसवालान्वये · एतेषा मध्ये घोमा इद नागकुमारपचमी लिखापित ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं ॥

[प्र. पृ १४, कारजा जैन सीरीज १९३३]

लेखांक २६५ – पट्टावली प्रभाचंद्र

संवत् १५७१ फाल्गुन वदि २ भ प्रभाचद्रजी गृहस्थ वर्ष १५ दिक्षा वर्ष ३५ पट्ट वर्ष ९ मास ४ दिवस २५ अतर दिवस ८ सर्व वर्ष ५९ मास ५ दिवस २ र्फ्क वार गछ दोय हुवा चीतोड अर नागोरका स १५७२ का अन्याल ॥

(च. १०)

लेखांक २६६ – दशलक्षण यंत्र

स १५७३ फाल्गुन वदि ३ श्रीमूलसघे कुन्दकुदाचार्यान्वये भ जिनचद्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीप्रभाचद्रदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये ठोल्या गोत्रे

पं. मूना भार्या सामू ··नित्यं प्रणमंति ।

(फतेहपुर, अ. ११ पृ. ४०८)

लेखांक २६७ – (नागकुमारचरित)

संवत १६०२ वर्षे शाके १४६७ प्रवर्तमाने महामांगल्य आषाढमासे कृष्णपक्षे द्वितीयातिथौ उत्तराषाढनक्षत्रे तैतलकरणे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये ·· भ. श्रीजिनचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीप्रभाचंद्रदेवाः तत् शिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रदेवास्तदाम्नाये तक्षकपुरवास्तव्ये सोलंकीराजाधिराज श्रीरामचंद्र-राज्ये श्रीआदिनाथचैत्यालये खंडेलवालान्वये··सा. ठाकुर भार्या दाडिमदे तया इदं शास्त्रं पंचमीव्रतं उद्योतनार्थं लिखापितं धर्मचंद्राय दत्तं ॥

[प्र. पृ. १५, कारंजा जैन सीरीज, १९३३]

लेखांक २६८ – [यशोधर चरित]

संवत् १६१५ वर्षे भादव सुदि ५ वी सप्त (?) वारे पुष्यनक्षत्रे तोडागढमहादुर्गे महाराजाधिराजराउश्रीकल्याणराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे ···भ श्रीजिनचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीप्र (भाचंद्र)

(प्र. पृ. १५, कारंजा जैन सीरीज १९३१)

लेखांक २६९ – [मूलाचार]   नरेंद्रकीर्ति

श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्या-न्वये भ. श्रीचंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीमन्नरेंद्रकीर्तिजी तत् भ्रात पं. राजश्रीतेजपाल तस्य वर्णी चोखचंद्रेण आत्मपठनीयनिमित्तं लिखापितं। श्रीसमरपुरमध्ये। श्रीरस्तु। श्रीसंवत् १७३० मिति मार्गसिर सित त्रयोदस्यां लिपीकृतं ॥

(का. ५२९)

लेखांक २७०– पार्श्वनाथ मूर्ति   जगत्कीर्ति

सं. १७४६ माह सुदी श्रीमूलसंघे भ. श्रीजगत्कीर्ति संघई श्रीकृष्ण-दास · ·· ॥

(भा. प्र. पृ. ६)

लेखांक २७१ – हरिवंशपुराण देवेंद्रकीर्ति

तहा श्रीजिनदास जू ग्रथ रच्यो इह सार ।
सो अनुसार खुस्याल ले कह्यौ भविक सुखकार ॥
देश ढुंढाहढ जानौ सार तामे धर्मतनो विस्तार।
विसनसिंह सुत जैसिहराय राज करै सवको सुखदाय ॥
जामै पुर शांगावति जानि धर्म उपावनकौ वर थान ।
सघ मूलसंघ जानि गछ सारदा वखानि गण जु
वलात्कार जाणौ मन लायके ॥
कुदकुंद मुनीकी आमनाय माहि भये देवइद्रकीरत
सुपट्टसार पायके ।
पडित सु भए तहां नाम लछिमीसुदास चतुर विवेकी
श्रुतज्ञानकौ उपायके ॥
तिनै थकी मै भी कछू अल्पसो सुज्ञान लयो फेरि मै
वस्यौ जिहानावाद मध्य आयके ॥
महमदशा पातिशाह राज करि है सुचकत्यौ ।
नीतिवंत वलवान न्याय विन ले न अरत्यौ ॥
संवत सतरासै अरु असी सुदि वैसाख तीज वर लसी ।
सुक्रवार अतिही शुभ जोग सार नखत्तरकौ संजोग ॥

(भा. ६ पृ.१२७)

लेखांक २७२ – १ मूर्ति

.. सवत्सरे वह्निवसुमुनींदुमिते १७८३ वैशाखमासे कृष्णपक्षे अष्टमीतिथौ बुधवारे श्रवणनक्षत्रे वांसखोहनगरे अवावती सामी कुछाहागोत्रीय महाराजाधिराज श्रीजयसिंघजित्तत्सामत कुभाणीगोत्रीय राजिश्री चूहडसिंहजी राज्य प्रवर्तमाने श्रीमूलसघे नद्याम्नाये भ श्रीजगत्कीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये लुहाड्या गोत्रे साहश्री रामदासजी तद्भार्या रायवदे ॥

[भा. ७ पृ १३]

लेखांक २७३ – षोडशकारण यंत्र

सं. १७८३ वर्षे वैशाख वदि ८ बुधवार श्रीमूलसंघे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्तदाम्नाये यासपाह कर्वटे लुहाड्या गोत्रे संघही श्रीहृदयराम बिंबप्रतिष्ठा पं. भामनि ॥

(भा. प्र. पृ. १२)

लेखांक २७४ – [षट्कर्मोपदेशरत्नमाला] महेंद्रकीर्ति

संवत् १७९७ वर्षे श्रावण सुदि १४ शनिवासरे श्रीमूलसंघे .....भ. श्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीमहेंद्रकीर्तिस्तदाम्नाये सवाईजयपुरमध्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये विलालागोत्रे साह श्रीहरराम तस्य भार्या हीरादे... एतेषां मध्ये साहजीश्रीगोपीरामजी इदं पुस्तकं षट्कर्मोपदेशरत्नमालानामकं आचार्यश्रीक्षेमकीर्तिजी तच्छिष्य पंडित गोवर्धनदासाय लिखापि घटापितं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं ॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. ५४२)

लेखांक २७५ – १ मूर्ति सुखेंद्रकीर्ति

संवत् १८६१ वर्षे वैशाखशुक्लपंचम्यां श्रीसवाईजयसिंहनगरे भ. श्रीसुखेंद्रकीर्तिगुरुवर्युपदेशात् छावडा गोत्रे संग(ही) दी(वान) रायचंद्रेण प्रतिष्ठा कारिता ॥

(जयपुर, अ. १२ पृ. ३८)

लेखांक २७६ – बृहत् कथाकोष

संवत १८६८ मासोत्तममासे जेठ मास शुक्ल पक्ष चतुर्थ्यां तिथौ सूर्यवारे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीमहेंद्रकीर्तिजी तत्पट्टे भ. श्रीक्षेमेंद्रकीर्तिजी तत्पट्टे भ. श्रीसुरेंद्रकीर्तिजी तत्पट्टे भ. श्रीसुखेंद्रकीर्तिजी तदाम्नाये सवाईजयनगरे श्रीमन्नेमिनाथचैत्यालये गोधाख्यमंदिरे ..बखतरामकृष्णचंद्राभ्यां ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं बृहदाराधनाकथाकोशाख्यं ग्रंथं स्वशयेन लिखितं ॥

(प्रस्तावना पृ १, सिंघी जैन ग्रंथमाला, १९४३)

बलात्कार गण–दिल्ली–जयपुर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ शुभचन्द्र से होता है। इन के गुरु पद्मनन्दी थे जिन का वृत्तान्त उत्तर शाखा के प्रकरण में आ चुका है। शुभचन्द्र का पट्टाभिषेक संवत् १४५० की माघ शु ५ को हुआ और वे ५६ वर्ष पट्ट पर रहे। वे ब्राह्मण जाति के थे [ले. २४६]। शारदा स्तवन यह उन की एक कृति है [ले. २४२]। उन के शिष्य हेमकीर्ति की प्रशसा संवत् १४६५ के बिजौलिया लेख मे की गई है। संवत् १४८३ की फाल्गुन शु. ३ को उन की परम्परा की आर्यिका आगमश्री की समाधि बनाई गई [ले २४३, २४४]। संवत् १४९७ की ज्येष्ट शु. १३ को उन के गुरुबन्धु मदनदेव के शिष्य ब्रह्म नरसिंह ने प्रवचनसार की एक प्रति लिखी थी [ले. २४५]।

शुभचन्द्र के बाद जिनचन्द्र भट्टारक हुए। संवत् १५०७ की ज्येष्ठ कृ. ५ को आप का पट्टाभिषेक हुआ तथा आप ६४ वर्ष पट्टाधीश रहे। आप बघेरवाल जाति के थे [ले. २४८]। सिद्धान्तसार यह आप की एक कृति है [ले. २४७]। प्रतापचन्द्र के राज्य काल में[42] संवत् १५०९ की चैत्र शु १३ को धौपे ग्राम में आप ने एक शान्तिनाथ मूर्ति स्थापित की [ले २५०]। आप की आम्नाय में संवत् १५१२ की आषाढ कृ. ११ को नेमिनाथ चरित की एक प्रति लिखाई गई जो जिनदास ने घोघा बदरगाह में नयनन्दि मुनि को अर्पित की [ले. २५१]। संवत् १५१५ की माघ शु ५ को आप ने एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की [ले २५२]। आप की आम्नाय में संवत् १५१७ की मार्गशीर्ष शु. ५ को झूंझुणपुर में तिलोयपण्णत्ती की एक प्रति लिखाई गई [ले. २५४]। इसी प्रकार संवत् १५२१ की ज्येष्ठ शु ११ को ग्वालियर में पउमचरियं की प्रति लिखाई गई जो नेत्रनन्दि मुनि को अर्पण की गई [ले २५५]। संवत् १५३७ वैशाख शु. १० को जिनचन्द्र की आम्नाय में विद्यानन्दि ने एक महावीर

---

४२ प्रतापचन्द्र का राज्य काल ज्ञात नहीं हो सका। इस समय के करीब झांसी विभाग मे रुद्रप्रताप नामक राजा का उल्लेख मिलता है।

मूर्ति स्थापित की [ले. २५७]।[४३] इसी प्रकार संवत् १५४२ की ज्येष्ठ शु. ८ को आप की आम्नाय मे भ. ज्ञानभूषण ने एक मूर्ति स्थापित की [ले. २६०]।[४४] संवत् १५४३ की मार्गशीर्ष कृ. १३ को जिनचन्द्र ने सम्यग्दर्शन यन्त्र स्थापित किया तथा सवत् १५४५ की वैशाख शु. १० को ऋषभदेव की एक मूर्ति स्थापित की [ले. २६१-६२]। मुडासा शहर में सेठ जीवराज पापडीवाल ने सवत् १५४८ की वैशाख शु. ३ को भ. जिनचन्द्र के द्वारा कई मूर्तियो की प्रतिष्ठा कराई [ले. २६३]।[४५] सवत् १५५८ की श्रावण शु. १२ को आप की आम्नाय मे ग्वालियर मे मानसिंह तोमर के राज्यकाल में नागकुमारचरित की एक प्रति लिखी गई [ले. २६४]।

भ. जिनचन्द्र के शिष्यों मे पण्डित मीहा या मेधावी प्रमुख थे। ये अग्रवाल जाति के सेठ उद्धरण और उन की पत्नी भीशुही के पुत्र थे। संवत् १५१६ की भाद्रपद शु. ९ को दिल्ली मे बहलोलशाह और हिसार मे कुतुबखाँ का राज्य था तब झुंझुणपुर में साह पार्श्व के पुत्रो ने श्रुतपंचमी उद्यापन किया और उस अवसर पर वट्टकेर कृत मूलाचार की एक प्रति ब्रह्म नरसिंह को अर्पित की। इस शास्त्रदान की प्रशस्ति पण्डित मेधावी ने लिखी [ले. २५३]। संवत् १५२३ की आश्विन शु. २ को हिसार मे खंडेलवाल साध्वी धनश्री ने अध्यात्मतरगिणी टीका की एक प्रति मेधावी को अर्पित की [ले. २५६] इसी प्रकार संवत् १५४१ की कार्तिक शु. ५ को खंडेलवाल साध्वी कमलश्री ने नीतिवाक्यामृत टीका की एक प्रति आप को अर्पित की

---

४३ ये विद्यानन्दि सम्भवतः सूरत शाखा के दूसरे भट्टारक हैं। किन्तु उन से पृथक् भी हो सकते हैं। इस दशा में [ले. ५२३] में उल्लिखित विद्यानन्दि ये ही हैं।

४४ ये ज्ञानभूषण ईडर शाखा के भ. भुवनकीर्ति के शिष्य हैं।

४५ ये मूर्तिया अमृतसर से मद्रास तक प्रायः सभी गावों के दिगम्बर जैन मन्दिरों में पाई जाती है। सिर्फ नागपुर के जैन मन्दिरों में ही इन की सख्या सौ से अधिक है। यहा यह लेख सिर्फ नमूने के तौर पर लिया गया है। इस प्रतिष्ठा में भानुचन्द्र और गुणभद्र इन भट्टारकों के भी उल्लेख मिलते हैं।

[ले. २५८]। मेधावी ने सवत् १५४१ की कार्तिक कृ. १३ को नागौर में फिरोजखान के राज्य काल में धर्मसग्रह श्रावकाचार नामक संस्कृत ग्रन्थ की रचना पूर्ण की [ले. २५९]।

प. मेधावी की इन प्रशस्तियो से भ जिनचन्द्र के शिष्य परिवार पर अच्छा प्रकाश पडता है। इन मे रत्नकीर्ति और सिंहकीर्ति इन का वृत्तान्त क्रमश. नागौर तथा अटेर शाखा मे सगृहीत किया गया है। इन के अतिरिक्त जयकीर्ति, चारुकीर्ति, जयनन्दी, भीमसेन, दक्षिण के पण्डितदेव, [ले. २५३], विमलकीर्ति [ले. २५८], श्रुतमुनि द्वारा दीक्षित आर्य दीपद [ले. २५९] आदि शिष्यों का उल्लेख मेधावी ने किया है।

भ. जिनचन्द्र के बाद प्रभाचन्द्र पट्ट पर बैठे। संवत् १५७१ की फाल्गुन कृ. २ को उन का अभिषेक हुआ तथा वे ९ वर्ष भट्टारक पद पर रहे। इन के समय मुख्य पट्ट दिल्ली से चित्तौड में स्थानान्तरित हुआ तथा संवत् १५७२ से नागौर पट्ट के मडलाचार्य रत्नकीर्ति मुख्य परम्परा से पृथक् हुए (ले २६५)। प्रभाचन्द्र ने सवत् १५७३ की फाल्गुन कृ. ३ को एक दशलक्षण यन्त्र स्थापित किया (ले २६६)। सवत् १६०३ की आषाढ कृ २ को रामचन्द्र सोलकी के राज्य काल में तक्षकपुर निवासी साह ठाकुर ने नागकुमारचरित की एक प्रति आप के शिष्य धर्मचन्द्र को अर्पित की (ले. २६७)। इसी प्रकार तोडागढ में कल्याणराज के राज्यकाल में सवत् १६१५ की भाद्रपद शु ५ को आप की आम्नाय में यशोधरचरित की एक प्रति लिखी गई (ले. २६८)।[४६]

प्रभाचन्द्र के बाद क्रमश चन्द्रकीर्ति और देवेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। इन का कोई स्वतन्त्र उल्लेख नही मिला है[४७]। इन के बाद नरेन्द्रकीर्ति

---

४६ रामचद्र का राज्यकाल सन् १५५५–१५९२ था। कल्याणराज का राज्यकाल ज्ञात नहीं हो सका।

४७ चन्द्रकीर्ति के समय का एक उल्लेख (ले २८६) मिला है। यह सवत् १६५४ का है।

हुए। इन के आम्नाय मे संवत् १७३० की मार्गशीर्ष शु. १३ को वर्णी चोखचन्द्र ने समरपुर मे मूलाचार की एक प्रति लिखी (ले. २६९)।

नरेन्द्रकीर्ति के पट्टशिष्य सुरेन्द्रकीर्ति संवत् १७२२ की श्रावण शु. ८ को पट्टारूढ हुए।[४८] इन का कोई स्वतन्त्र उल्लेख नहीं मिला है।

इन के अनन्तर संवत् १७३३ की श्रावण कृ. ५ को भ. जगत्-कीर्ति पट्टाधीश हुए। आपने सवत् १७४६ की माघ में एक पार्श्वनाथ मूर्ति प्रतिष्ठित की [ले. २७०]।

इन के बाद सवत् १७७० की श्रावण कृ. ५ को भ. देवेन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए। इन की आम्नाय मे जयसिंह के राज्यकाल मे सागावत शहर में पण्डित लक्ष्मीदास हुए।[४९] इन के उपदेश से कवि खुशालचंद ने संवत १७८० मे जहानाबाद मे[५०] महमदशाह के राज्यकाल मे हिन्दी हरिवश-पुराण की रचना की [ले. २७१]। संवत् १७८३ की वैशाख कृ. ८ को बासखोह नगर मे जयसिंह के राज्यकाल मे देवेद्रकीर्ति के द्वारा एक प्रतिष्ठामहोत्सव हुआ [ले. २७२]।

देवेन्द्रकीर्ति के बाद सवत् १७९० की श्रावण कृ. ५ को महेन्द्र-कीर्ति पट्टाधीश हुए। इन की आम्नाय में सवत् १७९७ की श्रावण शु. १४ को साह गोपीराम ने सवाईजयपुर मे षट्कर्मोपदेशरत्नमाला की एक प्रति पडित गोवर्धनदास को अर्पित की [ले. २७४]।

महेन्द्रकीर्ति के बाद संवत् १८१५ की श्रावण कृ. ५ को क्षेमेन्द्र-कीर्ति पट्टाधीश हुए। उन के बाद सवत् १८२२ की फाल्गुन शु. ४ को सुरेन्द्रकीर्ति का पट्टाभिषेक हुआ। इन के समय भट्टारकपीठ जयपुर में

---

४८ यहाँ से इस शाखा के भट्टारकों की पट्टाभिषेक तिथियाँ 'बृहद् महावीर कीर्तन' पृ. ५९७ के आधार पर दी गई हैं।

४९ जयसिंह का राज्यकाल १६६९–१७४३ था।

५० दिल्ली के बादशाह—राज्यकाल १७१९–४८ ई.।

स्थानान्तरित हुआ तथा अतिशय क्षेत्र महावीरजी से इस पीठ का सम्बन्ध स्थापित हुआ ।

सुरेन्द्रकीर्ति के बाद सवत् १८५२ की फाल्गुन शु. ४ को पट्टाधीश हुए । आपने सवत् १८६१ की वैशाख शु ५ को सवाईजयपुर में कोई मूर्ति स्थापित की [ले. २७५] । इन्ही के समय सवत् १८६८ की ज्येष्ठ शु. ४ को बृहत् कथाकोष की एक प्रति वहीं लिखी गई (ले. २७६) ।

सुरेन्द्रकीर्ति के बाद क्रमश सवत् १८८० में नरेन्द्रकीर्ति, सवत् १८८३ में देवेन्द्रकीर्ति, सवत् १९३० में महेन्द्रकीर्ति और सवत् १९७५ मे चन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए ।

बलत्कार गण–दिल्लीजयपुर शाखा–कालपट

१ पद्मनन्दी
|
२ शुभचन्द्र(सवत्१४५०–१५०७)
|
३ जिनचन्द्र(सवत्१५०७–१५७१)

रत्नकीर्ति (नागौर शाखा) सिंहकीर्ति (अटेर शाखा)

४ प्रभाचन्द्र [सवत् १५७१–८०]
|
५ चन्द्रकीर्ति [सवत् १६५४]
|
६ देवेन्द्रकीर्ति
|

७ नरेन्द्रकीर्ति
|
८ सुरेन्द्रकीर्ति [संवत् १७२२]
|
९ जगत्कीर्ति [संवत् १७३३]
|
१० देवेन्द्रकीर्ति [सवत् १७७०]
|
११ महेन्द्रकीर्ति [सवत् १७९०]
|
१२ क्षेमेन्द्रकीर्ति [सवत् १८१५]
|
१३ सुरेन्द्रकीर्ति [सवत् १८२२]
|
१४ सुखेन्द्रकीर्ति [सवत् १८५२]
|
१५ नरेन्द्रकीर्ति [संवत् १८८०]
|
१६ देवेन्द्रकीर्ति [संवत् १८८३]
|
१७ महेन्द्रकीर्ति [संवत् १९३९]
|
१८ चन्द्रकीर्ति [सवत् १९७५]

---

७. बलात्कार गण–नागौर शाखा

लेखांक २७७– पट्टावली रत्नकीर्ति

संवत् १५८१ श्रावण सुदि ५ भ रत्नकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दीक्षा वर्ष ३१ पट्ट वर्ष २१ मास ८ दिवस १३ अतर दिवस ५ सर्व वर्ष ६१ मास ८ दिवस १८ पट्ट दिल्ली ॥

(च. १०)

लेखांक २७८ – पट्टावली भुवनकीर्ति

संवत् १५८६ माह वदि ३ भुवनकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ११ दीक्षा वर्ष २६ पट्ट वर्ष ४ मास ९ दिवस २६ अतर मास २ दिवस ४ सर्व वर्ष ४२ दिवस २१ जाति छावडा पट्ट अजमेर ॥

(च १०)

लेखांक २७९ – [अणुव्रत रत्न प्रदीप]

स १५९५ वर्षे वइसाख सुदि द्वइज सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ श्रीपद्मनदिदेव तत्पट्टे भ श्रीशुभचंद्रदेव तत्पट्टे भ श्रीजिणचद्रदेव मुनि मंडलाचार्य श्रीरत्नकीर्ति देव तत् सिक्ष मुनि मडलाचार्य श्रीहेमचद्रदेव द्वितीय सिक्ष मुनि मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्ति देव तत्सिक्ष मुनि पुण्यकीर्ति मेडता सुभस्थानात् राजश्री मालदे राठउड राजे खडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे सघभारधुरधरान् साह दोदा इद सास्त्र अणोव्र(त)रत्नप्रदीपक लिखावितं कर्मक्षयनिमित ॥

(भा ६ पृ १५५)

लेखांक २८० – पट्टावली धर्मकीर्ति

सवत् १५९० चैत्र वदि ७ भ धर्मकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १३ दीक्षा वर्ष ३१ पट्ट वर्ष १० मास १ दिवस २० अतर मास १ दिवस १० सर्व वर्ष ५५ मास १ दिवस ४ जाति सेठी पट्ट अजमेर ॥

(च. १०)

लेखांक २८१ – चंद्रप्रभ मूर्ति

सं. १६०१ फाल्गुन सुदि ९ मूलसंघे धर्मकीर्ति आचार्य सा. महन भार्या भानुमती पुत्र सर्वन··· ॥

(भा. प्र. पृ. ६)

लेखांक २८२ – पट्टावली   विशालकीर्ति

संवत् १६०१ वैशाख सुदि १ विशालकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष ५८ पट्ट वर्ष ९ मास १० दिवस २० अंतर मास १ दिवस १० सर्व वर्ष ७७ दिवस २३ जाति पाटोधी पट्ट जोवनेर ॥

[च. १०]

लेखांक २८३ – पट्टावली   लक्ष्मीचंद्र

संवत् १६११ असौज वदि ४ लक्ष्मीचंद्रजी गृहस्थ वर्ष ७ दिक्षा वर्ष ३७ पट्ट वर्ष १९ मास ११ दिवस २० अंतर दिवस १० सर्व वर्ष ६४ मास २ दिवस १ जाति छावडा पट्ट जोवनेर ॥

(च. १०)

लेखांक २८४ – पट्टावली   सहस्रकीर्ति

संवत् १६३१ जेष्ट सुदि ५ सहस्रकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ७ दिक्षा वर्ष २५ पट्ट वर्ष १८ मास २ दिवस ८ अंतर मास ९ दिवस २२ सर्व वर्ष ५१ मास ११ दिवस ७ जाति पाटणी पट्ट जोवनेर ॥

(च. १०)

लेखांक २८५ – पट्टावली   नेमिचंद्र

संवत् १६५० श्रावण सुदि १३ नेमिचंद्रजी गृहस्थ वर्ष ११ दिक्षा वर्ष ५२ पट्ट वर्ष ११ मास ६ दिवस २२ अंतर मास ५ दिवस ८ सर्व वर्ष ७५ मास १ दिवस २५ जाति ठोल्या पट्ट जोवनेर ॥

(च. १०)

लेखांक २८६ – (वसुनंदि श्रावकाचार)

स.१६५४ वर्षे आषाढमासे कृष्णपक्षे एकादश्यां तिथौ ११ भौमवासरे अजमेरगढमध्ये श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंद-कुंदाचार्यान्वये भ श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीजिनचद्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे भ. श्रीचंद्रकीर्तिदेवा तदाम्नाये मडलाचार्यश्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे मडलाचार्यश्रीधर्मकीर्ति तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीविशालकीर्ति तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीलिखिमीचंद्र तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीसहस्रकीर्ति तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीनेमिचंद्र तदाम्नाये खंडेल-वालान्वये पहाड्या गोत्रे साह नानिग · एतेषां मध्ये शाह श्रीरंग तेन इदं वसुनंदि उपासकाचार ग्रंथ ज्ञानावरणी कर्म क्षयनिमित्तं लिखापितं मंडला-चार्य श्रीनेमिचंद्र तस्य शिष्यणी बाई सवीरा जोग्य घटापितं ॥

(प्र. पृ १५, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९४४)

लेखांक २८७ – (पांडवपुराण)

श्रीमूलसंघे भ श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ. श्रीजिनचद्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीप्रभाचद्रदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीधर्म-कीर्तिदेवा तत्पट्टे भ विशालकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ लक्ष्मीचद्रदेवाः तत्पट्टे भ. सहस्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीनेमिचंद्रस्तस्मै सत्पात्राय पुराणमिदं लेखित्वा प्रदत्त ॥

(भा. १ कि ४ पृ. ३९)

लेखांक २८८ – पट्टावली यशःकीर्ति

संवत् १६७२ फागुन सुदि ५ यश कीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष ४० पट्ट वर्ष १७ मास ११ दिवस ८ अतर दिवस २ सर्व वर्ष ६७ जाति पाटणी पट्ट रेवा ॥

(च १०)

लेखांक २८९ – पट्टावली भानुकीर्ति

संवत् १६९० भानुकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ७ दिक्षा वर्ष ३७ पट्ट वर्ष

१४ मास ७ दिवस २१ सर्व वर्ष ५९ मास ४ दिवस ३ अंतर दिवस ७ जाति गंगवाल पट्ट नागौर ॥

(ब. १०)

लेखांक २९० – रविवार व्रत कथा

आठ सात सोला के अंग रविदिन कथा रचियो अकलंक ।
···भावसहित सत सुख लहे भानुकीर्ति मुनिवर जो कहे ॥ २५

(म. ६६)

लेखांक २९१ – पट्टावली श्रीभूषण

संवत् १७०५ आश्विन सुदि ३ श्रीभूषणजी गृहस्थ वर्ष १३ दिक्षा वर्ष १५ पट्ट वर्ष ७ पाछै धर्मचंद्रजीनै पट्ट दीयो पाछै १२ वर्ष जीया सवत् १७२४ ताई जाति पाटणी पट्ट नागौर ॥

[ब. १०]

लेखांक २९२ – पट्टावली धर्मचंद्र

संवत १७१२ चैत्र सुदि ११ धर्मचद्रजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष २० पट्ट वर्ष १५ सर्व वर्ष ४४ दिवस २४ जाति सेठी पट्ट महरोठ ॥

[ब १०]

लेखांक २९३ – गौतम चरित्र

गच्छेशो नेमिचद्रोखिलकलुहषरोभूद् यश कीर्तिनामा
तत्पट्टे पुण्यमूर्तिर्मुनिनृपतिगणै. सेव्यमानाह्रियुग्मः ।
श्रीसिद्धांतप्रवेत्ता मदनभटजयी ग्रीष्मसूर्यप्रतापः
श्रीमच्छ्रीभानुकीर्तिः प्रशमभरधरो मानस्तोभादिजेता ॥ २६५
···सिद्धध्याननुतिप्रणामनिरत. क्रोधादिशैलाशनि
श्रीमच्छ्रूरिगणाधिपो विजयतां श्रीभूषणाख्यो मुनि. ॥ २६६
पट्टे तदीये मुनिधर्मचंद्रोभूच्छ्रीबलात्कारगणे प्रधानः ।
श्रीमूलसघे प्रविराजमान श्रीभारतीगच्छसुदीप्तिभानु. ॥ २६७

राजच्छ्रीरघुनाथनामनृपतौ ग्रामे महाराष्ट्रके
नाभेयस्य निकेतन शुभतरं भाति प्रसौख्याकरम् ।
श्रीपूजादिमहोत्सवव्रजयुतं भूरिप्रशोभास्पदं
सद्धर्मान्वितयोगिमानुषगणै. सेव्यं प्रमोदाकरं ॥ २६८
तस्मिन् विक्रमपार्थिवाद् रसयुगाद्रींदुप्रमे वर्षके
ज्येष्ठे मासि सितद्वितीयदिवसे काते हि शुक्रान्विते ।
श्रीमच्छूरिकद्वकाधिपतिना श्रीधर्मचंद्रेण च ।
तद्भक्त्या चरितं शुभं कृतमिद श्रेयस्करं प्राणिनां ॥ २६९

[सर्ग ५, प्र. मू. कि. कापडिया, सूरत १९२६]

लेखांक २९४ – पट्टावली देवेंद्रकीर्ति

संवत् १७२७ देवेंद्रकीर्तिजी गृहस्थवर्ष ९ दिक्षा वर्ष १९ पट्ट वर्ष १० मास ७ दिवस ९ अंतर मास ४ दिवस २१ सर्व वर्ष ३९ मास ३ दिवस ४ जाति सेठी पट्ट महरोठ ॥

[न. १०]

लेखांक २९५ – पट्टावली सुरेंद्रकीर्ति

संवत् १७३८ जेष्ट सुदि ११ अमरेंद्रकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १५ दिक्षा वर्ष २९ पट्ट वर्ष ६ मास ११ अतर मास १ दिवस २ सर्व वर्ष ५१ मास २ दिवस ७ जाति पाटणी पट्ट महरोठ ॥

(न १०)

लेखांक २९६ – रविवार व्रतकथा

गढ गोपाचल नगर भलो शुभथान वखानो ।
देवेंद्रकीर्ति मुनिराज भये तपतेज निधानो ॥
तिनके पट्ट विराजहि सुरेंद्रकीर्ति जु मुनींद्र ।
कलश धरे पनियार मे सकल सिद्धि आनंद ॥ ९३
सवत विक्रम राय भले सत्रह मानो ।
ता ऊपर चालीम जेष्ठ सुदि दशमी जानो ॥

वार जु मंगलवार हस्त नक्षत्र जु परियो।
रविव्रतकथा सुरेंद्रकीर्ति रचना यह करियो ॥ ९४

[प्रकाशक- वीरसिंह जैन, इटावा १९०६]

लेखांक २९७ – पट्टावली   रत्नकीर्ति

संवत् १७४५ वैशाख सुदि ९ रत्नकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ३० दिक्षा वर्ष ४७ पट्ट वर्ष २१ सर्व वर्ष ९८ मास १ दिवस ४ अंतर मास १ दिवस ३ जाति गोधा पट्ट काला डहरा ॥

[ब. १०]

लेखांक २९८ – पट्टावली   विद्यानंद

संवत् १७६६ फागुन वदि ४ विद्यानंदजी गृहस्थ वर्ष ११ दिक्षा वर्ष २५ पट्ट वर्ष २ मास ९ अंतर दिवस ४ सर्व वर्ष ३९ मास १ दिवस ३ जाति झाझरी पट्ट रूपनगर ॥

(ब. १०)

लेखांक २९९ – पट्टावली   महेंद्रकीर्ति

संवत् १७६९ मगसिर वदि ८ महेद्रकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष २८ पट्ट वर्ष ४ मास २ दिवस २८ सर्व वर्ष ४१ अंतर मास २ दिवस २६ जाति झाझरी पट्ट काला डहरा ॥

(ब. १०)

लेखांक ३०० – पट्टावली   अनंतकीर्ति

संवत् १७७३ फागुन वदि ३ अनंतकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १७ दिक्षा वर्ष १७ पट्ट वर्ष २४ मास ४ दिवस १२ सर्व वर्ष ४९ दिवस ३ जाति पाटणी पट्ट अजमेर ॥

(ब. १०)

लेखांक ३०१ – पट्टावली भवनभूषण

सवत् १७९७ असाढ सुदि १० भवनभूषणजी गृहस्थ वर्ष ११ दिक्षा वर्ष २५ पट्ट वर्ष ४ मास ६ दिवस १२ अंतर मास ४ दिवस १६ सर्व वर्ष ४१ जाति छावडा पट्ट काला डहरा ॥

[ब. १०]

लेखांक ३०२ – पट्टावली विजयकीर्ति

सवत् १८०२ असाढ सुदि १ विजयकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष २८ पटस्थ विराजमान छै अजमेर ॥

[ब. १०]

बलात्कार गण–नागौर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. रत्नकीर्ति से होता है। आप भ. जिनचन्द्र के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त दिल्ली–जयपुर शाखा में आ चुका है। आप का पट्टाभिषेक सवत् १५८१ की श्रावण शु. ५ को हुआ तथा आप २१ वर्ष पट्ट पर रहे (ले. २७७)।

इन के बाद भ. भुवनकीर्ति सवत् १५८६ की माघ कृ. ३ को पट्टारूढ हुए तथा ४ वर्ष पट्ट पर रहे। आप जाति से छावडा थे (ले. २७८)। आप के शिष्य मुनि पुण्यकीर्ति के लिए सवत् १५९५ की वैशाख शु. २ को मेडता शहर मे राठौड राव मालदेव के राज्यकाल मे[५१] अणुव्रतरत्नप्रदीप की एक प्रति लिखाई गई (ले. २७९)।

इन के बाद भ. धर्मकीर्ति सवत् १५९० की चैत्र कृ. ७ को पट्टारूढ हुए तथा १० वर्ष पट्ट पर रहे। आप जाति से सेठी थे (ले. २८०)। सवत् १६०१ की फाल्गुन शु. ९ को आप ने एक चद्रप्रभ मूर्ति स्थापित की (ले. २८१)।

आप के बाद संवत् १६०१ की वैशाख शु. १ को भ. विशाल-कीर्ति पट्टारूढ हुए तथा ९ वर्ष पट्ट पर रहे। आप जाति से पाटोदी थे तथा आप का निवास जोवनेर में था (ले. २८२)। आप के पट्टशिष्य भ. लक्ष्मीचन्द्र सवत् १६११ की आश्विन कृ. ४ को पट्टाधीश हुए तथा २० वर्ष पट्ट पर रहे। ये जाति से छावडा थे (ले. २८३)। इन के बाद संवत् १६३१ की ज्येष्ठ शु ५ को भ. सहस्रकीर्ति पट्टाधीश हुए तथा १८ वर्ष भट्टारक पद पर रहे। ये पाटणी गोत्र के थे (ले. २८४)। इन तीनो भट्टारको के कोई स्वतन्त्र उल्लेख नहीं मिले हैं।

सहस्रकीर्ति के पट्ट पर सवत् १६५० की श्रावण शु. १३ को नेमिचन्द्र अभिषिक्त हुए जो ११ वर्ष भट्टारक पद पर रहे। इन का गोत्र ठोल्या था (ले. २८५)। सवत् १६५४ की आषाढ कृ. ११ को

---

५१ जोधपुर के राजा–सन १५११–१५६२।

अजमेर में इन की शिष्या बाई सवीरा के लिए वसुनदि श्रावकाचार की एक प्रति लिखाई गई। इस समय दिल्ली–जयपुर शाखा में भ. चन्द्रकीर्ति पट्टाधीश थे (ले २८६)। नेमिचन्द्र के लिए पाडवपुराण की भी एक प्रति लिखी गई थी (ले २८७)।

नेमिचन्द्र के बाद सवत् १६७२ की फाल्गुन शु ५ को पाटणी गोत्र के भ. यश कीर्ति रेवा शहर में पट्टाधीश हुए तथा १८ वर्ष पट्ट पर रहे (ले. २८८)।

इन के शिष्य भानुकीर्ति सवत् १६९० में पट्टारूढ हुए तथा १४ वर्ष भट्टारक पद पर रहे। ये गंगवाल जाति के तथा नागौर निवासी थे (ले. २८९)। सवत् १६७८ मे इन ने रविव्रत कथा की रचना की (ले. २९०)।

भानुकीर्ति के शिष्य भ श्रीभूषण सवत् १७०५ की आश्विन शु ३ को पट्टाधीश हुए और १९ वर्ष पद पर रहे। ये पाटणी गोत्र के थे। पदप्राप्ति के बाद ७ वें वर्ष में सवत् १७१२ की चैत्र शु ११ को इन ने अपने शिष्य धर्मचन्द्र को भट्टारक पद पर स्थापित कर दिया था। धर्मचन्द्र सेठी गोत्र के थे और १५ वर्ष पट्ट पर रहे। इन का निवास महरोठ मे था (ले २९१–२)। इन ने सवत् १७२६ की ज्येष्ठ शु. २ को गौतमचरित्र की रचना पूर्ण की। उस समय महरोठ में रघुनाथ का राज्य था (ले. २९३)[५२]।

धर्मचन्द्र के पट्ट पर सवत् १७२७ में देवेन्द्रकीर्ति अभिषिक्त हुए ये १० वर्ष पट्टाधीश रहे। इनका गोत्र सेठी तथा निवासस्थान महरोठ था (ले २९४)। इन के बाद सवत् १७३८ की ज्येष्ठ शु. ११ को सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए तथा ७ वर्ष पद पर रहे। ये पाटणी गोत्र के थे। ग्वालियर में सवत् १७४० की ज्येष्ठ शु १० को आप ने रविवार व्रत कथा लिखी (ले २९५–९६)।

---

५२ महाराष्ट्रक महरोठ का सस्कृत रूपान्तर है।

इन के बाद संवत् १७४५ मे भ. रत्नकीर्ति पट्टाधीश हुए तथा २१ वर्ष पट्ट पर रहे। ये गोधा गोत्र के तथा काला डहरा के निवासी थे (ले. २९७)। इन के उत्तराधिकारी भ. विद्यानद झाझरी गोत्र के तथा रूपनगर निवासी थे। ये संवत् १७६६ से २ वर्ष पट्ट पर रहे (ले. २९८)। इन के शिष्य महेन्द्रकीर्ति सवत् १७६९ से ४ वर्ष तक पट्टाधीश रहे। ये झाझरी गोत्र के तथा काला डहरा के निवासी थे (ले. २९९)। इन के बाद अनन्तकीर्ति संवत् १७७३ से २४ वर्ष तक भट्टारक पद पर रहे। ये पाटणी गोत्र के तथा अजमेर निवासी थे। इन के अनंतर भ. भवनभूषण सवत् १७९७ से ४ वर्ष तक पट्टाधीश रहे। ये छावडा गोत्र के तथा काला डहरा निवासी थे (ले. ३००–१)। इन के शिष्य विजयकीर्ति अजमेर मे संवत् १८०२ की आषाढ शु. १ को पट्टाभिषिक्त हुए थे (ले. ३०२)।[५२]

---

५२ नागौर के पट्टाधीशों की प्रकाशित नामावली (जैन सि. भा. १ पृ. ८०) में रत्नकीर्ति (द्वितीय) के बाद क्रमश: ज्ञानभूषण, चन्द्रकीर्ति, पद्मनन्दी, सकलभूषण, सहस्रकीर्ति, अनन्तकीर्ति, हर्षकीर्ति, विद्याभूषण, हेमकीर्ति, क्षेमेन्द्रकीर्ति, मुनीन्द्रकीर्ति तथा कनककीर्ति के नाम दिये हैं। इन के कोई स्वतन्त्र उल्लेख प्राप्त नही हो सके। वर्तमान समय में इस गद्दी पर भ. देवेन्द्रकीर्तिजी विराजमान हैं। आप ने नागपुर, अमरावती आदि विदर्भ के नगरों में भी विहार किया है।

बलात्कार गण–नागौर शाखा–काल पट

१ जिनचन्द्र [दिल्ली जयपुर शाखा]

|

२ रत्नकीर्ति [संवत् १५८१]

|

३ भुवनकीर्ति [संवत् १५८६]

|

४ धर्मकीर्ति [संवत् १५९०]

|

५ विशालकीर्ति [संवत् १६०१]

|

६ लक्ष्मीचन्द्र [संवत् १६११]

|

७ सहस्रकीर्ति [संवत् १६३१]

|

८ नेमिचन्द्र [संवत् १६५०]

|

९ यशःकीर्ति [संवत् १६७२]

|

१० भानुकीर्ति [संवत् १६९०]

|

११ श्रीभूषण [संवत् १७०५]

|

१२ धर्मचन्द्र [संवत् १७१२]

|

१३ देवेन्द्रकीर्ति [संवत् १७२७]

|

१४ सुरेन्द्रकीर्ति [संवत् १७३८]

|

१५ रत्नकीर्ति [संवत् १७४५]

१ विद्यानन्द [सवत् १७६६]	ज्ञानभूषण
२ महेन्द्रकीर्ति [सवत् १७६९]	चन्द्रकीर्ति
३ अनन्तकीर्ति [संवत् १७७३]	पद्मनन्दी
४ भवनभूपण [संवत् १७९७]	सकलभूषण
५ विजयकीर्ति [सवत् १८०२]	सहस्रकीर्ति
	अनन्तकीर्ति
	हर्पकीर्ति
	विद्याभूषण
	हेमकीर्ति
	क्षेमेन्द्रकीर्ति
	मुनीन्द्रकीर्ति
	कनककीर्ति
	देवेन्द्रकीर्ति (वर्तमान)

८. बलात्कार गण – अटेर शाखा

लेखांक ३०३ – महावीर मूर्ति   सिंहकीर्ति

सं. १५२० वर्षे आषाढ सुदी ७ गुरौ श्रीमूलसंघे भ श्रीजिनचंद्र तत्पट्टे भ श्रीसिंहकीर्ति लंवकचुकान्वये अउलीवास्तव्ये साहु श्रीदिपौ भार्या इंदा · इष्टिकापथ प्रतिष्ठितं ॥

(भा. प्र. पृ. १३)

लेखांक ३०४ – श्रेयांस मूर्ति

स. १५२५ चैत्र शुक्ले ३ बुधे श्रीमूलसंघे भ श्रीसिंहकीर्ति प ह. पु लंवकंचुकान्वये साये मिण्डे भार्या सोना पुत्र सा जल्लू भार्या मना प्रणमति ॥

(भा. प्र. पृ. ५)

लेखांक ३०५ – ? मूर्ति

स. १५२७ माघ वदि ५ श्रीमूलसंघे भ सिंहकीर्ति नित्य प्रणमंति ॥

[नादगाव, अ ४ पृ. ५०२]

लेखांक ३०६ – पार्श्वनाथ मूर्ति

स १५२८ वर्षे वैशाख सुदी ७ श्रीमूलसंघे भ. श्रीजिनचंद्र तत्पट्टे श्रीसिंहकीर्तिदेव महियवंश साधु ह्यू भार्या वैसा · ॥

(भा. प्र. पृ. २)

लेखांक ३०७ – महावीर मूर्ति

स १५२९ वर्षे वैसाख सुदि २ बुधे मूलसंघे भ सिंहकीर्तिदेवा सा सहरदा पुत्र मोदिक लल्लू दिगवर मूर्ति जू सदा सहाई विलसी ॥

[भा. प्र. पृ. ४]

लेखांक ३०८ – कलिकुंड यंत्र

स १५३१ वर्षे फागुण सुदि ५ श्रीमूलसंघे भ श्रीजिणचंद श्रीसिंहकीर्तिदेवा प्रतिष्ठित । श्रीआगमसिरि क्षुल्लकी कमी सहित श्रीकलिकुंड यन्त्र कारापितं । श्रीकल्याण भूयात् ।

(भा. ७ पृ १३)

लेखांक ३०९ – [यशोधरचरित]　　शीलभूषण

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२१ वर्षे श्रावण वदि २ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीजिनचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ श्रीसिंहकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीधर्मकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीशीलभूषणदेवाः तदाम्नाये आर्या श्रीचारित्रश्री तत्सिष्यणी व्रत गुणसुंदरी एकादशप्रतिपालिका तपगुणराजीमती शीलतोयप्रक्षालितपापपटला । वाई हीरा तथा चंदा पठनार्थं इदं यशोधरचरित्रं लिखापितं कर्मक्षयनिमित्तं लिखितं पंडित वीणासुत गरीबा अलवरवासिनः ॥

[प्रस्तावना पृ. १५, कारंजा जैन सीरीज १९३१]

लेखांक ३१० – सम्यक्चारित्र यंत्र　　जगद्भूषण

संवत् १६८६ ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीधर्मकीर्तिदेवाः भ. श्रीशीलभूषणदेवा. भ. श्रीज्ञानभूषणदेवाः भ. श्रीजगद्भूषणदेवाः तदाम्नाये गोलाराान्वये खरौआ जातीये कुलहा गोत्रे पंडिताचार्य पं. भोजराज भार्या प्यारो · ॥

[भा. प्र. पृ. १७]

लेखांक ३११ – ? मूर्ति

सं. १६८८ वैशाख सुदी ३ श्रीमूलसंघे ·भ जगतभूषणः तदाम्नाये सभासिंघ· प्रणमति ॥

(आगरा, भा. १९ पृ. ६३)

लेखांक ३१२ – श्रेयांस मूर्ति

सं. १६८८ वर्षे फाल्गुण सुदी ८ शनौ श्रीमूलसंघे भ. श्रीज्ञानभूषणदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीजगद्भूषणदेवाः तदाम्नाये पुले ज्ञातिये खेमिज गोत्रे साधु तारण तद्भार्या मैना ·· ॥

[भा. प्र. पृ १५]

लेखांक ३१३ – हरिवंश पुराण

सवत् सोरहिसै तहां भये तापरि अधिक पचानवै गये ।
माघ मास किसन पक्ष जानि सोमवार सुभवार वखानि ॥
भट्टारक जगभूषण देव गनधर साद्रस वाकि जु एह ।
··नगर आगिरौ उत्तम थानु साहिजहा तपै दूजो भानु ॥
वाहन करी चौपई वधु हीनबुधि मेरी मति अंधु ॥

(भा ६ पृ. १२६)

लेखांक ३१४ – सम्यग्दर्शन यंत्र विश्वभूषण

सं. १७२२ वर्षे माघ वदि ५ सौमे श्रीमूलसंघे भ श्रीजगद्भूषण तत्पट्टे भ. श्रीविश्वभूषण तदाम्नाये यदुवशे लवकंचुक पचोलने गोत्रे सा भावते हीरामणि ॥

[भा. प्र. पृ १८]

लेखांक ३१५ – मंदिर लेख

श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये श्रीजगत्भूषण श्रीभ विश्वभूषणदेवा स्वरीपुरमै जिनमदिरप्रतिष्ठा सं. १७२४ वैशाख वदि १३ कौ कारापिता ॥

(भा. १९ पृ ६४)

लेखांक ३१६ – ज्योतिप्रकाश

श्रीजैनदृष्टितिथिपत्रमिह प्रणष्ट
स्पष्टीचकार भगवान् करुणाधुरीण ।
बालाववोधविधिना विनय प्रपद्य
श्रीज्ञानभूपणगणेशमभिष्टुमस्त ॥

ज्ञानभूषण जगदिभूषण विश्वभूषण गणाग्रणी त्रयी चिन्मयी स्वविनयी हिताश्रयी स्ताद् यतो भवति मे विधिर्जयी

(भा २१ पृ १३)

लेखांक ३१७ – सुगंधदशमी कथा

व्रत सुगंध दशमी विख्यात ता फल भयो सुरभियुत गात्र ॥ ३७
शहर गहेली उत्तम वास जैनधर्मको जहां प्रकास ॥ ३८
उपदेशो विश्वभूषण सही हेमराज पंडितने कही ॥ ३९

(प्र. हीरालाल प. जैन, दिल्ली १९२१)

लेखांक ३१८ – ऋषिपंचमी कथा सुरेंद्रभूषण

सत्रहसौ सत्तावन जान मिती पौष सुदि दशमी मान ॥ ७८
हत्ती कंतपुरमे रचि कथा श्रीसुरेंद्रभूषण मुनि यथा ।
श्रावक पढो सुनो धर ध्यान जासे होइ परम कल्याण ॥ ७९

(प्र. हीरालाल प. जैन, दिल्ली १९२१)

लेखांक ३१९ – सम्यग्ज्ञान यंत्र

सं. १७६० वर्षे फाल्गुण सुदी १ गुरौ श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीसुरेंद्रभूषणदेव तदाम्नाए लंबकंचुकान्वये रपरियागोत्रे सा कुमारसेनि भार्या जीवनदे ॥

[भा. प्र. पृ. १८]

लेखांक ३२० – षोडशकारण यंत्र

सं १७६६ वर्षे माघ सुदी ५ सोमवासरे श्रीमूलसंघे···भ. श्रीविश्वभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रभूषणदेवाः तत्पट्टे श्रीसुरेंद्रभूषणदेवाः तदाम्नाए लंबकंचुकान्वये बुढेलेज्ञातीये रावत गोत्रे साहु वदलूदास भार्या सुधी ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ३२१ – सम्यग्दर्शन यंत्र

सं. १७७२ वर्षे फाल्गुण वदि ९ चंद्रे श्री मूलसंघे ··भ.श्रीदेवेंद्रभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीसुरेंद्रभूषणदेवाः तस्मात् ब्रह्म जगतसिंह गुरूपदेशात् तदाम्नाए लंबकंचुकान्वये बुढेले ज्ञातीये ककौआ गोत्रे श्री सा सिवरामदास भार्या देवजावी ·· ॥

(भा. प्र. पृ. १९)

लेखांक ३२२ – दशलक्षण यंत्र

स. १७९१ वर्षे फागुण सुदी ९ बुधवासरे शुभ दिने मूलसंघे ··भ. श्रीविश्वभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीसुरेंद्रभूषण-देवाः तदाम्नाए बुढेलान्वये गृगगोत्रे साहु तुलाराम···अटेरपुरे साहु तुला-रामेण यंत्रप्रतिष्ठा कारित तत्र प्रतिष्ठितम् ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ३२३ – (मूलाचार) मुनींद्रभूषण

संवत् १८४२ वर्षे मासोत्तममासे वैसाखमासे शुक्लपक्षे तिथौ १० भौमवासरे ग्राम पलाइथा मध्ये श्रीमत् पार्श्वनाथचैत्यालये वा श्रीवर्धमान-चैत्यालये श्रीमूलसंघे ··हस्तनागपुरपटे तदुत्तरभदावरदेशात् भ. श्री १०८ श्रीविस्वभूषण तत्पट्टे भ श्रीदेविंद्रभूषण तत्पट्टे श्रीसुरिंद्रभूषण तत्पटे भ श्रीलक्ष्मीभूषण तत्पट्टे भ. श्रीमुनिंद्रभूषणजीकुं पुस्तक दान ग्रंथ मूलाचार समर्पयेत् साहजी श्रीलालचदजी पुस्तकदान दातव्यं ज्ञानप्राप्तार्थे ज्ञात वघेरवाल गोत्र सेट्या इदं शुभं ॥

[का. ५२७]

लेखांक ३२४ – मुनींद्रभूषण पूजा

पापतापनाशनाय सर्वसौख्यसिद्धये ।
श्रीलक्ष्मीभूषणपट्टे मुनींद्रभूषणं यजे ॥

(ना. ८७)

लेखांक ३२५ – जिनेंद्रमाहात्म्य महेंद्रभूषण

संवत् १८५२ कार्तिक शुक्ल १ गुरुवार श्रीमूलसंघे ··श्री भ. विश्व-भूपणदेवा तत्शिष्य ब्रह्म श्रीविनासागरजी ·एतेषा मध्ये भ जिनेंद्रभूषणस्य शिष्य श्री भ महेंद्रभूषणेन इय पुस्तिका लिखावितं ॥

[वीर ३ पृ ३६४]

लेखांक ३२६ - (पद्मनंदि पंचविंशति)

संवत् १८५८ श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये गढगोपाचले श्रीमूलसंघे···भ. ज्ञानभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. जगद्भूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. विश्वभूषणजी-देवाः तत्पट्टे भ. देवेंद्रभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. सुरेंद्रभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. लक्ष्मीभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. जिनेंद्रभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. महेंद्रभूषणेन लिखापितं श्रीआचार्यदेवेंद्रकीर्तेरध्ययनार्थं ॥

[B O. R I., 567 of 1875-76]

लेखांक ३२७ - पार्श्वमूर्ति

संवत् १८७६ वैशाख शुक्ल ६ शुक्रे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. विश्व-भूषण···तदाम्नाये भ. जिनेंद्रभूषणजी भ. महेंद्रभूषण श्रोतकारान्वये कांसिल गोत्रे शाहजी दवनावरसिंघस्य पुत्रश्रीजी तस्य पुत्राश्चत्वारः ··· ॥

(मसाढ, भा. १ कि. ४ पृ. ३५)

लेखांक ३२८ - नेमिनाथ मूर्ति　　राजेंद्रभूषण

शुभ सं. १९२० फाल्गुण वदि ३ गुरुवासरे श्रीमूलसंघे···श्रीमद्भ-ट्टारकजिनेंद्रभूषणजिदेव तत्पट्टे श्रीमहेंद्रभूषणजिदेव तत्पट्टे श्रीराजेंद्रभूषणजिदेव तदुपदेशात्···प्रतिष्ठाकर्ता आरानगर्यां केलिरामस्तत्पुत्र डालचंद अग्रवार गरगगोत्रोत्पन्नस्य मस्तके कृता ॥

(भा. प्र. पृ. ९)

बलात्कार गण – अटेर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. सिंहकीर्ति से होता है। ये भ. जिनचन्द्र के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त दिल्ली-जयपुर शाखा मे आ चुका है। आप ने सवत् १५२० की आषाढ शु ७ को एक महावीर मूर्ति प्रतिष्ठापित की (ले ३०३)। यह प्रतिष्ठा इष्टिकापथ[५४] में हुई। आप ने सवत् १५२५ की चैत्र शु. ३ को एक श्रेयास मूर्ति, सवत् १५२७ की माघ कृ ५ को एक अन्य मूर्ति, सवत् १५२८ की वैशाख शु. ७ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति तथा सवत् १५२९ की वैशाख शु. २ को एक महावीर मूर्ति स्थापित की (ले. ३०४–७)। संवत् १५३१ की फाल्गुन शु ५ को क्षुल्लिका आगमश्री के लिए आप ने एक कलिकुंड यन्त्र स्थापित किया (ले. ३०८)।

सिंहकीर्ति के बाद धर्मकीर्ति और उन के बाद शीलभूषण भट्टारक हुए। आप के अम्नाय में सवत् १६२१ की श्रावण कृ. २ को अलवर निवासी गरीबदास ने हीराबाई के लिए यशोधरचरित की एक प्रति लिखी (ले ३०९)।

शीलभूषण के पट्टशिष्य ज्ञानभूषण हुए। ज्योतिःप्रकाश के एक उल्लेख से पता चलता है कि आप ने चिरकाल से लुप्त हुए जैन तिथिपत्र की पद्धति को स्पष्ट किया (ले. ३१६)।

इन के बाद जगद्भूषण भट्टारक हुए। आप ने सवत् १६८६ की ज्येष्ठ कृ ११ को एक सम्यक्चारित्र यत्र, संवत् १६८८ की फाल्गुन शु ८ को एक श्रेयास मूर्ति तथा इसी वर्ष की वैशाख शु. ३ को एक अन्य मूर्ति स्थापित की (ले. ३१०–१२)। आप की आम्नाय में सवत् १६९५ की माघ में शाहजहाँ के राज्य काल में आगरा शहर में शालिवाहन ने हिन्दी हरिवंशपुराण की रचना की (ले. ३१३)।

---

[५४] यह सम्भवत इटावा का संस्कृत रूपान्तर है।

इन के बाद विश्वभूषण भट्टारक हुए। आप ने सवत् १७२२ की माघ कृ. ५ को एक सम्यग्दर्शन यत्र स्थापित किया (ले. ३१४)। सवत् १७२४ की वैशाख कृ. १३ को आप ने शौरीपुर मे एक मन्दिर की प्रतिष्ठा की (ले. ३१५)।[५५] ज्योतिःप्रकाश के उक्त उल्लेख मे विश्वभूषण की भी प्रशंसा की गई है (ले. ३१६)। आप के उपदेश से पंडित हेमराज ने गहेली शहर मे सुगंधदशमी कथा लिखी (ले. ३१७)

इन के बाद देवेन्द्रभूषण और उन के बाद सुरेन्द्रभूषण भट्टारक हुए। आप ने सवत् १७५७ मे ऋषिपचमी कथा की रचना की (ले. ३१८)। आप ने सवत १७६० की फाल्गुन शु. १ को एक सम्यग्ज्ञान यत्र, संवत् १७६६ की माघ शु. ५ को एक षोडशकारण यंत्र, सवत् १७७२ की फाल्गुन कृ. ९ को एक सम्यग्दर्शन यत्र तथा सवत् १७९१ की फाल्गुन कृ. ९ को अटेर मे एक दशलक्षण यंत्र की स्थापना की (ले. ३१९–२२)।

सुरेन्द्रभूषण के शिष्य लक्ष्मीभूषण हुए। इन के शिष्य मुनीन्द्रभूषण को सवत् १८४२ की वैशाख शु. १० को साह लालचंद ने मूलाचार की एक प्रति अर्पित की (ले ३२३)।[५६]

लक्ष्मीभूषण के दूसरे शिष्य जिनेन्द्रभूषण हुए। इन के शिष्य महेन्द्रभूषण ने सवत् १८५२ की कार्तिक शु. १ को जिनेन्द्रमाहात्म्य की एक प्रति लिखी (ले. ३२५), सवत् १८५८ मे ग्वालियर में इन ने पद्मनन्दि पंचविंशति की एक प्रति आचार्य देवेन्द्रकीर्ति के लिए लिखी (ले ३२६)। संवत् १८७६ की वैशाख शु. ६ को आप ने एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ३२७)।

---

५५ मूल में संवत् १२२४ छपा है जो स्पष्टत: गलत है।

५६ इन की परम्परा में सोनागिरि के पट्ट पर क्रमशः जिनेन्द्रभूषण, देवेन्द्रभूषग, नरेन्द्रभूषण, सुरेन्द्रभूषण, चन्द्रभूषण, चारुचन्द्रभूषण, हरेन्द्रभूषण, जिनेन्द्रभूषण और चन्द्रभूषण भट्टारक हुए (अनेकान्त व. १० पृ ३७१)।

इन के बाद भ राजेन्द्रभूषण हुए। इन के उपदेश से आरा में केलिराम के पुत्र डालचंद ने सवत् १९२० में एक नेमिनाथ मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई (ले. ३२८)।

बलात्कार गण- अटेर शाखा-काल पट

१ जिनचन्द्र (दिल्ली जयपुर शाखा)
|
२ सिंहकीर्ति (सवत् १५२०-१५३१)
|
३ धर्मकीर्ति
|
४ शीलभूषण (सवत् १६२१)
|
५ ज्ञानभूपण
|
६ जगद्भूषण (सवत् १६८६-१६९५)
|
७ विश्वभूषण (सवत् १७२२-१७२४)
|
८ देवेन्द्रभूपण
|
९ सुरेन्द्रभूषण (संवत् १७५७-१७९१)
|

१० लक्ष्मीभूषण

११ जिनेन्द्रभूषण
मुनीन्द्रभूषण (संवत् १८४२)
(सोनागिरि शाखा)

१२ महेन्द्रभूषण (सं. १८५२-१८७६)
जिनेन्द्रभूषण

१३ राजेन्द्रभूषण (स. १९२०)
देवेन्द्रभूषण
नरेन्द्रभूषण
सुरेन्द्रभूषण
चन्द्रभूषण
चारुचन्द्रभूषण
हरेन्द्रभूषण
जिनेन्द्रभूषण
चन्द्रभूषण

९. वलात्कार गण – ईडर शाखा

लेखांक ३२९ – पट्टावली   सकलकीर्ति

श्रीकुदकुंदान्वयभूषणास भट्टारकाणां शिरस किरीट' ।
षट्तर्कसिद्धातरहस्यवेत्ता पयोजनुर्नंद्यभवद्धरित्र्याम् ॥ ३२ ॥
तत्पट्टभागी जिनधर्मरागी गुरूपवासी कुसुमेषुनागी ।
तपोनुरक्त. समभूद्विरक्त. पुण्यस्य मूर्ति' सकलादिकीर्तिः ॥ ३३ ॥

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५८)

लेखांक ३३० – ऐतिहासिक पत्र

आचार्य श्रीसकलकीर्ति वर्ष २५ छविसनी संस्थाह तथा तीवारे संयम लेई वर्ष ८ गुरा पासे रहीने व्याकरण २ तथा ४ भण्या श्रीवाग्वर गुजरात माहे गाम खोडेणे पधार्‍या वर्ष ३४ नी सस्था थई तीवारे सं. १४७१ ने वर्षे साहा श्रीयौचाने गृहे आहार लीधो'' वर्ष २२ पर्यंत स्वामी नग्न हता जुमले वर्ष ५६ छप्पन स १४९९ श्रीसागवाड जुने देहरे आदिनाथनो प्रसाद करावीने पीछे श्रीनोगामे सघे पदस्थापन करीने सागवाडे जईने पोताना पुत्रकने प्रतिष्ठा करावी पोते सूरमंत्र दीधो ते धर्मकीर्तिए वर्ष २४ पाट भोगव्यो ॥

[भा १३ पृ. ११३]

लेखांक ३३१ – चौवीसी मूर्ति

सं १४९० वर्षे वैसाख सुदी ९ सनौ श्रीमूलसघे नदीसघे वलात्कार-गणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ पद्मनदी तत्पट्टे श्रीशुभचंद्र तस्य भ्राता जगत्रयविख्यात मुनि श्रीसकलकीर्ति उपदेशात् हुबडज्ञातीय ठा. नरवद भार्या वला तयो पुत्र ठा देपाल अर्जुन भीमा कृपा चासण चांपा कान्हा श्रीआदिनाथप्रतिमेय ॥

(सूरत, दा. ५३)

लेखांक ३३२– पार्श्वनाथ मूर्ति

सवत् १४९२ वर्षे वैशाख वदि १० गुरु श्रीमूलसघे भ. श्रीपद्म-नदिदेवा तत्पट्टे श्रीशुभचंद्रदेवा. ततभ्राता श्रीसकलकीर्ति उपदेशात् हुंबड

न्याति उत्रेश्वर गोत्रे ठा. लींबा भार्या फद्द श्रीपार्श्वनाथ नित्यं प्रणमति सं. तेजा टोई भा. ठाकरसी हीरा देवा मूडलि वास्तव्य प्रतिष्ठिता ॥

[भा. ७ पृ. १५]

लेखांक ३३३ – शिलालेख

स्वस्तिश्री १४९४ वर्षे वैशाख सुदी १३ गुरौ मूलसंघे भ. श्रीपद्मनंदी तत्पट्टे श्रीशुभचंद्र भ. श्रीसकलकीर्ति उपदेशे द्यौव्याव (?) कृत्वा संघवै नरपाल······समस्तश्रीसंघ दिगंबर श्रीअर्वदाचले आगिह तीर्थ सीतांबरु प्रासाद दिगंबर पाछि दछाव्या श्रीआदिनाथ वडा दीकीजी श्रीनेमिनाथजी जिह श्रीसीतल हरखुधप्रसाद दिगंबर पाछिह पेहरी तिन वहणरी महापूज धज अवास करी संघवी गोव्यंद प्रशस्ति लिखाती··· ॥

(आबू, जैनमित्र ३–२–१९२१)

लेखांक ३३४ – आदिनाथ मूर्ति

सं. १४९७ मूलसंघे श्रीसकलकीर्ति हुवड ज्ञातीय शाह कर्णा भार्या भोली सुता सोमा भात्री भोदी भार्या पासी आदिनाथं प्रणमति ॥

[सूरत, दा. पृ. ५२]

लेखांक ३३५ – प्रश्नोत्तर श्रावकाचार

उपासकाख्यो विबुधैः प्रपूज्यो ग्रंथो महाधर्मकरो गुणाढ्यः ।
समस्तकीर्त्यादिमुनीश्वरोक्तः सुपुण्यहेतुर्जयताद्धरित्र्याम् ॥ १४२

(अध्याय २४, प्र. मू. कि. कापडिया, सूरत १९२६)

लेखांक ३३६ – पार्श्वपुराण

अवगमजलधिश्रीपार्श्वनाथस्य दिव्यं
सकलविशदकीर्तेः प्रादुरासीन्मुनींद्रात ।
यदिह वरचरित्र तद्धि दक्षाः स्मरतु
यतिसुजनसुसेव्यं जैनधर्मोस्ति यावत् ॥

(भा. ग्र. पृ. १९५)

लेखांक ३३७ - सुकुमार चरित्र

सच्चरित्रमिदमाप्तयतींद्रा ज्ञानिनो निहतदोषसमग्राः।
शोधयंतु तनुशास्त्रभरेण सर्वकीर्तिगणिना कृतमत्र ॥ ८८ ॥
सुकुमारचरित्रस्यास्य श्लोकाः पिंडिता बुधैः।
विज्ञेया लेखकै. सर्वे ह्येकादशशतप्रमा. ॥ ९४ ॥

(अध्याय ९, प्र. रा. स. दोशी, सोलापुर)

लेखांक ३३८ - मूलाचार प्रदीप

रहितसकलदोषा ज्ञानपूर्णा ऋषींद्रा-
स्त्रिभुवनपतिपूज्याः शोधयत्वेव यत्नात्।
विशदसकलकीर्त्याख्येन चाचारशास्त्र-
मिदमिह गणिना संकीर्तित धर्मसिद्ध्यै ॥ २२३ ॥

(अध्याय १२, का. ५२८)

लेखांक ३३९ - आराधना

जे भणे सुणे नरनारी ते जाए भवतरि पार।
श्रीसकलकीरति कह्यो आराधना प्रतिबोध सार ॥ ५४ ॥

(ना ९४)

लेखांक ३४० - पंचपरमेष्ठि मूर्ति

संवत् १५१० वर्षे माह मासे शुक्लपक्षे ५ रवौ श्रीमूलसघे · भ. पद्म-नंदि तत्पट्टे भ श्रीसकलकीर्ति तत्शिष्य ब्र जिनदास हुंवडज्ञातीय सा. तेजु भा. मलाइ · ॥

[ना. ५३]

लेखांक ३४१ - गुणस्थान गुणमाला

श्रीसकलकीरति पाय पणमीने किचो रास मै सार।
गुणस्थानक गुण वरणव्या त्रिभुवनतारणहार ॥ ४३
दुइ कर जोडि विनवे ब्रह्मचारि जिनदास।

भविभविनि ग्रंथ सेविसुं मागिसुं चरणेहु वास ॥ ४४

(म. ४५)

लेखांक ३४२ – ज्येष्ठ जिनवर पूजा

श्रीसकलकीरति गुरु प्रणमिने जिनवर पूज रयं ।
ब्रह्म भणे जिनदास तो आतमा निर्मलयं ॥ १४

[च. १९०५]

लेखांक ३४३ – पार्श्वनाथ मूर्ति भुवनकीर्ति

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे श्रीमूलसंघे भ. श्रीसकलकीर्तिस्तत्पट्टे भ. श्रीभुवनकीर्ति उपदेशात् हुंबुध गोत्रे··· ॥

(भा. ७ पृ. १६)

लेखांक ३४४ – रामायण रास

श्रीमूलसंघ अति निरमलो सरसतीगछ गुणवंत ।
श्रीसकलकीरति गुरु जाणीइ जिणसासणि जयवंत ॥
तास पाटि अति रूवडा श्रीभुवनकीर्ति भवतार ।
गुणवंत मुनि गुणि आगला तप तणा भंडार ।
तीहु मुनिवर पाय प्रणमीने किया रास ए सार ।
ब्रह्म जिनदास भणे रूवडो पढतां पुण्य अपार ॥
शिष्य मनोहर रूवडा ब्रह्म मलिदास गुणदास ।
पढो पढावो विस्तरे जिम होइ सौख्य निवास ॥
संवत पंनर अठोत्तरा मागसिर मास विशाल ।
शुक्ल पक्ष चउ दिन रास कियो गुणमाल ॥

(ना. २२)

लेखांक ३४५ – हरिवंश रास

उपर्युक्त के समान, सिर्फ अन्तिम पद्य भिन्न है–

संवत पंनर वीसोत्तरा वैशाख मास विशाल ।
सुकल पक्ष चौदसि दिन रास कियो गुणमाल ॥

[ना. २०]

लेखांक ३४६ – कर्मविपाक रास

सरस्वति स्वामिणि सरस्वति स्वामिणि तणइ पसाइ ।
रास कियो मि निरमलो करमविपाकतणो निरमलो ।
ते कर्मक्षय कारणि ॥

सुणो भवियण तम्हे मनोहार ।
श्रीसकलकीरति पाय प्रणमीनि मुनि भुवनकीरति भवतार ।
ब्रम्ह जिणदास म्हणे वांदिस्यु मागिस्यु तम्ह गुण सार ॥

[ना. ७]

लेखांक ३४७ – धर्मपरीक्षा रास

श्रीगणधर स्वामी नमसकरू श्रीसकलकीरति भवतार ।
मुनि भुवनकीरति पाय प्रणमीनि कहिसूं रासह सार ॥ १
धरमपरीक्षा करूं निरमली भवियण सुणो तम्हे सार ।
ब्रम्ह जिणदास कहि निरमलो जिम जाणो विचार ॥ २

[ना ३८]

लेखांक ३४८ – जंबूस्वामी रास

श्रीसकलकीरति गुरु प्रणमीने हो भुवनकीरति गुरु वांदि ।
रास कियो मइ निरमलो हो जबूकुअरनु आदि ॥
पढइ गुणइ जे सांभलि तेह घरि ऋद्धि अनत ।
ब्रम्ह जिणदास इणि परि भणि मुगति रमणी होइ कंत ॥

[ना ३७]

लेखांक ३४९ – जीवंधर रास

जीवधर स्वामी तणो मि रास कीधो सरस सोहावणो ।
सरस्वति तणइ पसाइ निरमल कामदेव गुरु चरणव्या ॥
श्रीसकलकीरति गुरु प्रणमीने वली भुवनकीरति भवतार ।
ब्रम्ह जिणदास भणे निरमलो पढो तम्हे भवियण सार ॥

[ना ३६]

लेखांक ३५० – जसोधर रास

गणधरस्वामि नमसकरु श्रीसकलकीरति भवतार ।
भुवनकीरति गुरु प्रणमीने ब्रम्ह जिणदास भणे सार ॥
भवियण भावइ सुणउ आज मनि निश्चयो आणि ।
राय जसोधर तणउ रास हुं कहिसु वखाणि ॥

(ना. ३९)

लेखांक ३५१ – श्रेणिकचरित्र

शिष्यु सकलकीर्ति देवाचा । तो जीणदासु गुरु आमुचा ।
प्रसादु लाधला त्याचा । गुणदासें खा ॥ ९५ ॥
त्या जिनब्रम्हाच्या चरनी । गुणब्रम्हे नमन करौनि ।
वोवीबंध ग्रंथु करुनि । वेगळा ठेला ॥ ९६ ॥

[अ. ४, ना. ७]

लेखांक ३५२ – चारित्र यंत्र ज्ञानभूषण

सं. १५३४ श्रीमूलसंघे भ. जिनचंद्राम्नाये भ. श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् लंबेचू सा उजागर ‥ ॥

(भा. प्र. पृ. १७)

लेखांक ३५३ – रत्नत्रय मूर्ति

संवत १५३५ श्रीमूलसंघे भ. श्रीभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषणोपदेशात् ‥ ॥

(बाळापुर, अ. ४ पृ. ५०२)

लेखांक ३५४ – पद्मप्रभ मूर्ति

संवत १५४२ वर्षे ज्येष्ट सुदि ८ शनौ श्रीमूलसंघे ‥भ सकलकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् जांगडा पोरवाडज्ञातीय स. वाजु मानेजु ‥ ॥

(अ. ४ पृ. ५०२)

लेखांक ३५५ – रत्नत्रय मूर्ति

सं. १५४३ श्रीमूलसंघे भ. श्रीभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषण-गुरूपदेशात् · ॥

(सुं. हि जोहरापुरकर, नागपुर)

लेखांक ३५६ – ? मूर्ति

संवत १५४४ वर्षे वैसाख सुदि ३ सोमे श्रीमूलसघे भ. श्रीविद्यानंदि भ श्रीभुवनकीर्ति भ. श्रीज्ञानभूषण गुरूपदेशात् हूंवड साह चांदा भार्या रेमाई ·· ॥

(अ. ४ पृ. ५०३)

लेखांक ३५७ – सुमतिनाथ मूर्ति

सं १५५२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे श्रीमूलसंघे भ भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषण गुरूपदेशात् हुवड श्रेष्ठी पर्वत भार्या देऊ ·· ॥

(ना. ५१)

लेखांक ३५८ – तत्त्वज्ञान तरंगिणी

जात श्रीसकलादिकीर्तिमुनिप श्रीमूलसघेग्रणी–
स्तत्पट्टोदयपर्वते रविरभूद्भव्याबुजानंदकृत् ।
विख्यातो भुवनादिकीर्तिरथ यस्तत्पादकजे रत. ।
तत्त्वज्ञानतरगिणीं स कृतवानेतां हि चिद्भूषण· ॥ २१
यदैव विक्रमातीता शतपचदशाधिका ।
षष्टि सवत्सरा जातास्तदेय निर्मिता कृतिः ॥ २३

(अध्याय १८, सनातन ग्रथमाला, कलकत्ता १९१६)

लेखांक ३५९ – पट्टावली

· दिल्लीसिंहासनाधीश्वराणां, प्रतापाक्रान्तदिङ्मण्डलाखण्डनसमान-भैरवनरेन्द्रविहितातिभक्तिभाराणां, अष्टाङ्ग सम्यक्त्वाद्यनेकगुणगणालंकृत-

श्रीमदिन्द्रभूपालमस्तकन्यस्तचरणसरोरुहाणां, ···श्रीदेवरायसमाराधितचरण-वारिजानां, जिनधर्म्माराधकमुदिपालराय–रामनाथराय–बोमरसराय–कलपराय–पाण्डुरायप्रभृतिअनेकमहीपालार्चितक्रमकमलयुगलानाम् ···· भट्टारक-वर्यश्रीज्ञानभूषण–भट्टारकदेवानाम् ॥

(भा. १ कि. ४ पृ. ४४)

लेखांक ३६० – विषापहार टीका

··· ··विषापहार इति व्यपदेशभाजोतिगहनगंभीरस्य सुखावबोधार्थं बागडदेशमंडलाचार्यज्ञानभूषणदेवैर्मुहुरुपरुद्धः कर्णाटादिराजसभाप्रसिद्धः प्रवादिगजकेसरी विरुदकविमदविदारी सद्दर्शनज्ञानधारी नागचंद्रसूरिः धनंजयसूर्यभिमतार्थं व्यक्तीकर्तुमशक्नुवन्नपि गुरुवचनमलंघनीयमिति न्यायेन तदभिप्रायं विवरीतुं प्रतिजानीते ॥

(हि १२ पृ. ८७)

लेखांक ३६१ – ऋषिमंडलपूजा

श्रीमच्चारुचरित्रपात्रगुणवच्छ्रीज्ञानभूषांघ्रिभाग् ।
अर्हच्छासनभक्तिनिर्मलरुचिः पद्माजनुर्वा शुचिः ॥
वीरांतःकरणश्च चारुचरणे बुद्धिप्रवीणोरचत् ।
पूजां श्रीऋषिमंडलस्य महतीं नंदी गुणादिर्मुनिः ॥

(जैन ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई १९२६)

लेखांक ३६२ – शांतिनाथ मूर्ति　　विजयकीर्ति

सं. १५५७ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीसकलकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषण तत्पट्टे भ. श्रीविजयकीर्ति-गुरूपदेशात् हूंबडज्ञातीय ·· ॥

(वीसनगर, जैन साहित्य और इतिहास पृ. ५२१)

लेखांक ३६३ – शांतिनाथ मूर्ति

संवत १५६० वैसाख सुदि २ बुधे श्रीमूलसंघे ··भ. ज्ञानभूषण तत्पट्टे

भ विजयकीर्तिगुरूपदेशात् हूंवड ज्ञातीय श्रेष्ठी सालिग भार्या ताकू··· ॥

(अ. ४ पृ. ५०३)

लेखांक ३६४ – रत्नत्रय मूर्ति

सवत १५६१ वर्षे वैसाख सुदि १० वुधे श्रीमूलसघे भ. श्रीज्ञानभूषण तत्पट्टे भ श्रीविजयकीर्तिगुरूपदेशात् लाडण ॥

(ना. ५४)

लेखांक ३६५ – [पद्मनंदि पंचविंशतिका]

स १५६८ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे १० दिन गुरौ श्रीगिरिपुरे श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसघे भ श्रीज्ञानभूषण तत्पट्टे भ श्रीविजयकीर्ति तत्भगिनि आर्यिका देवश्री तस्यै पद्मनदिपंचविंशतिका श्रीसंघेन लिखाप्य दत्ता ॥

(वडौदा, दा पृ ३४)

लेखांक ३६६ – पट्टावली

य पूज्यो नृपमल्लिभैरवमहादेवेंद्रमुख्यैर्नृपै
षट्तर्कागमशास्त्रकोविदमतिर्जाग्रद्यशश्चंद्रमा· ।
भव्यांभोरुहभास्कर. शुभकर संसारविच्छेदक
सोऽव्याच्छ्रीविजयादिकीर्तिमुनिपो भट्टारकाधीश्वरः ॥ ३६

(भा १ कि ४ पृ. ५४)

लेखांक ३६७ – अध्यात्मतरंगिणी टीका शुभचंद्र

विजयकीर्तियतिर्जगता गुरुर्विधृतधर्मधुरोध्दृतिधारक· ।
जयतु शासनभासनभारतीमयमतिर्दलितापरवादिक ॥
शिष्यस्तस्य निशिष्टशास्त्रविशद समारभीताशयो
भावाभावविवेकवारिधितर स्याद्वादविद्यानिधि ।
टीका नाटकपद्मजा वरगुणाध्यात्मादिस्रोतस्विनीं
श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्र एष विधिवत् सचर्करीति स्म वै ॥
त्रिभुवनवरकीर्तेर्जातरूपात्तमूर्ते शमदमयमपूर्तेराग्रहान्नाटकस्य ।

विशदविभववृत्तो वृत्तिमाविश्चकार गतनयशुभचंद्रो ध्यानसिद्धयर्थमेव॥
विक्रमवरभूपालात् पंचत्रिशते त्रिसप्ततिव्याधिके ।
वर्षेप्याश्विनमासे शुक्ले पक्षेथ पंचमीदिवसे ॥

[सनातन ग्रंथमाला, १५, कलकत्ता]

लेखांक ३६८ – पंचपरमेष्ठि मूर्ति

संवत १६०७ वर्षे वैसाख वदी ३ गुरु श्रीमूलसंघे भ. श्रीशुभचंद्र-गुरूपदेशात् हुंबड संखेस्वरा गोत्रे सा. जिना ·· ॥

(पा. ने जोहरापुरकर, नागपुर)

लेखांक ३६९ – करकंडुचरित्र

व्यष्टे विक्रमतः शते समइते चैकादशाब्दाधिके
भाद्रे मासि समुज्वले समतिथौ खंगेजवाछे पुरे ।
श्रीमच्छ्रीवृषभेश्वरस्य सदने चक्रे चरित्रं त्विदं
राज्ञः श्रीशुभचंद्रसूरियतिपश्चंपाधिपस्याद्भुतम् ॥

[अ. ११, पृ. २६५]

लेखांक ३७० – कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका

श्रीमद्विक्रमभूपतेः परिमिते वर्षे शते षोडशे
माघे मासि दशाग्रवह्निसहिते ख्याते दशम्यां तिथौ ।
श्रीमच्छ्रीमहिसारसारनगरे चैत्यालये श्रीगुरोः
श्रीमच्छ्रीशुभचंद्रदेवविहिता टीका सदा नंदतु ॥ ६
वर्णिश्रीक्षेमचंद्रेण विनयेनाकृत प्रार्थना ।
शुभचंद्रगुरो स्वामिन् कुरु टीकां मनोहराम् ॥ ७
तथा साधुसुमत्यादिकीर्तिनाकृत प्रार्थना ।
सार्थीकृता समर्थेन शुभचंद्रेण सूरिणा ॥ ९
भट्टारकपदाधीशा मूलसंघे विदां वराः ।
रमावीरेन्दुचिद्रूपगुरवो हि गणेशिन ॥ १०

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. ५२८]

लेखांक ३७१ – संशयिवदनविदारण

अ. १ क्षुद्बाधारहितत्वं हि जिनस्यानंतशर्मणः ।
एष्टव्यं भव्यसद्वर्गैः शुभचंद्रैश्चिदावहैः ॥
अ. २ इत्यवादि च संवादात् स्त्रीनिर्वाणनिवारणम् ।
शुभचद्रेण संक्षेपाद् विस्तारोन्यत्र लोक्यताम् ॥
अ. ३ श्रीमतो वर्धमानस्याहृतेर्भ्रूणस्य वारणम् ।
प्रणीतं शुभचंद्रेण जीयादाचंद्रतारकम् ॥

(हरीभाई देवकरण ग्रथमाला, कलकत्ता १९२२)

लेखांक ३७२ – षड्दर्शनप्रमाणप्रमेयानुप्रवेश

जयति शुभचंद्रदेव' कंडूगणपुंडरीकवनमार्तंडः ।
चडत्रिदंडदूरो राद्धांतपयोधिपारगो बुधविनुत ॥

(भा ग्र. पृ २१)

लेखांक ३७३ – अंगपण्णत्ती

सिरिसयकलकित्तिपट्टे आसेसी भुवणकित्तिपरमगुरू ।
तप्पट्टकमलभाणू भट्टारओ बोहभूसणओ ॥
सिरिविजयकित्तिदेओ णाणासत्थप्पयासओ धीरो ।
बुहसेवियपयजुअलो तप्पयवरकलभसत्तो य ॥
तप्पयसेवणसत्तो तेवेज्जो उहयभासपरिवेई ।
सुहचंदो तेण इण रइयं सत्थं समासेण ॥

[सिद्धातसारादिसग्रह, माणिकचद्र ग्रथमाला, बम्बई]

लेखांक ३७४ – नंदीश्वर कथा

जगति जयति दक्ष पालितानेकपक्ष
सुगुरुविजयकीर्ति प्रस्फुरत्सूरिमूर्तिः ।
चरणनलिनरक्तस्तस्य सद्भक्तियुक्त
समकृत शुभचंद्र. सत्कथा भव्यचद्र' ॥

(ना. २५)

लेखांक ३७५ – पांडवपुराण

विजयकीर्तियतिर्मुदितात्मको जितनतान्यमनःसुगतैः स्तुतः ।
अवतु जैनमतं सुमतो मतो नृपतिभिर्भवतो भवतो विभुः ॥ ७०
पट्टे तस्य गुणांबुधिर्व्रतधरो धीमान् गरीयान् वरः
श्रीमच्छ्रीशुभचद्र एप विदितो वादीभसिंहो महान् ।
तेनेदं चरितं विचारसुकरं चाकारि चंचद्रुचा
पाण्डोः श्रीशुभसिद्धिसातजनकं सिद्ध्यै सुतानां सदा ॥ ७१
चंद्रनाथचरितं चरितार्थं पद्मनाभचरितं शुभचंद्रम् ।
मन्मथस्य महिमानमतंद्रो जीवकस्य चरितं च चकार ॥ ७२
चंदनायाः कथा येन दृब्धा नांदीश्वरी तथा ।
आशाधरकृताचारवृत्तिः सद्वृत्तिशालिनी ॥ ७३
त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजनं च सद्वृत्तसिद्धार्चनमाव्यधत्त ।
सारस्वतीयार्चनमत्र शुद्धं चिंतामणीयार्चनमुच्चरिष्णुः ॥ ७४
श्रीकर्मदाहविधिवधुरसिद्धसेवां नानागुणौघगणनाथसमर्चनं च ।
श्रीपार्श्वनाथवरकाव्यसुपंजिकां च यः संचकार शुभचंद्रयतींद्रचंद्रः ॥
उद्यापनमदीपिष्ट पल्योपमविधेश्च यः ।
चारित्रशुद्धितपसश्चतुस्त्रिद्वादशात्मनः ॥ ७६
संशयवदनविदारणमपशब्दसुखंडनं परमतर्कं ।
सत्तत्त्वनिर्णयं वरस्वरूपसंबोधिनीं वृत्तिं ॥ ७७
अध्यात्मपद्यवृत्तिं सर्वार्थापूर्वसर्वतोभद्रम् ।
योऽकृत सद्व्याकरणं चिंतामणिनामधेयं च ॥ ७८
कृता येनांगप्रज्ञप्तिः सर्वांगार्थप्ररूपिका ।
स्तोत्राणि च पवित्राणि षड्वादा' श्रीजिनेशिनाम् ॥ ७९
श्रीमद्विक्रमभूपतेर्द्विकहते स्पष्टाष्टसंख्ये शते
रम्येऽष्टाधिकवत्सरे सुखकरे भाद्रे द्वितीयातिथौ ।
श्रीमद्वाग्वरनिर्वृतीदमतुले श्रीशाकवाटे पुरे
श्रीमच्छ्रीपुरुषाभिधे विरचितं स्थेयात् पुराणं चिरम् ॥ ८६

श्रीपालवर्णिना येनाकारि शास्त्रार्थसंग्रहे ।
साहाय्य स चिर जीयाद् वरविद्याविभूषण ॥ ८२

(भा. १ कि. ४ पृ. ३७)

लेखांक ३७६ – १ मूर्ति सुमतिकीर्ति

संवत १६२२ वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीकुंदकुंदान्वये ·भ. श्रीविजयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीशुभचद्रदेवा. तत्पट्टे भ. सुमतिकीर्तिगुरूपदेशात हूमडज्ञातीय गां. रामा भार्या वीरा ॥

[अ ४ पृ. ५०३]

लेखांक ३७७ – वेदी लेख

सं १६२५ वर्षे पौष वदी ५ शुक्रे श्रीमूलसंघे ··भ शुभचंद्र तत्पट्टे भ. श्रीसुमतिकीर्तिगुरूपदेशात् हूमडज्ञातीय गांधी नरपति ·· ॥

[तारगा, दा पृ. ७५]

लेखांक ३७८ – अजितनाथ मूर्ति गुणकीर्ति

श्रीमूलसंघे समत १६३१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे भ. श्रीगुणकीर्तिगुरूपदेशात् सं.· ॥

(परवार मन्दिर, नागपुर)

लेखांक ३७९ १ मूर्ति

स १६३७ वर्षे वैसाख वदि ८ श्रीमूलसंघे भ श्रीगुणकीर्तिउपदेशात् ब्र. अलवा भार्या शहा सुत कदूवा नाकरठा ··प्रणमति ॥

[भा ७ पृ १४]

लेखांक ३८० – (जीवंधर रास)

स १६३९ वर्षे कार्तिकमासे सुक्लपक्षे पचमी रवौ। श्रीवाग्वरदेशे श्रीसागवाडाशुभस्थाने श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ श्रीपद्मनंदीदेवा तत्पट्टे भ. श्रीसकल-

कीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीभुवनकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. विजयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे श्रीसुमतिकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. गुणकीर्तिदेवाः तत्शिष्य ब्रम्ह श्रीहरषा तत्शिष्य ब्रम्ह श्रीशंकर लख्यतं आत्मपठनार्थं ॥

[ना. ३६]

लेखांक ३८१ – श्रेणिकपृच्छा कर्मविपाक

शुभचंद्र जशचंद्रज कही सुमतिकीरति गुरु वंदू सही।
श्रीगुनकीरति भट्टारक भने भणे सुणे इच्छित तेहने ॥ ७१

(ना. ६)

लेखांक ३८२ – [अध्यात्मतरंगिणी] वादिभूषण

संवत् १६५२ वर्षे ज्येष्ठ द्वितीय कृष्ण दशम्यां शुक्रे मूलसंघे··· भ. श्रीसुमतिकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीवादिभूषणगुरुस्तच्छिष्य पं. देवजी पठनार्थं ॥

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. ५२९]

लेखांक ३८३ – वासुपूज्य मूर्ति

संवत १६५५ वर्षे वैसाख शुदी ६ शुक्रे भ श्रीवादीभूषण गुरु उपदेशात्··· ॥

(का. १)

लेखांक ३८४ – ? मूर्ति

सं. १६५६ फागुण शुदि ३ गुरौ श्रीमूलसंघे भ. श्रीवादिभूषणोपदेशात् श्रीमालज्ञातौ···

[का. ३]

लेखांक ३८५ – सुपार्श्वनाथ मूर्ति रामकीर्ति

संमत १६७० वर्षे फाल्गुण वदी ५ शुभे श्रीमूलसंघे भ श्रीरामकीर्ति

प्रतिष्ठितं सेनगणे बघेरवाल ज्ञातिय चवरिया गोत्रे सा. धाऊजी भार्या बोपाई · ॥

(परवार मन्दिर, नागपुर)

लेखांक ३८६ – पद्मप्रभ मूर्ति

समत १६७० वर्षे फागुन वदी ५ शुक्रे श्रीमूलसघे भ श्रीवादीभूषण तत्पट्टे भ. श्रीरामकीर्तिगुरूपदेशात् अगरवालज्ञातीय स.　　॥

(भा. १३ पृ. १३०)

लेखांक ३८७ – पार्श्वनाथ मूर्ति　　　　पद्मनंदी

सवत १६८३ वर्षे माघ शु. ५ गुरौ श्रीमूलसघे भ. श्रीरामकीर्ति तत्पट्टे पद्मनदिगुरूपदेशात् हूमड ज्ञातीय लघुशाखा खरजा गोत्रे सं. नाकर ॥

(भा. १४ पृ २९)

लेखांक ३८८ – शांतिनाथ मूर्ति

सवत १६८६ वर्षे वैशाख सुदी ५ बुधे शाके १५५१ वर्तमाने श्रीमूलसंघे · भ. श्रीवादिभूषणदेवा तत्पट्टे भ श्रीरामकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदिगुरूपदेशात् पादशाह श्रीसाहजहा विजयराज्ये श्रीगुर्जरदेशे श्रीअहमदावादवास्तव्य–हुवड–ज्ञातीय–बृहच्छाखीय–वाग्वरदेशस्यातरीय–नगर–नौतनभद्र–प्रासादोद्धरणधीर–जाज स भोजा भार्या लकु·· एतेषां महासिद्धक्षेत्र–श्रीसेत्रुजयरत्नगिरी–श्रीजिनप्रासाद–श्रीशातिनाथबिंव कारयित्वा नित्यं प्रणमति । शुभ भवतु ॥

(जैनमित्र, २७–१–१९२०)

लेखांक ३८९ – (गणितसार संग्रह)

सवत १७०२ वर्षे माह शुदि ३ शुक्रे श्रीमूलसघे · भ श्रीसकलकीर्तिदेवा तदन्वये भ श्रीवादिभूषण तत्पट्टे भ श्रीरामकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीपद्मनंदी विराजमाने आचार्यश्रीनरेंद्रकीर्ति तच्छिष्य ब्रम्ह श्रीलाड्यका तच्छिष्य ब्रम्ह कामराज तच्छिष्य ब्रम्ह लालजी ताभ्या श्रीरायदेशे श्रीभीलोडानगरे श्रीचद्रप्रभचैत्यालये दोसी कुहा · दत्त श्रीरस्तु ॥

[का. ६३]

लेखांक ३९० – [शब्दार्णवचंद्रिका]　　देवेंद्रकीर्ति

संवत् १७१३ वर्षे कार्तिक शुदि अष्टमी बुधे वाग्वरदेशे सागवाडा-नगरे श्रीआदीश्वरनवीनचैत्यालये राउल-श्रीपुंजराजविजयराज्ये श्रीमूलसंघे भ. श्रीरामकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति-देवाः तदाम्नाये मुनि श्रीश्रुतकीर्तिस्तच्छिष्य-मुनि श्रीदेवकीर्तिस्तच्छिष्या-चार्यश्रीकल्याणकीर्ति तच्छिष्य ब्रम्ह तेजपालेन स्वज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं स्वपरपठनार्थं जैनेन्द्रमहाव्याकरणं सवृत्तिकं लिखितं शोधितं च ॥

[सनातन ग्रन्थमाला, बनारस १९१५]

लेखांक ३९१ – [गणितसारसंग्रह]

संवत १७२५ वर्षे कार्तिक सुदि १० भौमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ. श्रीसकलकीर्त्यन्वये भ. श्रीवादिभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्तिगुरूपदेशात् मुनिश्रीश्रुतकीर्ति तच्छिष्य मुनिश्रीदेवकीर्ति तच्छिष्याचार्य-श्रीकल्याणकीर्ति तच्छिष्य मुनिश्री त्रिभुवनचंद्रेणेदं षट्त्रिंशतिका गणितशास्त्रं कर्मक्षयार्थं लिखितं ॥

(का. ६५)

लेखांक ३९२ – १ मूर्ति　　क्षेमकीर्ति

सं. १७३४ वर्षे मूलसंघे‥ श्रीपद्मनंदी तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीक्षेमकीर्ति शुद्धाम्नाये वागड देश शीतलवाडानगरे हूमड ज्ञातीय लघु-सारवाया कमलेश्वरगोत्रे दोशीश्रीसूरदास ॥

[दा. पृ. ७४]

लेखांक ३९३ – [अष्टसहस्री]　　नरेंद्रकीर्ति

वत्से नेत्रषडश्वसोम १७६२ निहिते ज्येष्ठे च मासेनघे
शुभ्रे पक्ष इति त्रयोदशदिने श्रीतक्षकाख्ये पुरे ।
नेमिस्वामिगृहे व्यलीलिखदिदं देवागमालंकृतेः
पुस्तं पूज्यनरेंद्रकीर्तिसुगुरो. श्रीलालचंद्रो बटु. ॥

[अ. १० पृ. ७३]

लेखांक ३९४ – चरण पादुका चंद्रकीर्ति

स्वस्तिश्री संवत १८३२ शाके १६८७ प्रवर्तमाने शुभकारक कल्याणमासे कृष्णपक्षे ३ तृतीया शुभस्थ तिथि शुक्रवासरे श्रीखड्गदेशे धूलेवग्रामे श्रीऋषभदेवचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ श्रीसकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तदनुक्रमेण भ. श्रीक्षेमकीर्ति तत्पट्टे श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीविजयकीर्ति तत्पट्टे भ नेमिचंद्र तत्पट्टे भ. श्री १०८ श्रीचद्रकीर्ति प्रतिष्ठिते 'वाईजी श्रीसजूवाईके चतुरविंशति जिनपादुका स्थापितं शुभ ।

(केशरियाजी, वीर २ पृ. ४६०)

लेखांक ३९५ – शिलालेख यशःकीर्ति

देडारग देश मेवाडमे उदयापुर सुजान ।
राज करे तिह राजवी भीमसिंह राजान ॥
संवत १८६३ मे अषाड सुदी ३ तीज ।
गुरुवारे मुहूर्तज कर्‍यो भली तरे पूजा कीध ॥
मूलसंघ गछ सरस्वती वलात्कार गण धरबुडो ।
कुंदकुंद सूरिवर भलौ सकलकीर्ति गछ ॥
ते पाटे गुरु शोभतो भुवनकीर्ति नमू पाय ।
ज्ञानभूषण ते पाटे प्रगट विजयकीर्ति सूरि दश्य ॥
शुभचंद्र सूरिवर सदा सुमतिकीर्ति गुणकीर्ति गुरु ।
गुणतिलु वादिभूषण तस पाट रामकीर्ति पाट शोभतो ॥
राख्यो धर्मन ठाठ पद्मनंदि पाटे सुजस ।
देवेंद्रकीर्ति गुणधार खेमकीर्ति पर उज्ज्वलो ॥
नरेंद्रकीर्ति मनुहार विजयकीर्ति पट्टे गुरु ।
नेमिचद्र भवतार चद्रकीर्ति चंद्र समो ॥
रामकीर्ति सुखकार यश कीर्ति सूरिवर सिंह ।
उदयो पुन्य अंकुर करी प्रतिष्ठां दुर्ग तणी ॥
जस व्याप्यो भरपूर वागडदेश सुहावनो ।
सागलपुर वर ग्राम सघपति साहर लिया ॥

(केशरियाजी, वीर २ पृ. ४६१)

बलात्कार गण – ईडर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. सकलकीर्ति से हुआ। आप भ. पद्मनन्दी के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त उत्तर शाखा मे आ चुका है। आप ने आयु के २५ वे वर्ष मे दीक्षा ग्रहण की तथा २२ वर्ष दिगम्बर मुनि के रूप में रहे। आप ने संवत् १४९० की वैशाख शु. ९ को एक चौवीसी मूर्ति, संवत् १४९२ की वैशाख कृ. १० को एक पार्श्वनाथ मूर्ति, संवत् १४९४ की वैशाख शु. १३ को अबू पर्वत पर एक मन्दिर, संवत् १४९७ में एक आदिनाथ मूर्ति तथा सवत् १४९९ मे सागवाडा मे आदिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा की। सागवाडा मे ही आप ने भ. धर्मकीर्ति का पट्टाभिषेक किया [ले. ३२९–३४]। आप ने प्रश्नोत्तर श्रावकाचार, पार्श्वपुराण, सुकुमारचरित. मूलाचारप्रदीप, आराधना आदि ग्रन्थो की रचना की [ले. ३३५–३९]।[५७] आप के शिष्य ब्रह्म जिनदास ने संवत् १५१० की माघ शु. ५ को एक पचपरमेष्ठी मूर्ति स्थापित की तथा गुणस्थान गुणमाला और ज्येष्ठ–जिनवरपूजा की रचना की [ले. ३४०–४२]।

सकलकीर्ति के पट्ट पर भुवनकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने संवत् १५२७ की वैशाख कृ. ११ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की [ले. ३४३]। आप के शिष्य ब्रह्म जिनदास ने संवत १५०८ की मार्गशीर्ष शु. ४ को रामायणरास की, तथा सवत् १५२० की वैशाख शु. १४ को हरिवंशरास की रचना की। इन रचनाओ मे आप ने मल्लिदास और गुणदास इन शिष्यो का भी उल्लेख किया है [ले. ३४४–४५]। कर्मविपाकरास, धर्मपरीक्षारास, जम्बूस्वामीरास, जीवन्धररास, जसोधररास,

---

५७ सकलकीर्तिकृत महावीरपुराण और सुदर्शनचरित्र के हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित हुए हैं। इन के अलावा ग्रन्थसूचियों में इन के अनेक ग्रन्थो के नाम मिलते हैं। किन्तु निश्चितता के खयाल से यहा उन का उल्लेख छोड दिया है। सकलकीर्ति ने किसी ग्रन्थ में लेखनकाल या गुरुपरम्परा का उल्लेख नहीं किया है।

ये आप की अन्य रचनाए है। [५८]आप के शिष्य ब्रह्म गुणदास ने मराठी श्रेणिकचरित्र लिखा है [ले ३५१]। [५९]

भ. भुवनकीर्ति के बाद भ ज्ञानभूषण पट्टाधीश हुए। आप ने सवत् १५३४ में एक चारित्रयत्र, सवत् १५३५ में एक रत्नत्रय मूर्ति, सवत् १५४२ की ज्येष्ठ शु. ८ को एक पद्मप्रभ मूर्ति, सवत् १५४३ में एक रत्नत्रय मूर्ति, सवत् १५४४ में एक अन्य मूर्ति, तथा सवत् १५५२ की ज्येष्ठ कृ. ७ को एक सुमतिनाथ मूर्ति की स्थापना की (ले. ३५२–५७)। सवत् १५६० में आप ने तत्त्वज्ञानतरगिणी की रचना की (ले ३५८)। पट्टावली के अनुसार इन्द्रभूपाल, देवराय, मुदिपाल-राय, रामनाथराय, बोमरसराय, कलपराय तथा पाण्डुराय ने [६०]आप का सन्मान किया था [ले. ३५९]। आप के शिष्य नागचन्द्रसूरि ने विषापहारटीका की तथा गुणनन्दि ने ऋषिमडलपूजा की रचना की [ले. ३६०–६१]। [६१]

भ ज्ञानभूषण के पट्टशिष्य भ विजयकीर्ति हुए। आप ने सवत् १५५७ की माघ कृ ५ को तथा संवत् १५६० की वैशाख शु. २ को शान्तिनाथ मूर्तिया तथा सवत् १५६१ की वैशाख शु. १० को रत्नत्रय मूर्ति स्थापित की [ले ३६२–६४]। सवत् १५६८ की फाल्गुन शु.

---

५८ सकलकीर्ति के समान ब्रह्म जिनदास के ग्रन्थों की सख्या भी काफी अधिक है। इन के विषय में प परमानन्द का एक लेख अनेकान्त वर्ष ११ पृ. ३३३ पर देखिए।

५९ भ भुवनकीर्ति के शिष्य ज्ञानकीर्ति से भानपुर परम्परा का आरम्भ हुआ था इस लिए उनका वृत्तान्त अगले प्रकरण में सगृहीत किया है।

६० ये कर्णाटक के स्थानीय शासक थे किन्तु इन के पृथक् निश्चित राज्य-काल ज्ञात नहीं हो सके।

६१ ज्ञानभूषण के विषय में देखिए– प नाथूराम प्रेमी का लेख (जैन साहित्य और इतिहास पृ ५२६) तथा प परमानन्द का लेख (अनेकान्त वर्ष १३ पृ. ११९)

१० को श्रीसंघ ने आप की भगिनी आर्यिका देवश्री के लिए पद्मनन्दि पंचविंशति की प्रति लिखवाई थी [ले. ३६५]। पट्टावली के अनुसार मल्लिराय, भैरवराय और देवेन्द्रराय ने [६२] विजयकीर्ति का सन्मान किया था [ले. ३६६]।

विजयकीर्ति के शिष्य शुभचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने त्रिभुवन-कीर्ति[६३] के आग्रह से संवत् १५७३ की आश्विन शु. ५ को अमृतचन्द्र कृत समयसार कलशो पर परमाध्यात्मतरंगिणी नामक टीका लिखी।

आप ने संवत् १६०७ की वैशाख कृ. ३ को एक पचपरमेष्ठी मूर्ति स्थापित की। संवत् १६११ की भाद्रपद मे आप ने करकण्डु चरित्र लिखा। क्षेमचद्र और सुमतिकीर्ति के आग्रह से संवत् १६१३ की माघ शु. १० को आप ने हिसार में कार्तिकेयानुप्रेक्षा पर टीका लिखी। इस समय लक्ष्मीचन्द्र, वीरचन्द्र और ज्ञानभूषण भट्टारक बलात्कार गण के विभिन्न पीठो पर विराजमान थे [ले. ३६७-७०]।[६४]

सशयिवदनविदारण, षड्दर्शनप्रमाणप्रमेयानुप्रवेश, अंगपण्णत्ती तथा नन्दीश्वर कथा ये आप की अन्य रचनाएं हैं [ले. ३७१-७४]। सवत् १६०८ की भाद्रपद द्वितीया को सागवाडा मे आप ने पाण्डवपुराण की रचना पूरी की। इस में वर्णी श्रीपाल ने आप को सहायता दी थी [ले. ३७५]। इस पुराण की प्रशस्ति से उपर्युक्त रचनाओ के अतिरिक्त आप की १८ अन्य रचनाओ का पता चलता है जो इस प्रकार है— चन्द्रनाथचरित, पद्मनाथचरित, प्रद्युम्नचरित, जीवन्धरचरित, चन्दना कथा,

---

६२ ये तीनों कर्णाटक के स्थानीय शासक होंगे। इन का निश्चित राज्यकाल ज्ञात नहीं हो सका।

६३ ये सम्भवतः जेरहट शाखा के पहले भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति ही हैं।

६४ ये तीनों क्रमशः सूरत के भट्टारक हुए हैं। किन्तु एक ही समय एक ही शाखा के तीन भट्टारकों का उल्लेख होना स्वाभाविक नहीं। अतः ज्ञानभूषण से यहा अटेर शाखा के ज्ञानभूषण का अभिप्राय समझना चाहिए।

आशाधर कृत धर्मामृत की वृत्ति, तीस चौबीसी पूजा, सिद्ध पूजा, सरस्वती पूजा, चिन्तामणि पूजा, कर्मदहनविधान, गणधरवलयपूजा, पार्श्वनाथकाव्य की पजिका, पल्योपमविधान, चारित्रशुद्धि के १२३४ उपवासो का विधान, स्वरूपसम्बोधन की वृत्ति, चिन्तामणि सर्वतोभद्रव्याकरण, तथा अगप्रज्ञप्ति।

शुभचन्द्र के पट्ट पर सुमतिकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १६२२ की वैशाख शु ३ को कोई मूर्ति तथा सवत् १६२५ की पौष कृ ५ को तारगा क्षेत्र पर एक वेदी की प्रतिष्ठा की [ले. ३७६–७७]।

इन के बाद गुणकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १६३१ की फाल्गुन शु. १० को एक अजितनाथ मूर्ति तथा संवत् १६३७ की वैशाख कृ ८ को एक अन्य मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले. ३७८–७९)। आप के प्रशिष्य शकर ने सागवाडा में सवत् १६२९ की कार्तिक शु. ५ को जीवधर रास की एक प्रति लिखी [ले ३८०]। गुणकीर्ति रचित श्रेणिकपृच्छा कर्मविपाक नामक रचना उपलब्ध है [ले. ३८१]।

गुणकीर्ति के पट्ट पर वादिभूषण भट्टारक हुए। आप के शिष्य देवजी के लिए संवत् १६५२ की ज्येष्ठ कृ १० को अध्यात्मतरंगिणी की एक प्रति लिखी गई [ले ३८२]। आप ने सवत १६५५ की वैशाख शु ६ को एक वासुपूज्य मूर्ति तथा सवत् १६५६ की फाल्गुन शु. ३ को एक अन्य मूर्ति स्थापित की [ले ३८३–८४]।

वादिभूषण के बाद रामकीर्ति पट्टाधीश हुए। आप ने सवत् १६७० की फाल्गुन कृ. ५ को एक सुपार्श्व मूर्ति तथा एक पद्मप्रभ मूर्ति प्रतिष्ठित की [ले ३८५–८६]।

रामकीर्ति के पट्ट पर पद्मनन्दि भट्टारक हुए। आप ने संवत् १६८३ की माघ शु. ५ को पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की [ले. ३८७]। सवत् १६८६ की वैशाख शु ५ को शाहजहाँ के राज्य काल में शत्रु-जय सिद्धक्षेत्र पर आप ने शान्तिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा की [ले. ३८८]।

आप की आम्नाय में ब्रह्मलालजी ने संवत् १७०२ की माघ शु. ३ को भीलोडा शहर में गणितसारसग्रह की एक प्रति लिखी [ले. ३८९]।

पद्मनन्दि के पट्ट पर देवेन्द्रकीर्ति आरूढ हुए। आप की आम्नाय में ब्रह्म तेजपाल ने संवत् १७१३ की कार्तिक शु. ८ को सागवाडा में रावल पुंजराज के राज्यकाल मे[६५] शब्दार्णवचन्द्रिका की प्रति लिखी [ले. ३९०]। तथा मुनि त्रिभुवनचन्द्र ने संवत् १७२५ की कार्तिक शु. १० को गणितसारसंग्रह की प्रति लिखी [ले. ३९१]।

देवेन्द्रकीर्ति के बाद क्षेमकीर्ति पट्टाधीश हुए। आप ने संवत् १७३४ में सेटलवाड मे एक मूर्ति स्थापित की [ले. ३९२]। आप के पट्टशिष्य नरेन्द्रकीर्ति हुए। इन के शिष्य लालचंद ने संवत् १७६२ में तक्षकपुर में अष्टसहस्री की प्रति लिखी [ले. ३९३]।

नरेन्द्रकीर्ति के पट्ट पर क्रमशः विजयकीर्ति, नेमिचन्द्र और चन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। चन्द्रकीर्ति ने सवत् १८३२ में केशरियाजी तीर्थक्षेत्र में चौवीस तीर्थंकरो की चरणपादुकाए स्थापित कीं [ले. ३९४]।

चन्द्रकीर्ति के बाद रामकीर्ति और उन के बाद यश.कीर्ति भट्टारक हुए। आप के उपदेश से संवत् १८६३ की आषाढ शु. ३ को केशरियाजी मन्दिर के परकोट का निर्माण पूरा हुआ (ले. ३९५)।[६६]

---

६५ पुजराज कोई स्थानीय शासक थे। इन का निश्चित राज्यकाल ज्ञात नहीं।

६६ ब्र. शीतलप्रसादजी ने ईडर के भट्टारकों का जो वृत्तान्त दिया है उस में यशःकीर्ति के बाद क्रमशः सुरेन्द्रकीर्ति, रामकीर्ति कनककीर्ति और विजयकीर्ति का उल्लेख किया है। ईडर का हस्तलिखित शास्त्र भाण्डार बडा समृद्ध है। (दानवीर माणिकचद्र पृ. ३३)

बलात्कार गण–ईडर शाखा–कालपट

१ पद्मनन्दि [उत्तर शाखा]

२ सकलकीर्ति [सवत् १४५०–१५१०]

३ भुवनकीर्ति [सवत् १५०८–१५२७]

४ ज्ञानभूषण [सवत् १५३४–१५६० ज्ञानकीर्ति [भानपुर शाखा]

५ विजयकीर्ति [सवत् १५५७–१५६८]

६ शुभचन्द्र [सवत् १५७३–१६१३]

७ सुमतिकीर्ति [सवत् १६२२–१६२५]

८ गुणकीर्ति [सवत् १६३१–१६३९]

९ वादिभूषण [सवत् १६५२–१६५६]

१० रामकीर्ति सवत् [१६७०]

११ पद्मनन्दि [सवत् १६८३–१७०२]

१२ देवेन्द्रकीर्ति [सवत् १७१३–१७२५]

१३ क्षेमकीर्ति [सवत् १७३४]

१४ नरेन्द्रकीर्ति [सवत् १७६२]

१५ विजयकीर्ति

१६ नेमिचन्द्र

१७ चन्द्रकीर्ति [सवत् १८३२]

१८ रामकीर्ति

१९ यश कीर्ति [सवत् १८६३]

१०. बलात्कार गण–भानपुर शाखा

लेखांक ३९६ – [पुण्यास्रव कथाकोष] ज्ञानकीर्ति

संवत् १५३४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे पंचमीदिवसे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीसकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ. श्रीभुवनकीर्तिदेवास्तच्छिष्य स्थिवराचार्यश्रीज्ञानकीर्तिस्तदंते निवासी ब्रह्मदेवदासस्य पठनार्थं चीत्तुडा वास्तव्य नागद्रा ज्ञातीय श्रेष्ठि मदा भार्या पांचू··· ॥

(पा. ५,१६४)

लेखांक ३९७ –

बागड देश मे देश सुहामणा जी खडक देश है बहुत ए गुलजारी ।
जिहां रेणुपुर नग्रवी सोभता है व्हां रिषभनाथका देहरा बहुत भारी ॥
च्यार दिस के संघ ए नित्य आवे मंगल गावत है बहुत नर नारी ।
ज्ञानकीर्ति का सिष्य कुबेर बोले तीन लोकसु गत अद्भुत थारी ॥

[ना. १७]

लेखांक ३९८ – पट्टावली

जयति बोधसुकीर्तियतीश्वरो भुवनकीर्तिगुरुप्रियदीक्षितः ।
सकलशास्त्रसुशल्यनकोविदोमलदृगादिमणित्रयराजितः ॥ ३५

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५८)

लेखांक ३९९ – ऐतिहासिक पत्र रत्नकीर्ति

रत्नकीर्ति हता तेणे सं. १५३५ वर्षे श्रीनोगामे दीक्षा लीधी हती··· त्यारे रत्नकीर्तिने भट्टारक पदवी आपवानु स्थापन करी ॥

(भा. १३ पृ. ११३)

लेखांक ४०० – पट्टावली

तच्छिष्योभाद् रत्नकीर्तिः प्रवृद्धाचार्यो वर्यौदार्यगांभीर्ययुक्तः ।
ग्रंथैर्मुक्तो योवतीर्णः श्रुताब्धिं सोयं भव्यान् पातु संसारवार्द्धौ ॥ ३६

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५८)

लेखांक ४०१ – पट्टावली यशःकीर्ति

श्रीरत्नकीर्तिपदपुष्करालिरादेष्टमुख्यो यशःकीर्तिसूरि ।
पादौ भजामि सुहृच्चेष्टमूर्तिर्देदीप्यातां कौ मुनिचक्रवर्ती ॥ ३८

(उपर्युक्त)

लेखांक ४०२ – ऐतिहासिक पत्र

तार पुठे तेणानेक पाटे आचार्य यसकीर्ति नोगामे थाप्या तार पुठे केटलाक मास दिवसे अनतकीर्ति आदि लेईने जण ६३ · दक्षिणदेसे गुरुपासे आज्ञा लेईने विहार कऱ्यो ते आज दिवस सुदी दक्षिणदेशमाही रत्नकीर्तिना पाटधर कहावे छे तेणाना पाट सुदी नग्न चाल्या आवे छे ·· सं. १६१३ वर्षे जसकीर्तिये वागड माहे गाम भीलोडे काल कऱ्यो ॥

(भा. १३ पृ. ११३)

लेखांक ४०३ – पट्टावली गुणचंद्र

जीयाच्छ्रीकीर्तिकीर्तिस्फुरतरगुणयुक् सिंहनंदी यतींद्रो ।
व्याख्याव्यामोहितार्यैस्त्रिभुवनपतिभि सेव्यपादारविंद. ॥ ३९
तच्छिष्यसूरिर्गुणचंद्रनामा न्यायागमाध्यात्मगुणैकधाम ।
साहित्यसल्लक्षणशास्त्रसीम जीयाद्धरित्र्यां गुणरत्नवेश्म ॥ ४०

[जैन सिद्धात १७ पृ ५८]

लेखांक ४०४ – अनंतनाथ पूजा

संवत् षोडशत्रिंशतैष्यपलके पक्षेवदाते तिथौ
पक्षत्या गुरुवासरे पुरजिनेट् श्रीशाकमार्गे पुरे ।
श्रीमध्दुंबडवंशपद्मसविता हर्षाख्यदुर्गी वणिक्
सोयं कारितवाननतजिनसत्पूजां वरे वाग्वरे ॥
श्रीरत्नकीर्तिभगवज्जगतां वरेण्यश्चारित्ररत्ननिवहस्य बभार भारं ।
तद्दीक्षितो यतिवरो यशकीर्तिकीर्तिश्चारित्ररजितजनोद्वाहितासुकीर्ति ॥
तच्छिष्यो गुणचद्रसूरिरभवच्चारित्रचेतोहर–
स्तेनेद वरपूजनं जिनवरसनंतस्य युक्त्यारचि ॥

(हि. १४ पृ. ९६)

लेखांक ४०५ – ऐतिहासिक पत्र

तेणानो पाटे गाम सावले······समस्त संघ मिली आचार्य गुणचंद्र स्थापना करवानी···सं. १६५३ वर्षे आचार्यश्रीगुणचंद्रजी सागवाडे काल कर्यो ॥

[भा. १३ पृ. ११३]

लेखांक ४०६ – (षडावश्यक)

संवत १६३९ वर्षे मार्गसिर शुदि १ शुक्रे जेष्ठा नक्षत्रे बागडदेसे सागवाडानगरे श्रीसंभवनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे ·····श्रीज्ञानकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्रीरत्नकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्रीयशकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्रीगुणचंद्रेणेदं पुस्तकं षडावश्यकस्य स्वशिष्य ब्र. डुंगरा पठनार्थं दत्तं ॥

[वीर २ पृ. ४७३]

लेखांक ४०७ – पट्टावली   सकलचंद्र

श्रीमूलसंघे गुणवान् गुणज्ञः श्रीवंशश्रीमान् गुणचंद्रसूरी ।
तत्पट्टधारी जिनचंद्रदेवः तस्येह पट्टे सकलेंदुसूरी ॥ ४५

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५९)

लेखांक ४०८ – भक्तामरवृत्ति

सकलेंदोर्गुरोर्भ्रातुर्यस्येति वर्णिनः सतः ।
पादस्नेहेन सिद्धेयं वृत्तिः सारसमुच्चया ॥
सप्तषष्ठ्यंकिते वर्षे षोडशाख्ये हि संवते ।
आषाढश्वेतपक्षस्य पंचम्यां बुधवारके ॥
ग्रीवापुरे महीसिंधोस्तटभागं समाश्रिते ।
प्रोत्तुंगदुर्गसंयुक्ते श्रीचंद्रप्रभसद्मनि ॥
वर्णिनः कर्मसीनाम्नो वचनान्मयकारचि ।
भक्तामरस्य सद्वृत्ति. रायमल्लेन वर्णिना ॥

[ना. ४६]

लेखांक ४०९ – ऐतिहासिक पत्र

गाम नोगामे लघु साजनामो संघ मलीनो आचार्य सकलचंद्र पाट थाप्या सं १६७० वर्षे आसोज सुदी ८ दिवसे आचार्य सकलचद्र सागवाडे समाधी मरण कर्‍यो ॥

(भा. १३ पृ ११३)

लेखांक ४१० – जिनचौत्रीसी रत्नचंद्र

संवत सोल चोत्तरे कवित रच्या संधारे पंचमी शुकर वारे
ज्येष्ट वदि जाण रे ।
मूलसंघ गुणचंद्र जिनेंदु सकलचंद्र भट्टारक रत्नचंद्र
वुद्धि गच्छ भाण रे ॥
त्रिपुरो पुर विराज खेतु नेतु अमराज मामा सो मोलख सज
त्रिपुरो वखाण रे ।
पीथो छाजू ताराचद छीतर मरी वुनंद नाकु खेतु देव
छंद एहां के कल्याण रे ॥ २५

(प. १०)

लेखांक ४११ – १ मूर्ति

सं १६७६ मूलसघे भ रत्नचंद्रोपदेशेन सीखप्प पा भाणिक भार्या पाचली सुत पदारथ भार्या दत्ता सुत नोवा हेमा रत्ना प्रणमति ॥

(भा. ७ पृ. १४)

लेखांक ४१२ – पुष्पांजलि पूजा

त्रिधुवसुरसद्राकौ प्रयुक्तैक्षतोर्चा
शरदि नभसि मासे रत्नचद्रैश्चतुर्थ्यां ।
धवलभृगुसुवारे सागवाडे युस्व.
जिनवृषभगणादिश्रावकादेशतोऽयात् ॥

(ना. ८७)

लेखांक ४१३- पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १६९२ वर्षे वैसाख सुदि ५ गुरु श्रीमूलसंघे भ. श्रीरत्नचंद्रोपदेशात् घोराया गोत्रे सं. रामा भार्या सोनादे ·· ॥

(प. १)

लेखांक ४१४ - ऐतिहासिक पत्र

त्यार पुठे सं. १६७० वैशाख सुदी ५ दिवसे श्रीसागवाडे समस्त संघ मलीने पाट आचार्यनु आपता हता देहरा जुना मध्ये तेणे समे बडे साजने जती तथा श्रावके राजवट करी जे हवे आचार्यनो पाट आपवा देशुं नही ·· भ. रतनचंद्र जी नता थई फणा महोत्सवसु वीहार कर्यो त्यार पुठे सं. १६९९ वर्षे जेठ सुदी ५ सोमवार भ. रत्नचंद्र जीवता भ. हर्षचंद्र थाप्या गाम परतापोरे त्यार पुठे सं. १७०७ भ. रत्नचंद्रजी वैशाख वदी ४ ते नोगामे परोक्ष थया ॥

(भा. १३ पृ. ११३)

लेखांक ४१५ - पट्टावली

श्रीमूलसंघेजनि रत्नचंद्रो भट्टारकाणामधिपः कृतज्ञः ।
श्रीहेमकीर्तेर्वरलब्धपट्टः संस्थापितश्चामरजित्प्रमुख्यैः ॥ ४९

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५९)

लेखांक ४१६ - पट्टावली　　हर्षचंद्र

पट्टे तदीये जयताज्जिताक्षो भट्टारको हर्षसुचंद्रनाम ।
षट्शास्त्रवेत्ता गुणरत्नवेश्म खंडेरवालान्वयजो व्रतात्मा ॥ ५१

(उपर्युक्त)

लेखांक ४१७ - ऐतिहासिक पत्र　　शुभचंद्र

त्यार पुठे शुभचंद्र थाप्या सं १७२३ वैशाख वदी ५ श्रीघांटोल भ. शुभचंद्र थाप्या सं. १७४९ वर्षे आश्विज वदी १३ गाम मेलुडे भ. शुभचंद्र परोक्ष थया ॥

(भा. १३ पृ. ११३)

लेखांक ४१८ – पट्टावली

श्रीहर्षचंद्रस्य मुने' सुपट्टे जिनागमात्प्राप्तसमस्ततत्त्वः ।
शुद्धेन शीलेन विराजमानो भट्टारक श्रीशुभचंद्र आसीत् ॥ ५२

[जैन सिद्धात १७ पृ. ५९]

लेखांक ४१९ – पट्टावली अमरचंद्र

ज्ञानेश्वरस्य शुभचंद्रमुनीश्वरस्य सिंहासनेमरनरेश्वरवंद्यमाने ।
सर्वागमार्थसुमहार्णवपारगामी दिव्यत्यसौ अमरचंद्रमहामुनींद्र' ॥५३

(उपर्युक्त)

लेखांक ४२० – ऐतिहासिक पत्र

सं १७४८ वर्षे माहा शुदी १० सोमवारे गाम मेलुडे भ. अमरचंद्रजी गाम घाटयोल थाप्या ॥

(भा. १३ पृ ११३)

लेखांक ४२१ – पट्टावली रत्नचंद्र

मणिहर्षशुभेंदूनां पट्टेभूदमरेंदुजित् ।
तत्पादांभोजहंसोस्ति रत्नचद्रो यतीश्वरः ॥ ५५

(जैन सिद्धात १७ पृ. ६०)

लेखांक ४२२ – मंदिर लेख

ॐ स्वस्ति विक्रमादित्यसमयातीत संवत् १७७४ वर्षे शाके १६३९ प्रवर्तमाने माह सुदी १३ रवि श्रीदेवगढ नगरे महाराजाधिराज महारावत श्रीपृथवीसिंहजी विजयराज्ये कुमर श्रीपहाडसिंघ विराजमाने श्रीमूलसघे बलात्कारगणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ रत्नचद्र तत्पट्टे भ हर्षचद्र तत्पट्टे भ. शुभचद्र तत्पट्टे भ श्रीअमरचद्र तत्पट्टे भ श्रीरत्नचंद्रगुरूपदेशात् श्रीमत् हूवडज्ञातीय मत्रीश्वरगोत्रे सघवी वर्षावत भार्या नानी · श्रीमल्लिनाथ प्रासाद प्रतिष्ठा महामहोत्सवै सह कराविता ॥

[देवगढ, दा पृ. ६८]

लेखांक ४२३ – ऐतिहासिक पत्र

सं. १७८६ वर्षे माघ वदी ६ गाम कोठे देश हाडोली माहे भ रत्न-चंद्रजी काल प्राप्त हुवा जी ॥

[भा. १३ पृ. ११३]

देवचंद्र

लेखांक ४२४ – ऐतिहासिक पत्र

स. १७८७ वैशाख शुदी १३ भ. देवचंद्रजी गाम भाणपुर स्थाप्या त्यार पुठे सं. १८०५ वर्षे गाम जांबूचरे भ. देवचंद्रजी माघ वदी ७ दिने काल प्राप्त थया जी ॥

पाट खाली छे पण श्रावक धर्मनी थापना दृढ राखी छे ··कागद लखाववोजी सं. १८०५ वर्ष जेठ वदी ८ शनौ शोभादीने ॥

(उपर्युक्त)

बलात्कार गण – भानपुर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. ज्ञानकीर्ति से हुआ। आप भ. भुवनकीर्ति के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त ईडर शाखामें आ चुका है। आप के शिष्य ब्रह्म देवदास के लिए सवत् १५३४ की फाल्गुन शु. ५ को पुण्यास्रव कथाकोष की एक प्रति लिखी गई (ले. ३९६)। आप के दूसरे शिष्य कुबेर ने रेणुपुर[६७] के ऋषभनाथ मन्दिर की यात्रा का उल्लेख किया है (ले. ३९७)।

ज्ञानकीर्ति के बाद रत्नकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १५३५ नोगाम में दीक्षा ली थी (ले. ३९९–४००)। आप के शिष्यो से अनन्तकीर्ति आदि ६३ लोग दक्षिण में गये थे जिन की परम्परा चलती रही (ले. ४०२)।

रत्नकीर्ति के बाद यश·कीर्ति नोगाम में पट्टाभिषिक्त हुए। आप का स्वर्गवास भीलोडा में सवत् १६१३ में हुआ (ले ४०२)।

यशःकीर्ति के बाद सिंहनन्दी[६८] तथा उन के बाद गुणचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने सवत् १६३० में सागवाडा में हर्षसाह की प्रेरणा से अनन्तनाथपूजा की रचना की (ले. ४०४)। आप का पट्टाभिषेक सावला गाव में तथा स्वर्गवास सागवाडा में सवत् १६५३ में हुआ (ले. ४०५)। सवत १६३९ की मार्गशीर्ष शु. १ को पडावश्यक की एक प्रति आप ने अपने शिष्य डुगरा को दी थी (ले ४०६)।

गुणचन्द्र के बाद जिनचन्द्र और उन के पश्चात् सकलचन्द्र पट्टाधीश हुए। इन के बन्धु यश की कृपा से ब्रह्म रायमल्ल ने सवत् १६६७ की आषाढ शु. ५ को ग्रीवापुर[६९] में भक्तामरवृत्ति की रचना की (ले. ४०८)। सकलचन्द्र का पट्टाभिषेक नोगाम में और स्वर्गवास सागवाडा में सवत् १६७० में हुआ (ले. ४०९)।

---

६७ यह धूलिया का सस्कृत रूप है। इसी का प्रसिद्ध नाम केशरियाजी है।

६८ सम्भवतः इन्ही का उल्लेख ब्रह्म नेमिदत्त और ब्रह्म श्रुतसागर ने किया है (ले. ४६६, ४७२)।

६९ यह सम्भवतः मानपुर का सस्कृत रूपान्तर है जो अमेरेली जिले में है।

इन के बाद रत्नचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने संवत् १६७४ की ज्येष्ठ कृ. ५ को जिन चौवीसी की रचना त्रिपुरा शहर में की। आप ने सवत् १६७६ में कोई मूर्ति स्थापित की तथा सवत् १६८१ मे सागवाडा मे पुष्पाजलि पूजा लिखी (ले. ४१०–१२)। संवत् १६९२ की वैशाख शु. ५ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ४१३)। आप का पट्टाभिषेक संवत् १६७० मे सागवाडा मे हुआ उस समय अन्य शाखा के साधुओं ने उस का विरोध करने का प्रयास किया था। आप का स्वर्गवास सवत् १७०७ मे नोगाम में हुआ (ले. ४१४)। आप का पट्टाभिषेक भट्टारक हेमकीर्ति[70] ने किया था (ले. ४१५)।

रत्नचन्द्र ने सवत् १६९९ की ज्येष्ठ शु. ५ को अपने पट्ट पर हर्षचन्द्र की स्थापना कर दी थी (ले. ४१४)। ये खण्डेलवाल जाति के थे (ले. ४१६)।

इन के पट्ट पर शुभचन्द्र सवत् १७२३ की वैशाख कृ. ५ को घाटोल ग्राम मे आरूढ हुए। इन का स्वर्गवास मेलुडा ग्राम में संवत् १७४९ की आश्विन कृ. १३ को हुआ (ले. ४१७ -१८)। इन के बाद सवत् १७४८ की माघ शु. १० को मेलुडा में अमरचन्द्र का पट्टाभिषेक हुआ (ले. ४२०)।

अमरचन्द्र के पट्ट पर रत्नचद्र आरूढ हुए। इन के उपदेश से सवत् १७७४ की माघ शु. १३ को देवगढ में रावत पृथ्वीसिंह के राज्यकाल मे[71] मल्लिनाथ मन्दिर का निर्माण सघवी वर्षावत ने किया (ले. ४२२)। रत्नचन्द्र का स्वर्गवास कोठा में संवत् १७८६ की माघ कृ.६ को हुआ (ले.४२३)।

रत्नचन्द्र के पट्ट पर संवत् १७८७ की वैशाख शु. १३ को भानपुर मे भ. देवचन्द्र का अभिषेक हुआ। इन का स्वर्गवास जाम्बूचर ग्राम मे संवत् १८०५ की माघ कृ. ७ को हुआ।

---

७० संवत् १६७० में कौन हेमकीर्ति भट्टारक थे यह हमें स्पष्ट नही हो सका।

७१ बुन्देले छत्रसाल के ये पौत्र थे। इन के पुत्र पहाडसिंह की मृत्यु सन १७६६ में हुई थी।

बलात्कार गण–भानपुर शाखा–काल पट

१ भुवनकीर्ति (ईडर शाखा)
|
२ ज्ञानकीर्ति (सवत् १५३४)
|
३ रत्नकीर्ति (सवत् १५३५)
|
४ यश कीर्ति (सवत् १६१३)
|
५ गुणचन्द्र (सवत् १६३०–१६५३)
|
६ जिनचन्द्र
|
७ सकलचन्द्र (सवत् १६६७–१६७०)
|
८ रत्नचन्द्र (सवत् १६७०–१७०७)
|
९ हर्षचन्द्र (सवत् १६९९)
|
१० शुभचन्द्र (सवत् १७२३–१७४९)
|
११ अमरचन्द्र (सवत् १७४८)
|
१२ रत्नचन्द्र (सवत् १७७४–१७८६)
|
१३ देवचन्द्र (सवत् १७८७–१८०५)

---

११. बलात्कार गण – सूरत शाखा

लेखांक ४२५ – १ मूर्ति देवेंद्रकीर्ति

संवत् १४९३ शाके १३५८ वर्षे वैशाख वदि ५ गुरौ दिने मूलनक्षत्रे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीप्रभाचंद्र-देवाः तत्पट्टे वादिवादीन्द्र भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे श्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवाः पौरपाटान्वये अष्टशाखे आहारदानदानेश्वर सिघई लक्ष्मण तस्य भार्या अखयसिरी कुक्षिसमुत्पन्न अर्जुन··· ॥

[देवगढ, अ. ३ पृ. ४४५]

लेखांक ४२६ – पट्टावली

त्रैविद्यविद्वज्जनशिखंडमंडनीयभवत्कायधरकमलयुगल–अवंतिदेशप्रतिष्ठो-पदेशक–सप्तशतकुटुंबरत्नाकरजाति-सुश्रावकस्थापक–श्रीदेवेंद्रकीर्तिशुभमूर्ति-भट्टारकाणाम् ॥

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५०)

लेखांक ४२७ – चौवीसी मूर्ति

सं. १४९९ वर्षे वै. सुदी २ सोमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे मुनि-देवेंद्रकीर्ति तत्शिष्य श्रीविद्यानंदीदेवा उपदेशात् श्रीहुंबडवंश शाह खेता भार्या रुडी ··एतेषां मध्ये राजा भग्नी राणी श्रेया चतुर्विंशतिका कारापिता ॥

(सूरत, दा. पृ. ५४)

लेखांक ४२८ – मेरु मूर्ति

सं. १५१३ वर्षे वैशाख सुदी १० बुधे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भ. श्रीप्रभाचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदी तत् सिष्य श्रीदेवेंद्र-कीर्ति दीक्षिताचार्य श्रीविद्यानंदि गुरूपदेशात् गांधार वास्तव्य हुंबडज्ञातीय समुस्तश्रीसंघेन कारापित मेरु शिखरा कल्याण भूयात् ॥

[सूरत, दा. पृ. ४३]

लेखांक ४२९ – चौवीसी मूर्ति

सं १५१३ वर्षे वैशाख सुदी १० बु. आचार्यश्रीदेवेंद्रकीर्तिशिष्य श्रीविद्यानंदी देवादेशात् काष्ठासघे हुमड वशे श्रेष्ठी काना भार्या वारु · स्वश्रेयोय श्रीजिनविंव कारापितम् श्रीघोघा वेलातट वास्तव्य श्रीमूलसंघीय अर्जिका सयमश्रीश्रेयार्थम् ॥

(सूरत, दा. पृ. ५०)

लेखांक ४३० – १ मूर्ति

सवत १५१८ वर्षे श्रीमूलसघे आचार्यश्रीविद्यानंदिगुरूपदेशात् सिंहपुराज्ञाति श्रेष्ठी गाई · ॥

(बाळापुर, अ. ४ पृ. ५०२)

लेखांक ४३१ – १ मूर्ति

(सं) १५१८ माघ सु ५ बुधवार देवेंद्रकीर्ति शिष्य विद्यानदि उपदेशथी हूमडवसे समघर भार्या जीवीना पुत्री नवकरण · ॥

(रादेर, दा. पृ. २९)

लेखांक ४३२ – चौवीसी मूर्ति

स १५२१ वर्षे वैसाख वदि २ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीविद्यानदिगुरूपदेशात् श्रीराइकवाल ज्ञातीय ··श्रीचद्रप्रभ चतुर्विंशति नित्य प्रणमंति ॥

(ना. ३७)

लेखांक ४३३ – १ मूर्ति

(स.) १५३७ वैसाख सुदी १२ देवेंद्रकीर्तिपदे विद्यानदि हूमड ज्ञातीय श्रेष्ठी चापा ॥

(रादेर, दा. पृ. २९)

लेखांक ४३४ – सुदर्शनचरित

वंदे देवेंद्रकीर्तिं च सूरिवर्यं दयानिधिं ।
मद्‌गुरुर्यो विशेषेण दीक्षालक्ष्मीप्रसादकृत् ॥

तमहं भक्तितो वंदे विद्यानंदी सुसेवकः ।
ग्रंथसंख्या १३६२ संवत १५९१ वर्षे आषाढमासे शुक्लपक्षे लिखितं ॥

[म. प्रा. पृ ७६०]

लेखांक ४३५ – [पंचास्तिकाय]

स्वस्ति श्रीमूलसंघे हुंवड ज्ञातीय सा. कान्हा भार्या रामति ··एतेषां मध्ये सा. लखराजेन मोचयित्वा पंचास्तिकायपुस्तकं श्रीविद्यानंदिने ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं दत्तं शुभं भवतु ।

(का. ४१२)

लेखांक ४३६ – हनुमच्चरित्र   अजित

जैनेंद्रशासनसुधारसपानपुष्टो देवेंद्रकीर्तियतिनायकनैष्ठिकात्मा ।
तच्छिष्यसयमधरेण चरित्रमेतत् सृष्टं समीरणसुतस्य महर्धिकस्य ॥ ९१
गोलाशृंगारवंशे नभसि दिनमणिर्वीरसिंहो विपश्चित् ।
भार्या वीधा प्रतीता तनुरुहविदितो ब्रह्मदीक्षाश्रितोभूत् ॥
तेनोच्चैरेष ग्रंथ. कृत इति सुतरां शैलराजस्य सूरेः ।
श्रीविद्यानंदिदेशात् सुकृतविधिवशात् सर्वसिद्धिप्रसिद्धयै ॥ ९३
इदं श्रीशैलराजस्य चरितं दुरितापहं ।
रचितं भृगुकच्छे च श्रीनेमिजिनमंदिरे ॥ ९४
प्रमाणमस्य ग्रंथस्य द्विसहस्रमितं बुधैः ।
श्लोकानामिह मन्तव्यं हनुमच्चरिते शुभे ॥ ९७

(भा. ग्र. पृ. ७)

लेखांक ४३७ – धनकुमारचरित   गुणभद्र

संवत १५०१ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे राकाया तिथौ बुधे अद्येह भृगुकच्छपत्तने श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छांभोजदिनमणि भ. श्रीपद्मनंदिदेवास्तच्छिष्यो विख्यातकीर्तिमुनिश्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवस्तच्छिष्यः सकलकलोद्भवमुनिश्रीविद्यानंदिदेवस्तच्छिष्यब्रह्मचारिछाहडेन स्वकर्मक्षयार्थं श्रीधनकुमारचरितं लिखापितं ॥

[म. प्रा. पृ. ७३४]

लेखांक ४३८ – १ मूर्ति

सवत १५०५ वर्षे श्रीमूलसंघे भ पद्मनदिदेवा शिष्य देवेद्रकीर्ति तत्शिष्या: विद्यानंदि शिष्य ब्रह्म धर्मपाल उपदेशात् पल्लीवालज्ञातीय स. राना भार्या रानी सुत पारिसा भार्या हर्ष प्रणमति ॥

[सिंटी, अ. ४ पृ. ५०२]

लेखांक ४३९ – पट्टावली

तत्पट्टोदयसूर्य–आचार्यवर्य–नवविधब्रह्मचर्यपवित्र–चर्यामंदिर–राजाधिराजमहामंडलेश्वरवज्रांग– गग–जयसिह – व्याघ्रनरेंद्रादिपूजितपादपद्मानां अष्टशाखा–प्राग्वाटवंशावतंसाना पड्भापाकविचक्रवर्ति–भुवनतलव्याप्त–विशदकीर्ति – विश्वविद्याप्रसादसूत्रधार – सद्ब्रह्मचारिशिष्यवरसूरिश्रीश्रुत–सागरसेवितचरणसरोजानां श्रीजिनयात्राप्रासादोद्धरणोपदेशनैकजीवप्रति–बोधकानां श्रीसम्मेदगिरिचंपापुरिपावापुरीऊर्जयतगिरीअक्षयवड आदीश्वर–दीक्षासर्वसिद्धक्षेत्रकृतयात्राणा श्रीसहस्रकूटजिनविंबोपदेशक–हरिराजकुलोद्योतकराणां श्रीविद्यानदीपरमाराध्यस्वामिभट्टारकाणाम् ॥

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५१)

लेखांक ४४० – मेघमाला व्रत कथा

सत्य वाचि हृदि स्मरक्षयमतिर्मोक्षाभिलापोंतरे ।
श्रोत्रं साधुजनोक्तिषु प्रतिदिनं सर्वोपकार: करे ॥
यस्यानदनिधेर्वभूव स विभुर्विद्यादिनंदी मुनि. ।
ससेव्य· श्रुतसागरेण विदुषा भूयात्सतां संपदे ॥ ५१

(से. १९)

लेखांक ४४१ – सप्तपरमस्थान कथा

सद्भट्टभट्टारकवर्णनीय चेतो यतीनामभिवदनीय: ।
विद्यादिनदी गुणभृत्तदीय सम्यग्जयत्येष गुरुर्मदीय ॥ १६२
मया तदादेशवशेन धीमता प्रकाशितेय महता बृहत्कथा ।
पिवंतु ता कर्णसुधा बुधोत्तमा महानुभावा श्रुतसागराश्रिता ॥ १६३

(से. २०)

लेखांक ४४२ – ज्येष्ठ जिनवर कथा

आसीदसीममहिमा मुनिपद्मनंदी देवेंद्रकीर्तिर्गुरुरस्य पदे सदेकः।
तत्पट्टविष्णुपदपूर्णशशांकमूर्तिः विद्यादिनंदिगुरुरत्र पवित्रचित्तः॥ ७५
गुणरत्नभृतो वचोमृताढ्यः स्याद्वादोर्मिसहस्रशोभितात्मा।
श्रुतसागर इत्यमुष्य शिष्यः स्वाख्यानं रचयांचकार सूरिः॥ ७६
अग्रोतकान्वयशिरोमुकुटायमानः संघाधिनाथविमल्लूरिति पुण्यमूर्तिः।
भार्यास्य धर्ममहती बृहतीति नाम्ना सासूत सूनुमनवद्यमहेंद्रदत्तम्॥ ७७
वैराग्यभावितमनाः स जिनूहृदिष्टः श्रीमूलसंघगुणरत्नविभूषणोभूत्।
देशव्रतिष्वतितरां व्रतशोभितात्मा संसारसौख्यविमुखः सुतपोनिधिर्वा॥
पुत्रोस्य लक्ष्मण इति प्रणतीर्गुरूणां कुर्वंश्चकास्ति विदुषां धुरि वर्णनीयः।
अभ्यर्थ्य कारितमिद श्रुतसागराख्यमाख्यानकं चिरतर शुभद समस्तु॥७९

[से. १]

लेखांक ४४३ – रविवार व्रतकथा

भट्टारकघटामध्ये यत्प्रतापो विराजते।
तारास्विव रवेः श्रीदो विद्यानंदीश्वरोस्ति मे॥ १६३
प्रमाणलक्षणच्छंदोलकारमणिमंडितः।
पंडितस्तस्य शिष्योभूत् श्रुतरत्नाकराभिधः॥ १६४
गुरोरनुज्ञामधिगम्य धीधनः चकार संसारसमुद्रतारकं।
स पार्श्वनाथव्रतसत्कथानकं सतां नितांत श्रुतसागराभिधः॥१६५

(से. २)

लेखांक ४४४ – चंदनषष्ठी कथा

स्वस्ति श्रीमूलसघे भवदमरनुतः पद्मनंदी मुनींद्रः।
शिष्यो देवेंद्रकीतिर्लसदमलतपा भूरिभट्टारकेज्यः॥
श्रीविद्यानंदिदेवस्तदनु मनुजराजार्च्यपत्पद्मयुग्मः।
तच्छिष्येणारचीदं श्रुतजलनिधिना शास्त्रमानंदहेतु॥ ९६

(से. ४)

लेखांक ४४५ – आकाशपंचमी कथा

वाचां लीलावतीनां निधिरमलतप संयमोदन्वदिंदुः ।
श्रीविद्यानंदिसूरिर्जयति जगति नाकौकसां पूज्यपादः ॥ १०३
तस्य श्रीश्रुतसागरेण विदुषां वर्येण सौंदर्यवत् ।
शिष्येणारचि सत्कथानकमिद पीयूपवर्षोपमम् ॥ १०४

[से. ६]

लेखांक ४४६ – पुष्पांजलि कथा

स्वस्ति श्रीमति मूलसंघतिलके गच्छेगिमूर्छेच्छिवे ।
भारत्या· परमार्थपंडिततनुतो विद्यादिनदी गुरु. ॥
तत्पादांबुजयुगममत्तमधुलिट् चक्रे न वक्राशय ।
सद्बेधा श्रुतसागर. शुभमुपाख्यान स्तुतस्तार्किकैः ॥ ७१

[से. ९]

लेखांक ४४७ – निर्दुःख सप्तमी कथा

सकलभुवनभास्वद्भूषणं भव्यसेव्य· ।
समजनि कृतिविद्यानंदिनामा मुनींद्रः ॥
श्रुतसमुपपदाद्य. सागरस्तस्य सिद्धयै ।
शुचिविधिमिममेष द्योतयामास शिष्यः ॥ ४३

(से. १०)

लेखांक ४४८ – श्रवणद्वादशी कथा

विद्यानदिमुनींद्रचद्रचरणांभोजातपुष्पधय· ।
शब्दज्ञ श्रुतसागरो यतिवरोसौ चारु चक्रे कथाम् ॥ ४०

(से. १३)

लेखांक ४४९ – रत्नत्रय कथा

सर्वज्ञसारगुणरत्नविभूषणोसौ विद्यादिनंदिगुरुरुद्धतरप्रसिद्धि ।
शिष्येण तस्य विदुषा श्रुतसागरेण रत्नत्रयस्य सुकथा कथितात्मसिद्धयै ॥ ८२

(से. १४)

लेखांक ४५० – षोडशकारण कथा

श्रीमूलसंघे विबुधप्रपूज्ये श्रीकुंदकुंदान्वय उत्तमेस्मिन् ।
विद्यादिनंदी भगवान् बभूव स्ववृत्तसारश्रुतसारमाप्तः ॥ ६७
तत्पादभक्तः श्रुतसागराह्वो देशव्रती संयमिनां वरेण्यः ।
कल्याणकीर्तेर्मुहुराग्रहेण कथामिमां चारु चकार सिद्धयै ॥ ६८

[से. ३]

लेखांक ४५१ – मुक्तावली कथा

विद्यानंदिमुनीश्वरो विजयते चारित्ररत्नाकरः ॥ ७७
...तच्छिष्य. श्रुतसागरो विजयते मुक्तावलीकृद्यतिः ॥ ७८
जातो हुंबडवंशमंडनमणिः श्रीगायियाख्यः कृती ।
कांताशीरिति तस्य सद्गुरुमुखोद्भूतेव कल्याणकृत् ॥
पुत्रोस्यां मतिसागरो मुनिरभूद् भव्यौघसंबोधकः ।
सोयं कारयति स्म निर्मलतपाः शास्त्रं चिरं नंदतु ॥ ७९

[से. ११]

लेखांक ४५२ – मेरुपंक्ति कथा

विद्यादिनंदिगुरुरुद्धगुणोमरेंद्र–
संसेवितो यतिवरःश्रुतसागरेड्य. ॥ ४३
तद्भक्ता जिनधर्मरक्तधिषणा श्रीलक्ष्मराजात्मजा ।
सत्पुण्यैरजितोदरे गुणवती सौवर्णिकाभूत् सुता ॥
संप्रार्थ्य श्रुतसागरं यतिवरं श्रीमेरुपंक्तेः कथां ।
साध्वी कारयति स्म सा जिनपदांभोजालिनी नंदतु ॥ ४४

[से. १७]

लेखांक ४५३ – लक्षणपंक्ति कथा

गंधारनगरे रम्ये लखराजाजितात्मजा ।
श्रीराजभगिनी माता मुनीनां स्वर्णिका भवेत् ॥ ३८
मृगांकश्रेष्ठिनः पुत्री स्वसा जीवकसंज्ञिनः ।

ढोसीतिकी सुता लोके रता सद्धर्मकर्मणि ॥ ३९
कारयामास तुग्भव्य श्रीराज करणश्रिय ।
प्रेरिको भवति स्मात्र चिरं जीवतु तत्त्रयम ॥ ४१
देवेंद्रकीर्तिगुरुपट्टसमुद्रचंद्रो विद्यादिनंदिसुदिगंबर उत्तमश्री ।
तत्पादपद्ममधुप. श्रुतसागरोय ब्रह्मव्रती तप इदं प्रकटीचकार ॥ ४२

[शे. १८]

लेखांक ४५४ – औदार्यचिंतामणि व्याकरण

अथ प्रणम्य सर्वज्ञं विद्यानद्यास्पदप्रदम ।
पूज्यपादं प्रवक्ष्यामि प्राकृतव्याकृतिं मनाम् ॥
···समन्तभद्रैरपि पूज्यपादैः कलंकमुक्तैरकलंकदेवैः ।
यदुक्तमप्राकृतमर्थसार तत्प्राकृतं च श्रुतसागरेण ॥

(हि. १५ पृ. १५४)

लेखांक ४५५ – तत्त्वत्रयप्रकाशिका

आचार्यैरिह शुद्धतत्त्वमतिभि. श्रीसिंहनंद्याह्वयै ।
संप्रार्थ्य श्रुतसागर कृतवर भाष्यं शुभं कारितं ॥
गद्याना गुणवत् प्रियं गुणवतो ज्ञानार्णवस्यांतरे ।
विद्यानंदिगुरुप्रसादजनित देयादमेयं सुखम् ॥

[हि १५ पृ. २२२]

लेखांक ४५६ – महाभिषेकटीका

श्रीविद्यानन्दिगुरोर्बुद्धिगुरो पादपंकजभ्रमर' ।
श्रीश्रुतसागर इति देशव्रतितिलकष्टीकते स्मेदं ॥

[षट्प्राभृतादिसंग्रह, प्रस्तावना पृ. ६]

लेखांक ४५७ – श्रुतस्कंधपूजा

सुदेवेंद्रकीर्तिश्च विद्यादिनदी गरीयान्गुरुर्मेर्हदादिप्रवंदी ।
तयोर्विद्धि मा मूलसघे कुमारं श्रुतस्कधमीडे त्रिलोकैकसारम् ॥
सम्यक्त्वसुरत्न सद्व्रतयत्न सकलजतुकरुणाकरणम् ।

श्रुतसागरमेतं भजत समेतं निखिलजने परितः शरणम् ॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. ४१२)

लेखांक ४५८ – पद्मावती मूर्ति मल्लिभूषण

सं. १५४४ वर्षे वैशाख शुदी ३ सोमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे भ. श्रीविद्यानंदिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीमल्लीभूषण श्रीस्तंभतीर्थे हुंवड ज्ञातिय श्रेष्ठी चांपा भार्या रूपिणी तत्पुत्री श्रीआर्जिका रत्नसिरी क्षुल्लिका जिनमती श्रीविद्यानंदीदीक्षिता आर्जिका कल्याणसिरी तत्त्वल्ली अग्रोतका ज्ञातो साह देवा भार्या नारिंगदे पुत्री जिनमती नरसही कारापिता प्रणमति श्रेयार्थम् ॥

(सूरत, दा. पृ ४३)

लेखांक ४५९ – (पंचास्तिकाय)

भ. श्रीविद्यानंदिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीमल्लिभूषणेन आचार्यश्रीअमरकीर्तये प्रदत्तं ॥

[का ४१२]

लेखांक ४६० – [सावयधम्मदोहा पंजिका]

इति उपासकाचारे आचार्यश्रीलक्ष्मीचद्रविरचिते दोहकसूत्राणि समाप्तानि। स्वस्ति संवत् १५५५ वर्षे कार्तिक सु १५ सोमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे अभयविद्यानंदिपट्टे मल्लिभूषण तत्शिष्य पं लक्ष्मणपठनार्थ दोहा श्रावकाचार ॥

(सावयधम्मदोहा प्र. पृ. ११)

लेखांक ४६१ – पट्टावली

तत्पट्टोदयाचलबालभास्कर–प्रवरपरवादिगजयूथकेसरि–मंडपगिरिमंत्रवादसमस्याप्तचंद्रपूर्णविकटवादि–गोपाचलदुर्गमेघाकर्षकभाविकजन-सस्यामृतवाणिवर्षण–सुरेंद्रनागेंद्रमृगेंद्रादिसेवितचरणारविंदानां ग्यासदीनसभामध्य–प्राप्तसन्मान–पद्मावत्युपासकानां श्रीमल्लिभूषणभट्टारकवर्याणाम् ॥

(जैन सिद्धान्त १७ पृ ५१)

लेखांक ४६२ – अक्षयनिधान कथा

गच्छे श्रीमति मूलसघतिलके सारस्वते विश्रुते ।
विद्वन्मान्यतमप्रसह्यसुगुणे स्वर्गापवर्गप्रदे ॥
विद्यानदिगुरुर्बभूव भविकानंदी सतां संमतः ।
तत्पट्टे मुनिमल्लिभूषणगुरुर्भट्टारको नंदतु ॥ ८७
तर्कव्याकरणप्रवीणमतिना तस्योपदेशाहित–
स्वांतेन श्रुतसागरेण यतिना तेनामुना निर्मितं ।
श्रेयोधाम निकाममक्षयनिधिस्वेष्टव्रत धीमता
कल्याणप्रदमस्तु शास्तु मतिमानेतद्विदा संमुदे ॥ ८८

(से. २२)

लेखांक ४६३ – पल्यविधान कथा

तत्पादपंकजरजोरचितोत्तमांग
श्रीमल्लिभूषणगुरुर्विदुषां वरेण्य ॥ २४०
सर्वज्ञशासनमहामणिमडितेन तस्योपदेशवशिना श्रुतसागरेण ।
देशव्रतिप्रभुतरेण कथेयमुक्ता सिद्धि ददातु गुरुभक्तिविभावितेभ्य ॥ २४१
श्रीभानुभूपतिभुजासिजलप्रवाहनिर्मग्नशत्रुकुलजाततत्प्रभावे ।
सद्बुध्यहंब्रहकुले बृहतीलदुर्गे श्रीभोजराज इति मन्त्रिवरो वभूव ॥ २४२
भार्यास्य सा विनयदेव्यभिधा सुधौघसोद्गारवाक्कमलिकांतमुखी सखीव ॥
सासूत पूतगुणरत्नविभूषितांगं श्रीकर्मसिंहमिति पुत्रमनूकरत्नं ।
कालं च शत्रुकुलकालमनूनपुण्य श्रीघोघर नतराघगिरींद्रवज्र ॥ २४४
तुर्यं च वर्यतरमगजमत्र गगं जाता पुरस्तदनु पुत्तलिका स्वसैषां ॥ २४५
यात्रां चकार गजपंथगिरौ ससघा ह्येतत्तपो विदधती सुदृढव्रता सा ॥२४७
तुगीगिरौ च वलभद्रमुने पदाब्जभृंगी तथैव सुकृत यतिभिश्चकार ।
श्रीमल्लिभूषणगुरुप्रवरोपदेशात् शास्त्र व्यधापयदिद कृतिनां हृदिष्टं ॥ २४८

[से २१]

लेखांक ४६४ – मंगलाष्टक सिंहनंदि

इत्थं श्रीजिनमगलाष्टकमिद श्रीमूलसंघेऽनघे

श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरोः शिष्येण संवर्णितम् ।
नित्यं ये च पठंति निर्मलधियः संप्राप्य ते संपदां
सौख्यं तारतरं भजंति नितरां श्रीसिंहनंदिस्तुतं ॥ १९

(म. २३)

लेखांक ४६५ – माणिकस्वामी विनती

पुरे मनोरथ जगि सार कर जोडि गुरु सिंहनंदि भणिए ।
तेहनि पुण्य अपार भणे भणावि भाव धरिए ॥ १४

(म. ५९)

लेखांक ४६६ – आराधना कथाकोश

विद्यानंदिगुरुप्रपट्टकमलोल्लासप्रदो भास्करः ।
श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरुर्भूयात् सतां शर्मणे ॥
...कुर्याच्छर्म सतां प्रमोदजनक. श्रीसिंहनंदी गुरुः ।
..जीयान्मे सूरिवर्यो व्रतनिचयलसत्पुण्यपण्यः श्रुताब्धि' ।
तेषां पादपयोजयुग्मकृपया श्रीजैनसूत्रोचिताः
सम्यग्दर्शनबोधवृत्ततपसामाराधनासत्कथाः ।
भव्यानां वरशान्तिकीर्तिविलसत्कीर्तिप्रमोदं श्रियं
कुर्युः संरचिता विशुद्धशुभदाः श्रीनेमिदत्तेन वै ॥

(जैनमित्र कार्यालय, बम्बई १९१५)

लेखांक ४६७ – अंतरिक्ष पार्श्वनाथ पूजा

अर्घ्यं श्रीपुरपार्श्वनाथचरणांभोजद्वयायोत्तमं
श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरोः शिष्येण संवर्णितं ।
तोयाद्यैर्वरनेमिदत्तयतिना स्वर्णादिपात्रस्थितं
भक्त्या पंडितराघवस्य वचसा कर्मक्षयार्थी ददे ॥

(म. ५६)

लेखांक ४६८ – [नागकुमारचरित]   लक्ष्मीचंद्र

संवत् १५५६ वर्षे चैत्र शुदि १ शनावद्येह श्रीघनौघद्रंग श्रीजिन-

चैत्यालये श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ श्रीपद्मनंदिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवा' तत्पट्टे भ. श्रीविद्यानंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीमल्लिभूपणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीचद्रोपदेशात् हंसपत्तने श्रेहादा एतेपां श्रीसांगणकेन लिखापितं ॥

(प्रस्तावना पृ. १३, कारंजा जैन सीरीज १९३३)

लेखांक ४६९ – [महापुराण–पुष्पदंत]

स्वस्ति श्रीसंवत् १५७५ शाके १४४१ प्र. दक्षणायने ग्रीष्मऋतौ · ष्ट वदि ७ रवौ घोघामदिरे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्रीमत्कुंदकुंदाचार्यान्वये · भ श्रीमल्लिभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीचद्र तच्छिष्य मुनिश्रीनेमिचद्र दसा हूवड ज्ञातीय गांधी श्रीपति' तेपा मध्ये वा. सभू तया लिखाप्य प्रदत्तमिदं आदिपुराणशास्त्र मुनिश्रीनेमिचंद्रेभ्यः ॥

(प्रस्तावना पृ. १०, माणिकचद ग्रथमाला, वम्बई)

लेखांक ४७० – (महाभिषेक टीका)

संवत १५८२ वर्षे चैत्र मासे शुक्लपक्षे पंचम्या तिथौ रवौ श्रीआदिजिनचैत्यालये श्रीमूलसघे ··भ. श्रीमल्लिभूषणदेवा तत्पट्टे भ श्रीलक्ष्मीचंद्रदेवा तेषा शिष्यवरब्रह्म श्रीज्ञानसागरपठनार्थं ॥ आर्या श्रीविमलश्री चेली भ लक्ष्मीचद्रदीक्षिता विनयश्रिया स्वय लिखित्वा प्रदत्तं महाभिषेकभाष्यं । शुभं भवतु ॥

(षट्प्राभृतादि सग्रह प्रस्तावना पृ ७)

लेखांक ४७१ – [सुदर्शनचरित–नयनंदि]

संवत् १६०५ वर्षे आषाढ वदि १० शुक्रे वलात्कारगणे श्रीलक्ष्मीचद्राणां शिष्य श्रीसकलकीर्तिना स्वपरोपकाराय लिखित ॥

(म. प्रा ७५९)

लेखांक ४७२ – यशस्तिलक चंद्रिका

इति श्रीपद्मनंदि-देवेंद्रकीर्ति-विद्यानंदि-मल्लिभूषणाम्नायेन भ. श्रीमल्लि-

भूषणगुरुपरमाभीष्टभ्रात्रा गुर्जरदेशसिंहासन–भ.–श्रीलक्ष्मीचंद्रकाभिमतेन मालवदेश–भ -श्रीसिंहनंदिप्रार्थनया यतिश्रीसिद्धांतसागरव्याख्याकृतिनिमित्तं नवनवतिमहावादिस्याद्वादलब्धविजयेन तर्कव्याकरणछंदोलंकारसिद्धांत–साहित्यादिशास्त्रनिपुणमतिना प्राकृतव्याकरणाद्यनेकशास्त्रचंचुना सूरि–श्रीश्रुतसागरेण विरचितायां यशस्तिलकचंद्रिकाभिधानायां यशोधरमहाराज–चरितचम्पूमहाकाव्यटीकायां यशोधरमहाराजलक्ष्मीविनोदवर्णनं नाम तृतीयाश्वासचंद्रिका परिसमाप्ता ॥

(निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १९१६)

लेखांक ४७३ – सहस्रनाम टीका

श्रीपद्मनंदिपरमात्मपर. पवित्रो देवेंद्रकीर्तिरथ साधुजनाभिवंद्यः ।
विद्यादिनंदिवरसूरिरनल्पबोधः श्रीमल्लिभूषण इतोस्तु च मंगलं मे ॥
अदः पट्टे भट्टादिकमतघटाघट्टनपटुः सुधीर्लक्ष्मीचंद्रश्चरणचतुरोसौ विजयते ॥
आलंबनं सुविदुषां हृदयांबुजानां आनंदनं मुनिजनस्य विमुक्तिहेतोः ।
सट्टीकनं विविधशास्त्रविचारचारु चेतश्चमत्कृतिकृतं श्रुतसागरेण ॥

(हि. १५ पृ. २२२)

लेखांक ४७४ – तत्त्वार्थवृत्ति

···श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिभट्टारकप्रशिष्येण शिष्येण च सकलविद्वज्जनविहित–चरणसेवस्य विद्यानंदिदेवस्य संछर्दितमिथ्यामतदुर्गरेण श्रुतसागरेण सूरिणा विरचितायां श्लोकवार्तिकसर्वार्थसिद्धि – न्यायकुमुदचंद्रोदय – प्रमेयकमल–मार्तंड – राजवार्तिक–प्रचंडाष्टसहस्री – प्रभृतिग्रंथसंदर्भनिर्भरावलोकनबुद्धि–विराजितायां तत्त्वार्थटीकायां दशमोध्यायः ॥

(भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९४९)

लेखांक ४७५ – शांतिनाथ बृहत्पूजा–शांतिदास

तद्विष्टेरेतिविख्यातो विद्यानंदी महायति. ।
तस्य शिष्यवरो योगी मल्लिभूषणः शीलवान् ॥
तस्यासने लक्ष्मीचंद्रो ख्यातकीर्तिर्दिगंतरे ।
अहीरदेशसर्वेपि मुल्हेरपुरपट्टके ॥

दयावान् श्रीदयाचंद्रो दैगंबरो जितेंद्रिय ।
स्वात्मज्ञानी महाध्यानी तस्य पंचामनासने ॥
मया श्रुत्वा गुरुपार्श्वे ह्यास्यहेतुं निवेदयन् ।
ब्रह्मश्रीजिनदासेन आश्वासन ददौ मम ॥
पूज्यपादकृतं स्तोत्रं श्रुतसिंधुकृताष्टकं ।
आशाधरोक्तमवगाह्य प्रथमात मया कृतं ॥

(म. १)

लेखांक ४७६ – पट्टावली

तत्पट्टकुमुदवनविकाशनशरत्संपूर्णचंद्राणां महामंडलेश्वर–भैरवराय–मल्लिराय–देवराय–वंगराय–प्रमुखाष्टादशदेशनरपतिपूजितचरणकमल–श्रुत–सागरपारगत–वादवादीश्वर–राजगुरु–वसुंधराचार्य–भट्टारकपदप्राप्तश्रीवीर–सेनश्रीविशालकीर्तिप्रमुखशिष्यवरसमाराधितपादपद्माना श्रीमल्लक्ष्मीचंद्रपरम–भट्टारकगुरूणाम् ॥

[जैन सिद्धात १७ पृ. ५१]

लेखांक ४७७ – बोध सताणू वीरचंद्र

सूरिश्रीविद्यानंदी जयो श्रीमल्लिभूषण मुनिचंद ।
तस पटि महिमानिलो गुरु श्रीलक्ष्मीचंद ॥ ९६ ॥
तेह कुलकमल दिवसपति जपति यति वीरचंद ।
सुणता भणता भावता पामी परमानद ॥ ९७ ॥

(म. ६४)

लेखांक ४७८ – चित्तनिरोधकथा

सूरिश्रीमल्लिभूषण जयो जयो श्रीलक्ष्मीचंद्र ॥ १४ ॥
तास वश विद्यानिलु लाड नाति शृंगार ।
श्रीवीरचद्र सूरी भणी चित्तनिरोध विचार ॥ १५ ॥

(ना. ६)

लेखांक ४७९ – पट्टावली

तद्वशमडनकंदर्पदलनविश्वलोकहृदयरजन–महाव्रतिपुरंदराणां नव-

सहस्रप्रमुखदेशाधिपतिराजाधिराज-श्रीअर्जुनजीयराजसभामध्यप्राप्तसन्माना-नां षोडशवर्षपर्यन्तशाकपाकपक्वान्नशाल्योदनादिसर्पिःप्रभृतिसरसाहारपरि-वर्जितानां ···· सकलमूलोत्तरगुणगणमणिमंडितविबुधवरश्रीवीरचंद्रभट्टारका-णाम् ॥

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५१)

लेखांक ४८० – १ मूर्ति ज्ञानभूषण

संवत १६०० वर्षे माघ वदि ७ सोमे · भ. श्रीवीरचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषण हूंबड ज्ञातीय भावजा भा. बाई तयो पोमासा नित्यं प्रणमंति ॥

(बाळापुर, अ. ४ प. ५०३)

लेखांक ४८१ – सिद्धांतसारभाष्य

श्रीसर्वज्ञं प्रणम्यादौ लक्ष्मीवीरेंदुसेवितम् ।
भाष्यं सिद्धांतसारस्य वक्ष्ये ज्ञानसुभूषणम् ॥

[सिद्धातसारादिसग्रह, माणिकचद्र ग्रंथमाला, बम्बई]

लेखांक ४८२ – [पंचास्तिकाय]

भ. श्रीमल्लिभूषणाः । भ श्रीलक्ष्मीचंद्राः । भ. श्रीवीरचंद्राः ।
भ. श्रीज्ञानभूषणानामिदं पुस्तकं ॥

(का. ४१२)

लेखांक ४८३ – कर्मकाण्ड टीका

मूलसंघे महासाधुलक्ष्मीचंद्रो यतीश्वरः ।
तस्य पादस्य वीरेंदुविबुद्धा विश्ववेदितः ॥
तदन्वये दयांभोधि ज्ञानभूषो गुणाकर. ।
टीकां हि कर्मकाण्डस्य चक्रे सुमतिकीर्तियुक् ॥

(ना. १०)

लेखांक ४८४ – (गणितसारसंग्रह)

स्वस्तिश्रीसवत् १६१६ वर्षे कार्तिक सुदि ३ गुरौ श्रीगंधारशुभस्थाने श्रीमदादिजिनचैत्यालये श्रीमूलसंघे भ श्रीवीरचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषणदेवाः तदन्वये आचार्यसुमतिकीर्तेरुपदेशात् श्रीहुव (ड) ज्ञातीय सोनी सातू प्रदत्तं ॥

(का. ६४)

लेखांक ४८५ – चौरासी लक्ष योनि विनती

श्रीमूलसंघ महत सत गुरु लक्ष्मीचंद ।
श्रीवीरचद विबुधवृद ज्ञानभूषण मुनिंद ॥
जिनवर विनति जे पढे मन धरि आनंद ।
भुगति मुगति ते लहे जहां छे परमानंद ॥
सुमतिकीरति भावे भणेए ध्यायो जिनवर देव ।
ससारमाहि नवि अवतर्यो पाम्यो सिवपद हेव ॥ २३ ॥

(म. ६५)

लेखांक ४८६ – पट्टावली

अनेकदेशनरनाथनरपतितुरगपतिगजपतियवनाधीशसभामध्यसंप्राप्तसन्मानश्रीनेमिनाथतीर्थंकरकल्याणिकपवित्रश्रीऊर्जयतशत्रुंजय-तुगीगिरि-चूलगिर्यादि–सिद्धक्षेत्रयात्रापवित्रीकृतचरणानां · सकलसिद्धांतवेदिनिर्ग्रंथाचार्यवर्यशिष्यश्रीसुमतिकीर्ति- स्वदेशविख्यातशुभमूर्तिश्रीरत्नभूषणप्रमुखसूरिपाठकसाधुससेवितचरणसरोजाना भट्टारकश्रीज्ञानभूषणगुरूणाम् ॥·

[जैन सिद्धान्त १७ पृ. ५२]

लेखांक ४८७ – त्रेपनक्रिया विनती

प्रभाचंद्र

विद्यानदि गुरु गुण निलए मल्लिभूषण देव ।
लक्ष्मीचंद्र सूरि ललित अंगकरि सहुजन सेव ॥

वीरचंद्र विद्याविलास चंद्रवदन मुनींद्र ।
ज्ञानभूषण गणधर समान दीठे होइए आनंद ॥
प्रभाचंद्र सूरि एम कहेए जिनसासनी सिनगार ।
ए वीनती भणे सुणे तेह घरि जयजयकार ॥ ९ ॥

(म. ६०)

लेखांक ४८८ - धर्मपरीक्षा रास

लक्ष्मीचंद्र श्रीगुरु नमू दीक्षादायक एह ।
वीरचंद्र वंदू सदा सीक्षादायक तेह ॥
तस पट्टे पट्टोधर ज्ञानभूषण गुरुराय ।
आचारिज पद आपयु तेहना प्रणमू पाय ॥
तेह कुल कमल दिवसपति प्रभाचंद्र यतिराय ।
गुरु गछपति प्रतपो घणू मेरु महीधर काय ॥
सुमतिकीर्ति सुरिवरे रच्यो धर्मपरीक्षा रास ।
शास्त्र घणा जोई करी कीधो वहू प्रकास ॥
रत्नभूषण राय रंजणो भंजणो मिथ्यामार्ग ।
जिनभवनादिक उद्धरे करये बहुविध त्याग ॥
सेत्रंजे उद्धर कियो शांतिनाथ प्रासाद ।
दिगंबर धर्म प्रगट कियो सेतंबरसु करि विवाद ॥
महुआ करि श्रावक भला धना आदे उपदेस ।
बहु प्रेरे प्रारंभियो रच्यौ तहां लवलेस ॥
पंडित हेमे प्रेर्‍या घणू वणायगने वीरदास ।
हासोट नगरे पूरो हुवो धर्मपरीक्षा रास ॥
संवत सोल पंचवीसमे मार्गसिर सुदि बीज वार ।
रास रुडो रलियामणो पूर्ण किधो छे सार ॥

[ना. ३४]

लेखांक ४८९ - त्रैलोक्यसार रास

श्रीमूलसघे गुरुलक्ष्मीचंद तसु पाटि वीरचद मुनींद ।
ज्ञानभूषण तसु पाटि चंग प्रभाचंद्र वंदो मनरंग ॥ २१७ ॥

सुमतिकीरति वर कहि सार त्रैलोक्यसार धर्मध्यान विचार।
जे भणे गणे ते सुखिया थाय रयणभूषण धरि मुगति जाय ॥ २१८ ॥
 ·संवत् सोलनी सत्तावीस माघ शुक्लनी वारस दीस ।
कोदादि रचीयो ए रास भावि भगती भावो भास ॥ २२१ ॥

[ना. ९७]

लेखांक ४९० – पट्टावली

· दिल्लिगौर्जरादिदेशसिंहासनाधीश्वराणाम् · श्रीज्ञानभूषणसरोज-चंचरीकभट्टारकश्रीप्रभाचंद्रगुरूणाम् ॥

[जैनसिद्धान्त १७ पृ. ५२]

लेखांक ४९१ – [श्रीपालचरित्र] वादिचंद्र

संवत १६३७ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे अदेह श्रीकोदादाशुभस्थाने श्रीशीतलनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे ··भ श्रीज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे भ. श्रीप्रभाचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ श्रीवादिचंद्र तेषां मध्ये -उपाध्याय धर्मकीर्ति स्वकर्मक्षयार्थे लेखि ॥

[बडौदा, दा पृ ३९]

लेखांक ४९२ – पार्श्वपुराण

साख्य. शिष्यति सर्वथैव क नं वैशेषिको रकति ।
यस्य ज्ञानकृपाणतो विजयतां सोय प्रभाचंद्रमा. ॥
तत्पट्टमडन सूरिर्वादिचद्र. व्यरीरचत् ।
पुराणमेतत् पार्श्वस्य वादिवृंदशिरोमणि ॥
शून्याब्दे रसाब्जांके वर्षे पक्षे समुज्वले ।
कार्तिके मासि पंचम्यां वाल्मीके नगरे मुदा ॥

(हि. ५ कि ९)

लेखांक ४९३ – ज्ञानसूर्योदय नाटक

मूलसंघे समासाद्य ज्ञानभूष बुधोत्तमा ।
दुस्तरं हि भवांभोधिं सुतरं मन्वते हृदि ॥ १ ॥

तत्पट्टामलभूषणं समभवद्दैगंबरीये मते ।
चंचद्बर्हकरः सभातिचतुरः श्रीमत्प्रभाचंद्रमाः ॥
तत्पट्टेजनि वादिवृन्दतिलकः श्रीवादिचंद्रो यति-
स्तेनायं व्यरचि प्रबोधतरणिर्भव्याब्जसंबोधनः ॥ २ ॥
वसुवेदरसाब्जांके वर्षे माघे सिताष्टमी दिवसे ।
श्रीमन्मधूकनगरे सिद्धोयं बोधसंरम्भः ॥ ३ ॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. २६८)

लेखांक ४९४ – श्रीपाल आख्यान

प्रगट पाट त अनुक्रमे मानु ज्ञानभूषण ज्ञानवंतजी ।
तस पद कमल भ्रमर अविचल जस प्रभाचंद्र जयवंतजी ॥
जगमोहन पाटे उदयो वादीचंद्र गुणालजी ।
नवरस गीते जेणे गायो चक्रवर्ति श्रीपालजी ॥
संवत सोल एकावनावर्षे कीधो ये परबंधजी ।

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. २७०]

लेखांक ४९५ – यशोधरचरित

तत्पट्टविशदख्यातिर्वादिवृन्दमतल्लिका ।
कथामेनां दयासिद्धयै वादिचंद्रो व्यरीरचत् ॥ ८० ॥
अंकलेश्वरसुग्रामे श्रीचिंतामणिमंदिरे ।
सप्तपंचरसाब्जांके वर्षेकारि सुशास्त्रकम् ॥ ८१ ॥

(उपर्युक्त पृ. ७१२)

लेखांक ४९६ – पार्श्वनाथ छंद

मन्हा नयरे तोरो वास श्रीसंघनी तू पूरे आस ॥ ७२ ॥
...ज्ञानभूषण गुरु ज्ञानभंडार सरस्वतीगछमाहे शृंगार ॥ ७४ ॥
तस पाटे दीठे आनंद प्रभा विराजित प्रभासुचंद्र ।
वादिचंद्र वर सुधा सुलीह

ते गुरु वोले यह सुछद सुनता भनता परमानंद ॥ ७५ ॥

(ना. ७)

लेखांक ४९७ – (पंचस्तवनावचूरि)

श्रीसंवत १६६४ वर्षे श्रीसूर्यपुरे श्रीमदादिजिनचैत्यालये मूलसंघे भ. श्रीज्ञानभूषण भ श्रीप्रभाचंद्र भ श्रीवादिचंद्राः तदाम्नाये आचार्यश्रीकमलकीर्तिस्तच्छिष्य ब्र. श्रीविद्यासागरस्येदं पुस्तकं ॥

[ना. ४८]

लेखांक ४९८ – पट्टावली

महावादवादीश्वर-राजगुरु-वसुंधराचार्यवर्यहुंवडकुलशृंगारहार भ श्रीमद्वादिचंद्रभट्टारकाणाम् ॥

(जैन सिद्धांत १७ पृ. ५२)

लेखांक ४९९ – चंद्रप्रभ मूर्ति महीचंद्र

सवत् १६७९ वर्षे शाके १५५३ श्रीमूलसंघे नंदीसंघे सरस्वतीगच्छे–भ श्रीवादिचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ श्रीमहीचद्रोपदेशात् हूंवडज्ञातीय वीऊंल वास्तव्य मातर गोत्रे स श्रीवर्धमान ॥

(सूरत, दा. पृ. ४२)

लेखांक ५०० – सम्यग्ज्ञान यंत्र

स १६८५ वर्षे माघ सुदी ५ श्रीमूलसंघे कुदकुंदाचार्यान्वये श्रीवादीचंद्रस्तत्पट्टे भ. श्रीमहीचद्रोपदेशात् सिंघपुरा वंशे सघवी वल्लभजी सं. हीरजी ज्ञान प्रणमति ।

(सूरत, दा. पृ. ४४)

लेखांक ५०१ – षोडशकारण पूजा मेरुचंद्र

मूलसघ मंडण वरहंसह महीचद मुणिजण सुपसण्णह ।
मेरुचंद इय भासइ जिणथुइ रयण जीवयणे किय णिम्मलमइ ॥

(ना ८३)

लेखांक ५०२ – पद्मावती मूर्ति

सं. १७२२ जेठ सुदी २ मूलसंघे भ. श्रीमेरुचंद्रपट्टे साहश्रीसिंहपुरा ज्ञातीय प्रेम जीवाभाईसुत भ. श्रीमहीचंद्रशिष्य ब्र. जयसागर प्रणमति ॥

(सूरत, दा. पृ. ५६)

लेखांक ५०३ – सीताहरण

मूलसंघे सरस्वतीवर गछे बलात्कारगण सार जी ।
गंधार नयरे प्रत्यक्ष अतिशय कलियुगे छे मनोहार जी ॥
...प्रभाचंद्र गोर तनेया वानी अमिय रसाल जी ।
वादीचंद्र वादी बहु जीत्या घट सरस्वती गुनमाल जी ॥
महीचंद्र मुनि जनमन मोहन वानी जेह विस्तार जी ।
परवादीना मान मुकाव्या गर्व न करे लगार जी ॥
मेरुचंद्र तस पाटे सोहे मोहे भवियन मन जी ।
व्याख्यान वानि अमिय रसाली सांभलो एके मन जी ॥
गोरमहीचंद्र शिष्य जयसागरे रच्यू सीताहरण मनोहार जी ।
...संवत सत्तर बत्तीसा वरसे वैशाख सुद्ध बीज सार जी ।
बुधवारे परिपूर्णज रचयु सूरत नयर मझार जी ॥
आदिजिनेश्वर तणे प्रासादे पद्मावती पसाय जी ।
सांभलता गाताय सहुने मन माहे आनंद थाय जी ॥

परिच्छेद ६ (ना. २५)

लेखांक ५०४ – अनिरुद्धहरण

तेह पाटे महीचंद्र भट्टारक दीठे जन मन मोहे जी ।
मेरुचंद्र तस पाटे जाणो वाणी अमी रस सोहे जी ॥
गोर महीचंद्र सिष्य एम बोले जयसागर ब्रह्मचारि जी ।
...संवत सत्तर बत्तीस माहे मागसिर मास भृगुवार जी ।
सुदि तेरसि रचना रची पूर्ण ग्रंथ थयो सार जी ॥
सुरत नयर माहे तम्हे जाणो आदि जिन गेह सार जी ।

पद्मावती मुझ प्रसन्न थई ने नित्य करो जयकार जी ।

(ना. ६)

लेखांक ५०५ – सगरचरित्र

महीचंद्र सूरिवर तेह पाटे जेन्ह जाने छे देस विदेस रे ।
ब्रह्म जयसागर इम कहे गावे सगरनो रास मनोहार रे ।
काई सवत सत्तोत्तरो ते सार कांई माघ नवमी बुधवार रे ।
अपर पछे रचना रची काई गावे सहु नर नार रे ॥
घोघा नयर सुहावनो श्रीआदीसुरने दरवार रे ।
भने भनावे सांभले काई तेह घरे जयकार रे ॥

[ना. ६]

लेखांक ५०६ – पट्टावली

. . .लघुशाखाहुंबडकुलशृंगारहारदिल्लीगुर्जरसिंहासनाधीशवलात्कार-गणविरुदावलीविराजमान भ श्रीमेरुचंद्रगुरूणाम् ॥

[जैन सिद्धात १७ पृ. ५२]

लेखांक ५०७ – आदिनाथमूर्ति विद्यानंदि

श्रीजिनो जयति । स्वस्ति श्री १८०५ वर्षे शाके १६७५ प्रवर्तमाने वैसाखमासे शुक्लपक्षे चंद्रवासरे गुर्जरदेशे सूरतबंदरे जुग्यादिचैत्यालये श्रीमूलसघे नदीसघे . भ श्रीमहीचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ श्रीमेरुचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ श्रीजिनचद्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीविद्यानदीगुरूपदेशात् सूरतवास्तव्य रायकवाल जातीय धर्मधुरधर . ॥

[सूरत, दा. पृ. ३१]

लेखांक ५०८ – (आराधना–सकलकीर्ति)

संवत १८२२ मिति मार्गसीर सुदि ८ बुधवारे नागपुरमध्ये श्रीमूल-संघे भ. श्रीविद्यानंदीजी तच्छिष्य ब्रह्मजिनदासेन लखितं ॥

[ना. ९४]

लेखांक ५०९ - (गणितसार संग्रह) देवेंद्रकीर्ति

संवत १८४२ मिति वैसाख सुदि ११ भ. श्रीविद्याभूषण इदं गणित छत्तिसी भ. श्रीदेवेद्रकीर्तिजी प्रदत्तं शुभं भूयात् ।

(का.६४)

लेखांक ५१० - पट्टावली

श्रीविद्यानंदीपट्टोधरधीराणां श्रीमत्खंडेलवालज्ञातीयशुद्धवंशोद्भवानाम्·····भट्टारकोत्तंसश्रीमद्देवेद्रकीर्तिभट्टारकाणां तपोराज्याभ्युदयार्थं भव्यजनैः क्रियमाणे श्रीजिननाथाभिषेके सर्वे जनाः सावधाना भवंतु । इति श्रीनंदिसंघविरुदावली श्रीसुमतिकीर्तिकृता संपूर्णा ॥

(जैनसिद्धात १७ पृ. ५३)

लेखांक ५११ - पट्टावली विद्याभूषण

खंडिल्यान्वयशृंगारहाराणां देवेद्रकीर्तिपट्टधारसुरिविरदावलिसमूहविराजमान श्रीमद्विद्याभूपणभट्टारकाणाम् ।

[जैनमित्र १९-६-१९२४]

लेखांक ५१२ - पद्मावती मूर्ति धर्मचंद्र

सं. १८९९ वैशाख सुद १२ गुरुवार श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीविद्यानदि तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भ. श्रीधर्मचंद्र तत्गुरुभ्राता पंडित भाणचंद उपदेशात् सा. वेणिलाल केसुरदास तत्सुता बाई इछाकोर नित्यं प्रणमति ।

[सूरत दा. पृ. ४३]

लेखांक ५१३ - पट्टावली

भट्टारकवरेण्यविद्याभूषणविद्यमानदत्तनंदिसंघपदानां गछाधिराजभट्टारकवरेण्यपरमाराध्यपरमपूज्यश्रीभट्टारकधर्मचद्राणां तपोराज्याभ्युदयार्थं

भव्यजनैः क्रियमाणे श्रीजिननाथाभिषेके सर्वे जना' सावधाना भवंतु।

[जैनमित्र, १९-६-१९२४]

लेखांक ५१४ – विंध्यगिरि अभयचंद्र

संवत् १५४८ वरुषे चैत्र वदि १४ दने भ श्री. अभयचंद्रकस्य शिष्य ब्रह्म धर्मरुचि ब्रह्म गुणसागर पं. की का यात्रा सफल।

(जैन शिलालेख सग्रह भा. १ पृ. ३३४)

लेखांक ५१५ – पद्मप्रभपूजा

जे नर निर्मल जे कुसुमांजलि मन वच काया सुद्ध करी।
श्रीअभयचंद कहे निश्चय लहिये स्वर्ग राज कैवल्य पुरी॥

(म. ५६)

लेखांक ५१६ – (गोमटसार टीका)

निर्ग्रन्थाचार्यवर्येण त्रैविद्यचक्रवर्तिना।
संशोध्याभयचंद्रेणालेखि प्रथमपुस्तक ॥

(अ. ४ पृ ११६)

लेखांक ५१७ – षोडशकारण पूजा अभयनंदि

सिरिपकजिणदो सिरिदेविंदो विज्जानंदी मल्लिमुनी।
सिरि लच्छीचंदो अभयचंदो अभयनंदि सुमति द्विगुणी॥

(म. ३)

लेखांक ५१८ – दशलक्षण पूजा

अभयचंद्र मुनन पर ब्राह्मी सुंदरी प्रथम वृषभ जिन सुतारक।
श्रीअभयनंदिगुरु सुशील सुसागर सुमतिसागर जिनधर्मधर॥

(म. ३)

लेखांक ५१९ – जंबूद्वीप जयमाला

अभयचंद्र रूपवंत गुणी अभयनंदि गुणधार ।
श्रीसुमतिसागर देवेंद्र भणिया त्रिभुवनतिलक जयवंत ॥ ५२ ॥

[म. ३]

लेखांक ५२० – व्रत जयमाला

जय जय जिन तारन स्वामी नाम पूजा भुवि मुक्ति कर ।
श्रीअभयनंदिभयवारण संकर सुमतिसागर जिनधर्मधर ॥ २२ ॥

[म. ३]

लेखांक ५२१ – तीर्थ जयमाला

जय परमेश्वर बोधजिनेश्वर अभयनंदि मुनिवर शरणं ।
जय कर्मविदारण भवभयवारण सुमतिसागर तव गुण-चरणं ॥ २० ॥

[म. ३]

लेखांक ५२२ – महावीरमूर्ति   रत्नकीर्ति

सं. १६६२ वर्षे वैसाख वदी २ शुभदिने श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीअभयचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीअभयनंद तच्छिष्य आचार्यश्रीरत्नकीर्ति तस्य शिष्याणी बाई वीरमती नित्यं प्रणमति श्रीमहावीरम् ।

(भा. प्र. पृ. १४)

बलात्कार गण – सूरत शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. देवेन्द्रकीर्ति से हुआ। आप भ पद्मनन्दी के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त उत्तर शाखा में आ चुका है। आप ने सवत् १४९३ की वैशाख कृ. ५ को एक मूर्ति स्थापित की (ले. ४२५)। आप ने उज्जैन के प्रान्त में प्रतिष्ठाए करवाई तथा सातसौ घरों की रत्नाकर जाति की स्थापना की (ले. ४२६)। आप के शिष्य त्रिभुवनकीर्ति से जेरहट शाखा का आरम्भ हुआ।

देवेन्द्रकीर्ति के पट्टशिष्य विद्यानन्दी हुए। आप ने सवत् १४९९ की वैशाख शु. २ को एक चौवीसी मूर्ति, सवत् १५१३ की वैशाख शु १० को एक मेरु तथा एक चौवीसी मूर्ति, सवत् १५१८ की माघ शु. ५ को दो मूर्तिया, संवत् १५२१ की वैशाख कृ. २ को एक चौवीसी मूर्ति तथा सवत् १५३७ की वैशाख शु १२ को एक अन्य मूर्ति स्थापित की (ले. ४२७–३३)। संवत् १५१३ की चौवीसी मूर्ति आर्यिका सयमश्री के लिए घोघा मे प्रतिष्ठित की गई थी[७२]।

विद्यानन्दी ने सुदर्शनचरित नामक सस्कृत ग्रन्थ लिखा (ले. ४३४)। साह लखराज ने पचास्तिकाय की एक प्रति खरीद कर इन्हें अर्पित की (ले ४३५)। इन के शिष्य ब्रह्म अजित ने भडौच में हनुमच्चरित की रचना की (ले. ४३६)। इन के अन्य शिष्य छाहड ने सवत् १५९१ में भडौच में धनकुमारचरित की एक प्रति लिखी (ले. ४३७)। इन के तीसरे शिष्य ब्रह्म धर्मपाल ने सवत् १५०५ में एक मूर्ति स्थापित की (ले. ४३८)

पट्टावली के अनुसार राजा वज्राग, गग जयसिंह, तथा व्याघ्रनरेन्द्र ने आप का सन्मान किया[७३]। आप अठसखे परवार जाति के थे। हरिराज

---

७२ विद्यानदी के अन्य उल्लेख देखिए (ले २५७) तथा (ले ३५६), नोट ४३ तथा (ले. ५२३)

७३ वज्राग और गग जयसिंह कर्णाटक के स्थानीय राजा रहे होंगे। इन का ठीक राज्यकाल ज्ञात नहीं हो सका। व्याघ्रनरेन्द्र सम्भवतः किसी वाघेल वंशीय राजा का सस्कृत रूपान्तर है।

सूरत के भ विद्यानन्दि (प्रथम) की
शिष्या आर्यिका जिनमती की मूर्ति (सूरत)

संदर्भ-पृष्ठ १९९

काष्ठासंघ- नंदितटगच्छ के भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति
(सूरत – संवत् १७४४–७३)
(संवत १७४७ के हस्तलिखित के चित्र की अनुकृति)

संदर्भ–पृष्ठ २९२

के कुल को आप ने उज्ज्वल किया। सम्मेदशिखर, चम्पापुर, पावापुर, गिरनार, प्रयाग आदि क्षेत्रों की आप ने वदना की, तथा सहस्रकूट बिम्ब स्थापित किया। श्रुतसागर आप के मुख्य शिष्य थे (ले. ४३९)।

श्रुतसागर सूरि ने महेन्द्रदत्त के पुत्र लक्ष्मण की प्रार्थना पर ज्येष्ठ जिनवर कथा लिखी (ले. ४४२), कल्याणकीर्ति के आग्रह से षोडशकारण कथा लिखी (ले. ४५०), मतिसागर की प्रेरणा से मुक्तावली कथा लिखी [ले. ४५१], साध्वी सौवर्णिका की प्रार्थना पर मेरुपंक्ति कथा लिखी [ले. ४५२] तथा श्रीराज की विनति पर लक्षणपक्ति कथा की रचना की [ले. ४५३]। मेघमाला, सप्त परमस्थान, रविवार, चंदनषष्ठी, आकाशपंचमी, पुष्पांजलि, निर्दु.खसप्तमी, श्रवण द्वादशी, रत्नत्रय इन व्रतो की कथाएं भी आप ने लिखीं (ले. ४४० - ४९)। औदार्यचिन्तामणि नामक प्राकृत व्याकरण, शुभचन्द्र कृत ज्ञानार्णव के गद्य भाग की टीका तत्त्वत्रयप्रकाशिका, महाभिषेक टीका तथा श्रुतस्कन्ध पूजा ये रचनाए आपने लिखीं[७४]। इन में तत्त्वत्रयप्रकाशिका की रचना आचार्य सिंहनन्दि[७५] के आग्रह से हुई (ले. ४५४–५७)।

विद्यानन्दीके पट्टशिष्य मल्लिभूषण हुए। आप के समय संवत् १५४४ की वैशाख शु. ३ को खंभात में एक निषीदिका बनाई गई।[७६] इस के लेख में आर्यिका रत्नश्री, कल्याणश्री और जिनमती का उल्लेख है (ले. ४५८)। मल्लिभूषण ने आचार्य अमरकीर्ति को पंचास्तिकाय की एक प्रति दी थी (ले. ४५९)। आप के शिष्य लक्ष्मण के लिए सावयधम्मदोहा पजिका की एक प्रति संवत् १५५५ की कार्तिक शु. १५

---

७४ श्रुतसागर सूरि की अन्य रचनाओं के लिए विद्यानन्दि के उत्तराधिकारी मल्लिभूषण और लक्ष्मीचन्द्र का वृत्तान्त देखिए।

७५ सम्भवतः भानपुर शाखा में इन्ही का उल्लेख हुआ है।

७६ ब्र. शीतलप्रसादजी ने यह लेख पद्मावती मूर्ति का कहा है, किन्तु उस लेखपर से वह क्षुल्लिका जिनमती की मूर्ति प्रतीत होती है।

को लिखी गई (ले. ४६०)। पट्टावली के अनुसार आप ने मंडपगिरि और गोपाचल की यात्रा की तथा ग्यासदीन ने आप का सन्मान किया था[७७]। आप पद्मावती के उपासक थे [ले. ४६१]।

मल्लिभूषण के समय श्रुतसागरसूरि ने इलदुर्ग के भानुभूपति[७८] के मन्त्री भोजराज की पुत्री पुत्तलिका के साथ गजपन्थ और तुगीगिरि की यात्रा की तथा वहीं पल्यविधान कथा की रचना की [ले ४६३]। अक्षयनिधान कथा भी आप ने इन्हीं के समय लिखी [ले ४६२]।

भ. सिंहनन्दी ने अपने मगलाष्टक में मल्लिभूषण का गुरुरूप में उल्लेख किया है। इन की एक रचना माणिकस्वामी विनती भी है [ले. ३६४-६५]। ब्रह्म नेमिदत्त ने अपने आराधना कथाकोश में मल्लिभूषण, सिंहनन्दी और श्रुतसागर को वन्दन किया है। इन ने पण्डित राघव के आग्रह पर अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ पूजा लिखी [ले. ४६६-६७]।[७९]

मल्लिभूषण के पट्टशिष्य लक्ष्मीचन्द्र हुए। इन के उपदेश से सागणक ने संवत् १५५६ की चैत्र शु १ को हसपत्तन[८०] में नागकुमारचरित की एक प्रति लिखी [ले. ४६८]। सवत् १५७५ की ज्येष्ठ कृ ७ को घोघा में सभूबाई ने महापुराण की एक प्रति लक्ष्मीचद्र के शिष्य नेमिचन्द्र को अर्पित की [ले ४६९]। सवत् १५८२ की चैत्र शु. ५ को आप के शिष्य ज्ञानसागर के लिए आर्यिका विनयश्री ने महाभिषेक टीका की प्रति लिखी [ले. ४७०]। सवत् १६०५ में लक्ष्मीचद्र के शिष्य सकलकीर्ति ने नयनन्दिकृत सुदर्शनचरित की एक प्रति लिखी [ले. ४७१]

---

७७ मालवे का सुलतान—राज्यकाल १४६९–१५०० ई.

७८ ईडर के राव भाणजी—राज्यकाल १४४६–९६ ई

७९ नेमिदत्त ने सवत् १५८५ में श्रीपालचरित लिखा। सुदर्शनचरित, रात्रिभोजनत्याग कथा तथा नेमिनाथ पुराण ये इन के अन्य ग्रन्थ हैं (अनेकान्त वर्ष ९ पृ ४७६)

८० हसापुर (जिला सूरत)

लक्ष्मीचन्द्र के समय श्रुतसागरसूरि ने यशस्तिलकचन्द्रिका, सहस्रनाम टीका, तत्त्वार्थ वृत्ति तथा षट्प्राभृतटीका की रचना की [ले. ४७२-७४]। इन की प्रशस्तियो से पता चलता है कि श्रुतसागर ने नीलकण्ठ भट्ट आदि ९९ वादियो पर विजय प्राप्त की तथा सिद्धान्तसागर यति के लिए यशस्तिलकचन्द्रिका बनाई।[८१]

लक्ष्मीचन्द्र के समय ब्रह्म जिनदास[८२] के शिष्य ब्रह्म शान्तिदास ने शान्तिनाथ बृहत्पूजा की रचना की। उस समय मुल्हेर मे दयाचन्द्र भट्टारक थे (ले. ४७५)।

पट्टावली से पता चलता है कि भ. लक्ष्मीचन्द्र भैरवराय, मल्लिराय, देवराय, वगराय आदि १८ राजाओ द्वारा सम्मानित हुए थे[८३] तथा आप ने भ. वीरसेन, भ. विशालकीर्ति आदि से भी[८४] सन्मान पाया था [ले. ४७६]।

लक्ष्मीचन्द्र के पट्टशिष्य दो थे। इन मे अभयचन्द्र का वृत्तान्त इसी प्रकरण के अन्त मे सगृहीत किया है। दूसरे पट्टशिष्य वीरचन्द्र थे। आप ने बोधसताणू तथा चित्तनिरोध कथा की रचना की [ले. ४७७-७८]। आप ने नवसारी के शासक अर्जुनजीयराज से सन्मान पाया[८५] तथा सोलह वर्ष तक नीरस आहार सेवन किया [ले ४७९]।

वीरचन्द्र के पट्टशिष्य ज्ञानभूषण हुए। आप ने सवत् १६०० मे एक मूर्ति प्रतिष्ठित की तथा सिद्धान्तसारभाष्य की रचना की [ले. ४८०-

---

८१ श्रुतसागर के विषय में देखिए-पं नाथूराम प्रेमी (जैन साहित्य और इतिहास पृ. ४०६) तथा प. परमानन्द (अनेकान्त व. ९ पृ. ४७४)

८२ इन का वृत्तान्त ईडर शाखा के भ. सकलकीर्ति और भुवनकीर्ति के वृत्तान्त मे देखिए।

८३ तुलुव राजा वगराय (तृतीय) का राज्यकाल १५३३-१५४५ ई. था। अन्य राजा कर्णाटक के स्थानीय शासक थे किन्तु उन का ठीक राज्यकाल ज्ञात नहीं हो सका।

८४ वीरसेन सम्भवतः कारंजा के सेनगण के भ. गुणभद्र के शिष्य हैं। विशालकीर्ति कारंजा शाखा के विशालकीर्ति (प्रथम) हो सकते है।

८५ अर्जुन जीयराज का इतिहास में कुछ विवरण नहीं मिलता।

८१]। सुमतिकीर्ति की सहायता से आप ने कर्मकाण्ड टीका लिखी (ले. ४८३)। पचास्तिकाय की एक प्रति पर आप का नाम अंकित है (ले. ४८२)। आप के शिष्य सुमतिकीर्ति के उपदेश से सवत् १६१६ की कार्तिक शु. ३ को गणितसारसग्रह की एक प्रति दान की गई (ले. ४८४)। सुमतिकीर्ति ने चौरासी लक्ष योनि विनती की रचना की (ले. ४८५)। इन के अतिरिक्त रत्नभूपण आदि साधु ज्ञानभूषण के शिष्य थे। ज्ञानभूषण ने गिरनार, शत्रुंजय, तुंगीगिरि, चूलगिरि आदि क्षेत्रों की यात्रा की थी (ले. ४८६)।[८६]

ज्ञानभूषण के पट्ट पर प्रभाचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने त्रेपन क्रिया विनती लिखी (ले. ४८७)। आप के गुरुबन्धु सुमतिकीर्ति ने सवत् १६२५ में हासोट में धर्मपरीक्षा रास की रचना की। आप ने शत्रुंजय पर शान्तिनाथ मन्दिर के निर्माण का तथा श्वेताम्बरो के साथ हुए बाद का उल्लेख किया है[८७]। धर्मपरीक्षा के लिए पंडित हेम ने प्रेरणा की थी (ले. ४८८)। सुमतिकीर्ति ने सवत् १६२७ में माघ शु. १२ को कोदादा शहर में त्रैलोक्यसार रास की रचना पूर्ण की (ले. ४८९)।

प्रभाचन्द्र के पट्टपर वादिचन्द्र भट्टारक हुए। आप के समय सवत् १६३७ मे उपाध्याय धर्मकीर्ति ने कोदादा में श्रीपालचरित्र की प्रति लिखी (ले. ४९१)। आप ने सवत् १६४० में वाल्मीकनगर में पार्श्वपुराण की रचना की (ले. ४९२), सवत् १६४८ में मधूकनगर में ज्ञानसूर्योदय नाटक लिखा (ले ४९३), सवत् १६५१ में श्रीपाल आख्यान पूरा किया (ले. ४९४), सवत् १६५७ में अकलेश्वर में यशोधरचरित की रचना की तथा महुआ में पार्श्वनाथ छद लिखे (ले. ४९५-९६)।

---

८६ आप के विषय में नोट ६४ तथा ६१ तथा १२१ देखिए।

८७ शत्रुजय के शान्तिनाथ मन्दिर का निर्माण (ले ३८८) के अनुसार सवत् १६८६ में हुआ किन्तु इस लेख से उस के पूर्व भी एक शान्तिनाथमन्दिर वहा था ऐसा प्रतीत होता है।

आप हूबड जाति के थे (ले. ४९८)। आप की आम्नाय मे ब्र. विद्यासागर ने संवत् १६६४ में पचस्तवनावचूरि की एक प्रति सूरत में प्राप्त की (ले. ४९७)।[८८]

वादिचन्द्र के पट्ट पर महीचन्द्र आरूढ हुए। आप ने संवत १६७९ में एक चन्द्रप्रभ मूर्ति तथा सवत् १६८५ मे एक सम्यग्ज्ञान यन्त्र स्थापित किया (ले. ४९९–५००)।

महीचन्द्र के शिष्य मेरुचन्द्र हुए। आप के गुरुबन्धु जयसागर ने सवत् १७२२ में एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की (ले. ५०२)। इन ने संवत् १७३२ मे सूरत में सीताहरण लिखा, सवत् १७३२ मे ही अनिरुद्ध हरण लिखा तथा घोघा में सगरचरित्र की रचना की[८९] (ले. ५०३–५)। पट्टावली से विदित होता है कि मेरुचन्द्र हूबड जाति के थे (ले. ५०६)। आप ने पोडशकारण पूजा लिखी (ले. ५०१)।

मेरुचन्द्र के वाद जिनचंद्र और उन के वाद विद्यानन्दी पट्टाधीश हुए। आप ने सवत् १८०५ मे सूरत मे एक आदिनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ५०७)। आप के शिष्य जिनदास ने नागपुर में सवत् १८२२ मे आराधना की एक प्रति लिखी (ले. ५०८)।

विद्यानन्दि के पट्टशिष्य देवेन्द्रकीर्ति हुए। संवत् १८४२ में इन ने गणितसारसग्रह की एक प्रति अपने शिष्य विद्याभूपण को दी। विद्याभूपण खडेलवाल जाति के थे (ले. ५०९–११)।

---

८८ वादिचन्द्र के लिए पं. नाथूराम प्रेमी का लेख देखिए (जैन साहित्य और इतिहास पृ. २६८)। बम्बई से काव्यमाला के १३ वें गुच्छक में प्रकाशित पवनदूत काव्य सम्भवतः आप की ही रचना है।

८९ सगरचरित्र में भी रचना काल दिया है किन्तु उस का अर्थ हमें स्पष्ट नहीं हो सका।

विद्याभूषण के बाद धर्मचन्द्र पट्टाधीश हुए। इन के गुरुबन्धु भाणचद ने सवत् १८९९ में पद्मावती मूर्ति स्थापित की (ले. ५१२)।[१०]

सूरत शाखा की ही एक परम्परा भ लक्ष्मीचन्द्र के शिष्य अभयचन्द्र से प्रारम्भ हुई। अभयचन्द्र ने पद्मप्रभपूजा लिखी है। सभवत आप ने नेमिचन्द्र विरचित गोमटसारटीका की पहली प्रति लिखी थी। आप के शिष्य धर्मरुचि तथा गुणसागर ने सवत् १५४८ में गोमटेश्वर के दर्शन किये (ले. ५१४-१६)।

अभयचन्द्र के शिष्य अभयनन्दि हुए। इन के शिष्य सुमतिसागर ने षोडशकारण पूजा, दशलक्षण पूजा, जबूद्वीप जयमाला, व्रत जयमाला तथा तीर्थजयमाला ये पूजापाठ लिखे (ले. ५१७-२१)।

अभयनन्दि के शिष्य रत्नकीर्ति हुए। इन की शिष्या वीरमती ने सवत् १६६२ में एक महावीर मूर्ति स्थापित कराई (ले. ५२२)।

---

१० ब्र. शीतलप्रसादजी के कथनानुसार धर्मचन्द्र के बाद क्रमशः चन्द्रकीर्ति, गुणचन्द्र और सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए [दानवीर माणिकचन्द्र पृ ३८]
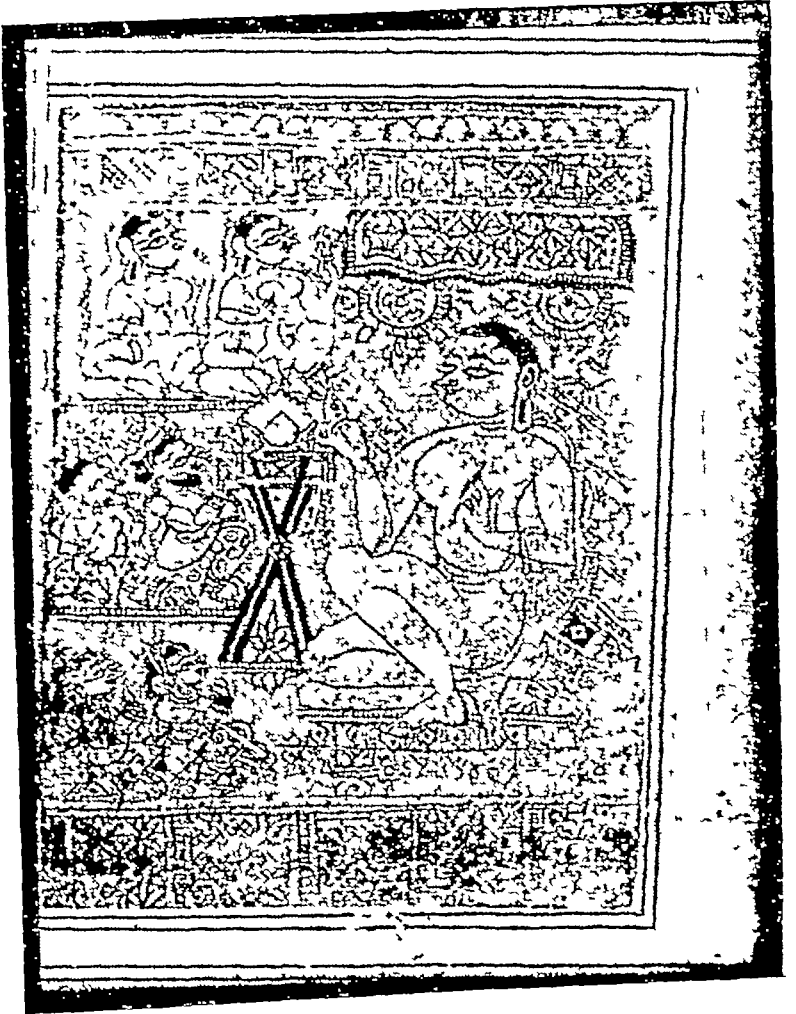
बलात्कार गण- सूरत-शाखा के भट्टारक विद्यानन्दि
(प्रथम) संवत् १४९९-१५३७
(बडौदा मे प्राप्त हस्तलिखित के संवत १५२६ मे बने हुए
चित्र की अनुकृति)

संदर्भ-पृष्ठ २०१

बलात्कार गण-सूरत शाखा-काल पट

१ पद्मनन्दी (उत्तर शाखा)
|
२ देवेन्द्रकीर्ति [संवत् १४९३]
|
३ विद्यानन्दी [संवत् १४९९--१५३७] — त्रिभुवनकीर्ति (जेरहट शाखा)
|
४ मल्लिभूषण [संवत् १५४४–१५५५]
|
५ लक्ष्मीचन्द्र [संवत् १५५६–१५८२]
|
६ वीरचन्द्र — अभयचन्द्र (सं. १५४८)
| — |
७ ज्ञानभूषण [संवत् १६००–१६१६] — अभयनन्दि
| — |
८ प्रभाचन्द्र [संवत् १६२५–१६२७] — रत्नकीर्ति (सं. १६६२)
|
९ वादिचन्द्र [संवत् १६३७–१६६४]
|
१० महीचन्द्र [संवत् १६७९–१६८५]
|
११ मेरुचन्द्र [संवत् १७२२–१७३२]
|
१२ जिनचन्द्र
|
१३ विद्यानन्दि [संवत् १८०५–१८२२]
|
१४ देवेन्द्रकीर्ति [संवत् १८४२]
|
१५ विद्याभूषण
|
१६ धर्मचन्द्र [संवत् १८९९]

---

१२. बलात्कार गण–जेरहट शाखा

लेखांक ५२३ – हरिवंशपुराण श्रुतकीर्ति

कुंदकुदगणिणा अणुकम्मइ जायइ मुणिगण विविह सहम्मइ ।
गण वलत्त वागेसरि गच्छइ णंदिसंघ मणहर मइसच्छइ ।
पहाचंदगणिणा सुदपुण्णइ पोमणंदि तह पट्ट उवण्णइ ।
पुणु सुभचंददेव कम जायइ गणि जिणचंद तह य विक्खायइ ।
विज्जाणंदि कमेण उवण्णइ सीलवंत वहुगुण सुदपुण्णइ ।
पोमणंदि सिस कमिण ति जायइ जे मडलायरिय विक्खायइ ।
मालवदेसे धम्मसुपयासणु मुणि देवेंदकित्ति पिउभासणु ।
तह सिसु अमियवाणि गुणधारउ तिहुवणकित्ति पवोहणसारउ ।
तह सिसु सुदकित्ति गुरुभत्तउ जेहि हरिवसपुराणु पउत्तउ ।
संवतु विक्कमसेण णरेसह सहसु पंचसय वावण सेसह ।
मडयगडु वर मालवदेसइ साहि गयासु पयाव असेसइ ।
णयर जेरहद जिणहरु चगउ णेमिणाहजिणविंवु अभंगउ ।
गंथु सउण्णु तत्थ इहु जायउ चउविह संसुणि सुणि अणुरायउ
माघ किण्ह पचमि ससिवारइ हत्थणखत्त समत्तु गुणालइ ।

(अ. ११ पृ. १०६)

लेखांक ५२४ – परमेष्ठिप्रकाशसार

दह पण सय तेवण गय वासइ पुणु विक्कमणिवसंवच्छरहे ।
तह सावणमासह्रु गुरुपचमि सहु गंथु पुण्णु तय सहस तहे ।।
मालव देस दुग्ग मडवचलु वट्टइ साहि गयासु महावलु ।
साहि णसीरु णाम तह णंदणु रायधम्म अणुरायउ वहुगुणु ।
तह जेरहट णयर सुपसिद्धउ जिण चेइहर मुणिसुपवुद्धइ ।
णेमीसर जिणहर णिवसतइ विरयउ एहु गथु हरिसंतइ ।
तेहि लिहाइहि णाणागथइ इय हरिवंसपमुह सुपसत्थइ ।
विरइय पढम तमहि वित्थारिय धम्मपरिक्ख पमुह मणहारिय ।
इय परमिट्ठिपयाससारे अरुहादिगुणेहि वण्णणालकारे अप्पसुदसुदकित्ति जहासत्ति महाकव्वु विरयतो णाम सत्तमो परिच्छेउ समत्तो ।।

(अ. ११ पृ १०७)

लेखांक ५२५ - १ मूर्ति   धर्मकीर्ति

सं. (१६) ४५ माघ सुदि ५ श्रीमूलसंघे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. यशकीर्तिपट्टे भ. श्रीललितकीर्तिपट्टे भ. श्रीधर्मकीर्ति उपदेशात् पौरपट्टे छितिरा मूर गोहिलगोत्र साधु दीनू भार्या·· ॥

(थूबौन, अ. ३ पृ. ४४५)

लेखांक ५२६ - चंद्रप्रभ मूर्ति

संमत १६६९ चैत्र सुद १५ रवौ मूलसंघे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. यशोकीर्ति तत्पट्टे भ. ललितकीर्ति तत्पट्टे भ. धर्मकीर्ति उपदेशात्··· ॥

(पा. ५१)

लेखांक ५२७ - पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १६६९ चैत सुदी १५ रवौ भ. ललितकीर्ति भ. धर्मकीर्ति तदुपदेशात् सा. पदारथ भार्या जिया पुत्र दो खेमकरण पमापेता नित्यं नमति ॥

(भा. प्र. पृ. ५)

लेखांक ५२८ - नंदीश्वरमूर्ति

संमत १६७१ वर्षे वैसाख सुद ५ मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. यशकीर्ति तत्पट्टे भ. ललितकीर्ति तत्पट्टे भ. धर्मकीर्तिउपदेशात् पौरपट्टे सा. उदयचंदे भार्या···उदयगिरेंद्र प्रतिष्ठा प्रसिद्धं॥

(पा. ६०)

लेखांक ५२९ - हरिवंशपुराण

श्रीमूलसंघेजनि कुंदकुंद. सूरिर्महात्माखिलतत्त्ववेदी ।
सीमन्धरस्वामिपदप्रवन्दी पंचाह्वयो जैनमतप्रदीपः ॥
तदन्वयेभूद् यशकीर्तिनामा भट्टारको भाषितजैनमार्ग. ।
तत्पट्टवान् श्रीललितादिकीर्तिर्भट्टारकोजायत सत्क्रियावान् ॥
जयति ललितकीर्तिर्ज्ञाततत्त्वार्थसार्थो
नयविनयविवेकप्रोज्ज्वलो भव्यबन्धुः ।
जनपदशतमुख्ये मालवेलं यदाज्ञा

समभवदिह जैनद्योतिका दीपिकेव ॥
तत्पट्टाबुजहर्षवर्षतरणिर्भट्टारको भासुरो
जैनग्रंथविचारकेलिनिपुण. श्रीधर्मकीर्त्याह्वय' ।
तेनेदं रचित पुराणममलं गुर्वाज्ञया किंचन
सक्षेपेण विबुद्धिनापि सुहृदा तत् शोध्यमेतद्ध्रुवम् ॥
वर्षे व्यष्टशते चैकाग्रसप्तत्यधिके रवौ ।
आश्विने कृष्णपचम्यां ग्रंथोय रचितो मया ॥

[म. प्रा पृ. ७६१]

लेखांक ५३० – पार्श्वनाथ मूर्ति

समत १६८१ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ भ. धर्मकीर्ति उपदेशात् परवारज्ञातो ॥

(पा. ९८)

लेखांक ५३१ – षोडशकारण यंत्र

सं १६८२ मार्गसिर वदि–रवौ भ ललितकीर्तिपट्टे भ धर्मकीर्ति गुरूपदेशात् परवार धना मूर सा हठीले भार्या दमा पुत्र दयाल भार्या केशरि भोजे गरीबे भालदास भार्या सुभा ... ॥

(प्रानपुरा, अ. ३ पृ. ४४५)

लेखांक ५३२ – १ यंत्र

संवत १६८३ फाल्गुन सुदी ३ श्रीधर्मकीर्ति उपदेशात् सं. मुकुट भा. किशुन एते नमन्ति ॥

[अहार, अ. १० पृ. १५६]

लेखांक ५३३ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सकलकीर्ति

समत १७११ भ सकलकीर्ति सा लाले पुत्रवते प्रणमति ॥

[परवार मदिर, नागपुर]

लेखांक ५३४ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १७१२ मार्ग वदि १२ श्रीमूलसंघे भ सकलकीर्ति ·हरदा ॥

(बाजारगाव, जिला नागपुर)

लेखांक ५३५ – पार्श्वनाथ मूर्ति

संवत १७१३ वर्षे मार्गशिर सुदी १० रवऊ श्रीभ. धवलकीर्ति भ. सकलकीर्ति ··प्रणमंति नित्यम् ।

(नारायनपुर, अ. १० पृ. १५५)

लेखांक ५३६ – ? मूर्ति

संवत १७१८ वर्षे फाल्गुने मासे कृष्णपक्षे ··श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्री ६ धर्मकीर्ति तत्पट्टे भ. श्री ६ पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ. श्री ६ सकलकीर्ति उपदेशेनेयं प्रतिष्ठा कृता तद्गुरुराद्योपाध्याय नेमिचंद्रः पौरपट्टे अष्टशाखाश्रये धनामूले कासिल्ल गोत्रे साहु अधार भार्या लालमती · ॥

[पपौरा, अ. ३ पृ. ४४५]

लेखांक ५३७ – षोडशकारण यंत्र

संवत १७२० वर्षे फागुन सुदी १० शुक्र बलात्कारगणे··भ श्रीसकलकीर्तिउपदेशात् गोलापूर्वान्वये गोत्र पेंथवार पं परवति ·· ॥

[अहार, अ. १० पृ. १५५]

लेखांक ५३८ – आदिनाथ स्तोत्र

सुरेंद्रकीर्ति

मूलसंघको नायक सोहे सकलकीर्ति गुरु वंदो जू ।
तस पट पाट पटोधर सोहे सुरेंद्रकीर्ति मुनि गाजे जू ॥
संवत सत्रासो छपण हे मास कार्तिक शुभ जानो जू ।
दास बिहारी विनती गावे नाम लेत सुख पावे जू ॥ २२

(ना. ५५)

लेखांक ५३९ – षोडशकारण यंत्र चंद्रकीर्ति

संवत १६७५ पोह सुदि ३ भौमे श्रीमूलसंघे भ. ललितकीर्ति तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे आचार्य श्रीचंद्रकीर्ति उपदेशात् साहु रूपा भार्या पता ·· ॥

[अ. ११ पृ. ४११]

लेखांक ५४० – सम्यक्चारित्र यंत्र

संवत १६८१ वरषे चैत्र सुदी ५ रवौ श्रीमूलसंघे भ श्रीललितकीर्ति तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे आचार्य चद्रकीर्तिस्तदुपदेशात् गोलापूर्वान्वये खागनाम गोत्रे सेठी भानु भार्या चदनसिरी ·· ॥

(पा. १८)

बलात्कार गण-जेरहट शाखा

इस शाखा का आरंभ भ. त्रिभुवनकीर्ति से हुआ। आप भ. देवेन्द्र-कीर्ति के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त सूरत शाखा में आ चुका है। आप के शिष्य श्रुतकीर्ति ने सवत् १५५२ मे ग्यासुद्दीन के राज्यकाल[९१] में जेरहट में हरिवंशपुराण लिखा (ले. ५२३)। श्रुतकीर्तिने दिल्ली-जयपुर शाखा के भ. जिनचन्द्र और उन के शिष्य विद्यानन्दि का भी उल्लेख किया है।[९२] इन ने सवत् १५५३ में जेरहट में ही परमेष्ठिप्रकाशसार की रचना की।[९३]

भ. त्रिभुवनकीर्ति के बाद क्रमश. सहस्रकीर्ति-पद्मनन्दी-यशःकीर्ति-ललितकीर्ति और धर्मकीर्ति भट्टारक हुए।[९४] धर्मकीर्ति ने संवत् १६४५ की माघ शु. ५ को एक मूर्ति, सवत् १६६९ की चैत्र पौर्णिमा को एक चन्द्रप्रभ मूर्ति तथा एक पार्श्वनाथ मूर्ति, और सवत् १६७१ की वैशाख शु. ५ को एक नन्दीश्वर मूर्ति स्थापित की। (ले. ५२५-२८)। आप ने सवत् १६७१ की आश्विन कृ. ५ को हरिवंशपुराण लिखा (ले. ५२९)। संवत् १६८१ मे एक पार्श्वनाथ मूर्ति, संवत् १६८२ में एक षोडशकारण यंत्र तथा संवत् १६८३ मे एक और यन्त्र आप ने स्थापित किया (ले. ५३०-३२)।

---

९१ मालवा सुलतान-राज्यकाल १४६९-१५०० ई.

९२ डॉ. हीरालालजी जैन ने श्रुतकीर्तिकृत धर्मपरीक्षा का परिचय दिया है। (अनेकान्त वर्ष ११ पृ. १०६) आप के मत से श्रुतकीर्ति की गुरुपरंपरा प्रभाचंद्र-पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-विद्यानन्दि-पद्मनन्दि-देवेन्द्रकीर्ति-त्रिभुवन-कीर्ति ऐसी है। दिल्ली-जयपुर तथा सूरत शाखा के कालपटों के अवलोकन से साफ होता है कि यहाँ आप ने दो समकालीन परम्पराओं को एकत्रित कर दिया है। नोट ४३ देखिए।

९३ श्रुतकीर्ति के विषय में प परमानन्द का लेख देखिए [अनेकान्त वर्ष १३ पृ. २७९] जिस में उन के योगसार का भी परिचय दिया है।

९४ त्रिभुवनकीर्ति के बाद की यह परम्परा प. परमानद के एक नोट पर से ली गई है जिस में धर्मकीर्ति के एक और ग्रन्थ पद्मपुराण का उल्लेख है। (अनेकान्त वर्ष १२ पृ. २८)

धर्मकीर्ति के बाद पद्मकीर्ति और उन के बाद सकलकीर्ति भट्टारक हुए। इन के उपदेश से सवत् १७११ मे एक पार्श्वनाथ मूर्ति, सवत् १७१२ में एक पार्श्वनाथ मूर्ति, सवत् १७१८ मे एक अन्य मूर्ति तथा सवत् १७२० में एक षोडशकारण यन्त्र स्थापित किया गया (ले. ५३३-५३७)।

सकलकीर्ति के पट्ट पर सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। इन के शिष्य बिहारीदास ने सवत् १७५६ में आदिनाथ स्तोत्र लिखा (ले. ५३८)।

ललितकीर्ति के एक और शिष्य रत्नकीर्ति थे। इन के शिष्य चन्द्रकीर्ति ने संवत् १६७५ मे एक षोडशकारण यन्त्र तथा सवत् १६८१ में एक सम्यक्चारित्र यन्त्र स्थापित किया (ले. ५३९-४०)।

बलात्कार गण-जेरहट शाखा-कालपट

१ देवेन्द्रकीर्ति (सूरत शाखा)
|
२ त्रिभुवनकीर्ति [सवत् १५५२-५३]
|
३ सहस्रकीर्ति
|
४ पद्मनन्दी
|
५ यश कीर्ति
|

६ ललितकीर्ति

७ धर्मकीर्ति [सवत् १६४५–१६८३] — रत्नकीर्ति

८ पद्मकीर्ति — चन्द्रकीर्ति (स. १६७५-८१)

९ सकलकीर्ति [सवत् १७११–२०]

१० सुरेन्द्रकीर्ति [संवत् १७५६)

परिशिष्ट १

बलात्कार गण की शाखा वृद्धि
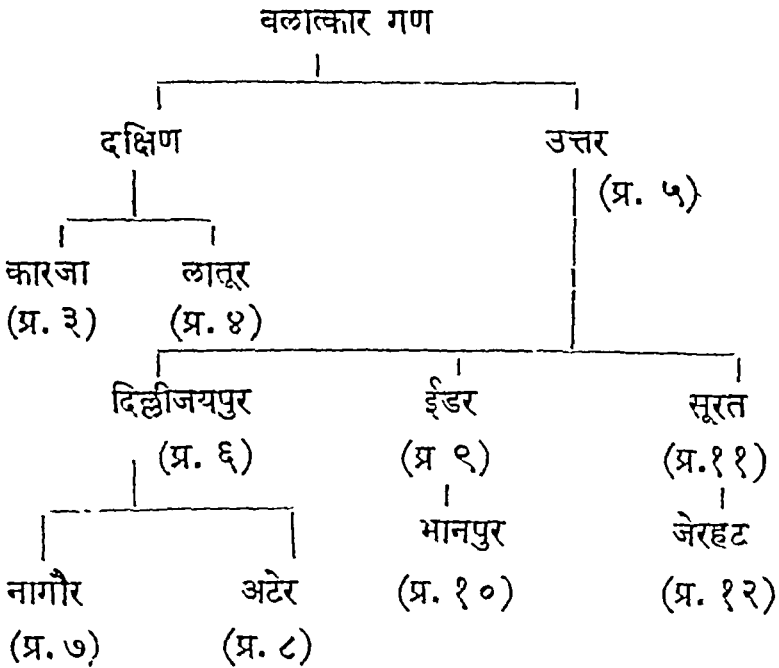
परिशिष्ट २

काष्ठा-संघ की स्थापना

मध्ययुगीन जैन साधुओं के इतिहास में काष्ठासंघ का स्थान महत्त्व-पूर्ण है। आचार्य देवसेन ने दर्शनसार में - जिसकी रचना सवत् ९९० में धारा नगरी में हुई थी-कहा है कि आचार्य विनयसेन के शिष्य कुमारसेन ने सवत् ७५३ में नदियड-वर्तमान नादेड (बम्बई प्रदेश)-में इस सघ की स्थापना की थी[१]। इस सघ का सर्वप्रथम शिलालेखीय उल्लेख सवत् ११५२ में हुआ है। 'काष्ठासघ महाचार्यवर्य देवसेन' की चरणपादुकाओं की स्थापना का इस लेख में निर्देश है[२]।

चौदहवीं सदी के बाद इस सघ की अनेक परम्पराओ के उल्लेख मिलते हैं। भ. सुरेन्द्रकीर्ति के अनुसार-जिनका समय सवत् १७४७ है-ये परम्पराए चार भेदों में विभाजित थीं-माथुर गच्छ, वागड गच्छ, लाडवागड गच्छ तथा नन्दीतट गच्छ[३]। सुरेन्द्रकीर्ति स्वय नन्दीतट गच्छ के भट्टारक थे।

आश्चर्यकी बात यह है कि बारहवीं सदी तक माथुर, बागड तथा लाडबागड इन परम्पराओं के जो उल्लेख मिलते हैं, उनमें इन्हें सघ की सज्ञा दी गई है, तथा काष्ठासघ के साथ उन का कोई सम्बन्ध नहीं कहा है।

माथुर सघ के प्रसिद्ध आचार्य अमितगति हैं। आप ने सवत् १०५० से १०७३ तक कोई बारह ग्रन्थ लिखे। इन में से अधिकाश के अन्त में प्रशस्ति में माथुर सघ का यशोगान है, किन्तु काष्ठासघ का नाम-निर्देश भी नहीं है[४]।

इसी तरह लाडबागड-जिसे सस्कृत में लाटवर्गट कहा गया है-गण के तीन उल्लेख मिलते हैं। इस गण के आचार्य जयसेन ने सवत् १०५५ में सकलीकरहाटक-वर्तमान कऱ्हाड (बम्बई प्रदेश)-में धर्म-रत्नाकर नामक ग्रन्थ लिखा[५]। प्राय. इसी समय इस गण के दूसरे आचार्य

---

१ जैन हितैषी, वर्ष १३, पृ २५७--२५९। २ अनेकान्त, वर्ष १०, पृ १०५। ३ दानवीर माणिकचन्द्र, पृ ४७। ४ जैन साहित्य और इतिहास, पृ. २८३-२८५। ५ अनेकान्त वर्ष ८, पृ. २०१-२०३।

महासेन ने प्रद्युम्नचरित लिखा[६]। तथा सवत् ११४५ में इस गण के आचार्य विजयकीर्ति के उपदेश से एक मन्दिर बनवाया गया[७]। इन तीनों आचार्यों ने अपनी विस्तृत प्रशस्तियो में लाटवर्गटगण की पूरी प्रशंसा की है किन्तु काष्ठासंघ का कोई उल्लेख नहीं किया है।

वागड संघ के आचार्य सुरसेन के उपदेश से प्रतिष्ठापित की गई एक प्रतिमा पर जो शिलालेख मिलता है, उस में भी काष्ठासंघ का कोई उल्लेख नहीं है। इस प्रतिमा का समय संवत् १०५१ है[८]। वागड सघ के दूसरे आचार्य यशःकीर्ति ने जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला नामक ग्रन्थ लिखा है। इस में भी काष्ठासंघ का कोई निर्देश नहीं है[९]।

इन सब अनुल्लेखों पर से प्रतीत होता है कि सम्भवतः बारहवीं सदी तक माथुर, लाडबागड और बागड़ इन तीनों संघों का काष्ठासंघ से कोई सम्बन्ध नहीं था। यहां स्मरण रखना चाहिये की नन्दीतट गच्छ के कोई प्राचीन उल्लेख नहीं मिलते, यद्यपि इसी नाम के ग्राम में काष्ठासघ की स्थापना कही गई है।

काष्ठासंघ का नाम दिल्ली के निकट जो काष्ठा नामक ग्राम है उसी पर से पडा है। इस ग्राम की स्थिति पहले काफी अच्छी थी। बारहवीं सदी में यहाँ टक्क वश के शासको की राजधानी थी[१०]। किन्तु इस से पहले इस ग्राम के कोई उल्लेख नहीं मिलते। इस से भी प्रतीत होता है कि माथुर इत्यादि संघों का बारहवीं सदी में एकीकरण हो कर ही काष्ठासघ

---

६ पृ १८३। ७ ए इं, भा. २, पृ. २३७। ८ ज. ए. सो, भा. १९, पृ. ११०। ९ अनेकान्त, वर्ष २, पृ. ६८६।

१० स्टडीज इन इण्डियन लिटररी हिस्टरी, भाग. १ पृ. २९०। (प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थ 'मदनपाल निघंटु' की रचना इसी स्थान के टक्क शासक मदनपाल द्वारा की गयी। फीरोज तुगलक की माता यहीं के टक्क शासक की पुत्री थी जिसके दो भाई सण्गपाल और मदनपाल पीछे मुसलमान हो गये थे। गुजरात के मुस्लिम शासक टाक इसी टक्क या टाक सण्णपाल व मदनपाल के वंशज थे।) दे., पी. वी. काणे--हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र, पूना, भा. १।)

की स्थापना हुई होगी।

इस से देवसेन कृत दर्शनसार की स्थिति काफी सशयास्पद हो जाती है। यहा स्मरण दिलाना उचित होगा कि यह सशयास्पदता अन्य साधनों से पहले भी व्यक्त हो चुकी है[११]। काष्ठासघ के स्थापक कुमारसेन का समय दर्शनसार में सवत ७५३ कहा गया है। किन्तु उनके गुरु विनयसेन के छोटे गुरुबन्धु जिनसेन का समय उनकी 'जयधवला टीका' की प्रशस्ति से शक ७५९ सुनिश्चित है[१२]। इसी प्रकार माथुरसघ की स्थापना दर्शनसार के अनुसार आचार्य रामसेन द्वारा सवत् ९५३ में हुई थी[१३]। किन्तु सवत् १०५० मे इस सघ के आचार्य अमितगति ने अपने पाच पूर्वाचार्यों का उल्लेख करते हुए भी रामसेन का स्मरण नहीं किया है[१४]।

ऐसी स्थिति में यही मानना उचित होगा कि माथुर आदि चार सघों का एकीकरण-हो कर बारहवीं सदी में काष्ठासघ की स्थापना हुई थी। सम्भवतः यह कार्य उन देवसेन का ही था जिन कीं चरणपादुकाए सवत् १५४५ में स्थापित हुई थीं।

इससे उनका 'महाचार्यवर्य' यह विशेषण भी सार्थक सिद्ध होता है।

---

११ जैन हितैषी, वर्ष १३, पृ २७१।

१२ कसाय पाहुड भा. १ प्रस्तावना, पृष्ठ ६९।

१३ जैन हितैषी, वर्ष, १३, पृ. २५९।

१४ जैन साहित्य और इतिहास, पृ २८४।

१३. काष्ठासंघ–माथुरगच्छ

लेखांक ५४१ – रामसेन

तत्तो दुसएतीदे महुराए माहुराण गुरुणाहो ।
णामेण रामसेणो णिप्पिच्छं वण्णियं तेण ॥

(दर्शनसार ४०)

लेखांक ५४२ – सुभाषितरत्नसन्दोह अमितगति

आशीर्विध्वस्तकंतो विपुलशमभृतः श्रीमतः कान्तकीर्तिः ।
सूरेर्यातस्य पारं श्रुतसलिलनिधेर्देवसेनस्य शिष्यः ॥
विज्ञाताशेषशास्त्रो व्रतसमितिभृतामग्रणीरस्तकोपः ।
श्रीमान् मान्यो मुनीनाममितगतियतिस्त्यक्तनिःशेषसङ्ग. ॥ ९१५
तस्य ज्ञातसमस्तशास्त्रसमयः शिष्यः सतामग्रणीः ।
श्रीमान्माथुरसंघसाधुतिलकः श्रीनेमिषेणोभवत् ॥
शिष्यस्तस्य महात्मन. शमयुतो निर्धूतमोहद्विषः ।
श्रीमान्माधवसेनसूरिरभवत् क्षोणीतले पूजितः ॥ ९१७
दलितमदनशत्रोर्भव्यनिर्व्याजबन्धोः ।
शमदमयममूर्तिश्चन्द्रशुभ्रोरुकीर्तिः ॥
अमितगतिरभूद्यस्तस्य शिष्यो विपश्चिद् ।
विरचितमिदमर्थ्यं तेन शास्त्रं पवित्रं ॥ ९१९
समारूढे पूतत्रिदशवसतिं विक्रमनृपे ।
सहस्रे वर्षाणां प्रभवति हि पञ्चाशदधिके ॥
समाप्ते पञ्चम्यामवति धरणीं मुञ्जनृपतौ ।
सिते पक्षे पौषे बुधहितमिदं शास्त्रमनघम् ॥ ९२२

(निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १९०३)

लेखांक ५४३ – वर्धमान नीति

वन्दे मम गुरुं तं च नेमिषेणमुनीश्वरम् ।
परोपकारिणां धुर्यं चित्रं चारित्रमाश्रितम् ॥ ६९
माधवसेनं वंदे मुनिश्रेष्ठं महीतले ।
नौमि यदिच्छयैवायं ग्रंथो हि निरमीयत ॥ ७०

थामरसव्योमचंद्राब्दे तपस्यस्यासिते दले।
अमितगतिमुनि एतापि (?) जयंति जयशालिनः॥ ७१

(जैन मित्र २-१२-१९२०)

लेखांक ५४४ - धर्मपरीक्षा

संवत्सराणां विगते सहस्रे ससप्ततौ विक्रमपार्थिवस्य।
इद निषिध्यान्यमतं समाप्तं जैनेन्द्रधर्मामृतयुक्तिशास्त्रम्॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. १८१)

लेखांक ५४५ - पञ्चसंग्रह

त्रिसप्तत्याधिकेऽब्दानां सहस्रे शकविद्विषः।
मसूतिकापुरे जातमिदं शास्त्र मनोरमम्॥

[माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला, बम्बई]

लेखांक ५४६ - तत्त्वभावना

वृत्तविंशशतेनेति कुर्वता तत्त्वभावनां।
सद्योमितगतेरिष्टा निर्वृतिः क्रियते करे॥

[प्र. मू. कि कापडिया, सूरत]

लेखांक ५४७ - उपासकाचार

तस्मादजायत नयादिव साधुवादः।
शिष्टार्चितोमितगतिर्जगति प्रतीतः॥
विज्ञातलौकिकहिताहितकृत्यवृत्ते.।
आचार्यवर्यपदवीं दधत' पवित्राम्॥ ६
अयं तडित्वानिव वर्षणं घनो।
रजोपहारी धिषणापरिष्कृत॥
उपासकाचारमिम महामना।
परोपकाराय महोन्नतोऽकृत॥ ७

(अनतकीर्ति ग्रथमाला, बम्बई १९२२)

लेखांक ५४८ – द्वात्रिंशिका

नं परमात्मामितगतिरयं. सर्वविविक्तो भृशमनवद्यः ।
शश्वदधीते मनसि लभन्ते मुक्तिनिकेतं विभववरं ते ॥ ३२

(प्र. मू. कि. कापडिया, सूरत)

लेखांक ५४९ – आराधना

आराधना भगवती कथिता स्वशक्त्या
चिन्तामणि वितरतु बुधचिन्तनानि ।
आराय जन्मजलधिं तरतु तरण्ड
भव्यात्मनां गुणवती ददता समाधिम् ॥ १२

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. ३६]

लेखांक ५५० – अथूणा मंदिर लेख छत्रसेन

...तस्य पुत्रास्त्रयोभूवन् भूरिशास्त्रविशारदाः ।
आलोकः साहसाख्यश्च तल्लुकाख्यः परोनुजः ॥ ८
यस्तत्राद्यः सहजविशदप्रज्ञया भासमानः ।
स्वांतादर्शस्फुरितमकलैतिह्यतत्त्वार्थसार ॥
...यो माथुरान्वयनभस्तलतिग्मभानोः ।
व्याख्यानरंजितसमस्तसभाजनस्य ॥
श्रीछत्रसेनसुगुरोश्चरणारविंद- ।
सेवापरोभवदनन्यमना. सदैव ॥ ११
आयुस्तप्तमहींद्रसारनिहितस्तोकाम्बुवन्नश्वरं ।
संचिंत्य द्विपकर्णचंचलतरां लक्ष्म्याश्च दृष्ट्वा स्थितिं ।
ज्ञात्वा शास्त्रसुनिश्चयात् स्थिरतरे नूनं यशःश्रेयसी ।
तेनाकारि मनोहरं जिनगृहं भूमेरिदं भूषणम् ॥ २२
...वर्षसहस्रे याते षट्षष्ठ्युत्तरशतेन संयुक्ते ।
विक्रमभानोः काले स्थलिविषयमवति सति विजयराजे ॥ २५
विक्रम संवत् ११६६ वैशाख सुदि ३ सोमे वृषभनाथस्य प्रतिष्ठा ॥

(हि. १३ पृ ३३५)

लेखांक ५५१ – बिजौलियामंदिर लेख गुणभद्र

श्रीमन्माथुरसघेभूद् गुणभद्रो महामुनि. ।
कृता प्रशस्तिरेषा च कविकंठविभूषणा ॥ ८७
प्रसिद्धिमगमद्देव: काले विक्रमभास्वत: ।
षड्विंशद्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥ ९१
तृतीयाया तिथौ वारे गुरौ तारे च हस्तके ।
धृतिनामनि योगे च करणे तैतिले तथा ॥ ९२

(भा. २१ पृ. २२)

लेखांक ५५२ – देवी मूर्ति ललितकीर्ति

संवत् १२३४ वर्षे माघ सुदी ५ बुधे श्रीमान् माथुरसंघे पंडिताचार्य धर्मकीर्ति शिष्य ललितकीर्तिः । वर्धमानपुरान्वये सा. ग्रामदेव भार्या ग्राहिणी ' ॥

[आमला Indian Culture वर्ष ११, पृ. १६८]

लेखांक ५५३ – षट्कर्मोपदेश अमरकीर्ति

बारह सयइ ससत्तचयालिहि विक्कमसवच्छरहु विसालहि ॥
गणहि मि भद्दवयहु पक्खंतरि गुरुवारम्मि चउद्दसि वासरि ॥
इक्के मासे इहु सम्मियउ सइं लिहियउ आलसु अवहत्थिउ ॥
परमेसर पइ णवरसभरिउ विरइयउ णेमिणाहहो चरिउ ॥
अण्णु वि चरित्तु सव्वत्थसहिउ पयडत्थु महावीरहो विहिउ ॥
तीयउ चरित्त जसहर णिवासें पद्धडिया बंधे किउ पयासु ॥
टिप्पणउ धम्मचरियहो पयडु तिह विरयउ जिह बुज्झेइ जडु ॥
सक्कयसिलोयविहि जणियदिहि गुंफियउ सुहासियरयणणिही
धम्मोवएसचूडामणिक्खु तह झाणपईउ जि झाणसिक्खु ॥
छक्कम्मुवएस सहु पबंध किय अट्ठसंख सइ सच्चसंध ॥
सक्कयपाइयकव्वय घणाइ अवराइ कियइं रंजियजणाइ ॥

[अ. ११ पृ ४१४]

लेखांक ५५४ – नेमिनाथचरित

ताह रज्जिय वट्टंतए विक्कमकालि गए वारह सव चउआलए सुक्खु।
सुहिवक्खमए भद्दवएहो सियपक्खेयारसि दिणि तुरिउ ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ५५५ – (पंचास्तिकाय)　　गुणकीर्ति

संवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यगताब्दसवत् १४६८ वर्षे आषाढ वदि २ शुक्रदिने श्रीगोपाचले राजाश्रीवीरम्मदेवविजयराज्य-प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठा-संघे माथुरगच्छे पुष्करगणे आचार्यश्रीभावसेनदेवाः तत्पट्टे श्रीसहस्रकीर्ति-देवाः तत्पट्टे भ श्रीगुणकीर्तिदेवा. तेषामाम्नाये अग्रोतकान्वयपरमश्रावक-वंशिलगोत्रीयसघाधिपति महराज तद्भार्या साध्वी जाल्ही · एतेषां मध्ये संघइ महराजवधू साधुनरदेवपुत्री देवसिरी तया इद पंचास्तिकायसारग्रंथं लिखापितं ॥

(का. ४१२)

लेखांक ५५६ – १ मूर्ति

सं. १४७३ श्रावण वदी १ श्रीकाष्ठासंघे भ श्रीगुणकीर्ति सा. जिनदास ॥

(मा. प्र. पृ. ६)

लेखांक ५५७ – (भविष्यदत्त पंचमी कथा)　　यशःकीर्ति

संवत १४८६ वर्षे आषाढ वदि ७ गुरुदिने गोपाचलदुर्गे राजा डूंगरसिह राज्य प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे आचार्य श्रीसहस्रकीर्तिदेवाः तत्पट्टे आचार्यश्रीगुणकीर्तिदेवा तच्छिष्य श्रीयशःकीर्ति-देवाः तेन निजज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं इद भविष्यदत्तपचमीकथा लिखापित।

[अ. ८ पृ. ४६५]

लेखांक ५५८ – पांडव पुराण

सिरिकट्ठसघ माहुरहो गच्छ पुक्खरगणि मुणिवई विलच्छि ॥

सजायउ वीरजिणुक्कमेण परिवाडिय जइवर णिहयएण ॥
सिरिदेवसेणु तह विमलसेणु तह धम्मसेणु पुणु भावसेणु ॥
तहो पट्ट उवण्णउ सहसकित्ति अणवरय भमिय जइ जासु कित्ति ॥
तह विक्खायउ गुणकित्ति णामु तवतेए जासु सरीरु खामु ॥
तहो णियबधउ जसकित्ति जाउ आयरिय पणासिय दोसु वाउ ॥

[अ ७ पृ. १६३]

लेखांक ५५९– रिट्ठनेमिचरिउ

गय तिहुयणसयंभु सुरठाणहो ज उव्वरिउ किंपि सुणियाणहो ॥
त जसकित्तिमुणिहि उद्धरियउ । णिएवि सुत्तु हरिवंसच्छरियउ ॥
णियगुरुसिरिगुणकित्ति पसाए । किउ परिपुण्णु मणहो अणुराए ॥
सरहसेणेद सेठि आएसे । कुमरणयरि आविउ सविसेसे ॥
गोवगिरिहे समीवे विसालए । पणियारहे जिणवरचेयालए ॥
भद्दवमासि विणासियभवकलि । हुउ परिपुण्णु चउद्दिसि णिम्मलि ॥

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. ३९३]

लेखांक ५६० – आदिनाथ मूर्ति

सवत १४९७ वर्षे वैसाख ७ शुक्रे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज राजा श्रीडूंग(रसिंह) राज्य सवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ. गुणकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ यश.कीर्तिदेवा. प्रतिष्ठाचार्य पंडित रइधू तेषां आम्नाये अग्रोतवंशे गोयलगोत्रे साधु ॥

(अ. १० पृ ३८०)

लेखांक ५६१ – सम्मइजिन चरिउ

सिरि अयरवालकवंसम्मि सारेण ।
दहएगपडिमाणपालण सणेहेण ।
खेल्हाहिहाणेण णमिऊण गुरु तेण ।
जसकित्ति विणयत्तु मडिय गुणोहेण ।
ससिपहजिणेंदस्स पडिमा विसुद्धस्स ।
काराविया मइजि गोवायले तुग ॥

(अ. १० पृ १११)

लेखांक ५६२ – आदिपुराण

सिरिगुणकित्ति णामु जइपुंगमु तउ तवेइ जो दुविहु असंगमु ॥
पुणु तहु पट्टिय वरजसभायणु सिरिजसकित्ति भव्वसुहदायणु ॥
तहु पयपंकयाहि पणमंतउ जा बुह णिवसइ जिणपयभत्तउ ॥
ता रिसिणा सो भणिउ विणोए हत्थु णिएवि सुमुहुत्ते जोए ॥
भो सिंघियसेणय सुसहाए होसि वियक्खणु मज्झु पसाए ॥
इय भणेवि मंतक्खर दिण्णउ तेणारहिउ तं जि अछिण्णउ ॥
चिरपुण्णे कइत्तगुणसिद्धउ सुगुरुपसाए हुवउ पसिद्धउ ॥

(हि. १३ पृ. १०४)

लेखांक ५६३ – १ यंत्र　　मलयकीर्ति

संवत १५०२ वर्षे कार्तिक सुदि ५ भौमदिने श्रीकाष्ठासंघे भ श्रीगुणकीर्तिदेवाः तत्पट्टे श्रीयशकीर्तिदेवाः तत्पट्टे श्रीमलैकीर्तिदेवान्वये साहु बरदेवा तस्य भार्या जैणी ॥

(अहार, अ. १० पृ. १५६)

लेखांक ५६४ – १ मूर्ति

सं. १५१० माघ सुदि १३ सौमे श्रीकाष्ठासंघे आचार्य मलयकीर्तिदेवाः तयो प्रतिष्ठितम् ॥

(भा. प्र. पृ. १३)

लेखांक ५६५ – [समयसार]　　गुणभद्र

गगनावनिभूतेन्दुगण्ये श्रीविक्रमाद्गते ।
अब्दे राधे तृतीयायां शुक्लायां बुधवासरे ॥ २
जिनालयैराढ्यगृहैर्विमानसमैर्वरैश्चुम्बितवायुमार्गः ।
अदीनलोको जनभित्तसौख्यप्रदोस्ति गोपाद्रिरिहर्धिपूर्णः ॥ ३
श्रीतोमरानूकशिखामणित्वं यः प्राप भूपालशतार्चितांघ्रिः ।
श्रीराजमानो हतशत्रुमान. श्रीडुंगरेंद्रोत्र नराधिपोस्ति ॥ ४
दीक्षापरीक्षानिपुण. प्रभावान् प्रभावयुक्तोद्यमदादियुक्त. ।

श्रीमाथुरानूकलललामभूतो भूनाथमान्यो गुणकीर्तिसूरि ॥ ५
पट्टे तदीयेजनि पुण्यमूर्ति श्रीमान् यश कीर्तिरनल्पशिष्ये ॥ ६
तेजोनिधि सूरिगुणाकरोस्ति पट्टे तदीये मलयादिकीर्ति ॥ ७
·· पट्टे ततोस्यारिरनगमगभग कले' श्रीगुणभद्रसूरि' ॥ ८
आम्नाये वरगर्गगोत्रतिलक तेषां जनानंदकृत ।
यो अन्वयमुखसाधुमहित श्रीजैनधर्मावृत ॥
दानादिव्यसनो निरुद्धकुनय सम्यक्त्वरत्नाबुधि ।
जज्ञेसौ जिणदाससाधुरनघो दासो जिनाङ्घ्रिद्वयो ॥ ९

(से. २४)

लेखांक ५६६ – [पंचास्तिकाय]

सवत् १५१२ वर्षे माघ वदि २ बुधे श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे भ. श्रीगुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ श्रीयश कीर्तिदेवा तत्पट्टे श्रीमलयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ. श्रीगुणभद्रदेवा । भ श्रीगुणभद्रैर्निजकर्मक्षयाय इद पचास्तिकाय-शास्त्र ब्र. धर्मदासाय प्रत्त ॥

(का. ४१२)

लेखांक ५६७ – [ज्ञानार्णव]

सवत १५२१ वर्षे असाढ सुदि ६ सोमवासरे श्रीगोपाचलदुर्गे तोमर-वशे राजाधिराजश्रीकीर्तिसिंहराज्ये प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ श्रीगुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ श्रीयश कीर्तिदेवा तत्पट्टे भ श्रीमलयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ श्रीगुणभद्रदेवा तदाम्नाये गर्गगोत्रे · ॥

(अ ५ पृ ४०३)

लेखांक ५६८ – आदिनाथ मूर्ति

स १५२९ वै सुदी ७ बुधे श्रीकाष्ठासघे भ श्रीमलयकीर्ति भ गुण-भद्राम्नाये अग्रोत्कान्वये मित्तलगोत्र ॥

(भा प्र पृ ८)

लेखांक ५६९ – आदिनाथ मूर्ति

स १५३१ फाल्गुण सुदी ५ शुक्रे श्रीकाष्ठासघे भ गुणभद्राम्नाये जैसवाल सा काल्हा भार्या जयश्री ॥

(भा प्र पृ ८)

लेखांक ५७० – नेमिनाथ मूर्ति

सं. १५३७ वैसाख सुदी १० बुधे काष्ठासंघे भ. मलयकीर्ति भ. गुणभद्राम्नाये अग्रोत्कान्वये गोयलगोत्रे सा. राजू भार्या जाल्ही ··· महाराजश्रीकल्याणमल्लराज्ये ॥

(भा. प्र. पृ. १४)

लेखांक ५७१ – चौवीसी मूर्ति

संवत १५४८ वैशाख सुदि ५ काष्ठासंघे भ गुणभद्रदेवा सा लूणा सुत तिहुणा ॥

(फतेहपुर, अ. ११ पृ ४०६)

लेखांक ५७२ – [महापुराण–पुष्पदंत]

संवत १५७५ वर्षे भादवा सुदि बुद्धदिने कुरुजांगलदेसे सुलितानसिकंदरपुत्र सुलितान इब्राहिमु राज्य प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भ. श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तदाम्नाये जैसवालु चौ. टोडरमलु इदं उत्तरपुराणटीका लिखापितं ॥

(प्रस्तावना पृ. १५ माणिकचंद्र ग्रंथमाला, बम्बई)

लेखांक ५७३ – गुटका

स्वस्ति श्रीविक्रमार्कसंवत्सर १५७६ जेठ वदि १ पडिवा शुक्रदिने कुरुजांगलदेशे सुवर्णपथनाम्नि सुदुर्गे सिकंदरसाहि तत्पुत्र सुलतान इब्राहिमु राज्य प्रवर्तमाने काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे आचार्यश्रीमाहवसेनदेवाः तत्पट्टे भ. उद्धरसेनदेवाः तत्पट्टे भ. देवसेनदेवा तत्पट्टे भ. विमलसेनदेवाः तत्पट्टे भ. धर्मसेनदेवाः तत्पट्टे भ भावसेनदेवाः तत्पट्टे भ सहस्रकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. गुणकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ यशःकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ. मलयकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ श्रीगुणभद्रदेवा. तत्पट्टे भ श्रीगुणचंद्र तच्छिष्य ब्रह्म मांडण एषां गुरूणामाम्नाये ·॥

(अ. ५ पृ. २५७)

लेखांक ५७४ – शांतिनाथचरित्र

इह जोयणिपुरु पुरवरहं सारु जहु वण्णणि इह सक्कु वि असारु ।
पच्चतणिवइ संगहइ दड्डु रायाहिराउ वव्वरु पयंडु ।
''जहि मुणिवर सत्थइ वायरंति महजण्ण पूय सावय करंति ।
'तह कट्ठ संघ माहुर वि गच्छि पुक्खरगण मुणिवर चइवि लच्छि ।
जसमुत्ति वि जसकित्ति वि मुणिंदु भव्वयणकमलवियसणदिणेंदु ।
तहु सीसु वि मुणिवरु मलयकित्ति अणवरय भमइ जगि जाह कित्ति ।
तहु सीसु वि गुणगणरयणभूरि भुवणयलि सिध्दु गुणभद्दसूरि ।
तहु पयभत्तउ साहु भोयराउ जाणिज्जइ ।
गुणवड्ढियइ णिवास जोयणिपुरि णिवसिज्जइ ॥
'एयाहँ मज्झि साहारणेण काराविउ एहु गंथु तेण ।
कम्मक्खय वि णिमित्तें सारउ संतिणाहचरिउ वि गुणारउ ।
विक्कमरायहु ववगयकालइ रिसिवसुसरभुवि अंकालइ ।
कत्तिय पढम पक्खि पचमि दिणि हुउ पुरिपुण्णु वि उग्गंतइ इणि ॥

(अ. ५ पृ. २५४)

लेखांक ५७५ – (धनदचरित्र)

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यराज्ये सं १५९० वर्षे मार्गशिर सुदि ११ दिने बृहस्पतिवारे अश्विनीनक्षत्रे परिघजोगे श्रीकुरुजांगलदेशे सुलितान मुगल काबली हमायुराज्य प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ. श्रीमलयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तस्य शिष्य मुनि धर्मदास तस्य आम्नाये अग्रोतकवंशभूषणे गर्गगोत्र दहीरपुरवास्तव्य श्रावकाचारविचारणैकविदग्धान् सा डालू ॥

(अ. ५ पृ. ५०)

लेखांक ५७६ – (उत्तरपुराण–पुष्पदंत) भानुकीर्ति

संवत् १६०६ वर्षे मार्गसिर वदि ८ अष्टमी तिथौ भृगुवासरे आदौ अश्लेषातारे मघानाम्नि नक्षत्रे शुभनाम्नि योगे भयाणाजनपदे अब्राह्मावाद शुभस्थाने सुरिसाह सलेमसाहि विजयराज्ये श्रीमत्काष्ठासंघे माथुरान्वये

पुष्करगणे भ. श्रीगुणकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीयशःकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. मलयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीगुणभद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीभानुकीर्तिस्तदन्वये अग्रोतकान्वये गोयलगोत्रे · एतेषां मध्ये सा रूपचंदेन उत्तरपुराणाख्यं शास्त्रं लिखाप्य भ. श्रीभानुकीर्तये दत्तं निजज्ञानावर्णीकर्मक्षयनिमित्तं ॥

(म. प्रा. पृ. ७२३)

लेखांक ५७७ – [भविष्यदत्तचरित] कुमारसेन

संवत् १६१५ वर्षे फागुण सुदि सप्तमी बुधवासरे अकबरराज्ये प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे · भ. श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीभानुकीर्तिदेवाः तत्सिष्य मंडलाचार्य श्रीकुमारसेनदेवा तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोइलगोत्रे··· ॥

(अ. ७ पृ. ५०)

लेखांक ५७८ – जंबूस्वामिचरित–राजमल्ल

श्रीमति काष्ठासंघे माथुरगच्छेथ पुष्करे च गणे ।
लोहाचार्यप्रभृतौ समन्वये वर्तमानेथ ॥ ६०
तत्पट्टे परममलयकीर्तिदेवास्ततः परं चापि ।
श्रीगुणभद्रःसूरिर्भट्टारकसंज्ञकश्चाभूत् ॥ ६१
तत्पट्टमुच्चमुदयाद्रिमिवानु भानुः
श्रीभानुकीर्तिरिह भाति हतांधकारः ।
उद्द्योतयन्निखिलसूक्ष्मपदार्थसार्थान्
भट्टारको भुवनपालकपद्मबंधुः ॥ ६२
तत्पट्टमब्धिमभिवर्धनहेतुरिन्दुः
सौम्यः सदोदयमयो लसदंशुजालैः ।
ब्रह्मव्रताचरणनिर्जितमारसेनो
भट्टारको विजयतेऽथ कुमारसेनः ॥ ६३

[अध्याय १]

लेखांक ५७९ – [जंबूस्वामिचरित–राजमल्ल]

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दसंवत् १६३२ वर्षे चैत्र

सुदि ८ वासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीअर्गलपुरदुर्गे श्रीपातिसाहिजलालदीनअकबरसाहिप्रवर्तमाने श्रीमत्काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भ श्रीमलयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीगुणभद्रसूरिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीभानुकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीकुमारसेननामधेयास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये भटानियाकोलवास्तव्यसाधुश्रीनंदन · एतेषां मध्ये परमसुश्रावकसाधुश्रीटोडरेन जंबूस्वामिचरित्रं कारापितं ॥

(माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला, बम्बई)

लेखांक ५८० – पट्टावली

माधवसेन

श्रीमन्माधवसेनसाधुममहं ज्ञानप्रकाशोल्लसत्-
स्वात्मालोकनिलीयमात्मपरमानंदोर्मिसंवर्मिनम् ।
ध्यायामि स्फुरदुग्रकर्मनिगणोच्छेदाय विष्वग्भवा-
वर्ते गुप्तिगृहे वसन्नहरहर्मुक्त्यै स्पृहावानिव ॥ २२

(भा १ कि ४ पृ १०४)

लेखांक ५८१ – पट्टावली

विजयसेन

समजनि जनिताश. क्षिप्तदुष्कर्मपाश
कृतशुभगतिवास प्रोद्गतात्मप्रकाश. ।
जयति विजयसेनः प्रास्तकदर्पसेन
तदनु मनुजवद्य सर्वभावैरनिंद्य. ॥ २३

[उपर्युक्त]

लेखांक ५८२ – पट्टावली

नयसेन

तत्पट्टपूर्वाचलचद्दरश्मिर्मुनीश्वरोभून्नयसेननामा ।
तपो यदीय जगतां त्रयेपि जेगीयते साधुजनैरजस्रम् ॥ २५
यद्यस्ति शक्तिर्गुणवर्णनाया मुनीशितु श्रीनयसेनसूरे ।
तदा विहायान्यकथां समस्ता मामोपयास परिवर्णयन्तु ॥ २६

(उपर्युक्त)

लेखांक ५८३ – पट्टावली   श्रेयांससेन

शिष्यस्तदीयोस्ति निरस्तदोषः श्रेयांससेनो मुनिपुंडरीकः ।
अध्यात्ममार्गे खलु येन चित्तं निवेशितं सर्वमपास्य कृत्यं ॥ २७

(उपर्युक्त पृ १०५)

लेखांक ५८४ – पट्टावली   अनंतकीर्ति

तत्पट्टधारी सुकृतानुसारी सन्मार्गचारी निजकृत्यकारी ।
अनंतकीर्तिर्मुनिपुंगवोत्र जीयाज्जगल्लोकहितप्रदाता ॥ २९

[उपर्युक्त]

लेखांक ५८५ – पट्टावली   कमलकीर्ति

प्रसृमरवरकीर्तेः सर्वतोनंतकीर्तेः
गगनवसनपट्टे राजते तस्य पट्टे ।
सकलजनहितोक्तिः जैनतत्त्वार्थवेदी
जगति कमलकीर्तिर्विश्वविख्यातकीर्तिः ॥ ३१

(उपर्युक्त)

लेखांक ५८६ – १ मूर्ति

संवत् १४४३ ज्येष्ठ सुदी ५ गुरौ महासारस्यज राजा नाथदेव राज्य-प्रवर्धमाने काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे प्रतिष्ठा ··कमलकीर्तिदेव जैस-वाल विसाल रागा(संघा)चार्य ·· ॥

[मसाढ, जैनमित्र २–८–१९११]

लेखांक ५८७ – पट्टावली   क्षेमकीर्ति

अध्यात्मनिष्ठ. प्रसरत्प्रतिष्ठः कृपावरिष्ठ. प्रतिभावरिष्ठ' ।
पट्टे स्थितस्य त्रिजगत्प्रशस्यः श्रीक्षेमकीर्तिः कुमुदेन्दुकीर्तिः ॥ ३३

(भा. १ कि. ४ पृ १०५)

लेखांक ५८८ – (प्रवचनसार) हेमकीर्ति

विक्रमादित्यराज्येऽस्मिश्चतुर्दशपरे गते ।
नवषष्ठ्या युते किंनु गोपाद्रौ देवपत्तने ॥ ३
अनेकभूभुक्पदपद्मलग्नस्तस्मिन्निवासी ननु पाररूपः ।
शृंगारहारो भुवि कामिनीनां भूभुक्प्रसिद्ध. श्रीवीरमेंद्र ॥ ४
··श्रीकाष्ठसंघे जगति प्रसिद्धे महद्गुणौघे त्रयमाथुरान्वये ।
सदा सदाचारविचारदक्षे गणे सुरम्ये वरपुष्कराख्ये ॥ ८
मुनीश्वरोभून्नयसेनदेवः कृशाष्टकर्मा यशसां निवास. ।
पट्टे तदीये मुनिरश्वसेन आसीत्सदा ब्रह्मणि दत्तचेताः ॥ ९
पट्टे तदीये शुभकर्मनिष्ठोप्यनतकीर्तिर्गुणरत्नवार्धिः ।
मुनीश्वरोभूज्जिनशासनेंदुस्तत्पट्टधारी भुवि क्षेमकीर्ति. ॥ १०
पट्टे तदीये ननु हेमकीर्तिस्तप प्रभानिर्जितभानुभानु ।
रत्नत्रयालंकृतधर्ममूर्तिर्यतीश्वरोभूज्जगति प्रसिद्ध ॥ ११
· पारावारो हि लोके यो जनानिमिषसेवित ।
देवकीर्तिमुनि साक्षात् परं क्षारविवर्जित: ॥ १३
व्याख्यायैव गुरु साक्षात् पशुधर्मोविनिर्गत ।
पद्मकीर्तिमुनिर्भाति परं रागविवर्जित ॥ १४
· प्रतापचद्रो हि मुनिप्रधान. स्वव्याख्यया रंजितसर्वलोकः ।
नियंत्रितात्मीयमनोविहगो विवादिभूभृत्कुलिगो नितांत ॥ १६
गुणरत्नैरकूपारो भवभ्रमणशकित. ।
हेमचंद्रो यति साक्षात् पर ग्राहविवर्जित. ॥ १७
पद्मकीर्तिमुने शिष्यो गुणरत्नमहोनिधि ।
ब्रह्मचारी हरीराज. शीलव्रतविभूषित ॥ १९

(रायचन्द्र शास्त्रमाला, बम्बई १९३५)

लेखांक ५८९ – आराधनासारटीका

अश्वसेनमुनीशोभूत् पारदृश्वा श्रुताबुधे. ।
पूर्णचंद्रायितं येन स्याद्वादविपुलांबरे ॥ १
श्रीमाथुरान्वयमभूदधिपूर्णचंद्रो

निर्धूतमोहतिमिरप्रसरो मुनींद्रः ।
तत्पट्टमंडनमभूत् सदनंतकीर्ति-
र्ध्यानाग्निदग्धकुसुमेषुरनंतकीर्तिः ॥ २
काष्ठासंघे भुवनविदिते क्षेमकीर्तिस्तपस्वी
लीलाध्यानप्रसृमरमहामोहदावानलाभः ।
आसीद्दासीकृतरतिपतिर्भूपतिश्रेणिवेणी--
प्रत्यग्रस्रग्वत्सहचरपदद्वंद्वपद्मस्ततोपि ॥ ३
तत्पट्टोदयभूधरेतिमहति प्राप्तोदये दुर्जयं
रागद्वेषमहांधकारपटलं सवित्करैर्दारयन् ।
श्रीमान् राजति हेमकीर्तितरणिः स्फीतां विकाशश्रियं
भव्यांभोजचये दिगंवरपथालंकारभूतो दधत् ॥ ४
विदितसमयसारज्योतिषः क्षेमकीर्ति(र्ते)-
र्हिमकरसमकीर्तिः पुण्यमूर्तिर्विनेयः ।
जिनपतिशुचिवाणीस्फारपीयूषवापी-
स्नपनशमिततापो रत्नकीर्तिश्चकास्ति ॥ ५
आदेशमासाद्य गुरोः परात्मप्रबोधनाय श्रुतपाठचंचु ।
आराधनाया मुनिरत्नकीर्तिष्टीकामिमां स्पष्टतमां व्यधत्त ॥ ६

[माणिकचद्र ग्रथमाला, बम्बई]

लेखांक ५९० - चंद्रप्रभमूर्ति   कमलकीर्ति

संवत १५०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १५ शुक्रे काष्ठासंघे श्रीकमलकीर्तिदेवाः तदाम्नाये सा. थिरू स्त्री भानदे पुत्र सा जयमाल जाल्हण ते प्रणमति महाराज पुत्र गोशल ॥

(भा प्र पृ. १३)

लेखांक ५९१ - (भविसत्तकहा)

प्रमदावरसद्द्रव्यसंमिते समये वरे ।
कार्तिके मासि शुक्लायां पंचम्यां भौमवासरे ॥
गोपाचलमहादुर्गे चतुर्वर्णसमाकुले ।
निजर्धिस्पर्धितस्वर्गे पुरे जिनमतोदये ॥

तत्रास्ति नरेंद्रो हि धरे वादीभकेशरी ।
डुंगरेंद्रोन्यराजेंद्रमंडलीमहितो महान् ॥
श्रीकाष्ठासंघविख्यातमाथुरान्वयसन्मणौ ।
गणेशगणसंभूतिसत्खनौ पुष्करे गणे ॥
श्रीगौतमान्वयायातानंतकीर्ते पदाग्रणी ।
पट्टाचार्यो हि तेजस्वी कंजकीर्तिरभूद्यमी ॥
जैनागमाध्यात्मविचारदक्षो
व्यक्तीकृतात्मार्थपरार्थदक्ष ।
तस्यास्ति पट्टे मुनिवृन्दवन्द्य
श्रीक्षेमकीर्तिर्वरपुण्यमूर्ति ॥
पट्टोदयाद्रिशिखरे मुनिहेमकीर्तेः
प्राप्तोदय कमलकीर्तिरखंडकीर्तिः ।
साहित्यलक्षणविवादपटु प्रमाणी
मिथ्यात्ववादिकुमुदाकरचंडरश्मिः ॥
तेषामाम्नाये ॥

[म. प्रा. पृ. ७५६]

लेखांक ५९२ – महावीर मूर्ति

सं. १५१० वर्षे माघ सुदि ८ सोमे काष्ठासघे भ. कमलकीर्तिदेव अग्रोत्कान्वये गर्गगोत्रे तारन भा. देन्ही पुत्र सहय भा वारु पुत्र षेमचंद प्रणमंति ॥

[भा. प्र. पृ. ५]

लेखांक ५९३ – १ मूर्ति

शुभचंद्र

संवत १५३० वर्षे माघ सुदि ११ शुक्रे श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाश्रीकीर्तिसिंघदेव काष्ठासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ श्रीहेमकीर्ति तत्पट्टे भ कमलकीर्ति तत्पट्टे भ शुभचंद्रदेव तदाम्नाए अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे सं .... ॥

[रणथभौर, अ. ८ पृ ४४८]

लेखांक ५९४ – हरिवंशपुराण–रइधू

कमलकित्ति उत्तम खमधारउ भव्वहि भवअंबोणिहितारउ।
-तस्सपट्टकणयद्दिपरिट्ठिउ सिरिसुहचंदु सुतवउक्कंठिउ ॥

[अ. ११ पृ. २६८]

लेखांक ५९५ – दशलक्षण यंत्र　　यशःसेन

सं १६३९ वैशाख वदि ८ चंद्रवासरे श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ. श्रीकमलकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. यशः-सेनदेवाः तदाम्नाये पद्मावतीपुरवालान्वये साव होरगू ·· ॥

[फतेहपुर, अ.११ पृ. ४०८]

लेखांक ५९६ – अमरसेनचरित-माणिक्यराज　　पद्मनंदी

सिरि खेमाकित्तिपट्टहि पवीणु सिरिहेमकित्ति जि हयउ वामु।
तहु पट्ट वि कुमरविसेण णामु
तहु पट्टि णिविट्ठिउ बुहपहाणु सिरिहेमचंदु मयतिमिरभाणु।
तं पट्टि धुरंधरु वयपवीणु वर पोमणंदि जो तवह खीणु।
तं पणविवि णियगुरु सीलखाणि
···विक्कमरायहु ववगइ कालइ लेसु मुणीस वि सर अंकालइ।
धरणि अंक सहु चइत वि मासे सणिवारे सुयपंचमिदिवसे ॥

(अ. १० पृ. १६१)

लेखांक ५९७ – शिलालेख　　यशःकीर्ति

विक्रमादित्य संवत १५७२ वर्षे वेशाख सुदी ५ वार सोमे भ. श्रीजश-कीर्ति राजश्रीकला भार्या सौनबाई विजयी राज इदों धूलेव ग्रामं प्रति श्रीऋषभनाथ प्रणम्य · ·· श्रीकाष्ठासंघे बाजा न्यात काश्यपगोत्र राकडिया हिसा मंडप नव चूकीय ·· ·· ॥

[केशरियाजी, वीर २ पृ. ४५९]

लेखांक ५९८ – लाटीसंहिता–राजमल्ल

श्रीमति काष्ठासंघे माथुरगच्छेथ पुष्करे च गणे ।
लोहाचार्यप्रभृतौ समन्वये वर्तमाने च ॥ ६४
आसीत् सूरिकुमारसेनविदित पट्टस्थभट्टारक · ॥ ६५
तत्पट्टेजनि हेमचद्रगणभृत् भट्टारकोर्वीपति · ॥ ६६
तत्पट्टेभवदर्हतामन्वयव श्रीपद्मनदी गणी ·· ॥ ६७
तत्पट्टे परमाख्यया मुनियश कीर्तिश्च भट्टारको
नैर्ग्रंथ्यं पदमार्हतं श्रुतवलादादाय निःशेषतः ।
सर्पिर्दुग्धदधीक्षुतैलमखिल पचापि यावद्रसान्
त्यक्त्वा जन्ममथ तदुग्रमकरोत् कर्मक्षयार्थं तप ॥ ६८

[अध्याय १]

लेखांक ५९९ – सुगति शिरोमणि चूनडी महेंद्रसेन

अरे राज लवली जहागीरका फिरिय जगति तिस आनि हौ ।
शशि रस वसु विंदा धरहौ सवत सुनहु सुजानहौ ॥
गुरु मुनि माहेंद्रसेनजी पदपकज नमु तास हौ ।
सहर सुहाया वूडियै कहत भगौतीदास हौ ॥ ३५

(म. ३६)

लेखांक ६०० – अनेकार्थ नाममाला

सोलह सय रु सतासियइ साढि तीज तम पाखि ॥
गुरु दिन श्रवण नक्षत्र भनि प्रीति जोगु पुनि भाषि ॥ ६६
साहिजहांके राजमहि सिहरदिनगर मझारि ।
अर्थ अनेक जु नामकी माला भनिय विचारि ॥ ६७
गुरु गुणचद्दु अनिंद रिसि पच महाव्रतधार ।
सकलचद तिम पट्ट भनि जो भवसागर तार ॥ ६८
तासु पट्ट पुनि जानिए रिसि मुनि माहिंदसेन ।
भट्टारक सुवि प्रगट जसु जिनि जितियो रणि मैन ॥ ६९

..... कवि सु भगौतीदासु ।
तिनि लघुमति दोहा करे वहुमति करहु न हासु ॥ ७०

[अ. ५ पृ. १५]

लेखांक ६०१ - ज्योतिषसार

वर्षे षोडशशतचतुर्नवतिमिते श्रीविक्रमादित्यके
पंचम्यां दिवसे विशुद्धतरके मास्याश्विने निर्मले ।
पक्षे स्वातिनक्षत्रयोगमहिते वारे बुधे संस्थिते
राजत्साहिसहावदीनभुवने साहिजहां कथ्यते ॥
श्रीभट्टारकपद्मनंदिसुधियो देवा बभूवुर्भुवि
काष्ठासंघशिरोमणीभ्युदयदे ख्याते गणे पुष्करे ।
गच्छे माथुरनाम्नि जोजतिवरा कीर्तिर्यशः तत्पदात्
तत्पट्टे गुणचंद्रदेवगुणिनस्तत्पट्टपूर्वाचले ॥
सूर्याभाः सकलादिचद्रगुरवस्तत्पट्टशोभाकराः
संजाता हि महेंद्रसेनविपुला विद्यागुणालंकृताः ॥
· वर्धमानके देहरइं नौतन कोट हिसार ।
दास भगौतीने भन्यौ सो पुणु परोपकारि ॥

(म. २)

लेखांक ६०२ - वैद्यविनोद

श्रीमद्भट्टारकमाहेंद्रसेनगुरवे नम. ॥
...सत्रहसइं रुचिडोत्तरइं सुकल चतुर्दशि चैतु ।
गुरु दिन भनी पुरनु करिउ सुलितांपुरि सह जयतु ॥
लिखिउ अकबराबाद णिरु साहजहां के राज ।
साहनि मइसंपइसरिसु देवकोसमजवाज ॥
कृष्णदासतनुरुह गुणी नयरी बुडियइ वासु ।
सुहृद जु जोगीदास कउ कवि सु भगवतीदासु ॥

(म. ३)

लेखांक ६०३ - बृहत् सीता सतु

देसकोस गजि बाज जासु नमहि नृप क्षत्रपति ।
जहांगीरकौ राज सीता सतु मैं भनि किया ॥ ८०

गुरु गुणचंद आनंदसिंधु वखानिये ।
सकलचंद तिस पट्ट जगत तिस जानिये ।
तासु पट्ट जसु नाम खमागुनमंडनो ।
परह्मं गुरु मुनि माहिंदसेन मुणहु दुख खडणो ॥ ८१
गुरु मुनि माहिंदसेन भगौती तिस पद पकज रैन भगौती ।
किम्मनदास वणिउ तनुजभगौती तुरियै गहिउ व्रत मुनि जु भगौती ॥
नगर बूढियै वसै भगौती जन्मभूमि है आसि भगौती ।

(अ. ११ पृ २०५),

लेखांक ६०४ – (नवांककेवली)

श्रीकाष्ठासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ श्रीगुणचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ श्रीसकलचद्रदेवा तत्पट्टे भ. श्रीमाहेंद्रसेनदेवा तत्शिष्य पं. भगौतीदास तेनेद गोतमस्वामि नवाककेवली लिपिकृत । वाई मथुरा पठनार्थं लिखापित अर्गलपुरस्थाने ॥

(म. ४)

लेखांक ६०५ – [द्वात्रिंशदिंद्र केवली]

श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ श्रीमाहेंद्रसेन तत्शिष्य पं. भगोतीदासेन तेनेद द्वात्रिंशत् इद्रकेवली गौतमस्वामिगाथाकृतं। ततो वचनिका कृत ॥

(म. ५)

लेखांक ६०६ – लाटीसंहिता क्षेमकीर्ति

श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये परिणते सति ॥
सहैकचत्वारिंशद्भिरब्दाना शतषोडश ॥ २
तत्रादि चाश्विनी मासे सितपक्षे शुभान्विते ।
दशम्या च दाशरथे शोभने रविवासरे ॥ ३
अस्ति साम्राज्यतुल्योसौ भूपतिश्चाप्यकब्बर ।
महद्भिर्मंडलेशैश्च चुंबितांह्रिपदांबुज. ॥ ४
अस्ति दैगवरो धर्मो जैन शर्मैककारणम् ।

तत्रास्ति काष्ठासंघश्च क्षालितांहःकदम्बकः ॥ ५
तत्रापि माथुरो गच्छो गणः पुष्करसञ्ज्ञकः ।
लोहाचार्यान्वियस्तत्र तत्परंपरया यथा ॥ ६
नाम्ना कुमारसेनोभूद्भट्टारकपदाधिपः ।
तत्पट्टे हेमचंद्रोभूद्भट्टारकशिरोमणिः ॥ ७
तत्पट्टे पद्मनंदी च भट्टारकनभोंशुमान् ।
तत्पट्टेभूद्भट्टारको यशस्कीर्तिस्तपोनिधिः ॥ ८
तत्पट्टे क्षेमकीर्तिः स्यादद्य भट्टारकाग्रणीः ।
तदाम्नाये सुविख्यातं पत्तनं नाम डौकनि ॥ ९
तत्रत्यः श्रावको भारु······ ॥ १०
एतेषामस्ति मध्ये गृहवृषरुचिमान् फामनः संघनाथ–
स्तेनोच्चैः कारितेयं सदनसमुचिता संहिता नाम लाटी ।
श्रेयोर्थं फामनीयैः प्रमुदितमनसा दानमानासनाद्यैः
स्वोपज्ञा राजमल्लेन विदितविदुषाम्नायिना हैमचंद्रे ॥ ३८

(माणिकचन्द्र ग्रंथमाला, बम्बई १९२७)

लेखांक ६०७ – पट्टावली　　त्रिभुवनकीर्ति

श्रीमच्छ्रीक्षेमकीर्तिः सकलगुणनिधिर्विष्टपे भूरिपूज्यः
तेषां पट्टे समोदः समजनि मुनिभिः स्थापितो शास्त्रविद्भिः ।
श्री···रे हिसारे ··सुयतिततिवराः सत्क्रियोद्योतपुंजे
सोनंदं तासु सेव्यस्त्रिभुवनपुरत कीर्तिप. सूरिराजः ॥ ४२

[भा. १ कि. ४ पृ. १०६]

लेखांक ६०८ – पट्टावली　　सहस्रकीर्ति

धात्रीमंडलमंडनस्तु जयतात् श्रीसहस्रकीर्तिर्गुरु
राजद्राजकख्यातिसाहिविदितो भट्टारकाभूषण. ।
वर्षे वह्निनगांकचंद्रकमिते शुच्यार्यनभे दिने
पट्टेभूत् स च यस्य वै त्रिभुवनाद्याकीर्तिपट्टे स्थिते ॥ ४५

(भा. १ कि. ४ पृ. १०८)

लेखांक ६०९ – दशलक्षण यंत्र

स. १६८५ माह सुदि ५ गुरुवासरे श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्कर-गणे लोहाचार्याम्नाये भ श्रीयशःकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीक्षेमकीर्ति तत्पट्टे भ. त्रिभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ. सहस्रकीर्ति शिष्य जयकीर्ति तदाम्नाये पातिसाह श्रीसाहजांह खूरम दिल्ली राज्ये क्यामखां वंशे फतेहपुरे दिवान अलीखा तत्पुत्र दिवान श्रीदौलतखां राज्ये गर्गगोत्र सा. सांतू · भ श्रीसहस्रकीर्ति-उपदेशे सा माला दशलक्षणीयंत्र प्रतिष्ठापितं फतेहपुरमध्ये ।

(अ. ११ पृ. ४०८)

लेखांक ६१० – चरणपादुका

संवत १६८८ वर्षे फागुण सुदि ८ शनिवासरे श्रीकाष्ठासघे माथुर-गच्छे पुष्करगणे तदाम्नाये भ. जसकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. क्षेमकीर्तिदेवाः तत्पट्टे श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ सहस्रकीर्ति तस्य शिष्यणी अर्जिका श्रीप्रतापश्री कुरुजंगल देशे सफीदों नगरे गर्गगोत्रे चो. इंद्र सज्जनस्य भार्या ४ प्रमुखो भार्या तस्य पुत्री दमोदरी द्वितीय नाम गुरुमुख श्रीप्रतापश्री ·· पादुका करापित कर्मक्षयनिमित्त शुभं भवतु ॥

(भा. ७ पृ. १६)

लेखांक ६११ – ऋषिमंडल यंत्र

स. १७५५ फाल्गुण सुदि १२ बृहस्पतिवारे काष्ठासघे माथुरगच्छे · भ. त्रिभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ सहस्रकीर्ति तत् शिष्य दीपचद तदाम्नाये अग्रोकार पंचे हिसार वास्तव्य साह श्रीगिरधरदास तद् भार्या कतरणी ॥

[अ ११ पृ. ४०९]

लेखांक ६१२ – कूपलेख

महीचंद्र

श्रीभगवतजी सत्य सं १७३९ वर्षे मिति जेष्ठ सुदि ३ राज्य श्रीदिवान-दीनदारखा गुरु श्री १०८ भ श्रीमहीश्चंद्रजी व सकल श्रावक फतेहपुर का पुन्यनिमित्त जलथानक करायो सर्वको शुभकारक भवत ॥

(अ. ११ पृ. ४०५)

लेखांक ६१३ - मंदिर लेख　　देवेंद्रकीर्ति

संवत १५०८ मिती फागुन सुदि २ साह श्रावक तोहण देवराकी नीव ढलवाई। संवत १७७० मिती फागुन सुदि २ भ. श्रीखेमकीर्ति त. भ. सहस-कीर्ति त. भ. महीचंद्र त. भ. देवेद्रकीर्ति तत आम्नाय चौधरी सषमल तस्य पुत्र चौधरी रुपचंद वा सकल पंच श्रावक मिलकर देहराकी मरम्मत कराई॥

(फतेहपुर, अ. ११ पृ. ४०५)

लेखांक ६१४ - शिखर माहात्म्य　　जगत्कीर्ति

काष्ठासंघ ओर माथुर गच्छे पोष्कर गण कहो सुभ दछे।
लोहाचार्य आमणाय जो कही हिसार पद मनोहर सही॥ ३२
भट्टारक सहसकीर्ति जान भव्यपयोजप्रकासण भाण।
तासु पद महेंद्रकीर्ति जाण विद्यागुणभंडार सुजाण॥ ३३
देवेंद्रकीर्ति तत्पद वखाण शीलसिरोमणि ··की खाण।
तिनके पद परम गुणवान जगतकीर्ति भट्टारक जान॥ ३४
शिष्य लालचंद्र सुदि भाषा रचि वनावे।
येक चित्त सुने पढे ते भव्य सिवकू जाय॥ ३५
संमत अठरासै भले व्यालिस ऊपर जान।
पाछै फाल्गुण सुक्लकू संपूर्ण ग्रंथ वखाण॥ ३६

(ना १०७)

लेखांक ६१५ - दशलक्षण यंत्र　　ललितकीर्ति

स. १८६१ शक १७२६ मिती वैशाख सुदी ३ शनिवार श्रीकाष्ठासघे माथुरगच्छे ··भ देवेद्रकीर्ति तत्पट्टे भ जगत्कीर्ति तत्पट्टे भ ललितकीर्ति तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे साहजी जठमलजी तत् भार्या कृषा··· श्रीबृहत् दशलक्षण यंत्र करापितं उद्यापितं फतेहपुरमध्ये जती हरजीमल श्रीरस्तु सेखावत लक्ष्मणसिहजी राज्ये।

(अ ११ पृ. ४०९)

लेखांक ६१६ – मंदिर लेख

संवत १८८१ मिते मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठयां शुक्रवासरे काष्ठासंघे माथुरगच्छे भ. श्रीजगत्कीर्तिस्तत्पट्टे भ. श्रीललितकीर्तिजित्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोयल गोत्रे प्रयागनगरवास्तव्य साधुश्रीरायजीमल्ल ''साधुश्री-हीरालालेन कौशांबीनगरबाह्य प्रभासपर्वतोपरि श्रीपद्मप्रभजिनदीक्षाह्वान-कल्याणकक्षेत्रे श्रीजिनर्बिबप्रतिष्ठा कारिता अंगरेजवहादुरराज्ये सुभं ।

[पभोसा, एपिग्राफिया इंडिका २ पृ. २४४]

लेखांक ६१७ – महापुराणटीका

वर्षे सागरनागभोगिकुमिते मार्गे च मासेऽसिते
पक्षे पक्षतिसत्तिथौ रविदिने टीका कृतेयं वरा ।
काष्ठासंघवरे च माथुरवरे गच्छे गणे पुष्करे
देव' श्रीजगदादिकीर्तिरभवत् ख्यातो जितात्मा महान् ।।
तच्छिष्येण च मन्दतान्वितधिया भट्टारकत्वं यता
शुम्भद्वै ललितादिकीर्त्यभिधया ख्यातेन लोके ध्रुवम् ।।

(प्रस्तावना पृ. १५, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९५१)

लेखांक ६१८ – चंद्रप्रभमूर्ति राजेंद्रकीर्ति

सं १९१० मिती माघ सुदी १४ शनि काष्ठासघे लोहाचार्याम्नाये भ. राजेंद्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये अग्रोत्कान्वये वातिलगोत्रे साधुश्रीसाखीलाल तत्पुत्र मुनिसुव्रतदासेन सकलभ्रातृवर्गसिद्धयर्थे श्रीजिनबिंब प्रतिष्ठा कारापित ।।

(भा. प्र पृ. १)

लेखांक ६१९ – पार्श्वनाथ मूर्ति

स. १९२३ मिती द्वितीय जेठ सुदि १० लोहाचार्याम्नाये भ राजेद्र-कीर्तिदेवास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये वासल गोत्रे साहू जिनवरदास ।।

(फतेहपुर, अ ११ पृ ४०७)

लेखांक ६२० – नेमिनाथ मूर्ति

संवत १९२९ वैसाख सुदि ३ भ. राजेंद्रकीर्ति तदाम्नाये अग्रोतकान्वये साहु मूभीलाल भार्या शेयागकुमारी तया प्रतिष्ठा कारापितं ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६२१ – पट्टावली मुनींद्रकीर्ति

एतो निजगुरुपट्टं प्राप्याध्यासीन्मुनींद्रशुभकीर्तिः ।
युगयुगश्वेछिकवर्षे वीरस्याहो गतो हि सुरलोकं ॥ ५३

(भा १ कि ४ पृ. १०७)

काष्ठासंघ–माथुर गच्छ

इस गच्छ का नाम मथुरा नगर से लिया गया है।[९५] दर्शनसार के अनुसार संवत् ९५३ में रामसेन इस सघ के आचार्य थे। उन ने नि.पिच्छ का उपदेश दिया अर्थात् मुनियो के लिए पिच्छी के धारण का निषेध किया [ले. ५४१]।

इस सघ के पहले ऐतिहासिक उल्लेख आचार्य अमितगति के ग्रन्थों में पाये जाते हैं। आप की गुरुपरम्परा देवसेन–अमितगति–नेमिषेण–माधवसेन–अमितगति इस प्रकार थी। आप ने सवत् १०५० मे मुजराज के राज्यकाल में सुभाषितरत्नसन्दोह लिखा, सवत् १०६८ मे वर्धमाननीति की रचना की, सवत् १०७० में धर्मपरीक्षा तथा सवत् १०७३ में पचसंग्रह का लेखन पूर्ण किया। तत्त्वभावना, उपासकाचार, द्वात्रिंशिका और आराधना ये आप के अन्य ग्रन्थ हैं (ले ५४२–४९)।[९६]

माथुर सघ के दूसरे प्राचीन आचार्य छत्रसेन थे। आप के शिष्य आलोक ने सवत् ११६६ में परमार विजयराज के राज्यकाल में[९७] ऋषभनाथ का मन्दिर बनवाया [ले ५५०]।

इस सघ के तीसरे ज्ञात आचार्य गुणभद्र हैं। आप ने संवत् १२२६ में बनवाये गये पार्श्वनाथ मन्दिर की विस्तृत प्रशस्ति लिखी है [ले ५५१]। यह मन्दिर चौहान वशीय सोमेश्वर के राज्यकाल में बना था।[९८]

---

९५ इस गच्छ के उत्तर कालीन विशेषणों में पुष्कर गण और लोहाचार्याम्नाय का अन्तर्भाव होता है। पुष्करगण के विषय में सेनगण के हिन्दी सार का आरम्भ देखिए। लोहाचार्य से सम्भवत. अगज्ञानी आचार्यों में अन्तिम आचार्य लोहार्य का अभिप्राय है–प्रस्तावना प्रकरण २ देखिए।

९६ अमितगति के विषय में विस्तृत विवेचन देखिए–जैन साहित्य और इतिहास पृ. १७२

९७ इस लेख के अतिरिक्त विजयराज के अन्य उल्लेख ज्ञात नही हैं।

९८ सोमेश्वर चौहान वश के अन्तिम राजा पृथ्वीराज के पिता थे। इन का राज्यकाल निश्चित नहीं है।

धर्मकीर्ति के शिष्य ललितकीर्ति इस संघ के चौथे प्राचीन आचार्य हैं। आप ने सवत् १२३४ मे एक देवीकी मूर्ति प्रतिष्ठित की थी [ले. ५५२]।

पांचवे प्राचीन आचार्य अमरकीर्ति ने अपनी गुरुपरम्परा अमित-गति–शान्तिषेण–अमरसेन-श्रीषेण–चन्द्रकीर्ति–अमरकीर्ति इस प्रकार दी है।[99] आप ने सवत् १२४४ मे नेमिनाथचरित की तथा सवत् १२४७ में षट्कर्मोपदेश की रचना की [ले ५५३–५४]। द्वितीय ग्रन्थ की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि आप ने महावीरचरित, यशोधरचरित, धर्मचरितटिप्पण, सुभाषितरत्ननिधि, धर्मोपदेशचूडामणि. ध्यानप्रदीप आदि ग्रन्थ लिखे थे।

मध्यकालीन माथुरगच्छ परम्परा का आरम्भ माधवसेन[100] से होता, है। आप के दो शिष्य उद्धरसेन और विजयसेन से दो परम्पराए आरम्भ हुई। अनुश्रुति के अनुसार माधवसेन दिल्ली के बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी के राज्यकाल में हुए थे [ले. ५७३,५८० तथा इन के मूल सन्दर्भ]।

उद्धरसेन के बाद क्रमशः देवसेन, विमलसेन, धर्मसेन, भावसेन, सहस्रकीर्ति और गुणकीर्ति भट्टारक हुए (ले. ५७३,५५८)। गुणकीर्ति की आम्नाय में सवत् १४६८ में ग्वालियर मे राजा वीरमदेव के राज्यकाल

---

९९ गुरुपरम्परा निदर्शक मूल पद्य हमें प्राप्त नही हो सके। यह प. परमानन्द के अनुवाद पर से ली गई है [अनेकान्त व ११ पृ ४१५]

१०० पट्टावली में माधवसेन से पहले क्रमश. जयसेन, वीरसेन, ब्रह्मसेन, रुद्रसेन, भद्रसेन, कीर्तिषेण, जयकीर्ति, विश्वकीर्ति, अभयकीर्ति, भूतिसेन, भावकीर्ति, विश्वचन्द्र, अभयचन्द्र, माघचन्द्र, नेमिचन्द्र, विनयचन्द्र, बालचन्द्र, त्रिभुवनचन्द्र, रामचन्द्र, विजयचन्द्र, यश.कीर्ति, अभयकीर्ति, महासेन, कुन्दकीर्ति, त्रिभुवनचन्द्र, रामसेन, हर्षसेन, गुणसेन, कुमारसेन, तथा प्रतापसेन इन का उल्लेख हुआ है।

में[१०१] अगरवाल साध्वी देवश्री ने पचास्तिकाय की प्रति लिखवाई थी [ले. ५५५]। आप ने सवत् १४७३ में एक मूर्ति स्थापित की (ले. ५५६)।

गुणकीर्ति के पट्टशिष्य यश.कीर्ति हुए। आप ने ग्वालियर में डूंगरसिंह के राज्यकाल में[१०२] सवत् १४८६ में भविष्यदत्तपचमीकथा की एकप्रति लिखी [ले. ५५७]। आप ने पाडवपुराण लिखा तथा त्रिभुवन स्वयभू कृत अरिष्टनेमिचरित की एक अधूरी प्रति को स्वय पूरा किया [ले. ५५८–५९]।

यशःकीर्ति के शिष्य पडित रइधू ने सवत् १४९७ में ग्वालियर में डूगरसिंह के राज्यकाल में एक आदिनाथ मूर्ति स्थापित की [ले. ५६०]। इन के सन्मतिजिनचरित से पता चलता है कि अगरवाल जाति के क्षुल्लक खेल्हा ने ग्वालियरमें चद्रप्रभ की उत्तुग मूर्ति करवाई थी [ले. ५६१]।[१०३] यश.कीर्ति से गुरुमन्त्र पा कर सिंहसेन ने आदिपुराण की रचना की [ले ५६२]।

यश.कीर्ति के पट्टशिष्य मलयकीर्ति हुए। आप ने सवत् १५०२ में एक यत्र तथा सवत् १५१० में एक मूर्ति स्थापित की [ले. ५६३–५६४]।

मलयकीर्ति के अनन्तर गुणभद्र भट्टारक हुए। इन के आम्नाय में अगरवाल जिनदास ने सवत् १५१० में ग्वालियर में डूगरसिंह के राज्यकाल में समयसार की एक प्रति लिखवाई [ले ५६५]। सवत् १५१२ में गुणभद्र ने पचास्तिकाय की एक प्रति ब्रह्म धर्मदास को दी [ले.

१०१–१०२ तोमरवश का इतिहास अभी सुनिश्चित नहीं हुआ है। वीरमदेव, डूगरसिंह, कीर्तिसिंह और मानसिंह इन चार राजाओं के उल्लेख इसी प्रकरण में हुए हैं।

१०३ पडित रइधू की अन्य कृतियों के विवेचन के लिए पं परमानन्द का एक लेख देखिए—अनेकान्त वर्ष १० पृ. ३७७

५६६)। इन के आम्नाय मे संवत् १५२१ मे ग्वालियर मे कीर्तिसिंह के राज्यकाल[१०४] मे ज्ञानार्णव की एक प्रति लिखी गई (ले. ५६७)। संवत् १५२९ और सवत् १५३१ में आप ने दो आदिनाथ मूर्तिया स्थापित कीं (ले. ५६८-६९)। संवत् १५३७ मे एक नेमिनाथ मूर्ति तथा सवत् १५४८ मे एक चौवीसी मूर्ति भी आप ने स्थापित की (ले. ५७०-७१)। इन मे पहली प्रतिष्ठा कल्याणमल्ल के राज्यकाल[१०५] में की गई थी। संवत् १५७५ मे सुलतान इब्राहीम के राज्य काल में[१०६] चौधरी टोडरमल ने गुणभद्र के आम्नाय में महापुराण की एक प्रति लिखी (ले. ५७२)।

गुणभद्र के प्रशिष्य ब्रह्म मडन ने सवत् १५७६ मे सोनपत में इब्राहीम के राज्य काल में स्तोत्रादिका एक गुटका लिखा (ले. ५७३)। सवत् १५८७ मे आप के एक शिष्य ने शान्तिनाथ चरित्र लिखा[१०७] (ले. ५७४)। सवत् १५९० मे हुमायून के राज्यकाल मे गुणभद्र के शिष्य धर्मदास के आम्नाय मे धनदचरित्र की एक प्रति लिखी गई (ले. ५७५)।

गुणभद्र के पट्ट पर भानुकीर्ति भट्टारक हुए। सवत् १६०६ में शाह सलीम[१०८] के राज्य काल में साह रूपचद ने अब्राह्माबाद मे उत्तर-पुराण की एक प्रति आप को अर्पित की (ले ५७६)।

भानुकीर्ति के शिष्य कुमारसेन के आम्नाय मे सवत् १६१५ में अकबर के राज्यकाल मे भविष्यदत्तचरित की एक प्रति लिखी गई (ले ५७७)। आप के आम्नाय मे ही सवत् १६३२ मे आगरा मे अकबर

---

१०४ देखिए नोट १०१

१०५ कल्याणमल कोई स्थानीय शासक रहे होंगे।

१०६ दिल्ली के लोदी सुल्तान-सन् १५१८-२६ ई

१०७ इस ग्रन्थ के कर्ता के विषय में मतभेद है। एक मत से महिंदु या महीचद्र इस के कर्ता है, किंतु ग्रथातर के उल्लेखसे ज्ञात होता है कि इस के कर्ता दो है, महदू और बंभज्जुण।

१०८ दिल्ली के सूर वश के शासक-१५४५-१५५४ ई.

का राज्य था उस समय भटानिया कोल निवासी साहु टोडर की प्रार्थना पर पण्डित राजमल्ल ने जम्बूस्वामी चरित की रचना की (ले. ५७९-८०)।[१०९]

माथुर गच्छ की दूसरी मध्यकालीन परम्परा माधवसेन के शिष्य विजयसेन से आरम्भ हुई। इन के वाद इस में क्रमशः मासोपवासी नयसेन, श्रेयाससेन, अनन्तकीर्ति तथा कमलकीर्ति भट्टारक हुए। कमलकीर्ति ने सवत् १४४३ मे नाथदेव के राज्यकाल[११०] में एक मूर्ति स्थापित की (ले. ५८६)।

कमलकीर्ति के बाद क्षेमकीर्ति और उन के शिष्य हेमकीर्ति हुए। देवकीर्ति, पद्मकीर्ति, प्रतापचन्द्र, हेमचन्द्र आदि मुनि इन के आम्नाय मे थे। पद्मकीर्ति के शिष्य हरिराज ने सवत् १४६९ मे ग्वालियर मे वीरमदेव के राज्यकाल में[१११] प्रवचनसार की एक प्रति लिखी थी (ले. ५८८)। हेमकीर्ति के गुरुवन्धु रत्नकीर्ति ने देवसेनकृत आराधनासार पर सस्कृत टीका लिखी (ले. ५८९)।

हेमकीर्ति के पट्टशिष्य कमलकीर्ति हुए। आप ने सवत् १५०६ में एक चद्रप्रभ मूर्ति स्थापित की (ले ५९०)। आप की आम्नाय में सवत् १५०६ में ग्वालियर में डूगरसिंह के राज्यकाल में[११२] भविसत्तकहा की एक प्रति लिखी गई (ले. ५९१)। आप ने सवत् १५१० में एक महावीर मूर्ति स्थापित की (ले ५९२)

कमलकीर्ति के शुभचन्द्र और कुमारसेन ये दो पट्टशिष्य हुए।

---

१०९ राजमल्ल पर विस्तृत विवेचन के लिए जम्बूस्वामीचरित (माणिकचद ग्रथमाला) की पं. मुख्तार कृत प्रस्तावना देखिए। इसी प्रकरण में ले ६०६ व नोट ११५ भी देखिए

११० नाथदेव कोई स्थानीय शासक रहे होंगे।

१११ देखिए पूर्वोक्त नोट १०१

११२ देखिए पूर्वोक्त नोट १०२

शुभचन्द्र ने संवत् १५३० में ग्वालियर मे कीर्तिसिंह के राज्यकाल[113] मे एक मूर्ति स्थापित की (ले. ५९३)। रइधू रचित[114] हरिवंशपुराण से पता चलता है कि इन का मठ सोनागिरि में था (ले. ५९४)। इन के शिष्य यशःसेन ने संवत् १६३९ मे एक दशलक्षण यन्त्र स्थापित किया (ले. ५९५)।

कमलकीर्ति के दूसरे पट्टशिष्य कुमारसेन हुए। इन के शिष्य हेमचन्द्र थे। कवि राजमल्ल इन्ही की आम्नाय के थे।[115]

हेमचन्द्र के शिष्य पद्मनन्दि हुए। इन के शिष्य माणिक्कराज ने सवत् १५७६ मे अमरसेनचरित की रचना पूर्ण की (ले. ५९६)।

पद्मनन्दी के शिष्य यशःकीर्ति हुए। इन के समय सवत् १५७२ मे केशरियाजी मे सभामडप वनवाया गया (ले. ५९७)। कवि राजमल्ल के कथनानुसार यश.कीर्ति ने दीर्घ काल तक नीरस आहार का ही सेवन किया था (ले. ५९८)।

यश.कीर्ति के पट्टशिष्य दो हुए–गुणचन्द्र और क्षेमकीर्ति। गुणचन्द्र के शिष्य सकलचन्द्र और उन के शिष्य महेन्द्रसेन हुए। इन के शिष्य भगवतीदास ने जहागीर के राज्यकाल मे सवत् १६८० मे मुगति शिरोमणि चूनडी, शाहजहा के राज्यकाल में सवत् १६८७ मे अनेकार्थ नाममाला, सवत् १६९४ मे ज्योतिषसार, वैद्यविनोद, बृहत् सीता सतु तथा लघु सीता सतु की रचना की (ले. ५९९–६०३)। नवांक केवली तथा द्वात्रिंशदिन्द्र केवली इन शकुन ग्रन्थो की प्रतिलिपियां इन ने की थीं (ले. ६०४–६०५)।

यश.कीर्ति के दूसरे पट्टशिष्य क्षेमकीर्ति थे। इन के समय सवत् १६४१ मे पण्डित राजमल्ल ने डौकनी निवासी साह फामन के लिए लाटी संहिता नामक ग्रन्थ लिखा (ले. ६०६) उस समय अकवर का

---

११३ देखिए पूर्वोक्त नोट १०४

११४ देखिए पूर्वोक्त नोट १०३

११५ देखिए पूर्वोक्त नोट १०९

राज्य था। क्षेमकीर्ति के शिष्यों में वैराट नगर के भी लोग थे। वहाँ का जिनमन्दिर चित्रों से अलकृत किया गया था।

क्षेमकीर्ति के पट्टशिष्य त्रिभुवनकीर्ति हुए। इन का पट्टाभिषेक हिसार में हुआ था (ले ६०७)। इन के बाद सवत् १६६३ में सहस्र-कीर्ति पट्टाधीश हुए (ले. ६०८)। इन के शिष्य जयकीर्ति ने सवत् १६८५ में एक दशलक्षण यन्त्र स्थापित किया (ले. ६०९)। इन की शिष्या प्रतापश्री की समाधि सपीदों नगर में सवत् १६८८ में बनी (ले. ६१०)। इन के एक और शिष्य दीपचन्द्र नें सवत् १७५५ मे एक ऋषिमडल यत्र स्थापित किया (ले. ६११)।

सहस्रकीर्ति के पट्टशिष्य महीचद्र के समय सवत् १७२९ में फतेह-पुर में एक कुआ बनाया गया था (ले. ६१२)।

महीचद्र के शिष्य देवेन्द्रकीर्ति ने सवत् १७७० मे फतेहपुर के एक पुराने मदिर का जीर्णोद्धार कराया (ले. ६१३)।

देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य जगत्कीर्ति हुए। इन के शिष्य लालचद ने सवत् १८४२ में समेद शिखर माहात्म्य की रचना की (ले ६१४)।

जगत्कीर्ति के शिष्य ललितकीर्ति हुए। आप के समय सवत् १८६१ में फतेहपुर में दशलक्षण व्रत का उद्यापन हुआ (ले. ६१५) तथा सवत् १८८१ में पभोसा में एक मन्दिर का निर्माण हुआ (ले. ६१६)। आप ने सवत् १८८५ में महापुराणटीका की रचना की (ले. ६१७)।[११६]

ललितकीर्ति के पट्ट पर राजेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १९१० में एक चन्द्रप्रभ मूर्ति, सवत् १९२३ में एक पार्श्वनाथ मूर्ति तथा सवत् १९२९ में एक नेमिनाथ मूर्ति स्थापित की (ले.६१९-२०)।

राजेन्द्रकीर्ति के बाद मुनीन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए। इन का स्वर्ग-वास सवत् १९५२ में हुआ (ले ६२१)।

११६ ललितकीर्ति और कविवर वृन्दावनदासजी में अच्छे सम्बन्ध थे। इस विषय में प. नाथूराम प्रेमी कृत वृन्दावनविलास की प्रस्तावना देखिए।

काष्ठासंघ–माथुर गच्छ–कालपट

१ रामसेन (स. ९५३)

२ देवसेन
|
३ अमितगति
|
४ नेमिषेण
|
५ माधवसेन
|
६ अमितगति (स. १०५०-१०७३)
|
७ शान्तिषेण
|
८ अमरसेन
|
९ श्रीषेण
|
१० चन्द्रकीर्ति
|
११ अमरकीर्ति (स. १२४४-१२४७)

१२ छत्रसेन (स. ११६६)

१३ गुणभद्र (सं. १२२६)

१४ धर्मकीर्ति
|
१५ ललितकीर्ति (स. १२३४)

१६ माधवसेन

१७ उद्धरसेन — विजयसेन

(अगला पृष्ठ देखिए)

१८ देवसेन
|
१९ विमलसेन
|
२० धर्मसेन
|
२१ भावसेन
|
२२ सहस्रकीर्ति
|
२३ गुणकीर्ति (स. १४६८-१४७३)
|
२४ यश कीर्ति (स. १४८६-१४९७)
|
२५ मलयकीर्ति (स. १५०२-१५१०)
|
२६ गुणभद्र (स १५१०-१५९०)

२७ गुणचन्द्र (स १५७६)

भानुकीर्ति (स १६०६)
|
कुमारसेन (स १६१५-३२)

---

१७ विजयसेन
|
१८ नयसेन
|
१९ श्रेयाससेन
|
२० अनन्तकीर्ति
|
२१ कमलकीर्ति (स १४४३)
|
२२ क्षेमकीर्ति
|

२३ हेमकीर्ति (स. १४६०)

२४ कमलकीर्ति (स. १५०६-१५१०)

- शुभचन्द्र (स. १५३०)
  - यशःसेन

२५ कुमारसेन

२६ हेमचन्द्र

२७ पद्मनन्दि (सं. १५७६)

२८ यशःकीर्ति (स. १५७२)

- गुणचन्द्र
  - सकलचन्द्र
    - महेन्द्रसेन

२९ क्षेमकीर्ति (स. १६४१)

३० त्रिभुवनकीर्ति

३१ सहस्रकीर्ति (स. १६६३)

३२ महीचन्द्र (स. १७३९)

३३ देवेन्द्रकीर्ति (स. १७७०)

३४ जगत्कीर्ति (स. १८४२)

३५ ललितकीर्ति (स. १८६१-१८८५)

३६ राजेन्द्रकीर्ति (स. १९१०-१९२९)

३७ मुनीन्द्रकीर्ति (स. १९५२)

१४. काष्ठासंघ–लाडवागड–पुन्नाट–गच्छ

लेखांक ६२२ – हरिवंशपुराण जिनसेन

दधार कर्मप्रकृतिं श्रुतिं च यो जिताक्षवृत्तिर्जयसेनसद्गुरु. ।
प्रसिद्धवैयाकरणप्रभाववानशेषराद्धान्तसमुद्रपारग ॥ ३०
तदीयशिष्योऽमितसेनसद्गुरु पवित्रपुन्नाटगणाग्रणीर्गणी ।
जिनेन्द्रसच्छासनवत्सलात्मना तपोभृता वर्षशताधिजीविना ॥ ३१
सुशास्त्रदानेन वदान्यतामुना वदान्यमुख्येन भुवि प्रकाशिता ।
यदग्रजो धर्मसहोदर. शमी समग्रधीर्धर्म इवात्तविग्रह. ॥ ३२
तपोमयीं कीर्तिमशेषदिक्षु य क्षिपन् बभौ कीर्तितकीर्तिषेणक ।
तदग्रशिष्येण शिवाग्रसौख्यभागरिष्टनेमीश्वरभक्तिभाविना ।
स्वशक्तिभाजा जिनसेनसूरिणा धियाल्पयोक्ता हरिवंशपद्धति. ॥ ३३
शाकेष्वब्दशतेषु सप्तसु दिशं पचोत्तरेषूत्तरां
पातींद्रायुधनाम्नि कृष्णनृपजे श्रीवल्लभे दक्षिणां ।
पूर्वां श्रीमदवतिभूभृति नृपे वत्सादिराजे परां
सौराणामधिमंडलं जययुते वीरे वराहेऽवति ॥ ५२
कल्याणै परिवर्धमानविपुलश्रीवर्धमाने पुरे
श्रीपार्श्वालयनन्नराजवसतौ पर्याप्तशेष पुरा ।
पश्चाद्दोस्तटिकाप्रजाप्रजनितप्राज्यार्चनावर्चने
शाते शातगृहे जिनस्य रचितो वशो हरीणामयम् ॥ ५३

(पर्व ६६, माणिकचद ग्रथमाला, बम्बई १९३०)

लेखांक ६२३ – कडब दानपत्र अर्ककीर्ति

श्रीयापनीय-नंदिसंघ-पुनागवृक्षमूलगणे श्रीकित्या– (कीर्त्या) चार्यान्वये बहुष्वाचार्येष्वतीतेषु व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृंदवंदितचरण कूविलाचार्यणामासीत् । तस्यान्तेवासी समुपनतजनपरिश्रमाहार स्वदानसंतर्पितसमस्तविद्वज्जनो जनितमहोदय विजयकीर्तिनाम मुनिप्रभुरभूत् ।

अर्ककीर्तिरिति ख्यातिमातन्वन्मुनिसत्तम ।
तस्य शिष्यत्वमायातो नायातो वशमेनसाम् ॥

तस्मै मुनिवराय तस्य विमलादित्यस्य शणेश्वरपीडापनोदाय मयूर-

खंडिमधिवसति विजयस्कंधावारे चाकिराजेन विज्ञापितो वल्लभेंद्रः इडिगूविंषयमध्यवर्तिनं जालमंगलनामधेयग्रामं शकनृपसंवत्सरेषु शरशिखिमुनिषु (७३५) व्यतीतेषु ज्येष्ठमासशुक्लपक्षदशम्यां पुष्यनक्षत्रे चंद्रवारे मान्यपुरवरापरदिग्विभागालंकारभूतशिलाग्रामजिनेंद्रभवनाय दत्तवान्... ॥

(जैन शिलालेख सग्रह भा. २ पृ. १३७)

लेखांक ६२४ – आराधना कथाकोष   हरिषेण

...पुन्नाटसंघाम्बरसंनिवासी श्रीमौनिभट्टारकपूर्णचंद्रः ॥ ३
...कार्तस्वरापूर्णजनाधिवासे श्रीवर्धमानाख्यपुरेवसन् सः ॥ ४
सारागमाहितमतिर्विदुषा प्रपूज्यो
नानातपोविधिविधानकरो विनेय. ।
तस्याभवद्गुणनिधिर्जनताभिवंद्यः
श्रीशब्दपूर्वपदको हरिषेणसंज्ञ. ॥ ५
.. नानाशास्त्रविचक्षणो बुधगणैः सेव्यो विशुद्धाशयः
सेनान्तो भरतादिरस्य परमः शिष्यो बभूव क्षितौ ॥ ६
तस्य शुभ्रयशसो हि विनेयः सबभूव विनयी हरिषेणः ॥ ७
आराधनोद्धृतः पथ्यो भव्यानां भावितात्मनाम् ।
हरिषेणकृतो भाति कथाकोशो महीतले ॥ ८
नवाष्टनवकेष्वेषु स्थानेषु त्रिषु जायतः (?) ।
विक्रमादित्यकालस्य परिमाणमिदं स्फुटम् ॥ ११
संवत्सरे चतुर्विंशे वर्तमाने खराभिधे ।
विनयादिकपालस्य राज्ये शक्रोपमानके ॥ १३

(सिंघी जैन ग्रंथमाला, बम्बई)

लेखांक ६२५ – धर्मरत्नाकर   जयसेन

मेदार्येण महर्षिभिर्विहरता तेपे तपो दुश्चर
श्रीखंडिल्लकपत्तनान्तिकरणाभ्यर्धिप्रभावात्तदा ॥
शाठ्येनाप्युपतस्पृता सुरतरुप्रख्यां जनानां श्रियं
तेनाजीयत लाडबागड इति त्वेको हि संघोऽनघ. ॥

धर्मज्योत्स्ना विकिरति सदा यत्र लक्ष्मीनिवासा
प्रापुश्चित्रं सकलकुमुदायत्युपेता विकाशम ।
श्रीमान् सोभून्मुनिजननुतो धर्मसेनो गणींद्र-
स्तस्मिन् रत्नत्रितयसदनीभूतयोगीन्द्रवंशे ॥
तेभ्य: श्रीशांतिषेण समजनि सुगुरु: पापधूलीसमीर ॥
श्रीगोपसेनगुरुराविरभूत्स तस्मात् ॥
...अज्ञात. कलिना जगत्सु वलिना श्रीभावसेनस्तत: ॥
ततो जात शिष्य: सकलजनतानदजनन
प्रसिद्ध साधूना जगति जयसेनाख्य इह स. ॥
इदं चक्रे शास्त्रं जिनसमयसारार्थनिचितं
हितार्थं जंतूनां स्वमतिविभवाद् गर्वविकल: ॥
वाणेंद्रियव्योमसोममिते सवत्सरे शुभे ।
ग्रथोऽय सिद्धता यात सकलीकरहाटके ॥

(अ. ८ पृ. १०३)

लेखांक ६२६ – प्रद्युम्नचरित महासेन

श्रीलाटवर्गटनभस्तलपूर्णचंद्र.
शास्त्रार्णवान्तगसुधीस्तपसां निवास. ।
कान्ताकलावपि न यस्य शरैर्विभिन्न
स्वान्तं बभूव स मुनिर्जयसेननामा ॥ ?
तीर्णागमाबुधिरजायत तस्य शिष्य:
श्रीमद्गुणाकरगुणाकरसेनसूरि ।
..तच्छिष्यो विदिताखिलोरुसमयो वादी च वाग्मी कवि:
आसीत् श्रीमहसेनसूरिरनघ श्रीमुंजराजार्चित ॥ ३
श्रीसिंधुराजस्य महत्तमेन श्रीपर्पटेनार्चितपादपद्म: ।
चकार तेनाभिहित प्रबध स पावन निष्ठितमगजस्य ॥ ४

(जैन साहित्य और इतिहास पृ १८३)

लेखांक ६२७ – दूबकुण्ड शिलालेख विजयकीर्ति

श्रीलाटवागटगणोंन्नतरोहणाद्रि-माणिक्यभूतचरितो गुरुदेवसेन. ॥

...जातः श्रीकुलभूषणोऽखिलवियद्वासोगणग्रामणीः
सम्यग्दर्शनशुद्धबोधचरणालंकारधारी ततः ॥
रत्नत्रयाभरणधारणजातशोभ–स्तस्मादजायत स दुर्लभसेनसूरि. ॥
आस्थानाधिपतौ बुधादविगुणे श्रीभोजदेवे नृपे
सभ्येष्वंबरसेनपंडितशिरोरत्नादिषूद्यन्मदान् ।
योनेकान् शतशो अजेष्ट पटुताभीष्टोद्यमो वादिनः
शास्त्रांभोनिधिपारगोऽभवदतः श्रीशांतिषेणो गुरु. ॥
गुरुचरणसरोजाराधनावाप्तपुण्य–
प्रभवदमलबुद्धिः शुद्धरत्नत्रयोऽस्मात् ।
अजनि विजयकीर्तिः सूक्तरत्नावकीर्णो
जलधिभुवमिवैतां यः प्रशस्तिं व्यधत्त ॥
तस्मादवाप्य परमागमसारभूत धर्मोपदेशमधिकाधिगतप्रबोधाः ।
लक्ष्म्याश्च वंधुसुहृदां च समागमस्य मत्वायुषश्च वपुषश्च विनश्वरत्वं ॥
प्रारब्धाधर्मकांतारविदाहः साधुदाहडः ।
सद्विवेकश्च कूकेकः सूर्पटः सुकृतैः पटुः ॥
शृंग्राग्रोल्लिखिताम्बरं वरसुधासाद्रद्रवापांडुर
सार्थं श्रीजिनमंदिरं त्रिजगदानंदप्रदं सुंदरं ।
संभूयेदमकारयन् गुरुशिर. संचारिकेत्वंबरं–
प्रांतेनोच्छलतेव वायुविहते धामादिशत् पश्यताम् ॥

अथैतस्य जिनेश्वरमंदिरस्य निष्पादनपूजनसंस्काराय कालान्तरस्फुटितत्रुटित-प्रतीकारार्थं च महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंह. स्वपुण्यराशेरप्रतिहतप्रसरं परमोपचयं चेतसि निधाय गोणीं प्रति विंशोपक गोधूमगोणीचतुष्टयवाप-योग्यं क्षेत्रं च महाचक्रग्रामभूमौ रजकद्रहपूर्वदिग्भागवाटिका वापीसमन्वितां प्रदीपमुनिजनशरीराभ्यंजनार्थं करघटिकाद्वयं च दत्तवान् ॥

...संवत् ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमदिने ।

(एपिग्राफिया इंडिका २ पृ. २३७)

लेखांक ६२८ – पट्टावली महेंद्रसेन

त्रिषष्टिपुराणपुरुषचरित्रकर्ता स्वकीयतपस्तपनप्रकटप्रभावान् मेदपाट-

देशे प्रकटप्रभावं क्षेत्रपालं संबोध्य सकलमहीमंडलेप्याश्चर्यं चकार तेषां श्रीमहेंद्रसेनदेवाना ॥

(म. ३८)

लेखांक ६२९ – पट्टावली अनंतकीर्ति

चतुर्दशमतीर्थंकरचरित्रकर्ता तेषां अनंतकीर्तिदेवानां ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३० – पट्टावली विजयसेन

तत्पट्टे श्रीविजयसेनभट्टारकाणा यैर्वाराणस्यां पागुलहरिचंद्रराजानं प्रबोध्य तस्यैव सभायामनेकशिष्यसमूहसमन्वितं चद्रतपस्विनं विजित्य महावादवादीति नाम प्रकटीचकार ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३१ – पट्टावली चित्रसेन

तदन्वये श्रीमल्लाटवर्गटगच्छवशप्रतापप्रकटनयावज्जीवबोधोपवासैकांतरे नीरस्याहारेण तापनायोगसमुद्धारणधीरश्रीचित्रसेनदेवानां यैः पंचलाटवर्गटदेशे प्रतिबोधं विधाय मिथ्यात्वमलनिरसन चक्रे तत. पुन्नाटगच्छ इति भांडागारे स्थितं लोके लाटवर्गटनामाभिधानं पृथिव्यां प्रथित प्रकटीबभूव ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३२ – पट्टावली पद्मसेन

तदन्वये श्रीमत्लाटवर्गटप्रभावश्रीपद्मसेनदेवाना तस्य शिष्यश्रीनरेंद्रसेनदेवैः किंचिद्विद्यागर्वेत असूत्रप्ररूपणादाशाधार. स्वगच्छान्निःसारित. कदाग्रहग्रस्त श्रेणिगच्छमशिश्रियत् ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३३ - रत्नत्रयपूजा

अतुलसुखनिधानं सर्वकल्याणबीजं
जननजलधिपोतं भव्यसत्त्वैकपात्रं ।
दुरिततरुकुठारं पुण्यतीर्थप्रधानं
पिबतु जितविपक्षं दर्शनाख्यं सुधाम्बु ॥

इति श्रीलाडबागडीयपंडिताचार्यश्रीमन्नरेंद्रसेनविरचिते रत्नत्रयपूजाविधाने दर्शनपूजा समाप्ता ॥

(म. १११)

लेखांक ६३४ - वीतराग स्तोत्र

कल्याणकीर्तिरचितालयकल्पवृक्षं
पश्यन्ति पुण्यरहिता न हि वीतरागम् ॥ ८
श्रीजैनसूरिविनतक्रमपद्मसेनं
हेलाविनिर्दलितमोहनरेन्द्रसेनं . ॥ ९

(अ. ८ पृ. २३३)

लेखांक ६३५ - पट्टावली　त्रिभुवनकीर्ति

तस्य श्रीपद्मसेनस्य वर्याचार्यस्य धीमत. ।
पट्टोदयाचले चंद्रनिचंद्रविबुधाग्रणीः ॥
श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेवा. बभूवुः ॥

(म. ३८)

लेखांक ६३६ - पट्टावली　धर्मकीर्ति

तत्पट्टोदयाद्रिप्रभावक भ. श्रीधर्मकीर्तिदेवानाम् ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३७ - मंदिरलेख

विक्रमादित्यसंवत् १४३१ वर्षे वैशाख सुदी अक्षयतिथौ बुधदिने गुरु वाधेहा वाणि कृत्य परि सरोवर लोकाति खंडवाला पगनो राज ॐ

विजयराज पालयति सति उदयराज शैल श्रीमज्जिनेन्द्राराधनतत्परपर्यन्त वागड प्रतिपात्रो श्रीसंघ भ. श्रीधर्मकीर्तिगुरूपदेशेन काष्ठासंघे श्रीविमल-नाथ का जिन विम्ब प्रतिष्ठितं ॥

(केशरियाजी, वीर २ पृ. ४६०)

लेखांक ६३८ – (मूलाचार) मलयकीर्ति

मुनींद्रोनंतकीर्तिस्तु धुर्यो विजयसेनक ।
जयसेनो गणाध्यक्षो वादिशुण्डालकेसरी ॥ १५
प्रमाणनयनिक्षेपैर्हेत्वाभासादिभि. परै ।
विजेता वादिवृन्दस्य सेन केशवपूर्वक: ॥ १६
चरित्रसेन कुशलो मीमांसावनितापति. ।
वेदवेदांगतत्त्वज्ञो योगी योगविदां वर ॥ १७
तस्य पट्टे वभूव श्रीपद्मसेनो जितांगभू. ।
श्मश्रुयुक्तसरस्वत्या विरुद यस्य भासते ॥ १८
तत्पट्टे व्योमतारेश. ससृतेर्धर्मनाशकृत् ।
तपसा सूर्यवर्चस्को यमिनां पदमुत्तमम् ॥ १९
प्राप्त: करोत्वेते त्रिभुवनोत्तरकीर्तिभाक् ।
कल्याण संपद सर्वा सर्वामरनमस्कृत. ॥ २०
श्रीधर्मकीर्तिर्भुवने प्रसिद्धस्तत्पट्टरत्नाकरचंद्ररोचि. ।
पट्तर्कवेत्ता गतमानमायक्रोधारिलोभोऽभवदत्र पुण्य ॥ २१
तस्य पादसरोजालिर्गुणमूर्तिर्विचक्षण. ।
मलयोत्तरकीर्तिर्वो मुदं कुर्याद्दिगवर ॥ २२
हेमकीर्तिर्गुणज्येष्ठो ज्येष्ठो मत्त. कुशाग्रधी ।
धर्मध्यानरत शान्तो दान्त सूनृतवाग्यमी ॥ २३
ततोऽनुजो मुनींद्रस्तु सहस्रोत्तरकीर्तियुक् ।
गुर्जरां जगतीं शास्तो द्वौ यती महिमोदयौ ॥ २४
त्रयं त्रयोपि धीमन्त साधीयासो निरेनस ।
धर्मकीर्तेर्भगवत शिष्या इव रवे. करा ॥ २५

.. माधुफेरू स्ववचोभिरिति स्वामिन् विधीयते श्रीश्रुतपंचम्या उद्या-पनमितीरितं श्रुत्वा सप्रमोद. श्रीधर्मकीर्तिमुनिपाय तन्निमित्त श्रीमूलाचार-

पुस्तकं लेखयांचकार पश्चात् तस्मिन् मुनिपतौ नाकलोकं प्राप्ते सति तच्छिष्याय यमनियमस्वाध्यायध्यानाध्ययननिरताय तपोधनश्रीमलयकीर्तये तत्सबहुमानं सोत्सवं सविनयमर्पयत् ।

–इदं मूलाचारपुस्तकं । सं. १४९३ ।

(अ. १३ पृ. १०९)

लेखांक ६३९ – पट्टावली

तत्पट्टे भ. श्रीमलयकीर्तिदेवानां यैर्निजबोधनशक्तितः एलदुग्गाधीश्वरराजश्रीरणमल्लं प्रतिबोध्य तरसुंवानगरे केकापिछायान् हटान् महाकायश्रीशांतिनाथस्य प्रासादः कारितः ॥

(म. ३८)

लेखांक ६४० – पट्टावली नरेंद्रकीर्ति

तत्पट्टे कलबुर्गाधीश्वरसुलतानपिरोजस्याहसमस्यां पूरयित्वा पुनः श्रीजिनचैत्यालये प्रतोलीं काराप्य कुशलानां राजराजगुरुवसुंधराचार्य प्रस्तरीनगराधीश्वरराजाधिराजवैजनाथेन संसेवितचरणारविंदसमस्तवादीभवांकुशश्रीनरेंद्रकीर्तिदेवानां यैस्तस्मिन्नेव श्रीपार्श्वनाथचैत्यालयं काराप्य सहस्रकूटं संस्थाप्य श्रीपार्श्वनाथस्य पूजामहिमानं प्रकटीचक्रे ।

[उपर्युक्त]

लेखांक ६४१ –

वाग्वर देश मझार नयर आंतरी सुभ सोहे ।
राजपाल रणमल्ल सयल लोक मन मोहे ॥
रणमल्ल राय प्रतिबोधी कइ तव जैन विचक्षण ।
तिहां शांतिनाथ जिन चैत्य पोल निमित्त हठ कारण ॥
वहीं पिच्छने संघात पोली अग्रे करी स्थापण ।
भट्टारक कोटी मुगुट नरेंद्रकीर्ति वंदितचरण ॥

[म. ४९]

लेखांक ६४२ – प्रतापकीर्ति

काष्ठासंघ शृंगार लाडवागड गछ सोहे ।
नरेंद्रकीर्ति गुरुराय वादीपंचानन मोहे ॥
कलवर्गा पातस्याह जैननि समस्या पुरावी ।
पीरोजसाहा माण पालखी अंतरिक्ष चलावी ॥
तस पाट सोहे वादी विकट प्रतापकीर्ति सूरिवर जयो ।
केदारभट्ट पाथरी नयर राजसभा मांहि जीतियो ॥

(म. ४९)

लेखांक ६४३ –

काष्ठासुसंघ शृंगार जु सोभत लाडवागड गछ दिवाकर रे ।
वादि विकट वज्रांकुश हस्त में चामर पीछी छाजतु रे ॥
नरेंद्रसुकीर्ति वादिगजकेशरी अंतरीक्ष पालखी चलावतु रे ।
प्रतापसुकीर्ति वादिगजकेशरी मानत भूप सुपंडित रे ॥

(म ४९)

लेखांक ६४४– बिरुदावली त्रिभुवनकीर्ति

श्रीमलयकीर्तिपट्टोधराणा ॥ श्रीलाटवर्गटगच्छविपुलगगनमार्तंडमंडलानां भट्टारकश्रीमन्नरेंद्रकीर्तिसद्गुरुचरणकमलाराधनकुशलानाम् ॥ सकलविबुध-मुनिमंडलीमंडितचरणारविंदाना समुन्मूलितमिथ्यात्वतरुकंदानां श्रीमत्-प्रतापकीर्तियतिचक्रवर्तिनाम् ॥ तेषां पट्टे भट्टारक श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेवगुण रत्नभूषणयतीनाम् ॥ तेषां सद्गुरूणामुपदेशेन अद्येह देवगिरिमहास्थान-वास्तव्येन श्रीमद्बघाग्रवालज्ञातीयमुखमंडनेन ॥

(म ११७)

काष्ठासंघ–लाडबागड–पुन्नाट गच्छ

इस संघ के आचार्य पहले पुन्नाट अर्थात् कर्णाटक प्रदेश में विहार करते थे इस लिए इस का नाम पुन्नाट था। बाद मे उन का प्रमुख कार्यक्षेत्र लाडबागड अर्थात् गुजरात प्रदेश हुआ इस लिए इस का नाम लाडबागड गच्छ पडा। इसी का सस्कृत रूप लाटवर्गट है। पुन्नाट और लाटवर्गट सघो की एकता (ले. ६३१) पर से प्रतीत होती है और इस की पुष्टि (ले. ७४७) से होती है जिस में लाडबागड गच्छ के कवि पामो ने अपना गच्छ पुन्नाट कहा है।

पुन्नाट सघ के प्राचीनतम ज्ञात आचार्य जिनसेन है। आप ने शक ७०५ मे वर्धमानपुर के पार्श्वनाथमन्दिर तथा दोस्तटिका के शान्तिनाथ-मन्दिर मे रहकर हरिवंशपुराण की रचना की (ले. ६२२)। इस समय उत्तर में इन्द्रायुध, दक्षिण मे श्रीवल्लभ, पूर्व मे वत्सराज और पश्चिम मे जयवराह का राज्य चल रहा था। जिनसेन के गुरु कीर्तिषेण थे। वे पुन्नाट गण के अग्रणी अमितसेन के गुरुबन्धु थे। अमितसेन की गुरुपरम्परा में ग्रन्थकर्ता ने अगज्ञानी आचार्यों के बाद ३० आचार्यों के नाम दिये ह।

शक ७३५ मे कीर्त्याचार्यान्वय के कूविलाचार्य के प्रशिष्य तथा विजयकीर्ति के शिष्य अर्ककीर्ति को चाकिराज की प्रार्थना से वल्लभेन्द्र ने[११७] जालमगल नामक ग्राम दान दिया। अर्ककीर्ति ने अपना सघ यापनीय नन्दिसघ तथा पुनागवृक्षमूलगण कहा है। सम्भवत पुनागवृक्षमूलगण पुन्नाटसघ का ही एक रूपान्तर है (ले. ६२३)।

पुन्नाट सघ के आचार्य हरिषेण ने सवत् ९८९ मे वर्धमानपुर में विनायकपाल के राज्यकाल मे[११८] बृहत् कथाकोष की रचना की (ले ६२४)। मौनि भट्टारक–हरिषेण–भरतसेन-हरिषेण ऐसी इन की परम्परा थी।

---

११७ यह सभवत. राष्ट्रकूट राजा गोविन्द (तृतीय) का उल्लेख है जिन की ज्ञात तिथिया ७८३–८१४ ई. है।

११८ ये रघुवशीय प्रतिहार राजा थे। सन् ९३१ का इन का एक उल्लेख मिला है। वर्धमानपुर का वर्तमान रूप वढवाण-मतान्तर से बदनावर सौराष्ट्र है।

लाडवागड सघ के आचार्य जयसेन ने सवत् १०५५ में सकली-करहाटक ग्राम मे धर्मरत्नाकर नामक ग्रन्थ लिखा।[११९] इन की गुरुपरम्परा धर्मसेन-शान्तिपेण-गोपसेन-भावसेन-जयसेन इस प्रकार थी। इन के मत से इस सघ का आरम्भ मेदार्य की उग्र तपश्चर्या से हुआ था (ले. ६२५) जो खंडिल्य ग्रामके पास निवास करते थे।

इस सघ के अगले आचार्य महासेन थे। आप ने प्रद्युम्नचरित नामक काव्य की रचना की। मुजराज तथा सिन्धुराज के मन्त्री पर्पट ने आप का सन्मान किया था। जयसेन-गुणाकरसेन-महासेन ऐसी आप की परम्परा थी (ले. ६२६)।

इस के अनन्तर आचार्य विजयकीर्ति का उल्लेख मिलता है। कछवाहा वश के विक्रमसिंह ने सवत् ११४५ मे एक जिनमन्दिर के लिए कुछ जमीन दान दी। यह मन्दिर विजयकीर्ति के शिष्य दाहड, सूर्पट, कूकेक आदि ने मिल कर बनाया था। इस दान की विस्तृत प्रशस्ति विजयकीर्ति ने लिखी (ले ६२७) इन की गुरुपरम्परा देवसेन कुलभूषण-दुर्लभसेन-अम्बरसेन आदि वादियो के विजेता शान्तिषेण-विजयकीर्ति इस प्रकार थी।

पट्टावली में उल्लिखित आचार्यों में महेन्द्रसेन पहले ऐतिहासिक व्यक्ति प्रतीत होते हैं।[१२०] इन ने त्रिषष्टिपुरुषचरित्र लिखा तथा मेवाड मे क्षेत्रपाल को उपदेश दे कर चमत्कार दर्शाया (ले. ६२८)।

महेन्द्रसेन के शिष्य अनन्तकीर्ति ने चौदहवे तीर्थंकर का चरित्र लिखा (६२९)।

---

११९ प. परमानन्द ने इन्हें झाडवागड सघ के आचार्य कहा है। यहाँ स्पष्टत. ल की जगह गलती से झ पढ़ा गया है। झाडवागड नाम के किसी संघ का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

१२० इन के पहले अगजानी आचार्यों के बाद क्रम मे विनयधर, सिद्धसेन, वज्रसेन, महासेन, रविषेण, कुमारसेन, प्रभाचन्द्र, अकलक, वीरसेन, सुमतिसेन, जिनसेन, वासवसेन, रामसेन, जयसेन, सिद्धसेन तथा केशवसेन का उल्लेख है।

अनन्तकीर्ति के शिष्य विजयसेन ने वाणारसी मे पांगुल हरिचन्द्र राजा की सभा में[121] चन्द्र तपस्वी का पराजय किया (ले. ६३०)। इन के शिष्य चित्रसेन के समय मे इस संघ का पुन्नाट संघ यह नाम लुप्तप्राय हुआ (ले. ६३१)। चित्रसेन ने एकान्तर उपवासादि कठोर तपश्चर्या की।

इन के पट्टशिष्य पद्मसेन हुए। आप के शिष्य नरेन्द्रसेन ने शास्त्र-विरुद्ध उपदेश करने वाले आशाधर को[122] अपने संघ से बहिष्कृत किया (ले. ६३२)। नरेन्द्रसेन ने रत्नत्रयपूजा की रचना की (ले. ६३३)। इन के शिष्य कल्याणकीर्ति ने वीतरागस्तोत्र की रचना की (ले. ६३४)।

पद्मसेन के बाद क्रमशः त्रिभुवनकीर्ति और धर्मकीर्ति भट्टारक हुए। धर्मकीर्ति के समय संवत् १४३१ मे केशरियाजी तीर्थक्षेत्र पर विमलनाथ मन्दिर का निर्माण हुआ (ले. ६३७)।

धर्मकीर्ति के तीन शिष्य हुए– हेमकीर्ति, मलयकीर्ति तथा सहस्र-कीर्ति। ये तीनो गुजरात प्रदेश मे विहार करते थे। दिल्ली के साह फेरू ने संवत् १४९३ में श्रुतपंचमी उद्यापन के निमित्त मूलाचार की एक प्रति मलयकीर्ति को अर्पित की (ले. ६३८)। मलयकीर्ति ने एलदुग्ग के राजा रणमल को उपदेश दे कर तरसुवा मे मूलसंघ का प्रभाव कम किया तथा शान्तिनाथ की विशाल मूर्ति स्थापित की (ले. ६३९)।[123]

मलयकीर्ति के पट्टशिष्य नरेन्द्रकीर्ति हुए। आप ने कलबुर्गा के पिरोजशाह[124] की सभा मे समस्या पूर्ति कर के जिनमन्दिर का जीर्णोद्धार

---

१२१ कनौज के गाहडवाल राजा हरिश्चन्द्र– सन ११९३–१२०० ई.।

१२२ समय के अनुमान से पण्डित आशाधर का ही यह उल्लेख होना चाहिए। किन्तु इसे अन्य उल्लेखो से कोई पुष्टि नहीं मिलती।

१२३ ईडर के राजा रणमल– १३४५–१४०३ ई.। यही घटना ले.६४१ में मलयकीर्ति के पट्टशिष्य नरेन्द्रकीर्ति के विषय में कही गई है।

१२४ बहामनी बादशाह फिरोज– सन १३९७–१४२२।

करने की अनुज्ञा प्राप्त की तथा प्रस्तरी मे राजा वैजनाथ[१२५] से सम्मान पा कर पार्श्वनाथ मन्दिर में सहस्रकूट जिनमूर्ति की स्थापना की (ले. ६४०)। अनुश्रुति के अनुसार आप ने आकाश मार्ग से गमन किया था (ले. ६४२)।

नरेन्द्रकीर्ति के पट्टशिष्य प्रतापकीर्ति हुए। आप ने पाथरी नगर मे केदारभट्ट को विवाद मे पराजित किया। पडित भूप ने आप की प्रशसा की है तथा आप की पिच्छी चामर की थी ऐसा कहा है (ले. ६४२-४३)।

प्रतापकीर्ति के पट्टशिष्य त्रिभुवनकीर्ति हुए। इन की आम्नाय के कुछ लोग देवगिरि में रहते थे (ले. ६४४)।[१२६]

---

१२५ वैजनाथ का राज्य काल ज्ञात नहीं होता।

१२६ ज्ञात होता है कि इन के बाद इस परम्परा में कोई भट्टारक नहीं हुए क्यों कि इस आम्नाय के श्रावकों ने नन्दीतट गच्छ के भट्टारकों द्वारा अनेक प्रतिष्ठाए करवाने के उल्लेख मिले हैं। देखिए ले. ६८४-८६ आदि।

काष्ठासंघ–पुन्नाट–लाडबागड गच्छ–कालपट

जयसेन

|

अमितसेन — कीर्तिषेण

कीर्तिषेण

|

जिनसेन (स. ८४०)

कूविलाचार्य

|

विजयकीर्ति

|

अर्ककीर्ति (सवत् ८७०)

मौनिभट्टारक

|

हरिषेण

|

भरतसेन

|

हरिषेण (सवत् ९८९)

धर्मसेन

|

शान्तिषेण

|

गोपसेन

|

जयसेन (सवत् १०५५)

जयसेन

|

गुणाकरसेन

|

महासेन

देवसेन

|

कुलभूषण
|
दुर्लभसेन
|
शान्तिषेण
|
विजयकीर्ति (संवत् ११४५)

महेन्द्रसेन
|
अनन्तकीर्ति
|
विजयसेन
|
चित्रसेन
|
पद्मसेन
|
त्रिभुवनकीर्ति
|
धर्मकीर्ति (संवत १४३१)
|
मलयकीर्ति (संवत् १४९२)
|
नरेन्द्रकीर्ति
|
प्रतापकीर्ति
|
त्रिभुवनकीर्ति

---

१५ काष्ठासंघ–वागड गच्छ

लेखांक ६४५ – ? मूर्ति सुरसेन

श्रीसुरसेनोपदेशेन सिंहेकयशोराजनोन्नैकै सहोदरैः संसारभयभीतैरेत-ज्जिनबिंबं कारितं इति ॥ जयति श्रीवागटसंघ. ॥ संवत् १०५१ कृष्ण गणेनघ... ।

(कटरा, जर्नल आफ एशियाटिक सोसायटी भा. १९ पृ. ११०)

लेखांक ६४६ – जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला यशःकीर्ति

आसि पुरा वित्थिण्णे वायडसंघे ससकसो (भो) ।
मुणिरामइत्ति धीरो गिरिव णईसुव्व गंभीरो ॥ १८
संजाउ तस्स सीसो विबुहो सिरिविमलइत्ति विक्खाओ ।
विमलपरात्ति रवडिया धवलिया धूणिय गयणायय ले ॥ १९
जसइत्ति णाम पयडो पयपयरुहजुअलपडियभव्वयणो ।
सत्थमिणं जणदुलहं तेण हहिय समुद्धरियं ॥ २६

(अ. २ पृ. ६०६)

काष्ठासंघ-बागड गच्छ

काष्टासंघ के चार गच्छों में एक बागड गच्छ भी है । इस के उल्लेख सिर्फ दो मिले हैं । सम्भवत: यह गच्छ लाडबागड गच्छ मे जल्दी ही विलीन हो गया था ।

इस गच्छ के आचार्य सुरसेन के उपदेश से सिंहराज आदि बन्धुओं ने संवत् १०५१ मे एक जिनमूर्ति स्थापित की थी (ले. ६४५) ।

रामकीर्ति के प्रशिष्य तथा विमलकीर्ति के शिष्य यश कीर्ति इस संघ के दूसरे ज्ञात आचार्य हैं । आप ने जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला नामक मन्त्र-शास्त्र के ग्रन्थ की रचना की थी (ले. ६४६) । इन का समय अनुमानत. १५ वीं सदी है ।

१६. काष्ठासंघ–नन्दीतट गच्छ

लेखांक ६४७ –

सत्तसए तेवण्णे विक्कमरायस्स मरणपत्तस्स ।
णंदियडे वरगामे कट्ठो संघो मुणेयव्वो ॥

(दर्शनसार ३८)

लेखांक ६४८ – **रामसेन**

रामसेनोति विदित प्रतिबोधनपंडितः ।
स्थापिता येन सज्जातिर्नरसिंहाभिधा भुवि ॥

(पट्टावली, दा. पृ. ४७)

लेखांक ६४९ –

नरसिंहपुर वर नयर तजीय ते तीर्थी पहुता ।
गाम हु नाम न्याती रवी तली सुपत्ति सत्ता ॥
बीसहगोत्र ते थीर करी तत्र थापिय ।
नरसिंहपुरा सगुण नाम जिनधर्मज आपीय ॥
श्रीशांतिनाथ सुपसालय करी श्रीरामसेन उवएस धरी ।
भूमंडल नीयर तारु रुद्धि वृद्ध सावय घरी ॥ १६१

(म. ४९)

लेखांक ६५० – **नेमिसेन**

श्रीरामसेन मुनिराय नयर नरसिंहपुर पामी ।
नरसिंहपुरा वर ज्ञाति प्रतिबोधी मुखगामी ॥
तत्पट्टे नेमिसेन पद्मावति आराधी ।
भट्टपुरा कुलवंत जैनधर्म प्रति साधी ॥
नेमिसेन वादी विकट परमत वादी जीतये ।
जयसागर एव वदति श्रीकाष्ठासंघ कुल दीपये ॥ ३२

(म. ४९)

लेखांक ६५१ – शीतलनाथ मूर्ति सोमकीर्ति

संवत् १५३२ वर्षे वैसाख सुदि ५ रवौ काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे भ. श्रीभीमसेन तत्पट्ट सोमकीर्ति आचार्यश्रीवीरसेनसूरियुक्त प्रतिष्ठित नारसिंहज्ञातिय वोरढेकगोत्रे चापा भार्या परगू ।

(अ. ४ पृ. ५०२)

लेखांक ६५२ – यशोधरचरित

नन्दीतटाख्यगच्छे वंशे श्रीरामदेवसेनस्य ।
जातो गुणार्णवैका. श्रीमांश्च श्रीभीमसेनेति ॥ ९३
निर्मितं तस्य शिष्येण श्रीयशोधरसंज्ञिक ।
श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोध्याधीयतां बुधा ॥ ९४
वर्षे षट्त्रिंशसंख्ये तिथिपरिगणिना युक्तसंवत्सरे वै ।
पंचम्यां पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तराभे हि चंद्रे ॥
गौढिल्यां मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेन्द्रस्य रम्ये ।
सोमादीकीर्तिनेदं नृपवरचरित निर्मितं शुद्धभक्त्या ॥ ९५

(प्रस्तावना पृ. २६, कारंजा जैन सीरीज, १९३१)

लेखांक ६५३ – १ मूर्ति

सं. १५४० वर्षे वैशाख सुदि १० बुध श्रीकाष्ठासघे भ. श्रीसोमकीर्ति प्र. भट्टेड राजा कामिकगोत्रे सा ठाकुरसी भा. रुषी पुत्र योधा प्रणमति ।

(भा. ७ पृ. १६)

लेखांक ६५४ विमलपुराण

गुर्जर देस मझारि गढ पात्रापुर दुर्धर ।
सुलतान पीरोजसाह खान वजीर घन समुधर ॥
तेह सभा शृंगार नर सुर भूपति देखत ।
पद्मा देवि प्रसन्न पालखी अंतरीक्ष पेखत ॥
सकलवादीभकुंभपंचानन वादवादि सेवत चरण ।
जयसागर एव वदति श्रीसोमकीर्ति मगलकरण ॥ ३५

(म. ४९)

लेखांक ६५५ – विमलपुराण रत्नभूषण

विख्याते जगतीतले त्रिभुवनस्वामिस्तुतेभून्महान् ।
काष्ठासंघसुनामनि प्रभुयतौ विद्यागणे सूरिराट् ॥
सारगार्णवपारगो बहुयशाः श्रीरामसेनो जिन- ।
ध्यानार्णोविततिप्रधूतवृजिनो भानुस्तमोराशिषु ॥ १
तत्क्रमेण गणभूधरभानुः सोमकीर्तिरिव शीतमयूख । . ॥ २
तत्पदे विजयसेनभदन्तो बोधिताखिलजन कमनीय ॥ ३
तत्पट्टे सूरिराज सकलगुणनिधिः श्रीयश कीर्तिदेव. ।
तत्पादांभोजषट्पदसकलशशिमुखो वादिनागेंद्रसिंह ॥
सजज्ञे प्रातसेनोदय इति वचसां विस्तरे स प्रवीण ।
तत्पदवार्जालिसक्तस्त्रिभुवनमहिमा तन्मुखप्रांतकीर्तिः ॥ ४
राजते रजनिनाथशशांको तत्पदोदयनगाहिमदीप्तिः ।
तर्कनाटककुलागमदक्षो रत्नभूषणमहाकविराज ॥ ५
श्रीमल्लोहाकरेऽभूत् परमपुरवरे हर्षनामा वरीयान् ।
तत्पत्नी साधुशीला गुणगणसदनं वीरिकाख्येन साध्वी ॥
पुत्र श्रीकृष्णदासो रतिप इव तयोर्ब्रह्मचारीश्वरश्च ।
मत्कीर्ती राजते वै वृषभजिनपदांभोजषट्पत्समान ॥ ६
गूर्जरे जनपदे पुरे कृत कल्पवल्ल्यभिध एकवत्सरात् ।
वर्धमानयशसा मया पुरो. पत्कजाहितसुचेतसा ध्रुव ॥ ८
वेदर्षिषट्चंद्रमितेथ वर्षे पक्षे सिते मासि नभस्यलभे ।
एकादशी शुक्रमृगर्क्षयोगे ध्रौव्यान्विते निर्मित एष एव ॥ १०

(अध्याय १०, हरीभाई देवकरण ग्रंथमाला ९)

लेखांक ६५६ – ज्येष्ठजिनवरपूजा

त्रिभुवनकीर्ति पदपकज वरिय ।
रत्नभूषण सूरि महा कहिया ॥ १७
ब्रह्म कृष्ण जिनदास विस्तरिया ।
जयजयकार करी उच्चरिया ॥ १८

(न १९०५)

लेखांक ६५७ -

गादी मूडा अति भला काष्ठासघ मंगलकरण ।
जयसागर एव वदति श्रीरत्नभूषण वंदो चरण ॥ ८

(म. ४९)

लेखांक ६५८ -

एसा करियदे वाजा दिगवर राजा कलुलनयरी प्रवेशतही ।
कहि जयसागर विद्या आगर रत्नभूषण गुरु आवतही ॥ ७

(म. ४९)

लेखांक ६५९ - तीर्थजयमाला

जय जिनवर स्वामी पय सर नामी कर जोडी मन भाव धरी ।
जयसागर वंद्रो पाप निकंदो रत्नभूषण गुरु नमस्करी ॥

(म ११६)

लेखांक ६६० - पार्श्वपंचकल्याणिक

विबुधनरनिषेव्य: पंचकल्याणकाले ।
विमलतरजलाद्यैरर्चितो भव्यवृंदैः ॥
जयजलनिधिपारै रत्नभूषाख्यवद्यो ।
निखिलभुवनकीर्तिः पार्श्वनाथोऽवताद् व. ॥ २६

(म. २७)

लेखांक ६६१ - पार्श्वमूर्ति　　जयकीर्ति

स. १६८६ वर्षे चैत्र वदी ३ भौमे भ. श्रीरत्नभूषण भ जयकीर्ति हूबडज्ञातीय .पार्श्वनाथ प्रणमति ।

(बडौदा दा पृ. ६७)

लेखांक ६६२ - आदिनाथ पूजा　　केशवसेन

कुसुमाजलि किल रत्नभूषणमाप्रणम्य कवीश्वर ।

सूरिकेशवसेन एव मयजे विनतीश्वरं ॥

(ना. ६३)

लेखांक ६६३ –

वीरावाई मात उदर सर मान हंस कल ।
हर्षसाह कुल भाण प्रकटयस सदा सुनिर्मल ॥
कुमति किरिट घट सिंह ब्रह्म मंगल वड सोदर ।
नरपतिपूजितपाय कणकचंपकवपुसुंदर ॥
काष्ठासघ गिरिराज रवि कविराज जग जय धरण ।
सकलसूरिसिरमुगुटमनी केशवसेन सूरि सुखकरण ॥ ८८

(म. ४१)

लेखांक ६६४ –

केशवसेन सूरींद्र चद्रमुख मदनमनोहर ।
याचक गुण गायंत ब्रह्म मगल जस सोदर ॥
कल्लोलकीर्ति वादीभहरि इदार मझ सूरिपद–धरण ।
प्रात प्रात तस जपता सकलसंघ–मगल–करण ॥ ९०

(म. ४१)

लेखांक ६६५ – (हरिवंशपुराण–श्रीभूषण) विश्वकीर्ति

श्री सवत् १७०० श्रीकाष्ठासंघे भ सोमकीर्ति तत्पट्टे भ विजयसेन तत्पट्टे भ. यश कीर्ति तत्पट्टे भ उदयसेन तत्पट्टे भ त्रिभुवनकीर्ति तत्पटे भ रत्न-भूषण तत्पट्टे भ जयकीर्ति तत्पट्टे भ केशवसेन तच्छिष्य विश्वकीर्तिलिखितं ॥

(कारजा)

लेखांक ६६६ – (न्यायदीपिका)

स १६९६ श्रीकाष्ठासघे नदीतटगच्छे भ रत्नभूषण तत्पट्टे भ. जयकीर्ति तत्पट्टे भ केशवसेन तत्पट्टे भ विश्वकीर्ति तच्छिष्य प मनजी लिखित मालासा ग्रामे ॥

(कारजा)

लेखांक ६६७ – अतिशय जयमाला　　धर्मसेन

षट्चत्वारिंशत्शुभगुणगणै राजते योरिहता ।
स्वस्वस्थाने स्थितनरसुरान् वर्षते धर्मतोयं ॥
तस्मै देयो जलकुसुमभरैर्दीपसद्धूपकैश्च ।
काष्ठासंघे भुवनविदिते धर्मसेनैः सूरिभिः ॥ ९

(म. २४)

लेखांक ६६८ –

काम क्रोध परिहरवि काष्ठासंघमंडन भयो ।
कवि वीरदास सचूं चवी धर्मसेन भट्टारक जयो ॥ २

(भा. ७ पृ. १६)

लेखांक ६६९ – १ मूर्ति　　विश्वसेन

सं. १५९६ वर्षे फा. वदि २ सोमे श्रीकाष्ठासंघे नरसिंघपुरा ज्ञातीय नागर गोत्रे म. रत्नसी भा लीलादे नित्यं प्रणमति भ. श्रीविश्वसेन प्रतिष्ठा ॥

(भा. ७ पृ. १६)

लेखांक ६७० – आराधनासारटीका

इति आराधनाटीका समाप्ता । भ श्रीविश्वसेनेन लखिता । श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छाधिराज भ श्रीविमलसेन तत्पट्टे भ श्रीविशालकीर्तिगुरुभ्यो नम ।

(ना. १०२)

लेखांक ६७१ –

काष्ठासघ गुरुराय लक्ष्मीसेनह गुरु भणिए ।
धर्मसेन तस पाटि नाम यस श्रवणे सुणिए ॥
विमलसेन विख्यातकीर्ति राय राणा रीझे ।
सर्व सौख्य संपत्ति नाम परभाती लीजे ॥

श्रीविशालकीर्ति पट्टोद्धरण नदियडगच्छ उद्योतकर ।
श्रीविश्वसेन भवियण जयो सयल संघ चंद्रउ पर ॥ ३

(म. ४१)

लेखांक ६७२ –

लीधो संयम रयण मयण मच्छरमे हलाव्यो ।
तीनइ अवसरी श्रीपाल साहि कुल कलश चडाव्यो ॥
श्रीडुंगरपुरनयरी ग्रही दीक्षा दिगंबर ।
उत्सव हुई अनेक भोज घर भोजतने पर ॥
श्रीविसालकीर्ति निज करकमली पद प्रमाणती अप्पयो ।
कर्म सीकला दीन दीन प्रतप्यो विश्वसेन गुरु थप्पयो ॥ १६०

(म ४१)

लेखांक ६७३ –

रूपवंत राजान शील सजम तु छज्जि ।
चास्यु दक्षण खेत्र सजम तु महिअलि गज्जि ॥
श्रीकाष्टसघ नंदीयडगच्छ विद्यागुण वखाणीउ ।
सूरि विद्याभूषण कहि विश्वसेन जगि जाणीइ ॥ ५

(म. ४१)

लेखांक ६७४ – सीताहरण विजयकीर्ति

काष्ठासघ शृंगार विविध विद्यारससागर ।
नदीतटगच्छ काव्य पुराण गुण आगर ॥
सूरि विश्वसेन पाटि प्रगट सूरि विजयकीर्ति वदित चरण।
महेंद्रसेन एव वदति राम सीता मगलकरण ॥ १६०

(म. ८५)

लेखांक ६७५ – बारामासी

काष्ठासुसघ नदीतट मंडिन विश्वसेनगुरु गाजतुही ।
विजयकीर्ति तस पाद प्रभाकर महेंद्रसेन शिष्य राजतुही ॥ १३

(म. ८५)

## लेखांक ६७६ – पार्श्वमूर्ति		विद्याभूषण

सं. १६०४ वर्षे वैशाख वदी ११ शुक्रे काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भ. श्रीरामसेनान्वये भ. श्रीविशालकीर्नि तत्पट्टे भ. श्रीविश्वसेन तत्पट्टे भ. श्रीविद्याभूषणेन प्रतिष्ठितं हूवड ज्ञातीय गृहीतदीक्षा वाई अनंत मती नित्यं प्रणमति ।

(वडौदा द. पृ ६७)

लेखांक ६७७ – पार्श्वमूर्ति

संवत् १६३६ श्रीकाष्ठासंघे भ विद्याभूषण प्रतिष्ठितं हुंबड सा जयवंत ।

(ज प्र. किल्लेदार, नागपुर)

लेखांक ६७८ – द्वादशानुप्रेक्षा

विद्याभूषण इम कहे जे चिंतए दिउ रान ।
द्वादशानुप्रेक्षा भली धन्य धन्य तेहनी माय ॥ १७

(म. १२०)

लेखांक ६७९ –

श्रेष्ठी सुजाण हरदाससुत काष्टासंघमानदकर ।
विश्वसेन पट्टि भलु सूरि विद्याभूषण वंदउ प्रवर ॥ ४

(म. ४९)

लेखांक ६८० –

विश्वसेन सिष्यह सुगुण ज्ञान दान दाता चतुर ।
कवि राजनभट्ट समुच्चरइ विद्याभूषण वंदू प्रवर ॥ १६७

(म ४९)

लेखांक ६८१ – श्रीभूषण

संवत् षट दश ममे पञ्चू पचोत्तर प्राक्रम ।
सीतांबर सह कोय हठी हठ यासह हाकिम ॥

पाडी करी पोगाल देशनीकालो दीधो ।
मत्तचोरासीमाही उत्तर कोने नवि कीधो ॥
पुछीयु तन जागीरने वली धर्म पूछ्यो मुदा ।
दिगंबर धर्म दीवानथी श्रीभूषणे राख्यो मदा ॥ १०७

(म. ४९)

लेखांक ६८२ – पार्श्वमूर्ति

शक १५०१ मा तिथि ८ काष्ठासघे भ. श्रीश्रीभूषण मदुपदेशात् प. जयवंत ।

(ल. से. पिंजरकर, नागपुर)

लेखांक ६८३ – शांतिनाथ पुराण

विद्याभूषणपट्टकजतरणि श्रीभूषणो भूषणो ।
जीयाज्जीवदयापरो गुणनिधि. संसेवित सज्जनै ॥
काष्ठासघसरित्पति शशधरो वादी विशालोपम ।
सद्वृत्तोर्कधरोऽतिसुंदरतरो श्रीजैनमार्गानुग. ॥ ४६१
संवत्सरे षोडशनामधेये एकोनशतषष्टियुते वरेण्ये ।
श्रीमार्गशीर्षे रचित मया हि शास्त्र च वर्षे विमलं विशुद्धम् ॥ ४६२
त्रयोदशीसद्दिवसे विशुद्ध वारे गुरौ शातिजिनस्य रम्य ।
पुराणमेतद् विमलं विशाल जीयाच्चिर पुण्यकरं नराणाम् ॥ ४६३
श्रीगुर्जरेप्यस्ति पुर प्रसिद्ध सौजित्रनामाभिधमेव सारं ।
श्रीनेमिनाथस्य समीपमाशु चकार शास्त्र जिनभूतिरम्यम् ॥ ४६६

(जैन साहित्य और इतिहास पृ ३४५)

लेखांक ६८४ – पद्मावती मूर्ति

समत १६६० वर्षे फाल्गुण शुदि १० श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे भ. प्रतापकीर्त्याम्नाये वघेरवाल ज्ञातीय प्रणमति श्रीकाष्ठासघे नदीतट-गच्छे भ श्रीश्रीभूषण प्रतिष्ठित ।

(ब. हि जोशी, नागपुर)

लेखांक ६८५ – रत्नत्रय यंत्र

संवत १६६५ वर्षे माघ सुदि १० शुक्रे श्रीकाष्ठासंघे भ. श्रीभूषण-प्रतिष्ठितं वीर्यचारित्रयंत्रं नित्यं प्रणमंति ।

(नादगाव, अ. ४ पृ. ५०४)

लेखांक ६८६ – चंद्रप्रभ मूर्ति

संमत १६७६ वर्षे माघ वदी ८ श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे भ. श्रीप्रतापकीर्त्याम्नाये वघेरवालज्ञातौ बोरखंड्यागोत्रे धर्मजी सा भार्या अंबाई तयोः पुत्र लखमण सा प्रमुख पंच पुत्रा सभार्या सपुत्रा श्रीचंद्रप्रभु प्रणमंति। श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छे भ. श्रीभूषणप्रतिष्ठितं बहादुरपुरे ।

(परवार मन्दिर, नागपुर)

लेखांक ६८७ – द्वादशांग पूजा

अर्चे आगमदेवता सुखकरां लोकत्रये दीपिकां ।
नीराज्य प्रतिकारकै क्रमयुगं सपूज्य बोधप्रदां ॥
विद्याभूषणसद्गुरोः पदयुगं नत्वा कृतं निर्मलं ।
सच्छ्रीभूषणसंज्ञकेन कथितं ज्ञानप्रदं बुद्धिदं ॥

(म. २६)

लेखांक ६८८ –

माकुही मात कृष्णासाह तात श्रीभूषण विख्यात दिन दिनह दीवाजा
वादीगजघट्ट दीयत सुथट्ट न्यायकु हट्ट दीवादीव दीपाया ॥ १२९

(म. ४९)

लेखांक ६८९ –

काष्ठादिसंघमडन तिलक श्रीभूषण सूरिवर जयो ।
सुविवेक ब्रह्म एवं वदति सकल संघ मगल भयो ॥ १७६

(म ४९)

लेखांक ६९० -

काष्ठासंघ गछपति राउ देखो सव लोके सुरतको आनद पायो ।
वादीचंदको मान उतारि करीव देखो श्रीभूषण सुरेश्वर आयो ॥ १६

(म. ४९)

लेखांक ६९१ -

जिम श्रीभूषण देखी करी तिम वादीचद्र रडवढ पडे ।
कवि राजमल्ल कहे साभलो मूलसघ हैडे रडे ॥ ११०

(म. ४९)

लेखांक ६९२ -

काष्ठासघकुल अभिनवो श्रीभूषण प्रकट सदा ।
सोमविजय एवं वदति नृत्य करे नारी मुदा ॥ १०३

(म ४९)

लेखांक ६९३ - श्रावकाचार

सक्षेपि कह्या मि त्रेहपन्न भेद । विस्तार सिद्धात कहि ते वेद ॥
श्रीभूषण गछनायक सीस । हेमचद्र सबोध कही पणवीस ॥ २५

(म २८)

लेखांक ६९४ -

श्रीभूषणसूरिराज दिनकरसम भाज अधिक वध्दुएला जय जयकरण ।
नेमिजिनस्वामी चग सकलकर्मनु भंग शिव वधू कियु सग गुणसेन सरण ॥१०

(म ४९)

लेखांक ६९५ -

काष्ठासंघ गछाभरण श्रीभूषण कहिये सुगुण ।
[illegible]सागर एवं वदति सकलसघ-मंगल-करण ॥ १०१

(म. ४९)

लेखांक ६९६ – नेमि धर्मोपदेश

काष्टासंघ उदयगिरि जाण । विद्याभूषण गछपति भाण ॥
तस पद मंडन निर्मलमती । श्रीभूषण गिरु या गछपती ॥
तास शिष्य बोले मनहार । ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ॥ ४१

(म. २९)

लेखांक ६९७ – नेमिनाथ पूजा

श्रीकाष्ठसंघोदयवासरेश-श्रीभूषणाद्यैर्मुनिभिः प्रवंद्यः ।
श्रीनेमिनाथो जगतां सुखाय भूयात् सदा ज्ञानसमुद्रवंद्य. ॥

(म. २९)

लेखांक ६९८ – गोमटदेव पूजा

यो हर्ताखिलकर्मणां भुजवली कर्ता सदा शर्मणां ।
यो दाता त्वभयस्य संसृतिवने त्राता जगत्तारक. ॥
काष्ठासंघमहोदयाद्रिदिनकृत्श्रीभूषणाद्यैः स्तुत' ।
ब्रह्मज्ञानसमर्चितो भवहरः पायात् सतां सर्वदा ॥

(म. ११४)

लेखांक ६९९ – पार्श्वनाथ पूजा

श्रीभूषणं नाम पर पवित्रं श्रीपार्श्वनाथं धरणेंद्रपूज्यं ।
श्रीज्ञानपाथोनिधिपूज्यपादं स्तुवे सदा मोक्षपदार्थसिद्ध्यै ॥

(म. ११३)

लेखांक ७०० – जिन चउवीसी

भावसहित जे पढी त्रिकाल । तास मनोवांछित गुणमाल ॥
श्रीभूपण गुरु पद आधार । ब्रह्म ज्ञानसागर कहे सार ॥ ५१

(म. ७६)

लेखांक ७०१ – द्वादशी कथा

रोग शोक संतापह टले । मनवांछित पद पूरण मले ॥
श्रीभूषण सुत द्वारा लहे । ब्रह्म ज्ञानसागर इम कहे ॥ ३६

(ना. ३)

लेखांक ७०२ – दशलक्षण कथा

भट्टारक श्रीभूषण वीर । तिनके चेला गुणगंभीर ॥
ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार । करी कथा दशलक्षण सार ॥ ३७

[जैन व्रतकथा संग्रह, दिल्ली, १९२१]

लेखांक ७०३ – अक्षरबावनी

काष्ठासघ समुद्र विविध रत्नादिक पूरित ।
नंदितटगछ भाण पाप मिथ्यामत चूरित ॥
विद्यागुणगभीर रामसेन मुनि राजे ।
तास अनुक्रम धीर श्रीभूषण सूरि गाजे ॥
कलियुगमां श्रुतकेवलि षट्दर्शनगुरु गछपति ।
तास शिष्य एव वदति ब्रह्म ज्ञानसागर यति ॥ ५३
वंश वघेर प्रसिद्ध गोत्र एह भणिज्जे ।
श्रावक धर्म पवित्र काष्ठासघ गणिज्जे ॥
सघपति वापु नाम लघु वय बहु गुणधारी ।
दयावंत निर्दोष सब जनकु सुखकारी ॥
उसकी प्रीत विशेषथे पढनेकु बावनी करी ।
ब्रह्म ज्ञानसागर वदति आगमतत्त्व अमृत भरी ॥ ५४

(म ७५)

लेखांक ७०४ – राखीबंधन रास

विद्याभूषण गुरु गछपती । श्रीभूषण शिष्ये शुभ मती ॥
ब्रह्म ज्ञान बोले मनोहार । राखीबंधन कथा विचार ॥ ७६

(ना. ८)

लेखांक ७०५ – पल्यविधान कथा

काष्ठासंघे परमसुरेंद्र । श्रीभूषणगुरु हितकर चंद्र ॥
तस पदपंकज-मधुकर रहे । ब्रह्म ज्ञानसागर इम कहे ॥ ८०

(ना. ८)

लेखांक ७०६ – निःशल्याष्टमी कथा

काष्ठासंघ कुलांवरचद । श्रीभूषणगुरु परमानंद ॥
तस पदपंकज-मधुकर सार । ज्ञानसमुद्र कहे सार ॥ ६२

(ना. ८)

लेखांक ७०७ – श्रुतस्कंध कथा

ए व्रतनु फल एहउ जाण । श्रीजिणराज कह्यु बखाण ॥
श्रीभूषणपद वंदी सदा । ब्रह्म ज्ञानसागर कहे मुदा ॥ ४८

(ना. ८)

लेखांक ७०८ – मौन एकादशी कथा

काष्ठासंघ उदयगिर भान । सकल कला विद्या गुण जान ॥
विश्वसेन गछपति गुणवंत । विद्याभूषण सुरिवर संत ॥ ७६
श्रीभूषण भट्टारक सार । दयावत विद्याभंडार ॥
तास सिस्य मनभावे करी । ब्रह्म ज्ञान कथा उच्चरी ॥ ७७

(ना ८)

लेखांक ७०९ – पार्श्वनाथ पुराण　　चंद्रकीर्ति

काष्ठासंघे गच्छनंदीतटीयः श्रीमद्विद्याभूषणाख्यश्च सूरिः ।
आसीत्पट्टे तस्य कामांतकारी विद्यापात्रं दिव्यचारित्रधारी ॥
यदग्रतो नैति गुरुर्गुरुत्वं श्लाघ्यं न गच्छत्युगनोपि बुद्धया ।
भारत्यपि नैति माहात्म्यमुग्रं श्रीभूषणः सूरिवरः स पायात् ॥
श्रीमद्देवगिरौ मनोहरपुरे श्रीपार्श्वनाथालये ।
वर्षेऽधीपुरसैकमेय इह वै श्रीविक्रमांके सरे ॥

सप्तम्या गुरुवासरे श्रवणभे वैशाखमासे सिते ।
पार्श्वाधीशपुराणमुत्तममिदं पर्याप्तमेवोत्तरम् ॥
इति त्रिजगदेकचूडामणिश्रीपार्श्वनाथपुराणे श्रीचंद्रकीर्त्याचार्यप्रणीते भगवन्निर्वाणकल्याणकव्यावर्णनो नाम पचदशः सर्गः ॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. ३४६)

लेखांक ७१० – पद्मावती मूर्ति

संवत १६८१ वर्षे फाल्गुन सुदि २ काष्टासंघे भ. चद्रकीर्ति . नरसिंगपुराज्ञातीय सा सजण . ।

(अ. ४ पृ. ५०४)

लेखांक ७११ – पार्श्वनाथ पूजा

श्रीभूषणालकृतविश्वसेन-नरेंद्रसूनुर्जिनपार्श्वनाथ ।
श्रीचद्रकीर्ति सतत पुनातु वाणारसीपत्तनमंडन व ॥

(म. ५६)

लेखांक ७१२ – नंदीश्वरपूजा

अस्ति श्रीकाष्टसघो यतिजनकलितो गच्छनदीतटाको ।
विद्यापूर्वे गणातेऽजनिपत गुरवो रामसेनाश्च तस्मिन् ॥
तद्वंशे रेजिरे वै मुनिगणसहिता. सूरयो विश्वसेना ।
विद्याभूषाख्यसूरिर्जिनमतिरभवत्तत्पदांभोधिचंद्र. ॥
तत्पट्टोदयभूधरैकतरणि पचेष्वरण्यारणि ।
श्रीश्रीभूषणसूरिराट् विजयते सर्वज्ञविद्याचणः ॥
तच्छिष्यो जिनपादपद्ममधुप. श्रीचंद्रकीर्तिर्वर ।
तेनाचार्यवरेण निर्मितमिदं नादीश्वरायार्चन ॥

(म. ११२)

लेखांक ७१३ – ज्येष्ठजिनवर पूजा

काष्ठासघमहोदयाद्रिमिहिर श्रीभूषणाद्यैः स्तुत ।
पायोभिर्घृतदुग्धदिव्यदधिभिश्चेक्षोरसैस्तर्पित ॥

ज्येष्ठे मासि समर्चितः पुरुपतिर्दिव्यार्चनैश्चाष्टधा ।
देयाद् व. सततं सुमुक्तिविभवं श्रीचद्रकीर्तिस्तुतः ॥

(म. ११५)

लेखांक ७१४ – षोडशकारण पूजा

एतान्युत्तमकारणानि सततं देयासुरत्यद्भुतं ।
राज्यं प्राज्यमनेककुंजरघटाश्वस्यदनाग्रेसरं ॥
लक्ष्मीछत्रसुचामरासनयुता स्वर्गापवर्गश्रिय ।
भव्येभ्यः प्रियदर्शनव्रतगुणश्लाघ्येभ्य एवोत्तमं ॥
एतद् व्रतं य. सततं विधत्ते संमोदते संयजते त्रिकालं ।
संभावयत्यर्चनवस्तुभेदैः यात्येष मोक्षं किल चंद्रकीर्ति. ॥

(म. ७)

लेखांक ७१५ – सरस्वतीपूजा

सकलसुखनिधानं विश्वविद्याप्रधानं । बहुतरमहिमानं चद्रकीर्तिशमानं ।
पठति परमभक्त्या यः सदा शुद्धभावः । स इह सुसमयश्रीभूषण.
स्यात् सदैव ॥

(म. १०९)

लेखांक ७१६ – जिन चउवीसी

श्रीभूषणसूरि वंदित पद वीरनाथ विद्याभरण ।
सकलसंघ जयकार कर चंद्रकीर्ति चर्चितचरण ॥ २४

(म. ४४)

लेखांक ७१७ – पांडव पुराण

इष्ट देव वंदि करी भाव शुद्धि मन आनए ।
चंद्रकीर्ति एवं वदति कथा भारती वर्णए ॥ १

(म. ८६)

लेखांक ७१८ – गुरुपूजा

ईदृग्विधान् मुनिवरान् खलु चंद्रकीर्तीन्
स्तुत्वा च ये परिणमंति च संयजते ॥

ध्यायंति ते सुरनरोरगराजसौख्यं
भुक्त्वा भवंति विबुधा किल सौख्यभाजः ॥

(म. ११०)

लेखांक ७१९ -

दक्षिणमे राजत वादिवज्रांकुश चद्रसुकीर्ति ये चिद्घन री ।
दिगवरमे यह सोभित वादि जु मानत पंडित चिद्घन री ॥ २५

(म. ४९)

लेखांक ७२० -

कर्णाटक देश मनोहर सुदर सोभत नरसिंहपाटन रे ।
कावेरीके तीर जु आवत संघहे त्रास पड्यो सव विद्धनु रे ।
चद्रकीर्ति सुवादि विकटहि जानिके मान भट्टसुपडित वोलतु रे ।
वोलत लक्ष्मण वादके कारण भट्ट सुकृष्ण ये आवतु रे ॥ १९
प्रथम सुवचनमें वादि जु खडत कृष्णसुभट्ट ये हारतु रे ।
न्यायके युक्तिसु वोलत वादि रे चद्रसुकीर्ति जय पावतु रे ॥
वाजत ढोल तवल निसानसु मानत भूपति सिर आनतु रे ।
काष्ठासघ दिवाकरकु येह देखन आवत चारुसुकीर्तिय रे ॥ २०

(म ४९)

लेखांक ७२१ - चौरासी लक्षयोनि विनती

काष्ठासघ विख्यात प्रसिद्ध गच्छ नंदीतट सार ।
विश्वसेन विश्वाभरण विद्याभूषण गुरु भवतार ॥
श्रीभूषण प्रताप घणो महिमडल दूजो भान ।
चद्रकीर्ति तस पट्ट विराजे माने वादी सव आन ॥
श्रीगुरुचरण नामी करी विनवे लक्ष्मण जिनराज ।
हवे कर्मवध छेदो प्रभु अवर नहीं मुझ काज ॥ २९

(म १५)

लेखांक ७२२ – बारामासी

मुगति वरी श्रीनेमि जिनेश्वर राजुल स्वर्ग सुख पावत रे ।
विद्याभूसन पाट दिवाकर सूरि श्रीभूसन सोभत रे ॥
काष्ठासुसंघ विख्यात प्रसिद्ध ये नदीतट गछ सुहावत रे ।
चंद्रसुकीर्तिके सिष्य विराजत बोलत लक्ष्मण पडित रे ॥ १३

(ना. १२३)

लेखांक ७२३ – तीन चउवीसी विनती

काष्ठासंघ उदयाचल भान । सूरि श्रीभूषण पट्ट बखान ॥
चंद्रकीर्ति सूरीश्वर जान । तास शिष्य लक्ष्मण बोले बान ॥ १९

(म. २०)

लेखांक ७२४ – पार्श्वनाथ विनती

काष्ठासंघे गुणह गंभीर । सूरिश्रीभूषण पट्ट सुधीर ।
चंद्रसुकीर्ति नमित नरसीस । सेवक लखमन चरन विसेस ॥ १२

(म. ३२)

लेखांक ७२५ –

राजकीर्ति

चंद्रसुकीर्ति पट्टोधर राजसुकीर्ति राया मण रजी ।
वानारसि मध्य विवाद करी धरी मान मिथ्यातको मनकुं भजी ॥
पालखी छत्र सुखासन राजित भ्राजित दुर्जन मनकु गंजी ।
हीरजी ब्रह्म के साहिब सद्गुरु नाम लिये भवपातक भंजी ॥ २१८

(म ४९)

लेखांक ७२६ –

गादी लाल गुलाल राजकीर्ति गुरु बैसे सही ।
हेमसागर एव वदति मिथ्या तिमिर छेद सही ॥ ११४

(म. ४९)

लेखांक ७२७ – रविवार व्रत कथा

श्रीभूषण गुरु काष्टासंघ । चंद्रकीर्ति गुरु जग जसवत ॥
राजकीर्ति गौतम सम जाण । ब्रह्म ज्ञाननि कियो वखाण ॥ ४३

(म. २५)

लेखांक ७२८ – (लाडवागड गच्छ पट्टावली)

भ. श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीसेन विजयराजे भ. राजकीर्ति तत्सिष्य प हाजी लिखित ॥ इति श्रीगुर्वावली समाप्ता ॥

(म. ३८)

लेखांक ७२९ – पद्मावती मूर्ति लक्ष्मीसेन

शके १५६१ वर्ष फाल्गुण वदी १० शनिश्चरे काष्टासघे लाडवागड-गच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ प्रतापकीर्त्याम्नाये वघेरवाल ज्ञाति बोरखड्या गोत्र सा भावा भार्या गोमाई तयो· पुत्र सा पामा द्वितीय पुत्र देयासा नित्यं प्रणमंति श्रीकाष्टासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे रामसेनान्वये भ श्रीलक्ष्मीसेन प्रतिष्टित ।

(पा. ११५)

लेखांक ७३० – बाहुबली मूर्ति

समत १७०३ वर्षे ज्येष्ट वदी १० शुक्रे श्रीकाष्ठासघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये वराडप्रदेशे कारंजीनगरे प्रतापकीर्ति आम्नाय वघेरवाल ज्ञातिय सावला गोत्र सा श्रीपससा भार्या पद्माई एते समस्त श्रीकाष्ठा-सघे नदीतटगच्छे रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ श्रीविश्वसेन तत्पट्टे भ विद्याभूषण तत्पट्टे भ श्रीभूषण तत्पट्टे भ चद्रकीर्ति तत्पट्टे भ राजकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्ठितं ॥

(ना. १३)

लेखांक ७३१ - पार्श्वमूर्ति　　इंद्रभूषण

शके १५८० माघ सुदी ५ सोमे कारंजानगरे काष्टासंघे नंदीतटगच्छे भ. इंद्रभूषणप्रतिष्टित वघेरवाल ज्ञाति गोवल गोत्रे . ॥

(ना. २६)

लेखांक ७३२ - पद्मावती मूर्ति

शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासंघे नंदीतटगच्छे भ. श्रीइंद्रभूषण प्रतिष्टितं वघेरवाल ज्ञातौ बोरखंडिया गोत्रे तेऊजी.. ॥

(मा. स. महाजन, नागपुर)

लेखांक ७३३ - विंध्यगिरि लेख

संवत् १७१८ वर्षे वैसाष सुदि ७ सोमे श्रीकाष्टासंघे मण्डि [नन्दि] तटगच्छे...श्रीराजकीर्तिः तत्पट्टे भ श्रीलक्ष्मीसेन तत्पट्टे भ. श्रीइंद्रभूषण तत्पट्टे शोसू [श्रीसुरेंद्रकीर्ति ?] वघेरवाल जाती बोरखङ्ग बाई-पुत्र पंभा धनाइ ..सपरिवारे गोमट स्वामिचा जात्रा सफल ॥

(जैन शिलालेख सग्रह १, पृ. २३०)

लेखांक ७३४ - कोकिळ पंचमी कथा

काष्टासंघ गछाधिप राय । इंद्रभूषण गुरु प्रणमी पाय ॥
हर्पसहित श्रीपति ब्रह्मा कहे । सकलसंघ घर लक्ष्मी वहे ॥ ५६
संमत सत्तरसे छेतीस । चैत्र सुधी पडवानो दीस ॥
कथासंबंध संपूरण थयो । सकल संघने मंगल भयो ॥ ५७

(ना. ८)

लेखांक ७३५ - गोमटस्वामी स्तोत्र

इति परमजिनेंद्रो गोमटाख्यो जिनोव्यात्
कुगतिजननदुःखाद्वः सदा संस्तुतोसौ ।
सुकृतसदनकाष्ठासंघमुख्येंद्रभूषा-
भिधविहितनिदेशाद् भूपतिप्राज्ञमिश्रै ॥ ९

(म. ३१)

लेखांक ७३६ –

इंद्रभूषण सूरिराय पाय विद्वज्जन वंदित ।
राजकीर्तिनो शिष्य वैश्यमत दूरे स्थापित ।।
सकलदेशमाहे प्रगट कविजनमाहे मानती ।
जिनसेन कहे मूलसंघ सेनगण वारवार करती स्तुती ।। १४

(म. ४९)

लेखांक ७३७ –

श्रीकाष्ठासंघ नाम प्रथम गोत्र पंचवीस ।
मूलसघ उपदेश गोत्र अते सत्तावीस ।।
बघेरवाल्र वड ज्ञाति गोत्र वावण गुणपूरा ।
धर्मधुरंधर धीर परम जिण मारग सूरा ।।
महाव्रतधारक श्रीभट्टारक लक्ष्मीसेनय जानिये ।
गुरु इंद्रभूषण गंगसमसुगुण नरेंद्रकीर्ति वखाणिए ।। ११२

(म. ४९)

लेखांक ७३८ – गुरुस्तुति

स्वस्ति स्यात्पदलाछिते वरगणे काष्ठादिसघे सुधी.
ख्यात प्रीतमना नृणां वहुमत श्रीराजकीर्तिस्तत ।
लक्ष्मीसेनविभुस्ततोथ विलसच्छ्रीजैनभूपामणि
जीयाद् वासवभूषणश्च सुकृतेर्बीजस्य रक्षामणि ।।

(म १०८)

लेखांक ७३९ –

काष्ठासघ गछांवर ए मुनि सुदर इदु सो इद्रभूषण विराजे ।
सुमत्यब्धि कहे गछपति समो अन्य कोइ नहीं अवनी मान पावे ।।१४

(म ४९)

लेखांक ७४० –

श्रीराजकीर्ति सिष्यह सुगुण लक्ष्मीसेन पट्टोधरण ।

नरेंद्रमागर इत्थ वदति श्रीइंद्रभूषण तारण तरण ।। ८९

(म. ४९)

लेखांक ७४१ –

न्यायप्रमान मुखाग्र जु बोलन वादिगजांकुस मर्दतु रे ।
ब्रह्म रूपाब्धि कहे जु यतीवरे इंद्रभूषण सोभतु रे ।। १२

(म. ४९)

लेखांक ७४२ –

इन्द्रभूषण है सूर दूर कृत अन्य मतेंद्रह ।
काष्टासंघ शृंगार हार तस मध्य मुनेंद्रह ।।
जिनदास कहे सुर कुर मनमथ वादी मारये ।
कुत्रादवादींद्र इंद्र सकलही हारये ।। १४८

(म. ४९)

लेखांक ७४३ –

चारित्रपात्र त्रिभुवनविदित सील सौख्य शोभे सदा ।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरं इद्रभूषण सेवो मुदा ।। १२१

(म. ४९)

लेखांक ७४४ – रत्नत्रय यंत्र   सुरेंद्रकीर्ति

संवत् १७४४ सके १६०९ फाल्गुण सुद १३ श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे भ प्रतापकीर्त्याम्नाये बघेरवालज्ञातौ गोवाल गोत्रे स. पदाजी भार्या तानाई ..प्रणमति । श्रीकाष्ठासघे नदीतटगच्छे भ. इंद्रभूषण तत्पट्टे भ. सुरेंद्रकीर्तिः ।।

(ना. ५७)

लेखांक ७४५ – मेरु मूर्ति

संवत १७४७ शाके १६१२ प्रमोदनाम सवत्सरे ज्येष्टमासे कृष्णपक्षे सातम बुधवासरे नंदीतटगच्छे भविध [विद्या] गणे भ श्रीरामसेनान्वये

तत्पट्टे भ. श्रीविशालकीर्ति . तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रभूषण तत्पट्टे भ. श्रीसुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं ॥

(सूरत, दा. पृ. ४६)

लेखांक ७४६ – रत्नत्रय यंत्र

संवत १७४७ सके १६१२ ज्येष्ठ वदी ७ भ श्रीइंद्रभूषण तत्पट्टे भ सुरेंद्रकीर्तिं प्रतिष्ठितं । श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भ श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवाल ज्ञाति गोवाल गोत्रे स वापु पुत्र सं भोज श्री अवडनगर प्रतिष्ठितं ॥

(ना. ६०)

लेखांक ७४७ – भरत भुजबली चरित्र

श्रीकाष्ठांबर संग गंग सम निर्मल कहिये ।
क्षालित पाप कलंक पंक गणधर मुनि सहिये ॥
लोहाचार्य वर मुनी गुणी सहु शास्त्रह ज्ञाता ।
कलयुग जानी चार गछ थापे सुभ हाता ॥
पुन्नाट वागड गछ जु नदीतट माथुर ये ।
गण चार नाम जु जुवा तेहना पति भासुर ये ॥ २१७
पुन्नाटसंज्ञक गछ स्वछ पुष्करगण राणो ।
विनयंधर सुरेश ईश तद्वंशे मानो ॥
प्रतापकीर्ति भट्टारक तर्कशिरोमणि धामह ।
तत्पट्टे अतिसुहन भुवनकीर्ति अभिरामह ॥
गछ नदीतट विद्यागण सुरेंद्रकीर्ति नित वंदिये ।
तस्य शिष्य पामो कहे दुखदरिद्र निकंदिये ॥ २१८
सक सोडस सत चौद बुद्ध फाल्गुण सुदपक्षह ।
चतुर्थिदिन चरित्र वरित पूरण करी दक्षह ।
कारंजो जिनचंद्र इंद्रवंदित नमि स्वार्थे ।
संघवी भोजनी प्रीत तेहना पठनार्थे ॥
वलि सकलश्रीसंघने येथि सहू वांछित फले ।
चक्रिकाम नामे करी पामो कहे सुरतरु फले ॥ २१९

(म. ८७)

लेखांक ७४८ - अष्टद्रव्य छप्पय

काष्ठासंघ-उदयाचल दिनमनिसम गुरु वंदिए।
सुरेंद्रकीर्ति पत्कज भ्रमर पामो कहे अर्घक दिए ॥ ९

(ना. १२३)

लेखांक ७४९ - नवकार पचीसी

गच्छ नंदीतट नाम धरातल काष्ठासंघ विद्यागण धारै।
रामसुसेन परंपरमाहि सुरेंद्रकीरति भट्टारक वारै ॥
संवत सत्तरसै वरसै फुनि अंक एकावन मान विचारै।
आदिजिनेंद्र कला अधिकी धनसागरकी मति एम वधारै ॥ २४
वागड देस वसै नगरी अभिधान गिरीपुर इंद्रपुरीसी।
कोटडिया किरपाल नरोत्तम हुवड न्याति विसेसहि वीसी ॥
आदिजिनेंद्रभुवनविचै जिनमूरति राजत कंचनकीसी।
ब्रह्म भणे धनसागरजी तिहां पूरि भई नवकारपचीसी ॥ २५

(म. ८१)

लेखांक ७५० - विहरमान तीर्थंकर स्तुति

गुज्जर खंडमें है गुजरात तिहां पुर राजपुरादिक नामी।
हुंवड भट्टपुरा मनोहार जिनोकत मारगके विसरामी ॥
संवत सत्तर त्रेपनमांहि तिहां श्रिय संघको आग्रह पामी।
जोडि रची धनसागर सीतलनाथ जिनेसरके सिर नामी ॥ २६
काष्ठासुसंघ विख्यात वरिष्ठ नंदीतटगछ विद्यागणधारक।
रामसुसेनपरंपरमाहि सुवासवभूषण दूषणवारक ॥
पट्ट प्रभाकर है तिनकौ विद्यमान सुरेंद्रकीर्ति भट्टारक।
तेह समे धनसागर ब्रह्म कवित्त वखान करै सुखकारक ॥ २७

(न. ८२)

लेखांक ७५१ - चौवीसी मूर्ति

सवत १७५३ वर्षे वैसाख सुदि ७ सनौ श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमे भ. श्रीप्रतापकीर्ति तदाम्नाये वघेरवालज्ञातौ

गोवालगोत्रे संघवी भोज भार्या पद्माई . श्रीकाष्टासघे नंदीतटगच्छे राम-सेनान्वये तदनुक्रमे भ. इंद्रभूषण तत्पट्टे भ. सुरेंद्रकीर्ति ॥

(ना. ५५)

लेखांक ७५२ – केशरियाजी मंदिर

सवत १७५४ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षी पंचम्या बुध श्रीकाष्ठासंघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भ श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ. श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीलक्ष्मीसेन तत्पट्टे भ श्रीइद्रभूषण तत्पट्टे भ श्रीसुरेंद्रकीर्त्यु-पदेशात् दसा हूमड ज्ञातीय वृद्धशाखाया विश्वेश्वरगोत्रे सहा अल्हावंश . इत्यादि सपरिवार सह सघवी पाहर तेन लघु प्रासाद कारपिता शुभं भवतु॥

(वीर २ पृ. ४६०)

लेखांक ७५३ – केशरियाजी मंदिर

स्वस्तिश्री संवत् १७५६ वर्षे शाके १६५ (२) ९ प्रवर्तमाने सर्व-जितनाम सवत्सरे मासोत्तम मासे कृष्णपक्षे १३ तिथौ शुक्रवासरे श्रीकाष्ठा-सघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमेण भ श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये श्रीकाष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भ श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ श्रीश्रीभूषण . . भ. श्रीइंद्रभूषण तत्पट्टकमलमधुकरायमान भ श्रीसुरेंद्र-कीर्ति विराजमाने प्रतिष्ठितं बघेरवालज्ञाति गोवालगोत्र संघवी श्रीअल्हा भार्या कुडाई ।

(वीर २ पृ ४६०)

लेखांक ७५४ – पार्श्वपुराण

काष्ठासघ प्रसिद्ध गछ नंदीतट नायक ।
विद्यागण गंभीर सकल विद्या गुण गायक ॥
रामसेन आम्नाय इद्रभूषण भट्टारक ।
तत्पट्टोद्धर धीर सुरेंद्रकीर्ति भट्टारक ॥
तद्वदन विनिर्गत अमृतसम सद्उपदेश वानी सुनी ।
पद्चरण पास जिनवरतणा जोड्या धनसागर गुणी ॥ १४४
देश वराड मझार नगर कारजा मोहे ।
चद्रनाथ जिन चैत्य मूल नायक मन मोहे ॥

काष्ठासंघ सुगछ लाडवागड वड भागी ।
बघेरवाल विख्यात न्यात श्रावक गुणरागी ।
जिनधर्मी जमुना संघपति सुत पूंजा संघपति वचन ।
चितमैं धरी अत्याग्रह थकी रची सुधनसागर रचन ॥ १४५
षोडश शत एकवीस शालिवाहन शक जाणो ।
रस भुज भुज भुज प्रमित वीर जिन शाक वखाणो ॥
विक्रम शाक विवक्त वरस सत्रासे वीते ।
उत्तर छप्पनमांहि असित आश्विन वी दीजे ॥
कृतमंगल मंगलवार दिन मंगल मंगल तेरसी ।
धनसागर पासजिनेसका षटूपद वचन कहे रसी ॥ १४६

(म. ८३)

लेखांक ७५५ – पद्मावती पूजा

श्रीमच्चंद्रनाथस्य चंचच्चैत्यालये वरे ।
काष्ठासंघे गुणोपेते गच्छे नंदीतटाह्वये ॥ १
विद्यानामगणे रम्ये भट्टारकपुरंदरा. ।
श्रीमद्रामसेनाह्वा अभूवन् सर्वसिद्धिदाः ॥ २
तदन्वयवियच्छोभाकरणे सूर्यतुल्यभाः ।
जाता भट्टारका भव्या. श्रीइंद्रभूषणाह्वयाः ॥ ३
तत्पादांबुजभृंगाभा. श्रीमत्सुरेंद्रकीर्तयः ।
चक्रे पद्मावतीपूजा तै श्रीसूर्यपुरे वरे ॥ ४
श्रीमद्दक्षिणदेशीय. अंजनपुरवास्तव्यः ।
हिरासंघपति परं ॥ ५
तत्सुतोप्यतिधर्मिष्ठ पुजाख्य सद्गुणोदधि. ।
तस्याग्रहवशाद्रम्या नानापद्यसमन्विता ॥ ६
वह्निमुन्येश्वरात्रीश १७७३ प्रमिते वत्सरे मुदा ।
रवौ च कृष्णपचम्यां मासे भाद्रपदाह्वये ॥ ७

(ना ८२)

लेखांक ७५६ – कल्याणमंदिर स्तोत्र

काष्ठांवर गण गयण रयण अति सौम्याकार ।

भट्टारक मुनि दक्ष इंद्रभूषण गुणधारं ॥
तास पट्ट उदयाद्रि कीर्ति सुरेंद्र विचारी ।
क्रियापात्र परधान भव्यजने हितकारी ॥
कुमुदचंद्र कृत स्तुति प्रवर तास कवित कीधा मुदा ।
सुरेंद्रकीर्ति गछपति कहे भणता सुखसंपत्ति सदा ॥ ४५

(म ८८)

लेखांक ७५७ – एकीभाव स्तोत्र

भट्टारक गुणपूर इंद्रभूषण जगभूषण ।
पट्टधर परधान सदा राजे गतदूषण ॥
सुरेंद्रकीर्ति गछपति कह्या एकीभाव तणो कवित ।
भनता सुनता दिनप्रति ते नर पामे मुगति हित ॥ २६

(म ८८)

लेखांक ७५८ – विषापहार स्तोत्र

गणनायक गुरुराज इंद्रभूषण मतिपूरा ।
सकलसंघ परिचार धर्ममारगमा सूरा ॥
सुरेंद्रकीर्ति गछपति प्रवर पट्टोद्धर पदवीधरण ।
विषापहार कृत कवित वर भव्यजीव जग उद्धरण ॥ ४०

(म ८८)

लेखांक ७५९ – भूपाल स्तोत्र

श्रीजिनमार्ग विसुद्ध गछ काष्ठांबर दाख्यो ।
विविध क्रियाकलाप सकलगुणपूरण भाख्यो ॥
भट्टारक मुनिराज इंद्रभूषण गछधारी ।
तास पट्ट सुविशाल सदा सोभे आचारि ॥
सुरेंद्रकीर्ति मुनिपति सकल नित्य ध्यान जिनवर करे ।
भूपाल कवितरचना रची भनता सहु पातक हरे ॥ २७

(म ८८)

लेखांक ७६० – गुरुपादुका विजयकीर्ति

स्वस्तिश्री सं. १८१२ माघ सुदी ५ गुरौ काष्ठासंघे श्रीविजयकीर्ति-गुरूपदेशात् सुरेंद्रकीर्तिगुरुपादुका नित्यं प्रणमति ।

(सूरत, दा. पृ. ५२)

लेखांक ७६१ – शीतलनाथ मूर्ति

स्वस्तिश्री नृपविक्रमात् १८१२ माघ सुदी ५ गुरौ श्रीमत् काष्ठासघ नंदीतटगच्छे विद्यागणे श्रीरामसेनान्वये भ. श्रीलक्ष्मीसेन तत्पट्टे भ. श्रीविजयकीर्तिविजयराज्ये सुरतबंदरे वास्तव्य मेवाडा ज्ञाती लघुशाखायां सा सनाथा विगनदास सुत विठल भ्राता मूलजी इत्यादि पुत्रपौत्रादि विह सह श्रीसीतलनाथबिंब नित्यं प्रणमति ।

(सूरत, दा. पृ ५०)

लेखांक ७६२ – गुरुपूजा

श्रीमत् श्रीभूषणाख्यः तदुपरि शशिकीर्त्युत्तरे राजकीर्तिः ।
सेनांतश्चेंदिरादिस्तदनु शतमखस्योत्तरे भूपणेति ॥
श्रीमानेव सुरेंद्रकीर्तिरभवत् लक्ष्मी च सेनो ह्यतः ।
तत्पट्टे जयतामसौ विजयकीर्त्याख्य. सदा बुद्धिमान् ॥

(ना ५७)

लेखांक ७६३ – अकृत्रिम चैत्यालयबावनी सकलकीर्ति

देश वराड मझारि नगर अंजनपुर सोभै ।
तिहां जिनवरना चैत्य पद्मप्रभ मन मोहै ॥
पूज करै अति सार श्रावक विविध प्रकारी ।
सघ चतुर्विध दान देइ शक्ति अनुसारी ॥
संवत्सर अष्टादश सही षोडश ऊपरि जानए ।
आश्विन मास सुभ सुक्ल पक्ष पंचम्या गुरुवार वखाणए ॥ ५५
काष्ठासंघ विख्यात गछ नदीतट जानो ।
सुरेन्द्रकीर्ति गुरु सार तत पट नाम वखानो ॥

सकलकीर्ति सोभत गछपति महाछवि छाजे ।
तस पदमधुकर जाणि ब्रह्म चद्र अनुराजे ॥
बुधि ओछी विस्तार वहु पंडित जन सब समझ करी ।
क्षमाभाव तुम्हे कीजिए चैत्य बावनी अनुसरी ॥ ५६

(ना. १२३)

लेखांक ७६४ – सरस्वतीमूर्ति · देवेंद्रकीर्ति

सवत् १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्ठासघे भ सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. देवेद्रकीर्ति राजोमान ज्ञाति बघेरवाल ॥

(ना. ५०)

लेखांक ७६५ – नवग्रहयन्त्र

सवत १८८५ मार्गशिर्ष वद १२ गुरु दिने श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे भ प्रतापकीर्ति आम्नाये नदीतटगच्छे भ सुरेद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. देवेद्रकीर्ति राज्यमान ज्ञाति बघेरवाल गोत्र वोरखड्या सा खेमासा सुत पूनासा यत्र प्रणमंति ॥

(मा स. महाजन, नागपुर)

लेखांक ७६६ – पुरन्दर–व्रतकथा

काष्ठासघ उद्योतनिधान । सुरेंद्रकीर्ति गुरु तास वखाण ॥
तस पट्टे अति रलियावनी । देवेंद्रकीर्ति यतिशिरोमणी ॥ ५७
तास सेवक बोले सुजान । खेमा सुत सा पूना वान ॥
मन्दबुद्धि अक्षर जो मही । कर लीज्यो तुम्हे सुद्धे मती ॥ ५८

(म ४६)

काष्ठासंघ-नन्दीतट गच्छ

इस गच्छ का नाम नन्दीतट ग्राम (वर्तमान नान्देड–बम्बई राज्य) पर से लिया गया है। देवसेन कृत दर्शनसार के अनुसार यहीं कुमारसेन ने काष्ठासघ की स्थापना की थी (ले. ६४७)। इस गच्छ का दूसरा विशेषण विद्यागण है जो स्पष्टत सरस्वतीगच्छ का अनुकरण मात्र है। तीसरा विशेषण रामसेनान्वय है। इन के विषय मे कहा गया है कि नरसिहपुरा जाति की स्थापना इन ने की तथा उस शहर मे शान्तिनाथ का मन्दिर बनवाया (ले. ६४८–४९)। इन के शिष्य नेमिसेन ने पद्मावती की आराधना की तथा भट्टपुरा जाति की स्थापना की (ले. ६५०)।

इतिहास काल मे रत्नकीर्ति के पट्टशिष्य लक्ष्मीसेन से नन्दीतट गच्छ का वृत्तान्त उपलब्ध होता है।[१२७] इन के दो शिष्यो से दो परम्पराए आरम्भ हुईं। भीमसेन और धर्मसेन ये इन दो शिष्यो के नाम थे।

भीमसेन के पट्टशिष्य सोमकीर्ति हुए। आप ने सवत् १५३२ मे वीरसेनसूरि के साथ एक शीतलनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ६५१), सवत् १५३६ मे गोढिली मे यशोधरचरित की रचना पूरी की (ले. ६५२) तथा सवत् १५४० मे एक मूर्ति स्थापित की (ले. ६५३)। आप ने सुलतान पिरोजशाह के राज्यकाल मे पावागढ मे पद्मावती की कृपा से आकाश गमन का चमत्कार दिखलाया था (ले. ६५४)।[१२८]

सोमकीर्ति के बाद क्रमश. विजयसेन, यशःकीर्ति, उदयसेन, त्रिभुवनकीर्ति तथा रत्नभूषण भट्टारक हुए। रत्नभूषण के शिष्य कृष्णदास ने कल्पवल्ली[१२९] पुर मे सवत् १६७४ में विमलनाथपुराण की रचना की। इन के पिता का नाम हर्षसाह तथा माता का नाम वीरिका था। (ले.

---

१२७ रत्नकीर्ति के पहले पट्टावली मे उपलब्ध होनेवाले नामों के लिए देखिए– दानवीर माणिकचन्द्र पृ. ४७

१२८ सोमकीर्ति ने प्रद्युम्नचरित तथा सप्तव्यसन कथा इन दो ग्रन्थों की रचना क्रमशः संवत् १५३१ तथा सवत् १५२६ मे की थी (अनेकान्त वर्ष १२ पृ. २८)

१२९ कलोल (जिला पचमहाल– गुजरात)

६५५)।[१३०] रत्नभूषण के दूसरे शिष्य जयसागर ने ज्येष्ठजिनवर-पूजा, पार्श्वनाथ पच कल्याणिक तथा तीर्थजयमाला की रचना की (ले. ६५६--६०)।[१३१]

रत्नभूषण के बाद जयकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १६८६ मे एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ६६१)।

जयकीर्ति के पट्ट पर केशवसेन भट्टारक हुए। इन के बन्धु का नाम मगल था तथा पट्टाभिषेक इडोर मे हुआ था।[१३२] इन की रची आदिनाथपूजा उपलब्ध है (ले ६६२-६४)।

केशवसेन के पट्टपर विश्वकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १७०० में हरिवशपुराण की एक प्रति लिखी (ले ६६५) तथा आप के शिष्य मनजी ने सवत् १६९६ मे न्यायदीपिका की एक प्रति लिखी। (ले ६६६)

नन्दीतट गच्छ की दूसरी परम्परा लक्ष्मीसेन के शिष्य धर्मसेन से आरम्भ होती है। इन की लिखी हुई अतिशयजयमाला उपलब्ध है। वीरदास ने इन की प्रशसा की है (ले ६६७-६८)।

धर्मसेन के बाद क्रमश विमलसेन और विशालकीर्ति भट्टारक हुए। इन के शिष्य विश्वसेन ने सवत् १५९६ मे एक मूर्ति स्थापित की (ले ६६९)। इन की लिखी आराधनासारटीका उपलब्ध है (ले. ६७०)। विशालकीर्ति ने डूगरपुर में इन्हें अपना पद सौंपा था (ले. ६७२)। दक्षिणदेश में भी इन का विहार हुआ था (ले. ६७३)। विजयकीर्ति और विद्याभूषण ये इन के दो पट्टशिष्य थे। विजयकीर्ति के शिष्य महेन्द्रसेन ने सीताहरण और बारामासी ये दो काव्य लिखे है (ले.६७४-७५)।

---

१३० कृष्णदास ही सम्भवत भट्टारक केशवसेन हैं- (ले. ६६३) में इन के माता पिता के नाम देखिए।

१३१ सम्भवत ज्ञानभूषण के शिष्यरूप में (ले ४८६) में इन्हीं रत्नभूषण का उल्लेख हुआ है।

१३२ पूर्वोक्त नोट १३० देखिए।

विश्वसेन के पट्टशिष्य विद्याभूषण ने सवत् १६०४ मे तथा संवत् १६३६ मे दो पार्श्वनाथ मूर्तिया स्थापित कीं (ले. ६७६–७७)। इन ने द्वादशानुप्रेक्षा की रचना की (ले. ६७८)। हरदाससुत तथा राजनभट्ट ने इन की प्रशसा की है (ले ६७९–८०)।

विद्याभूषण के बाद श्रीभूषण पट्टाधीश हुए। संवत् १६३४ में इन का श्वेताम्बरो से वाद हुआ था और उस के परिणामस्वरूप श्वेताम्बरो को देशत्याग करना पडा था (ले. ६८१)। इन ने संवत् १६३६ में एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ६८२)। सोजित्रा मे सवत् १६५९ मे शान्तिनाथपुराण की रचना आप ने पूरी की (ले. ६८३)। आप ने सवत् १६६० मे एक पद्मावतीमूर्ति, सवत् १६६५ मे एक रत्नत्रय यन्त्र तथा सवत् १६७६ मे एक चन्द्रप्रभ मूर्ति स्थापित की (ले. ६८४–८६)। आप की लिखी द्वादशागपूजा उपलब्ध है (ले. ६८७)। आप के पिता का नाम कृष्णसाह तथा माता का नाम माकुही था (ले. ६८८)। आप ने वादिचद्र को वाद मे पराजित किया था (ले. ६९०–९१)। विवेक, राजमल्ल और सोमविजय ने आप की प्रशसा की है (ले ६८९–९२)। आप के शिष्य हेमचन्द्र ने श्रावकाचार नामक छोटीसी कविता लिखी है (ले. ६९३)। गुणसेन और हर्षसागर ने भी आप की प्रशसा की है (ले. ६९४–९५)।

श्रीभूषण के प्रधान शिष्य ब्रह्म ज्ञानसागर थे। इन ने सघपति बापू के लिए अक्षर बावनी लिखी (ले. ७०३)। नेमि धर्मोपदेश, नेमिनाथ-पूजा, गोमटदेव पूजा, पार्श्वनाथ पूजा, जिन चउवीसी, द्वादशी कथा, दश-लक्षण कथा, राखी बन्धन रास, पल्यविधान कथा, नि.शल्याष्टमी कथा, श्रुतस्कन्ध कथा, मौन एकादशी कथा ये इन की अन्य रचनाए है (ले ६९६–७०८)।[१३३]

१३३ प. नाथूराम प्रेमी ने श्रीभूषण की साम्प्रदायिकता पर प्रकाश डाला है– देखिए जैन साहित्य और इतिहास पृ ३४०। इस मे इन के प्रतिबोध चिन्तामणि नामक ग्रन्थ का भी उल्लेख किया गया है।

श्रीभूषण के बाद चन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १६५४ मे देवगिरि मे पार्श्वनाथ पुराण लिखा था (ले. ७०९)। आप ने सवत १६८१ मे एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की (ले ७१०)। पार्श्वनाथ पूजा, नन्दीश्वरपूजा, ज्येष्ठजिनवरपूजा, षोडशकारण पूजा, सरस्वती पूजा, जिन चउवीसी, पाडवपुराण तथा गुरुपूजा ये रचनाए चन्द्रकीर्ति ने लिखी (ले. ७११–१८)। चन्द्रकीर्ति ने दक्षिण की यात्रा करते समय कावेरी के तीर पर नरसिंहपट्टन में कृष्णभट्ट को वाद में पराजित किया। इस समय चारुकीर्ति भट्टारक भी उपस्थित थे (ले ७२०)।

चन्द्रकीर्ति के शिष्य लक्ष्मण ने चौरासी लक्ष योनि विनती, बारामासी, तीन चउवीसी विनती, तथा पार्श्वनाथ विनती की रचना की (ले. ७२१–२४)। पडित चिद्घन ने चद्रकीर्ति की प्रशसा की है (ले. ७१९)।

चन्द्रकीर्ति के पट्ट पर राजकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने वाणारसी में विवाद में जय प्राप्त किया। हीरजी और हेमसागर ने आप की प्रशसा की है (ले. ७२५–२६)। ब्रह्म ज्ञान ने इन के समय रविवार व्रत कथा लिखी (ले. ७२७) तथा इन के शिष्य प. हाजी ने लाडवागड गच्छ की पट्टावली की एक प्रति लिखी (ले. ७२८)।

राजकीर्ति के पट्टशिष्य लक्ष्मीसेन हुए। आप ने शक १५६१ में पद्मावती मूर्ति, तथा सवत् १७०३ में बाहुबली मूर्ति स्थापित की (ले. ७२९–३०)।

लक्ष्मीसेन के बाद इन्द्रभूषण भट्टारक हुए। आप ने शक १५८० में एक पार्श्वनाथ मूर्ति तथा एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की (ले ७३१–३२)। आप के कुछ शिष्यो ने सवत् १७१८ में गोमटेश्वर की यात्रा की (ले. ७३३)।[१३४] इन के शिष्य श्रीपति ने सवत् १७३६ में कोकिल

१३४ मूल लेख से प्रतीत होता है कि यह यात्रा सुरेन्द्रकीर्ति के समय हुई किन्तु सवत् निर्देश इन्द्रभूषण के समय के लिए ही अधिक उपयुक्त है।

पचमी कथा लिखी (ले. ७३४)। इन की आज्ञा से भूपतिमिश्र ने गोमटस्वामी स्तोत्र लिखा (ले. ७३५)। जिनसेन, नरेन्द्रकीर्ति, सुमतिसागर, नरेन्द्रसागर, रूपसागर, जिनदास एव द्विज विश्वनाथ ने इन्द्रभूषण की प्रशसा की है (ले. ७३६–४३)। इन के समय बघेरवाल जाति के ५२ गोत्रो मे २५ गोत्र काष्ठासघ के अनुयायी थे (ले. ७३७)।

इन्द्रभूषण के बाद सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने संवत् १७४४ मे रत्नत्रय यन्त्र, संवत १७४७ मे मेरुमूर्ति तथा इस वर्ष भी एक रत्नत्रय यन्त्र स्थापित किया (ले. ७४४–४६)। आप के शिष्य पामो ने संवत् १७४९ में भरत भुजबलि चरित्र की रचना की (ले. ७४७)। इन ने अष्टद्रव्य छप्पय भी लिखे (ले. ७४८)। सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य धनसागर ने सवत् १७५१ में नवकार पचीसी लिखी तथा संवत् १७५३ मे विहरमान तीर्थंकर स्तुति की रचना की (ले. ७४९–५०) सुरेन्द्रकीर्ति ने संवत् १७५३ मे चौवीसी मूर्ति स्थापित की तथा सवत् १७५४ तथा सवत् १७५६ मे केशरियाजी क्षेत्र पर दो चैत्यालयो की प्रतिष्ठा की (ले. ७५१–५३)। आप के पूर्वोक्त शिष्य धनसागर ने सवत् १७५६ मे पार्श्वपुराण लिखा (ले. ७५४)। सुरेन्द्रकीर्ति ने सवत् १७७३ में पद्मावती पूजा लिखी (ले. ७५५)। आप ने कल्याणमन्दिर, एकीभाव, विषापहार, भूपाल इन चार स्तोत्रो का छप्पयो मे रूपान्तर किया (ले. ७५६–५९)।

सुरेन्द्रकीर्ति के तीन पट्टशिष्य ज्ञात है। लक्ष्मीसेन, सकलकीर्ति और देवेन्द्रकीर्ति ये उन के नाम थे। लक्ष्मीसेन के पट्ट पर विजयकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १८१२ मे सुरेन्द्रकीर्ति की चरणपादुकाए स्थापित की तथा एक शीतलनाथ मूर्ति भी स्थापित की (ले. ७६०–६२)।

सुरेन्द्रकीर्ति के दूसरे शिष्य सकलकीर्ति थे। इन के शिष्य चन्द्र ने सवत् १८१६ मे अकृत्रिम चैत्यालय बावनी लिखी (ले. ७६३)।

सुरेन्द्रकीर्ति के तीसरे पट्टधर देवेन्द्रकीर्ति हुए। आप ने सवत् १८८१ में एक सरस्वती मूर्ति तथा सवत् १८८५ मे एक नवग्रह यन्त्र की स्थापना की (ले. ७६४–६५)। देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पूना ने पुरन्दर व्रत कथा की रचना की (ले. ७६६)।

काष्ठासंघ–नन्दीतट गच्छ–कालपट

रत्नकीर्ति
|
लक्ष्मीसेन
|————————————————|
भीमसेन — धर्मसेन
[अगला पृष्ठ देखिए]
|
सोमकीर्ति [सवत् १५२६–१५४०]
|
विजयसेन
|
यशःकीर्ति
|
उदयसेन
|
त्रिभुवनकीर्ति
|
रत्नभूषण [सवत् १६७४]
|
जयकीर्ति [सवत् १६८६]
|
केशवसेन
|
विश्वकीर्ति [सवत् १६९६–१७००]

धर्मसेन
|
विमलसेन
|
विशालकीर्ति
|
विश्वसेन [संवत् १५९६]

- विजयकीर्ति
- विद्याभूषण [सवत् १६०४-१६३६]
  |
  श्रीभूषण [संवत् १६३४-१६७६]
  |
  चन्द्रकीर्ति [सवत् १६५४-१६८१]
  |
  राजकीर्ति
  |
  लक्ष्मीसेन [सवत् १६९६-१७०३]
  |
  इन्द्रभूषण [सवत १७१५-१७३६]
  |
  सुरेन्द्रकीर्ति [सवत् १७४४-१७७३]
  - लक्ष्मीसेन
    |
    विजयकीर्ति
    [सवत् १८१२]
  - सकलकीर्ति
    [संवत् १८१६]
  - देवेन्द्रकीर्ति
    [सवत १८८१-८५]

परिशिष्ट ३ भट्टारक नाम सूची

[परिशिष्टों मे सर्वत्र लेखाक का सन्दर्भ दिया है।]

परिशिष्ट ४, आचार्यादि–नामसूची

[भट्टारकों के शिष्यों में सम्मिलित मुनि, आर्यिका आदि]

परिशिष्ट ५, ग्रन्थ नाम सूची

परिशिष्ट ६, मन्दिर उल्लेख सूची

परिशिष्ट ७, जातिनामसूची

परिशिष्ट ८, शासक नाम सूची

परिशिष्ट ९, भौगोलिक नामसूची